अंगसुत्ताणि

१

आयारो · सूयगडो · ठाणं · समवाओ

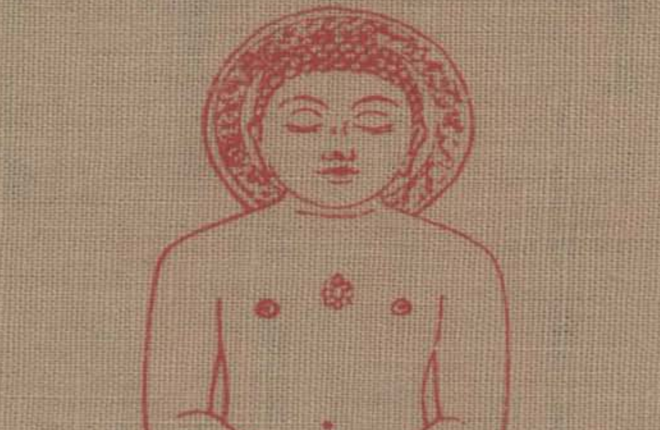

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

१

आयारो • सूयगडो • ठाणं • समवाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ११००

मूल्य : ८५/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANGA SUTTĀNI

I

ĀYĀRO • SŪYAGADO • THANAM • SAMAWĀO •

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 1100

Rs. 85/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुँचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रति-क्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं: (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है:

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रंथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व-भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

आयारो—

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षापूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांच उद्देशकों में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढो पास' (आयारो, १।४०) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, १।५३) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है[1]।

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांचों उद्देशकों में स्वीकृत किए हैं।

आठवें अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तंतुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ[3]।'

यहां प्रतीत होता है कि 'कुंभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दों से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं था इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ-संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० बेचरदास दोशी ने ८–१२–६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने

---

१. देखें—आयारो, पृ० ७ पादटिप्पण ७; पृ० ९ पादटिप्पण ३०;
पृ० १० पादटिप्पण १; पृ० ११ पादटिप्पण ६;
पृ० १२ पादटिप्पण १; पृ० १३ पादटिप्पण ५;
पृ० १४ पादटिप्पण ८; पृ० १५ पादटिप्पण १;

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही, पृ० २६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिखा है—'प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरंभ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझकर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े, उतना अच्छा, ऐसा समझकर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहां तक कम आरंभ करना पड़े, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों की सहायता से हजारों श्लोक व सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।'

श्रुत को कंठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-सक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रंथ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयां भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौंदर्य की दृष्टि से हमारे वाचना-प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा कि संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमों को ग्रंथ-बद्ध करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहां-जहां शास्त्रों में समान पाठ आए वहां-वहां उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णागकुमारा जाव विहरन्ति', 'तेण कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि'[1]।

इस परम्परा का प्रारंभ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तर-वर्ती काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र संक्षिप्त है तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठांश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है[1]। लिपिकर्त्ता अनेक स्थलों में अपनी सुविधानुसार पूर्वगत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवर्ती आदर्शों में उनका अनुसरण होता चला जाता। उदाहरण स्वरूप—रायपसेणइय सूत्र में 'सव्विड्ढीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीणं) ऐसा पाठ मिलता है[2]। इस पाठ में अपूर्णता–सूचक संकेत भी नहीं है। 'सव्विड्ढीए' और 'अकालपरिहीणं' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—'सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूइए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निवाएणं महया इड्ढीए महया जुइए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमयपडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुभि-निग्घोस-नाइयरवेणं णियग परिवाल सद्धिं संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं।'

आयार-चूला ५।१४ में 'महद्धणमोल्लाइं' तथा १५।१६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं हैं।

प्रमादवश कहीं-कहीं अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—

फासुयं··············लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा। (आयारचूला १।१०१)

बहुकंटगं··············लाभे संते जाव णो·········· । (आयारचूला १।१३४)

समर्पण-सूत्र—

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आयारचूला में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव—अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)

तहेव—अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४,३५)

एवं—एवं णायव्वं जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रुवपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा—पाणाइं जहा पिंडेसणाए (५।५)

संख्या—थूणंसि वा (४) (७।११)

असणं वा (४) (१।१२)

से भिक्खू वा २।

---

१. औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७ :
पुस्तकान्तरे समग्रमिदं सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

२. देखे—पं० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित 'रायपसेणइयं,' पृष्ठ ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चेव—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४६–१५४)
सेसं तं चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो—एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३।४०–७५)

आचारांग का वाचना-भेद—

समवायांग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है[1]। वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएं प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत्त पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—'आयारो' पृष्ठ २० पादटिप्पण संख्यांक १०, पृष्ठ २१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३० पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३१ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ३५ पादटिप्पण संख्यांक ५, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ४० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५२ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ८, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ६, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ६६ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७३ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ४।

आचारांग के उद्धृत पाठ—

उत्तरवर्ती अनेक ग्रंथों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजितसूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं[2]।

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आंशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों के पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना		आचारांग
तथा चोक्तमाचाराङ्गे:—		
सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खादं। इह खलु संयमाभिमुखा दुविहा इत्थी पुरिसा जादा भवंति। तं जहा—सव्व समण्णा गदे णो सव्व समागदे चेव। तत्थ जे सव्व समण्णागदे थिरागं हत्थ पाणि पादे सव्विदिय समण्णागदे तस्स णं णो कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं	×	×

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १३६।
२. मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं परिहिउं एवं अण्णत्थ एगेण पडि-
लेहगेण ।

अह पुण एवं जाणिज्जा—उपातिकते हेमंते गिम्हे सुपडिवण्णे से अथ पडिजुण्ण-मुवधिं पदिट्ठावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

पडिलेहणं, पादपुंछणं, उग्गहं कडासणं अण्णदरं उवधिं पावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथावत्थेसणाए—वुत्तं तत्थ एसे हिरि-मणे सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणगं विदियं, तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणगं तदियं तत्थ एसे परिसाइं अणधिहासस्स तओ वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं चउत्थं ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथा पाएसणाए कथितं —
हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णगे वा तस्स ण कप्पदि वत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पादचरित्तए ।

आलावु पत्तं वा दारुग पत्तं वा मट्टिग-पत्तं वा, अप्पाणं अप्पबीजं अप्पसरिदं तथा अप्पकारं पत्तलाभे सति पडिग्ग-हिस्सामि ।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

भावनायां चोक्तं—
चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे ।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवण्णे अहापरि-जुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा ।

आयारो ८।५०, ६६, ७२ ।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं, पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं एतेसु चेव जाणेज्जा ।

आयारो २।११२ ।

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारेज्जा णो बितियं ।

आयारचूला ५।२ ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए ।

तं जहा—अलाउपायं वा दारुपायं वा, मट्टिया पायं वा तहप्पगारं पायं ।—(आयारचूला ६।१) फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

आयारचूला ६·२२

× ×

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रति परिचय

(अ.) आचारांग (दोनों श्रुतस्कंध)

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{3}{4}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{1}{4}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १-२७ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। संवत् आदि नहीं है।

(क.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। पंक्तियां १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अंत में लिखा है––

संवत् १६७६ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राक्याणगोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्तं श्री मद्नागपुरीय तपागच्छ सं० श्रीमानकीर्तिसूरि शिष्य माधव ज्योतिविद्।

अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में बावड़ी तथा तीन बड़े-बड़े लाल टीके हैं।

(ख.) आचारांग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियां पाठ की ७ तथा टब्बे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है––

संवत् १७३२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरुवासरे।
लिखितं पूज्य ऋषिश्री ५ अमराजी तत्शिष्येण लिपिकृतं मुनिविकी
आत्मार्थो शुभं भवतु कल्याणमस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्णं मस्ति॥

(ग.) आचारांग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) पंच पाठी (बालावबोध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ६० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४। इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक हैं। अन्तिम प्रशस्ति नहीं है।

(घ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध (जीर्ण)

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३।। इंच लम्बा, ५ इंच चौड़ा है। पंक्तियां १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु। कल्याणमस्तु।।छ।। संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार समस्तं।।छ।। ।।छ।। श्री ।।छ।।

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र होगए हैं।

(च.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध,

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपतभाई ज्ञान भंडार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। बीच में बावड़ी है।

(छ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त हैं। इसके २६० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है मूलपाठ की पंक्तियां १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त हैं—

संवत् १८६६ वर्षे श्रावणशुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ श्रीविक्रमपुरमध्ये लिपिकृतं।। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभं भूयादिति।।

(ब.) आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध टब्बा (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{1}{2}$ इंच लम्बा तथा १०$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक अक्षर हैं। बीच-बीच में बावड़ियां हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भाद्रवमासे पंचम्यां तिथौ ओरसगच्छे भट्टारक श्रीककसूरि तत्पट्टे वर्तमानभट्टारकदेवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी तपागच्छीय पं० श्री दयालदास पार्श्वात् पंचचत्वारिंशत् ४५ वर्षोत्तरात् महतोद्यमेन।

(वृ), (वृपा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्रीसिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति विक्रम संवत् १९९१।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि १९९८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूयगडो

हमने सूत्रकृत का पाठ किसी एक आदर्श को मान्य कर स्वीकार नहीं किया है। उसका स्वीकार पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि तथा वृत्ति के पाठों के तुलनात्मक अध्ययन तथा समीक्षापूर्वक किया गया है।

प्राचीनकाल में लिखने की पद्धति बहुत कम थी। प्रायः सभी ग्रन्थ कंठस्थ परम्परा में सुरक्षित रहते थे। इसीलिए घोषशुद्धि (उच्चारणशुद्धि) को बहुत महत्त्व दिया जाता था। शिष्यों की घोषशुद्धि करना आचार्य का एक कर्त्तव्य था। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र में लिखा है[1]—'घोषशुद्धि कारक होना आचार्य की एक संपदा है।' पाठ और अर्थ के मौलिक रूप की सुरक्षा के लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था थी। छेदसूत्रों से उसकी पूर्ण जानकारी मिलती है।

ज्ञानाचार के आठ प्रकार बतलाए गए हैं[2]। उनमें तीन आचारों का उक्त व्यवस्था से सम्बन्ध है। वे ये हैं[3]—

१. व्यंजन—सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु और शब्दों को यथावत् बनाए रखना।
२. अर्थ—सूत्र के आशय को यथावत् बनाए रखना।
३. व्यंजन-अर्थ—सूत्र और अर्थ—दोनों को मौलिक रूप में सुरक्षित रखना।

चूर्णिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है[4]—'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं'—यह प्राकृत भाषा है। इसका 'धर्मो मंगलमुत्कृष्टम्' इस प्रकार संस्कृत में पाठ करना भाषागत व्यंजनातिचार है।

'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'—इसकी मात्रा बदलकर जैसे—'सव्वे सावज्जे जोगे पच्चक्खामि', उच्चारण करना मात्रागत व्यंजनातिचार है। 'णमो अरहंताणं' का 'णमो अरहंताण' इस प्रकार प्राप्त बिन्दु को छोड़कर उच्चारण करना, 'णमो अरंहंताणं' इस प्रकार 'र' के साथ अप्राप्त बिन्दु का उच्चारण करना—यह बिन्दुगत व्यंजनातिचार है।

---

१. दशाश्रुतस्कन्ध, दशा ४।

२. निशीथभाष्य, गाथा ८, भाग–१, पृ० ६:

काले विणये बहुमाने, उवधाने तहा अणिण्हवणे।
वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविधो णाणमायारो॥

३. वही, गाथा १७, भाग १, पृ० १२।

सक्कयमत्ताबिंदू, अण्णाभिधाणेण वा वि तं अत्थं।
वंजेति जेण अत्थं, वंजणमिति भण्णते सुत्तं॥

४. निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।' इनके मौलिक शब्दों को हटाकर वहां उनके पर्यायवाची शब्दों की योजना करना, जैसे––पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं, दयासंवर-णिज्जरा । यह अन्याभिधान नामक व्यंजनातिचार है ।

सूत्र के अक्षर-पदों का हीन या अतिरिक्त उच्चारण करना अथवा उनका अन्यथा उच्चारण करना भी व्यंजनातिचार है ।

इस सारे विवरण का निष्कर्ष यह है कि सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु, शब्द, शब्द-संख्या और पाठ्य-क्रम मौलिकता सुरक्षित रहनी चाहिए । इस व्यवस्था के अतिक्रमण के लिए प्रायश्चित्त की व्यवस्था की गई । भाषा, मात्रा, बिन्दु आदि का परिवर्तन करने पर लघुमासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है । सूत्रपाठ को अन्यथा करने पर लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[1] ।

चूर्णिकार ने विषय के उपसंहार में लिखा है[2]––सूत्रभेद से अर्थभेद, अर्थभेद से चरणभेद, चरणभेद से मोक्ष असंभव हो जाता है । वैसा होने पर दीक्षा आदि कर्म प्रयोजन-शून्य हो जाते है । इसलिए व्यंजन-भेद नहीं करना चाहिए ।

इसी प्रकार अर्थभेद भी नहीं करना चाहिए । जो अर्थ अनुक्त और अघटित हो, वह नहीं करना चाहिए । अर्थ का परिवर्तन करने पर गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है[3] ।

सूत्र और अर्थ दोनों का एक साथ परिवर्तन करने पर पूर्वोक्त दोनों प्रायश्चित्त प्राप्त होते हैं ।[4]

सूत्र और अर्थ के मौलिक स्वरूप के सुरक्षित रखने की दिशा में आगमों के रचना-काल में चिन्तन प्रारंभ हो गया था । प्रस्तुत सूत्र में इसका स्पष्ट निर्देश है । ग्रन्थाध्ययन में मुनि को सावधान किया गया है कि वह सूत्र और अर्थ की अन्यरूप में योजना न करे । अथवा

---

१. निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२ ।

२. निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२ :
सुत्तभेया अत्थभेओ । अत्थभेया चरणभेओ । चरणभेया अमोक्खो मोक्खाभावा दिक्खादयो किरियाभेदा अफला भवन्ति । तम्हा वंजणभेदो ण कायव्वो ।

३. निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १३ ।

४. वही;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसका अन्यथा प्रतिपादन न करे[1]। इसकी व्याख्या में चूर्णिकार ने लिखा है[2]—सूत्र को सर्वथा ही अन्यथा न करे। अर्थ वही करे जो स्वसिद्धान्त से अविरुद्ध है। वृत्तिकार ने लिखा है[3]—सूत्र में स्वमति से न जोड़े अथवा सूत्र और अर्थ को अन्यथा न करे।

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि सूत्र अर्थ के मौलिक स्वरूप की सुरक्षा का तीव्र प्रयत्न किया गया था। फलतः एक सीमा तक उसकी सुरक्षा भी हुई है। फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि उसमें परिवर्तन नहीं हुआ है। वह उसके कारण भी प्राप्त हैं। जैसे—

१. विस्मृति, २. लिपिपरिवर्तन, ३. व्याख्या का मूल में प्रवेश, ४. देश-काल का व्यवधान।

शीलांकसूरि सूत्रकृतांग की वृत्ति लिख रहे थे तब उनके सामने उसके आदर्श और प्राचीन टीका—दोनों विद्यमान थे। दूसरे श्रुतस्कन्ध के दूसरे अध्ययन के एक स्थल में आदर्शों में एक जैसा पाठ नहीं था और टीका में जो पाठ व्याख्यात था उसका संवादी पाठ किसी भी आदर्श में नहीं था। इसलिए उन्होंने एक आदर्श को मान्य कर चर्चित अंश की व्याख्या की[4]।

कुछ स्थानों पर हमने चूर्णि के पाठ स्वीकृत किए हैं। आदर्शों और वृत्ति की अपेक्षा से वे अधिक संगत प्रतीत होते हैं।

२।६।४५ में 'णिहो णिसं' पाठ है। वह वृत्ति में 'णिवो णिसं' इस प्रकार व्याख्यात है। वहां हमने चूर्णि का पाठ स्वीकृत किया है।[5]

पादटिप्पणों में हमने पाठ-परिवर्तन व उनके कारणों की चर्चा की है। वैदिक परम्परा में भी वेदों के मौलिक पाठ की सुरक्षा के लिए तीव्र प्रयत्न किए थे। किन्तु उनके पाठों में भी कालजनित अतिक्रमण हुए हैं। डा० विश्वबन्धु ने लिखा है[6]—"यह सर्वमान्य तथ्य है

---

१. सूयगडो, १।१४।२६ :
णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्णं।

२. सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० २६६ :
न सूत्रमन्यत् प्रद्वेषेण करोत्यन्यथा वा, जहा रण्णो भत्तंसिणो उज्ज्वलप्रश्नो नामार्थः तमपि नान्यथा कुर्यात्, जहा 'आवंती के आवंती—एके यावंती तं लोगो विप्परामसंति' सूत्रं सर्वथैवान्यथा न कर्त्तव्यं, अर्थविकल्पस्तु स्वसिद्धान्ताविरुद्धो अविरुद्धः स्यात्।

३. सूत्रकृतांगवृत्ति, पत्र २५८ :
न च सूत्रमन्यत् स्वमतिविकल्पनतः स्वपरत्रायी कुर्वीतान्यथा
वा सूत्रं तदर्थं वा संसारात्त्रायीत्राणशीलो जन्तूनां न विदधीत।

४. वही, पत्र ७६।
इह च प्रायः सूत्रादर्शे नानाभिधानि सूत्राणि दृश्यन्ते, न च टीकासंवाद्येकोप्यस्माभिरादर्शः समुपलब्धोऽत एकमादर्शमंगीकृत्यास्माभिर्विवरणं क्रियते।

५. देखें—२।६।४५ का पादटिप्पण।

६. अखिल भारतीय प्राच्य-विद्या-सम्मेलन, चौबीसवां अधिवेशन, वाराणसी १९६८, मुख्याध्यक्षीय भाषण, पृष्ठ ८, ९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कि लगभग ५ हजार वर्षों से इस देश में वैदिक ग्रन्थों के प्राचीन पाठों को उनके मौलिक शुद्धरूप में सुरक्षित रखने के लिए उन्हें परम सावधानी और उत्कृष्ट श्रद्धा के साथ कण्ठस्थ करने का इतना घोर प्रयत्न होता रहा है कि जिसका किसी भी दूसरे देश के साहित्यिक इतिहास में उदाहरण नहीं है। किन्तु ऐसा होने पर भी, जैसा कि इस वैदिक अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले हमारे पूर्ववर्ती विद्वानों को देखने में संयोगवश कुछ-कुछ और गत चालीस वर्षों के सतत शोध कार्य के मध्य में हमारे देखने में, विस्तृत रूप में आया है कि ये ग्रन्थ भी कालकृत विध्वंस और मानवकृत संक्रमण की अपूर्णता से प्रभावित हुए विना नहीं रह सके। यदि ऐसा बहुधा होता तो सचमुच यह एक अविश्वसनीय चमत्कार ही होता।"

कण्ठस्थ-परंपरा से चलने वाले तथा प्रलंब अवधि में लिपि-परिवर्तन के युग में संक्रमण करने वाले प्रत्येक ग्रन्थ के कुछ स्थल मौलिकता से इतस्ततः हुए हैं।

प्रतिपरिचय

(क) सूत्रकृतांग मूलपाठ

यह प्रति 'धेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र-संख्या ९४ व पृष्ठ संख्या १८८ है। प्रत्येक पत्र मे ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३७ तक अक्षर है। प्रति की लम्बाई ११॥ इंच व चौड़ाई ४॥। इंच है। प्रति शुद्ध व बड़े अक्षरों में स्पष्ट लिखी हुई है। यह प्रति संवत् १५८१ में लिखी हुई है। इसके अन्त में निम्न प्रशस्ति है।—

संवत् १५८१ वर्षे पत्तन नगरे श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि। श्री जिनसागरसूरि। श्री जिनसुन्दरसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनहर्षसूरिपट्टे श्री जिनचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ऊकेशवंशे साधुशाखायां। सो० जीवाभार्या श्रावारुपुत्ररत्न सो० महिपाल सो० गांगाख्यो सा० तंत्र सो गांगा भार्या श्रा० धीरुपुत्र सो० पदमसी सो० हरिचंदविद्यमानपुत्र सो० शिवचन्द सो० देवचंद्राभ्या श्री एकादशांगी सूत्राणि अलेखिषत तत्रेदं श्री सूत्रकृतांगसूत्रं। सम्पूर्णः ॥श्री रस्तु॥

(ख) सूत्रकृतांग बालावबोध प्रथमश्रुतस्कन्ध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। इसके पत्र ४३ व पृष्ठ ८६ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ५-६ करीब हैं व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ६०-६२ करीब हैं। प्रति की लम्बाई १०$\frac{3}{4}$ इंच व चौड़ाई ४$\frac{1}{2}$ इंच है। अनुमानतः यह प्रति १७वीं शताब्दि की लगती है। प्रति के अन्त में प्रशस्ति नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) सूत्रकृतांग द्वितीय बालावबोध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'धेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसके पत्र ६५ व पृष्ठ १३० है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ४ से १२ तक हैं व प्रत्येक में ४५ से ५० तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १० इंच व चौड़ाई ४½ इंच करीब है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—

मूलपाठ प्रशस्ति—सूयगडस्स बीयं खंधो सम्मत्ते। श्री सूगडांग द्वितीय श्रुतस्कन्धः सूत्र संपूर्ण समाप्तः ॥ सुभं भवतु, कल्याणमस्तु। श्री रस्तुः ॥ ब ॥ ब ॥ पंड्या भवांन सूत मेघज्जी लक्षतं ॥ बालावबोध प्रशस्ति—सूत्रकृतं आदितः सर्वमध्ययनं ।२३। श्री साधुरत्त-शिष्येण पाशचन्द्रेण वृत्तितः बालावबोधार्थं द्वितीयांगस्यवार्त्तिकं सम्पूर्णः ॥ ब ॥ सूभ भवतुः। कल्याणमस्तुः श्रीरस्तु ॥ संवत् ॥ १६६३ वर्षे फागुणवदि ८ बुधे प्रति सूगडांगनी पूरी कोधी प्रति ठीक है।

(क्व) सूत्रकृतांग बालावबोध पंचपाठी

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त, पत्र संख्या ६८ व पष्ठ १३६। पाठ की पंक्तियां एक से १३ तक व प्रत्येक पंक्ति में ३४ से ३७ करीब अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०¼ इंच व चौड़ाई ४½ इंच करीब है। संवत् व प्रशस्ति नहीं है। आनुमानिक सं० १७वीं शदी।

(क्व) सूत्रकृतांग (मूलपाठ) निर्युक्ति सहित

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ४२ व पृष्ठ संख्या ८४ है। प्रत्येक पत्र में १६ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ६३ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १३ इंच व चौड़ाई ४¾ इंच है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—सूयगडस्स निज्जुत्ती सम्मत्ता। पद्मोपमं पत्रपरं परान्वितं, वर्णोज्जलसूक्तमरदं सुन्दरं मुमुक्षु-भृंगप्रकरस्यवल्लभं, जीयाच्चिरं सूत्रकृदंग पुस्तकं ॥ संवत १५१२ वर्षे आसोज वदि दीपा ॥ ऊएसगच्छे भट्टारक श्रीकक्कसूरीणां ॥ विक्रमपुरे ॥

(च) सूत्रकृतांग वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। इसके पत्र ९० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६७ के करीब अक्षर है। इसकी लम्बाई १०¾ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रति सुन्दर व सूक्ष्म अक्षरों में लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—

शुभं भवतु संवत् १५२५ वर्षे श्री यवनपुर नगरे। श्रीखरतरगच्छे। श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकार श्री जिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये। श्री कमल संयमे। महोपाध्यायैः स्ववाचनार्थं ग्रंथोयं लेखितः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।श्रीः।। ब ।।श्रीः।। **श्री** पद्मकीर्त्युपाठकेभ्यः पं० महिमसारगणिना प्रतिरियं प्रदत्ता स्व-पुण्यार्थं ।।

(वृ०) सूत्रकृतांग वृत्ति मुद्रित श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी ।

(चू०) सूत्रकृतांग चूर्णि मुद्रित श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बर संस्था रतलाम ।

ठाणं

प्राकृत में एक शब्द के अनेक रूप बनते हैं। आगमों में वे अनेक रूप प्रयुक्त भी हैं। आगम का संपादन करने वाले कुछ विद्वानों का यह आग्रह रहा है कि पाठ-संपादन में विभिन्न रूपों में एकरूपता लानी चाहिए। हमने पाठ-संपादन की इस पद्धति को मान्य नहीं किया है। यद्यपि प्रस्तुत सूत्र में 'नकार' और 'णकार' की एकता स्वीकार कर सर्वत्र 'णकार' का ही प्रयोग किया है; पर रूप-भेदों में एकता लाने के सिद्धान्त का सर्वत्र उपयोग नहीं किया है। ३।३७३ में 'सुगती' और 'सुग्गती'—ये दो रूप मिलते हैं। ३।३७५ में 'सोगता', 'सुगता' और 'सुग्गता'—ये तीन रूप मिलते हैं। हमने उन्हें यथावत् रखा है। ग्रंथकार प्रयोग करने में स्वतन्त्र हैं। वे एकरूपता के नियम से बंधे हुए नहीं हैं, फिर संपादन कार्य में एकरूपता का प्रयत्न अपेक्षित नहीं लगता।

आगमों में अनेक भाषाओं और वर्णादेशों के विविध प्रयोग मिलते हैं। उनमें एकरूपता लाने पर विविधता की विस्मृति की संभावना हो सकती है। 'वाएणं', 'कायसा'—ये दोनों रूप प्रयुक्त होते हैं। 'अंडजा' के 'अंडया' और 'अंडगा' तथा 'कर्मभूमिजा' के 'कम्मभूमिया' और 'कम्मभूमिगा'—ये दोनों रूप बनते हैं। जिस स्थल में जो रूप प्राप्त हो उस स्थल में उसे रखना संपादन की त्रुटि नहीं है।

प्रति परिचय

(क) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र ७४ तथा पृष्ठ १४८ हैं। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां, प्रत्येक पंक्ति में ६० के करीब अक्षर हैं। यह प्रति १०।। इंच लम्बी ४।। इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। लिपि संवत् १५६५। प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ।।छ।। श्री खरतरगच्छे श्री सागरचन्द्राचार्यान्वये वा० दयासागरगणिभिः स्वशिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिवाचनार्थं ग्रंथोऽयं लेखयांचक्रे ।। संवत् १५६५ वर्षे जिनश्री-वर्धमानसंवत् २०३५ वर्षे चैत्रप्रथमाष्टम्यां श्री बोहिथिरागोत्रे मंत्रीश्वरवच्छराज नंदन प्रधानशिरोमणि मं० वरसिंहगेहिन्या मंत्रिणी बीऊलदेवी श्री विकया पुत्र मं० मेघराज मं० भोजराज मं० नगराज मं० हरिराज मं० अमरसिंह मं० डूंगरसिंह पुत्रिका बीराई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभृति पौत्रादि परिवारपरिवृतया सुपुण्यार्थं श्री ज्ञानभक्तिनिमित्तं श्री स्थानांग सूत्रवृत्तिसहितं लेखयित्वा विहारितं श्रीखरतरगच्छे बृहतिश्रीबीकानयरे श्रीजिनहंससूरि विजयिराज्ये वा० महिमराजगणीद्राणां शिष्य वा० दयासागगणीवराणां शिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिदेवतिलकादिपरिवृतानां वाच्यमानं चिरं नंदतु। शुभं वोभोतु श्री चतुर्विध श्री संघाय ॥छ॥ श्री रस्तु ॥

(ख) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

वेवर पुस्तकालय सुजानगढ़ से प्राप्त। इसके पत्र १०८ और पृष्ठ २१६ है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां। प्रत्येक पंक्ति में ४५ करीब अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध तथा स्पष्ट है। लिपि संवत् १६८५ है।

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त (वृत्ति की प्रति)।
इसके पत्र २८३ और पृष्ठ ५६६ हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच है तथा चौड़ाई ४½ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५८ से ६० तक अक्षर हैं।

(घ) ठाणांग (मूलपाठ)

यह प्रति लालभाई भाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) की है। इसके पत्र ६६ तथा पृष्ठ १३२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। पत्रों के दोनों ओर कलात्मक वापिका है। अन्त में लिखा है—
संवत् १५१७ वर्षे ठाणांग सूत्रं लेखयित्वा तेषामेव गुरुणामुपकारिता। साधुजनैर्वा चिरं नंदतात् ॥छ॥ ॥०॥

समवाओ

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-संशोधन तीन आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। कुल स्थलों में पाठ-संशोधन के लिए अन्य ग्रन्थों का भी उपयोग किया गया है। प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३४) में प्रयुक्त आदर्शों में 'अस्ससेणे' पाठ नहीं है। यह चतुर्थ चक्रवर्ती के पिता का नाम है। इसके बिना अगले नामों की व्यवस्था विसंगत हो जाती है। उल्लिखित सूत्र की संग्रह गाथाओं में पद्मोत्तर नाम अतिरिक्त है। इसे पाठान्तर रूप में स्वीकार किया गया है। आवश्यक निर्युक्ति (३९९) में 'अस्ससेणे' पाठ उपलब्ध है। उसके आधार पर 'अस्ससेणे' मूल-पाठ के रूप में स्वीकृत किया गया है।

प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३०) की संग्रह गाथा में बलदेव वासुदेव के पिता के नाम है। उक्त गाथा में स्थानांग (९।१९) तथा आवश्यक निर्युक्ति (४११)के आधार पर संशोधन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किया गया है। तीसरे बलदेव-वासुदेव के पिता का नाम रुद्द है, किन्तु समवायांग की हस्तलिखित वृत्ति में 'रुद्द' के स्थान में 'सोम' है। वस्तुतः 'सोम' के बाद 'रुद्द' होना चाहिए[1]।

समवाय ३० (सूत्र १, गाथा २६) में सभी सभी आदर्शों में 'सज्झायवायं' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने भी उसकी स्वाध्यायवादं—इस रूप में व्याख्या की है। अर्थ की दृष्टि से यह संगत नहीं है। दशाश्रुतस्कन्ध (सूत्र २६) में उक्त गाथा उपलब्ध है। उसमें 'सज्झायवायं' के स्थान पर 'सब्भाववायं' पाठ है। दशाश्रुतस्कन्ध के वृत्तिकार ने इसका संस्कृत रूप 'सद्‌भाववादं' किया है। अर्थ-मीमांसा करने पर यह पाठ संगत प्रतीत होता है।[2]

प्राचीन लिपि में संयुक्त 'झकार' और संयुक्त 'भकार' एक जैसे लिखे जाते थे। इस प्रकार के लिपिहेतुक पाठ-परिवर्तन अनेक स्थानों में प्राप्त होते हैं।

प्रति परिचय

(क) समवायांग मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्दजी गोठी, सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६४ तथा पृष्ठ १२८ हैं किन्तु २४ वां पत्र नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ में ४ या ५ पंक्तियां हैं तथा प्रत्येक पंक्ति में ११० अक्षर हैं। लिपि सं० १४०१।

(ख) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १०६ तथा पृष्ठ २१२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ९ पंक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति में ३०,३२ अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। इसके अन्त में संवत् दिया हुआ नहीं है। किन्तु पत्रों की जीर्णता व लिपि के आधार पर यह पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के लगभग की है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—
॥छ॥ समवाउ चउत्थमंगं ॥छ॥ अंकतोपि ग्रंथाग्र १६६७ ॥छ॥

(ग) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों तरफ वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र ८१ तथा पृष्ठ १६२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से १२ पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ४७ तक अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। लिपि संवत् १३४५ लिखा है; पर संवत् की लिखावट से कुछ संदिग्ध सा लगता है। फिर भी प्राचीन है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है—

---

१. देखें, समवाओ, पइण्णगसमवाओ सू० २३० का पाद-टिप्पण।

२. देखें, समवाओ, समवाय ३०, सू० १, गाथा २६ का दूसरा पाद-टिप्पण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।छ।। समवाउ चउत्थमंगं संमत्तं ।।छ।। ग्रंथाग्र १६६७ ।।छ।।

इस प्रति में पाठ बहुत संक्षिप्त है। अनेक स्थानों पर केवल प्रथम अक्षर ही लिखे गए हैं।

श्रीमदभयदेवसूरिवृत्तिः (मुद्रित)—

प्रकाशक—श्रेष्ठी माणिकलाल चुन्नीलाल, कान्तिलाल, चुन्नीलाल—अहमदाबाद।

संपादक—मास्टर नगीनदास, नेमचन्द।

सहयोगानुभूति—

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टि समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप-सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगमवाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापनकर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्यश्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठ संपादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि शुभकरणजी इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगम के प्रबंध-संपादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ये कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, जैन विश्व भारती के कार्यालय तथा आदर्श साहित्य संघ के कार्यालय के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

मुनि नथमल

अणुव्रत-विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

१. आगमों का वर्गीकरण

जैन साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—द्वादशांग गणिपिटक[1] और चतुर्दश पूर्व[2]। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य[3]। आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन विषयक जितने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अंगों और पूर्वों से संबंधित हैं। जैसे—

१. सामायिक आदि ग्यारह अंगों को पढ़ने वाले—'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, पंचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, षष्ठ वर्ग १५वां अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तककुमार के विषय में प्राप्त है।

२. बारह अंगों को पढ़ने वाले—'बारसंगी' (अंतगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

३. चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ' (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विषय में प्राप्त है।

१, समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८।
२, वही, समवाय १४, सू० २।
३. नन्दी, सू० ४३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् पार्श्व के साढ़े तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[1]।

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[2]।

समवायांग और अनुयोगद्वार में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य का विभाग नहीं है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अंग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरों ने की है। नंदी की रचना से पूर्व अनेक अंग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दस-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचे गये थे। इस लिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप आगम के दो विभाग किए गए--अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। यह विभाग अनुयोगद्वार (वीर-निर्वाण छठी शताब्दी) तक नहीं हुआ था। यह सबसे पहले नंदी (वीर-निर्वाण दसवीं शताब्दी) में हुआ है।

नंदी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते हैं--पूर्व, अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। आज 'अंग-प्रविष्ट' और 'अंग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं हैं। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२. पूर्व

जैन परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एक मत नहीं हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया[3]। आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है[4]। दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वों की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए हैं। बारहवां अंग दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है--पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्वगत' के अन्तर्गत हैं। भगवान् महावीर ने प्रारंभ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवां अंग--ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्वसाधारण के लिए वह

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १४।

२. वही, सू० १२।

३. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१।

प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।

४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४०:

अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थमर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुलभ नहीं था। अंगों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद में समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अंगों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई'[1]। ग्यारह अंगों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अंग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिगम्बर परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण बासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उनके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उनके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। उनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अंगधर रहे[2]।

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अंगों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अंगों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवें अंग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अंगों को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले--ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,[3] फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अंगों के अध्येता नहीं थे और बारह अंगों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है[4]। वे चतुर्दश-पूर्वी और अंगधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशांगवित्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया है।

ग्यारह अंग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है, वह स्वाभाविक रूप से द्वादशांगवित् होता है। बारहवें अंग में चौदह पूर्व समाविष्ट हैं। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः चतुर्दश-पूर्व होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं--चौदह पूर्व और ग्यारह अंग। द्वादशांगी का स्वतन्त्र स्थान नहीं है। यह पूर्वों और अंगों का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पूर्वों को भगवान् पार्श्वकालीन और अंगों को भगवान् महावीरकालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पूर्वों और अंगों की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अंग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब मुनियों का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे

---

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५४ :

जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य॥

२. जयधवला, प्रस्तावना पृष्ठ ४६।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

४. उत्तराध्ययन, २३।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माना जा सकता है ? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी बिन्दु पर पहुंचते हैं कि अंगो की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है, इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अंग नहीं। सामान्य ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वों और अंगों का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अंग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में सम्भवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३. अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-काल में गौतम आदि गणधरों ने पूर्वों और अंगों की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य मुनियों ने आगम ग्रन्थों की रचना नहीं की। यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे[१]। उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नही की, ऐसा सम्भव नहीं लगता। नंदी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे[२]। ये पूर्वों और अंगो से अतिरिक्त थे। उस समय अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने ग्रंथ रचे तब संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रामाण्य और अप्रामाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दश-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचित ग्रन्थों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रामाण्य परतः था। वे द्वादशांगी में अविरुद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रामाण्य था, इसीलिए उन्हें अंग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के सन्दर्भ में आगम की अंग-बाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

१. जो गणधर कृत होता है,

२. जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है

---

१. समवाओ, समवाय १४, सू० ४।

२. नन्दी, सू० ७८ :
चोद्दसपइन्नग सहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. जो ध्रुव—शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अंग-प्रविष्ट होता है[1]।

इसके विपरीत।

१. जो स्थविर-कृत होता है,

२. जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है,

३. जो चल होता है, तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अंग-बाह्य है।

अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है[2]। जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अंगों के रूप में स्वीकृत होता है इसलिए उसे अंग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—१. तीर्थंकर २. श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और ३. आरातीय[3]। आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अंग-बाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अंग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते हैं इसीलिए वे अंग-बाह्य कहलाते हैं[4]। अंग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग-स्थानीय हैं।

४. अंग

द्वादशांगी में संगर्भित बारह आगमों को अंग कहा गया है। अंग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अंग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

१. शिक्षा—शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।

२. कल्प—वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।

३. व्याकरण—पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।

४. निरुक्त—पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।

५. छन्द—मन्त्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक-शास्त्र।

६. ज्योतिष—यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

---

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२ :

गणहर-थेरकयं वा, आएसा मुक्क - वागरणओ वा।
धुव - चल विसेसओ वा, अंगाणंगेसु नाणत्तं॥

२. तत्त्वार्थभाष्य, १।२० :
वक्तृ-विशेषाद् द्वैविध्यम्।

३. सर्वार्थसिद्धि, १।२० :
त्रयो वक्तारः—सर्वज्ञस्तीर्थंकरः, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४. तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :
आरातीयाचार्यकृतांगार्थ प्रत्यासन्नरूपमंगबाह्यम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गयी है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए ये वेद-शरीर के अंग कहलाते हैं[१]।

पालि-साहित्य में भी, 'अंग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्धवचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

नवांग--

१. सुत्त—भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
२. गेय्य—गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
३. वैय्याकरण—व्याख्यापरक ग्रन्थ।
४. गाथा—पद्य में रचित ग्रन्थ।
५. उदान—बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्गार।
६. इतिवुत्तक—छोटे-छोटे व्याख्यान, जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसा कहा' से होता है।
७. जातक—बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएं।
८. अब्भुतधम्म—अद्भुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
९. वेदल्ल—वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं[२]।

द्वादशांग—

१. सूत्र, २. गेय, ३. व्याकरण, ४. गाथा, ५. उदान, ६. अवदान ७. इतिवृत्तक, ८. निदान, ९. वैपुल्य, १०. जातक, ११. उपदेश-धर्म और १२. अद्भुत-धर्म[३]।

जैनागम बारह अंगो में विभक्त हैं—१. आचार, २. सूत्रकृत, ३. स्थान, ४. समवाय, ५. भगवती, ६. ज्ञाताधर्मकथा, ७. उपासकदशा, ८. अन्तकृतदशा, ९. अनुत्तरोपपातिकदशा, १०. प्रश्न-व्याकरण, ११. विपाक और १२. दृष्टिवाद।

'अंग' शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में हुआ है। वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं। उनके साथ 'अंग' शब्द का कोई योग नहीं है। जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है। उसके साथ 'अंग' शब्द का योग हुआ है। गणिपिटक के बारह अंग हैं—'दुवालसंगे गणिपिडगे'[४]।

---

१. पाणिनीयशिक्षा, ४१।१२।
२. सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, पृ० ३४
३. बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालंकार' की टीका' पृ० ३५ :

सूत्रं गेयं व्याकरणं, गाथोदानावदानकम्।
इतिवृत्तकं निदानं, वैपुल्यं च सजातकम्।
उपदेशाद्भुतौ धर्मौ, द्वादशांगमिदं वचः॥

४. समवाओ पइण्णगसमवाओ, सूत्र ८८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है। आचार आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अंगस्थानीय हैं। संभवतः इसीलिए उन्हें बारह अंग कहा गया[1]। इस प्रकार द्वादशांग 'गणिपिटक' और 'श्रुत-पुरुष'—दोनों का विशेषण बनता है।

आयारो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का पहला अंग है। इसमें आचार का वर्णन है, इसलिए इसका नाम 'आयारो' (आचार) है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं—आयरो और आयारचूला।

विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन, और शयितासन), गमन, चंक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुंजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है[2]।

आचार्य उमास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है[3]—

१. षड्जीवकाय यतना।
२. लौकिक संतान का गौरव-त्याग।
३. शीत-ऊष्ण आदि परीषहों पर विजय।
४. अप्रकम्पनीय सम्यक्त्व।
५. संसार से उद्वेग।
६. कर्मों को क्षीण करने का उपाय।
७. वैयावृत्य का उद्योग।
८. तपस्या की विधि।
९. स्त्री-संग-त्याग।

---

१. मूलाराधना, ४।५९९ विजयोदया :
श्रुतं पुरुषः मुखचरणाद्यंगस्थानीयत्वादंगशब्देनोच्यते।
२. (क) समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९।
(ख) नंदी, सू० ८०।
३. प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण।
११. स्त्री, पशु, क्लीव आदि से रहित शय्या।
१२. गति-शुद्धि।
१३. भाषा-शुद्धि।
१४. वस्त्र की एषणा-पद्धति।
१५. पात्र की एषणा-पद्धति।
१६. अवग्रह-शुद्धि।
१७. स्थान-शुद्धि।
१८. निषद्या-शुद्धि।
१९. व्युत्सर्ग-शुद्धि।
२०. शब्दासक्ति-परित्याग।
२१. रूपासक्ति-परित्याग।
२२. परक्रिया-वर्जन।
२३. अन्योन्यक्रिया-वर्जन।
२४. पंच महाव्रतों की दृढ़ता।
२५. सर्वसंगों से विमुक्तता।

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

१. सत्थपरिण्णा—जीव संयम।
२. लोगविजय—बंध और मुक्ति का प्रबोध।
३. सीओसणिज्ज—सुख-दुःख-तितिक्षा।
४. सम्मत्त—सम्यक्-दृष्टिकोण।
५. लोगसार—असार का परित्याग और लोक में सारभूत रत्नत्रयी की आराधना।
६. धुय—अनासक्ति।
७. महापरिण्णा—मोह से उत्पन्न परीषहों और उपसर्गों का सम्यक् सहन।
८. विमोक्ख—निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-आराधना।
९. उवहाणसुय—भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन[1]।

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३३, ३४ :

जिअसंजमो अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजहियव्वं।
सुहदुक्खतितिक्खाविय, सम्मत्तं लोगसारो य॥
निस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा।
निज्जाणं अट्ठमए नवमे य जिणेण एवंति॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य अकलंक के अनुसार आचारांग का समग्र विषय चर्या-विधान[1] तथा अपराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है[2]।

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पांच प्रकार बतलाए गए हैं—१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चरित्राचार, ४. तपाचार और ५. वीर्याचार[3]। प्रस्तुत सूत्र में इन पांचों आचारों का निरूपण है

सूयगडो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का दूसरा अंग है। इसका नाम 'सूयगडो' है। समवाय, नंदी और अनुयोगद्वार—तीनों आगमों में यही नाम उपलब्ध होता है[4]। निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी ने प्रस्तुत आगम के गुण-निष्पन्न नाम तीन बतलाए हैं[5]—

१. सूतगड—सूतकृत
२. सुत्तकड—सूत्रकृत
३. सूयगड—सूचाकृत

प्रस्तुत आगम मौलिक दृष्टि से भगवान् महावीर से सूत (उत्पन्न) है तथा यह ग्रन्थरूप में गणधर के द्वारा कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूतकृत' है।

इसमें सूत्र के अनुसार तत्त्वबोध किया जाता है, इसलिए इसका नाम 'सूत्रकृत' है।

इसमें स्व और पर समय की सूचना कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूचाकृत' है।

वस्तुतः सूत, सुत्त और सूय—ये तीनों सूत्र के ही प्राकृत रूप हैं। आकार भेद होने के कारण तीन गुणात्मक नामों की परिकल्पना की गई है।

---

१. तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :
आचारे चर्याविधानं शुद्ध्यष्टकपंचसमितित्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते।
२. मूलाराधना, आश्वास २, श्लोक १३०, विजयोदया:
रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथममंगमाचारशब्देनोच्यते।
३. समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९ :
से समासओ पंचविहे पं० तं—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे।
४. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८
(ख) नंदी, सू० ८०।
(ग) अणुओगदाराइं, सू० ५०।
५. सूत्रकृतांगनिर्युक्ति, गाथा २ :
सूतगडं सुत्तकडं सूयगडं चेव गोण्णाइं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभी अंग मौलिक रूप में भगवान् महावीर द्वारा प्रस्तुत और गणधर द्वारा ग्रन्थरूप में प्रणीत हैं। फिर केवल प्रस्तुत आगम का ही सूत्रकृत नाम क्यों? इसी प्रकार दूसरा नाम भी सभी अंगों के लिए सामान्य है। प्रस्तुत आगम के नाम का अर्थस्पर्शी आधार तीसरा है। क्योंकि प्रस्तुत आगम में स्वसमय और परसमय की तुलनात्मक सूत्रता के सन्दर्भ में आचार की प्रस्थापना की गई है। इसलिए इसका संबंध सूचना से है। समवाय और नंदी में यह स्पष्टतया उल्लिखित है—'सूयगडे णं ससमयासूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमय-परसमया सूइज्जंति'[1]।

जो सूचक होता है उसे सूत्र कहा जाता है। प्रस्तुत आगम की पृष्ठभूमि में सूचनात्मक तत्त्व की प्रधानता है, इसलिए इसका नाम सूत्रकृत है।

सूत्रकृत के नाम के सम्बन्ध में एक अनुमान और किया जा सकता है। वह वास्तविकता के निकट प्रतीत होता है। दृष्टिवाद के पांच प्रकार हैं—परिकर्म, सूत्र, पूर्वानुयो।, पूर्वगत और चूलिका।

आचार्य वीरसेन के अनुसार सूत्र में अन्य दार्शनिकों का वर्णन है[2]। प्रस्तुत आगम की रचना उसी के आधार पर की गई इसलिए इसका सूत्रकृत नाम रखा गया। सूत्रकृत शब्द के अन्य व्युत्पत्तिक अर्थों की अपेक्षा यह अर्थ अधिक संगत प्रतीत होता है। 'सुत्तगड' और बौद्धों के 'सुत्तनिपात' में नामसाम्य प्रतीत होता है।

अंग और अनुयोग—

द्वादशांगी में प्रस्तुत आगम का स्थान दूसरा है। अनुयोग चार हैं—

१. चरणकरणानुयोग,
२. धर्मकथानुयोग,
३. गणितानुयोग।
४. द्रव्यानुयोग।

चूर्णिकार के अनुसार प्रस्तुत आगम चरणकरणानुयोग (आचार शास्त्र) है[3]। शीलांकसूरि ने इसे द्रव्यानुयोग (द्रव्य शास्त्र) की कोटि में रखा है। उनके अनुसार आचारांग प्रधानतया चरण-करणानुयोग तथा सूत्रकृतांग प्रधानतया द्रव्यानुयोग है[4]।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९०।
   (ख) नंदी, सू० ८२।
२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३४।
३. सूत्रकृतांगचूर्णि पृ० ५।
   इह चरणाणुओगे ण अधिकारो।
४. सूत्रकृतांग वृत्ति, पत्र १
   तत्राचाराङ्गे चरणकरणप्राधान्येन व्याख्यातम्, अधुना अवसरायातं द्रव्यप्राधान्येयसूत्रकृताख्यं द्वितीयमङ्गं व्याख्यातुमारभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समवाय तथा नन्दी में द्वादशांगी का विवरण दिया हुआ है। वहां सभी अंगों के विवरण के अंत में 'एवं चरणकरणपरूवणता' पाठ मिलता है। अभयदेवसूरी ने 'चरण' का अर्थ श्रमण धर्म और 'करण' का अर्थ पिण्डविशुद्धि, समिति आदि किया है[१]।

चूर्णिकार ने कालिकश्रुत को चरणकरणानुयोग तथा दृष्टिवादको द्रव्यानुयोग माना है।[२]

द्वादशांगी में मुख्यतः द्रव्यशास्त्र दृष्टिवाद है। शेष अंगों में द्रव्य का प्रतिपादन गौण है। द्रव्यशास्त्र में भी गौणरूप में आचार का प्रतिपादन हुआ है। चूर्णिकार ने मुख्यता की दृष्टि से प्रस्तुत आगम को आचार शास्त्र माना है और वह उचित भी है। वृत्तिकार ने इसमें प्राप्त द्रव्य विषयक प्रतिपादन को मुख्य मानकर इसे द्रव्यशास्त्र कहा है। इन दोनों वर्गीकरणों में सापेक्ष दृष्टिभेद है।

ठाणं

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का तीसरा अंग है। इसमें संख्या-क्रम से जीव, पुद्गल आदि की स्थापना की गई है इसलिए इसका नाम ठाणं है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम में 'स्वसमय' (अर्हत् का दर्शन), 'परसमय' तथा स्वसमय और परसमय—दोनों की स्थापना की गई है। जीव और अजीव, लोक और अलोक की स्थापना की गई है।[३] इसमें संग्रह नय की दृष्टि से जीव की एकता और व्यवहार नय की दृष्टि से उसकी भिन्नता प्रतिपादित है। संग्रह नय के अनुसार चैतन्य की दृष्टि से जीव एक है। व्यवहार नय के दृष्टिकोण से प्रत्येक जीव विभक्त होता है, जैसे—ज्ञान और दर्शन की दृष्टि से वह दो भागों में विभक्त है। कर्मचेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना की दृष्टि से अथवा ध्रौव्य, उत्पाद और

---

१. समवायांग वृत्ति, पत्र १०२ :

चरणम्—व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधम्।

करणम्—पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम्।

२. सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० ५।

कालियसुयं चरणकरणाणुयोगो, इसिभासिओत्तरज्झयणाणि धम्माणुयोगो, सूरपण्णत्तादि गणितानुयोगो, दिट्ठवातो दव्वाणुजोगोत्ति।

३. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनाश की दृष्टि से वह तीन भागों में विभक्त है। गति-चतुष्टय में परिभ्रमण करने के कारण वह चार भागों में विभक्त है। पारिणामिकआदि पांच भावों की दृष्टि से वह पांच भागों में विभक्त है। भवान्तर में संक्रमण के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अध:—इन छह दिशाओं में गमन करने के कारण वह छह भागों में विभक्त है। स्यादस्ति, स्याद्नास्ति की सप्तभंगी की दृष्टि से वह सात भागों में विभक्त है। आठ कर्मों की दृष्टि से वह आठ भागों में विभक्त है। नौ पदार्थों में परिणमन करने के कारण वह नौ भागों में विभक्त है। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येक वनस्पतिकायिक, साधारण वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति और पंचेन्द्रियजाति की दृष्टि से वह दस भागों में विभक्त है।[1] इसी प्रकार प्रस्तुत आगम पुद्गल आदि के एकत्व तथा दो से दस तक के पर्यायों का वर्णन करता है। पर्यायों की दृष्टि से एक तत्त्व अनन्त भागों में विभक्त हो जाता है और द्रव्य की दृष्टि से वे अनन्त भाग एक तत्त्व में परिणत हो जाते हैं। प्रस्तुत आगम में इस अभेद और भेद की व्याख्या उपलब्ध है।

समवाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का चौथा अंग है। इसका नाम समवाओ है। इसमें जीव-अजीव आदि पदार्थों का परिच्छेद या समवतार है, इसलिए इसका नाम समवाओ है[2]। दिगम्बर साहित्य के अनुसार इसमें जीव आदि पदार्थों का सादृश्य-सामान्य के द्वारा निर्णय किया गया है; इसलिए इसका नाम समवाओ है[3]।

समवाओ में द्वादशांगी का वर्णन है। यह द्वादशांगी का चौथा अंग है; इसलिए इसमें इसका विवरण भी प्राप्त है।

द्वादशांगी का क्रम-प्राप्त विवेचन नन्दी सूत्र में है। उसके अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।
२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

---

१. कसायपाहुड भाग पृ० १२३

२. समवायांग वृत्ति, पत्र १:
समिति—सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमय:—परिच्छेदो जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौ समवाय:, समवयन्ति वा—समवसरन्ति संमिलन्ति नानाविधा आत्मादयो भावा अभिधेयतया यस्मिन्नसौ समवाय इति।

३. गोमटसार, जीवकाण्ड, जीवप्रबोधिनी टीका, गाथा ३५६:
"सं—संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अवेयंते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्था द्रव्यकालभावनाश्रित्य अस्मिन्निति समवायाङ्गम्।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. द्वादशांग गणिपिटक का वर्णन[1]।

समवायांग के अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है[2]—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।

२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

३. द्वादशांग-गणिपिटक का वर्णन।

४. आहार
५. उच्छ्वास
६. लेश्या
७. आवास
८. उपपात
९. च्यवन
१०. अवगाह
११. वेदना
१२. विधान
१३. उपयोग
१४. योग
१५. इन्द्रिय
१६. कषाय
१७. योनि
१८. कुलकर
१९. तीर्थंकर
२०. गणधर
२१. चक्रवर्ती
२२. बलदेव-वासुदेव।

दोनों विषय-सूचियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि समवायांग की नदि- त विषय-सूची संक्षिप्त है और समवाओ-गत विषय-सूची विस्तृत। विषय-सूची के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का आकार भी छोटा और बड़ा हो जाता है।

दोनों विवरणों में 'सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है' इसका उल्लेख है। अनेकोत्तरिका वृद्धि का दोनों में उल्लेख नहीं है। नन्दीचूर्णी, हारिभद्रीयावृत्ति तथा मलयगिरीयावृत्ति—इन तीनों में अनेकोत्तरिका वृद्धि का कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग की वृत्ति में अभयदेवसूरि ने अनेकोत्तरिका वृद्धि की चर्चा की है। उनके अनुसार सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है और उसके पश्चात् अनेकोत्तरिका वृद्धि होती है[3]।

वृत्तिकार का यह उल्लेख समवायांग के विवरण के आधार पर नहीं, किन्तु उपलब्ध पाठ के आधार पर है—ऐसा प्रतीत होता है।

---

१. नन्दी, सू० ८३ :
से कि तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति। ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ। लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ। समवाएणं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयं-निवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लयग्गे समासिज्जइ।

२. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९२।

३. समवायांग, वृत्ति, पत्र १०५ :
'च शब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च, तत्र शतं यावदेकोत्तरिका परतोऽनेकोत्तरिकेति।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोनों विवरणों की समीक्षा करने पर दो प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१. नन्दी में समवायांग का जो विवरण है, उससे उपलब्ध समवायांग क्या भिन्न नहीं है ?

२. क्या उपलब्ध समवायांग देवर्धिगणी की वाचना का है ? यदि है तो समवायांग के दोनों विवरणों में इतना अन्तर क्यों ?

प्रथम प्रश्न के समाधान में यह कहा जा सकता है कि नन्दीगत समवायांग-विवरण के अनुसार समवायांग सूत्र का अन्तिमविषय द्वादशांगी के आगे अनेक विषय प्रतिपादित हैं। इससे ज्ञात होता है कि समवायांग का वर्तमान आकार नन्दीगत समवायांग-विवरण से भिन्न है।

दूसरे प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर देना कठिन है, फिर भी इतना कहा जा सकता है कि आगमों की अनेक वाचनाएं रही हैं। इसीलिए प्रत्येक अंग के विवरण में अनेक वाचनाओं (परित्ता वायणा) का उल्लेख किया गया है। अभयदेवसूरि ने समवायांग की बृहद्-वाचना का उल्लेख किया है[1]। इससे अनुमान किया जा सकता है कि नन्दी में लघु वाचना वाले समवायांग का विवरण है।

अभयदेवसूरि को प्रस्तुत-सूत्र के वाचनान्तर प्राप्त थे, ऐसा उनकी वृत्ति से ज्ञात होता है[2]।
समवायांग परिवर्धित आकार के विषय में दो अनुमान किये जा सकते हैं—

१. प्रस्तुत सूत्र देवर्धिगणी की वाचना से भिन्न वाचना का है।

२. अथवा द्वादशांगी के उत्तरवर्ती अंश देवर्धिगणी के पश्चात् इसमें जोड़े गए हैं।

यदि प्रस्तुत सूत्र भिन्न वाचना का होता तो इस विषय में कोई अनुश्रुति मिल जाती। ज्योतिष्करण्ड माथुरी वाचना का है--यह अनुश्रुति बराबर चलती आ रही है। उपलब्ध समवायांग भी यदि माथुरी वाचना का होता तो उस विषय की कोई अनुश्रुति मिल जाती।

प्रथम अनुमान की पुष्टि की संभावना कम होने पर दूसरे अनुमान की संभावना बढ़ जाती है। किन्तु भगवती तथा स्थानांग से दूसरे अनुमान का भी निरसन हो जाता है। भगवती में कुलकर, तीर्थंकर आदि के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[3]। इसी प्रकार स्थानांग में भी बलदेव-वासुदेव के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[4]। इससे ज्ञात होता है कि परिशिष्ट-भाग देवर्धिगणी के समय में ही जोड़ा गया था।

---

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र ५८ : बृहद्वाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वयं नाधीयते।
(ख) वही, पत्र ५९ : बृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते।

२. समवायांग वृत्ति, पत्र १४४ : वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम

३. भगवई शतक ५, उद्देशक ५।

४. ठाणं ९।१९,२०।

एक आगम के लिए एक संकलनकार के द्वारा दो प्रकार के विवरण (समवायांग तथा नंदी में) दिए गए—यह विचित्र बात है।

माथुरी और वल्लभी—ये दो मुख्य वाचनाएं थीं। गौण वाचनाएं अनेक थीं। इसीलिए अनेक वाचनान्तर मिलते हैं। ये वाचनान्तर संभवतः व्याख्यांश या परिशिष्ट जोड़ने से हो जाते। समवायांग में द्वादशांगी का उत्तरवर्ती भाग उसका परिशिष्ट भाग है—ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिशिष्ट का विवरण समवायांग के विवरण में परिवर्धित किया गया, इसलिए उसकी विषय-सूची नन्दीगत समवायांग की विषय-सूची से लम्बी हो गई। परिशिष्ट भाग में प्रज्ञापना के ग्यारह पदों का संक्षेप है, ये किस हेतु से यहां जोड़े गए, यह अन्वेषण का विषय है।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Editorial

Ayaro

The text of the Āćārānga, adopted by us, does not depend on one specimen only. We have adopted it on the review with reference to the specimens in use, the Ćūrṇi and the Vṛitti. The three sūtras (27-29) in the second 'Uddeśaka' of the first Adhyayana of the 'Āyāro' are found in all the other five Uddeśakas also. In the specimens used in the redemption of the text as well as in the Āćārānga Vṛitti they are not found. In the Āćārānga Ćurṇi, commencing from the Sūtrā 'lajjamāṇā puḍhopasa' (Āyāro, Sū. 16, page 4) to the Sūtra 'Appege Sampamārae, Appege Uddawae' (Āyāro, Sū. 29, page 6), it is considered as 'Dhruvakanḍikā' (the one and the same text)[1].

On the basis of the indications found in the Čūrṇi, we have adopted the three Sūtras in the second Uddeśaka in the rest five Uddeśakas.

In place of 'Kumbhārāyataṇamsi wā, in the Ćūrṇi[2] of the second Uddeśaka (Sū. 21) of the eighth Adhyayana, many a word is found, e.g. 'uwattaṇagihe wā, gāmdeulie wā, kammagārasālāe wā, tantuwāyagasālāe wā, lohagārasālāe wā'. The Čūrṇikāra further writes—'Jaćiyāo Sālā Sawwāo māṇiyawwāo'[3].

Here it appears that the word 'Kumbhārāyataṇamsi wā' was added with many other words meaning 'Śālā' or house but, in the course of time due to the faulty scribing, all the other words were left out. It is not possible to decide the text-system on the basis of the Čūrṇi only. This is why it has not been included in the text.

---

1. See—Ayaro, page 8, footnote no 2, page 11 ; footnote no. 2, page 14 ; footnote no 1, page 16 ; footnote no. 3, page 19 ; footnote no. 4.
2. Acaranga Curni, page 260–261
3. Acaranga Curni, page 261.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

We have completed the abridged text, too. The tradition to abridge the text was in vouge due to learning of the Śruta by heart and making the scribing easy. Pandit Bećar Das Joshi had written to Āćarya Tulsi, throwing light on this topic in an article, on 8th December 1966. He observes, "The traditional Jain Śramaṇas considered the tendency to write and get written as sinful activities. They, nevertheless, adopted this path as an acception to safe-guard the scriptures. The less writing, the better. Taking this they, surely, tried to search out the way to reduce the sinful activity to the least for the safeguard of the scriptures. In the search of this path they found two novel words as 'Waṇṇao' and 'Jāwa'. With the help of these two words, they could abridge thousands of Ślokas and hundreds of sentences and their beginning was shortened as well as no deficiency occured in understanding the meaning of the scripture."

Three reasons—the system to learn the Śruta by heart, convenience by the script and the intention to write briefly, are probable to cause the abridgement of the text. It has undoubtly, caused no deficiency in the meaning, but it has marred the charm of the text. The difficulties of the reader have also increased. The Munis, having the whole Āgama literature learnt by heart, can make out the antecedents and precedents referred to by the words 'Jāwa' and 'Waṇṇaga' but the class of Munis learning with the help of the manuscripts cannot do so. The text, having the references of 'Jāwa' and 'Waṇṇaga', has not proved to be much beneficial to them. We, too have been experiencing this difficulty apparently. To solve this difficulty and bring back the beauty of the text Āćarya Tulsi, our Vāćanā-head, desired that the abridged text be recompleted. We have accordingly, completed the abridged text in most places. To indicate that 'dot-marks' have been given. In the first and the second appendices, the tables to point out the places of completion in the 'Āyāro' and the 'Āyāra-ćūla' have been added.

According to Bećara Das Joshi, the text-abridgement was done by Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa. He writes—"Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa, while reducing the Āgamas in writing, kept some important points in mind. Where ever he found similar readings he avoided the later one by using the words e.g. 'Jahā Uwawāie', 'Jahā Paṇṇawaṇae' etc. to denote the omitted text. When some statement occured again and again in a work, he used the word 'Jāwa' and wrote the last word of it refraining from the repetition, e. g. 'Nāga Kumārā Jāwa wiharanti', 'Teṇa Kāleṇa Jāwa Parisā Niggaya' etc.'[1]

1. Jain Sahitya ka Vrihat Itihas, page 81.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The process of abridgement might have been started by Devardhigaṇi, but it developed in later period. In the specimens, available at present, the abridged text is not uniformal. A Sūtra has been abridged in one specimen but written in its full version in the other. The commentators have also mentioned it in many places. In the Āupapatik Sūtra, for example, these two passages, "Ayapāyāṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā" and 'Ayabandhaṇaṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā' are found. They were in the abridged form in the main specimens the Vṛittikāra had, but their ful version too, was found in other specimens. The commentator himself has noted it[1]. Many a time, the scribes, according to their own convenience did not write the preceding text again others followed them in the later specimens.

SŪYAGADO

We have adopted the text of the Sūtra Kṛita depending not on one specimen only. It has been redeemed after the comparative study, based on the specimens used in the text-redemption, the Ćūrṇi and the readings of the Vṛitti, and their critical review as well.

The system to write was little popular in ancient times. Almost all the scriptures were maintained traditionally learnt by heart. This is why the 'Ghośa-Suddhi' (correctness of pronounciation) was much stressed upon. This was a pious duty of the Āćārya to correct the seat of utterence of the disciples. The Daśāśrutaskandha Sūtra says[2]—to become 'Ghośa-Sudhi-Kārka' is one of the virtues of an Āćārya. Special arrangement was there to maintain the text and the meaning in the original form. The Čhedasūtras throws full light on it.

Eight kinds of the Jñānāćāra have been enumerated[3]. Of them, the three Āćāras are concerned with the said arrangement.
They are[4]—

---

1. (a) Aupapatika Vritti, patra 177.
   (b) Pustakantare Samagramidam Sutradwayamastyeveti.
2. Dasasrutaskandha, Dasa 4.
3. Nisithabhasya, Gatha 8, part 1, page 6:
   Kale vinaye bahumane, uwadhane taha aninhawane,
   wanjana-atthatadubhae, atthawidho nanamayaro.
4. Ibid, gatha 17, part 1, page 12:
   Sakkayamattabindu Annabhidhanena wa witam Attham,
   Wanjeti Jena Attham, wanjanamiti bhannate suttam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. Vyanjana—To maintain the language, vowel-marks, nasal points and words of the text of Sūtra, as it is.

2. Artha—To maintain the purport (meaning) of the sutra as it is.

3. Vyanjana as well as artha—To maintain the Sūtra and its meaning both in the original form.

The Ćūrṇikāra makes it clear with examples[1]. 'Dhammoma ngalam mukkiṭṭham' is expressed in Prākṛit language. To render this reading in Sanskṛit 'Dharmo Mangalamutkṛiṣṭam' as such is a dialectical sin of Vyanjana.

In the same way, to utter 'Sawwam sāwwajjam Jogam paććakkhāami' as 'Sawwesāwajje joge paććakkhami' by changing its vowels is a diacritical sin of Vyanjana.

likewise, to utter 'Namo arahantāṇani' as 'Namo arahantāṇa' omitting the therepotent point of nasal sound and also to pronounce 'Namo aramhantāṇam' adding the point of nasal sound with 'ra' when it is not there, is a nasal-point-change sin of Vyanjana.

To bring in the synonyms, in place of the original words of 'Dhammo mangalam mukkittham', such as 'Puṇam Kallāṇa mukk osam' is also a different-word-sin of Vyanjana.

The conclusion of all this account is to stress upon that the originality of language, vowel mark, point of nasal sound, word, word-number, and text-order must be maintained in all respects. Rules were laid down to expiate the sin against this arrangement. On changing the language, the vowel-mark or the point of nasal sound one has to undergo the specified atonement. On doing the Sūtra-Pātha otherwise an expiation of four months followed.[2]

In the conclusion of the topic, the Ćūrnikāra writes[3]—A change of Sūtra causes a change of meaning, a change of meaning causes a change of

---

1. Nisithabhasya curni, Part I, page 12.
2. Ibid.
3. Nisithbhasya, Gatha 18, Curnibhasya 1, page 12.
Suttabheya atthabheo, atthabheya caranabheyo, caranabheya amokkho. Mokkhabhawat dikkhadayo Kiriyabheda aphala bhawanti. Taha vanjanabhedo na kayawwo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

conduct and the change of conduct makes the salvation impossible. In that case all the rites, such as Dīkśā etc. become futile. A change of Vyanjana, therefore, be not done.

Likewise, a change of meaning also be not made. The meaning that is uncouth and not applicable be not carried out. On changing the meaning, an expiation for four months follows[1].

Similarly, on changing the Sūtra and its meaning together, both the aforesaid expiations fall on[2].

A deep thinking had taken place to maintain the originality of the Sūtras and their meaning even in the period of composition of the Āgamas. In the present Sūtra, it is clearly stated. A muni studying the work has been alerted that he in no way is set up a Sūtra and its meaning differently or expound it otherwise.[3] The Ćūrṇikāra annotates it thus[4]. In no way a Sūtra be done otherwise. The meaning and that meaning only be carried out which is consistant with its own principle. The Vṛittikara writes[5]—A Sūtra be not added to intentionally or a Sūtra or its meaning be not done otherwise.

From the aforesaid account it is learnt that it was keenly endeavoured to maintain the Sūtra and its meaning in its original form. As a result, it has been maintained also to some extent. We can, nevertheless, not say that it has not been changed. It has been done and the reasons for it are also there, e.g.

1. Forgetfulness

---

1. Nisithbhasya Curni, part 1, page 13.
2. Ibid.
3. Sutrakrita 1/14/26.
   No Suttamattha cakarejja annam.
4. Sutrakrita Curni, page 296.
   Na Sutramanyat praddhesena karotyanyathawa. Jaha ranno bhattansino ujjawalaprasno namarthas tamapi nanyatha kuryat; Jaha 'Awantike Awantieke Yawanti tamtogo wipparmsanti'. Sutram sarwathaiwanyatha na Kartawyam, arthavikalpastu swasiddhantavinuddho aviruddah syat.
5. Suttrarkitavrtti, page 258.
   Na ca Sutramanyat Swamativikalpanatah swarparatrayi Kuritanyatha wa suttram todartha wa sansarattrayitrana sito jantunam na vidadhita.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. Change of script
3. Assimilation of the commentary with the text.
4. Intervention of time and place.

When Sīlāṅkarsūri wrote his Vṛitti on the 'Sūtrakṛita', he had its specimens and ancient commentary (Tīka) both. In one place of the second Addhyayna of the second Śrutāskandha, the reading was not similar to that of the specimens, and the reading, that was commented on, was not found consistant with that of any specimen. He, therefore, commented on the said passage honouring only one specimen.[1]

We have adopted the readings of the Ćūrṇī in some places. In comparision to that of the specimens and the Vṛitti they appear more relevant.

In 2/6/45 the reading is 'ṇiho nisam'. It has been commented on in the Vṛitti as 'ṇiwo ṇisam'. We have adopted the reading of the Ćūrṅi there[2].

We have discussed the changes in the text and their causes under the footnotes. It was keenly endeavoured in the Vedic tradition also to maintain the originality of the text of the Vedas. But in their texts, too, there have been timely violations. Dr. Viśwabandhu writes[3]—"It is a fact accepted by all that great pains, which know no parallel in the world history of literature, were taken in this country to maintain the texts of the Vedic literature in their original and correct form by learning them by heart with great care and utmost reverence during the past five thousand years. Nevertheless, as the scholars, preceding to us, inicidently found here and there as we have largely seen during our incessant research work for the past forty years, these works, too, could not be saved from the effects of time bound damages and insufficient human hurlings. Had it been mostly the other way, truly, it would be an incredible miracle."

Continuing with the tradition of cramming and passing from one to the other age of script-change in the prolonged period. Some places of every work have deviated from their originality

---

1. Suttrakritavritti, page 79 :
   Iha ca prayah suttradarsesu nanabhidhani Suttrani drisyante, na ca tika sambadhekapyasmabhiradarsah samuphabdhot ekamadarsamangikrityasmabhi viwaranam kriyate.
2. See, Footnote on 2/6/45.
3. Akhilabharatiya praciya-vidya Sammelan, Twentifourth gathering, Varanasi 1968, Mukhyadyaksiya speech, page, 8-9.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THĀNAM

A word has different forms in Prākṛit, and these different forms are used, too, in the Āgamas. Some scholars, engaged in the editing work of the Āgamas, have stressed upon that the uniformity in the form of words should be brought up. We have not adopted this method of editing. Although accepting the sameness of the sound 'na' and 'ṇa', only 'ṇa' has been used in all the places, the principle to bring up uniformity in different forms everywhere has not been observed. In 3/373 two forms 'Sugati' and 'Suggati' are found; in 3/375 'Sogata', 'Sugata' and 'Suggata', three forms are found. We have adopted them as they are. The authors are free in their usages. As they are not the bondsmen of the rule of uniformity, to try to bring uniformity in the editing-work does not seem desirable.

The Āgamas contain the usages of different languages and syllable changes. In bringing up uniformity in them, the probability to forget the multiformity may arise. 'Wayeṇam' as well as 'Kamasā' both the forms are used. 'Aṇḍaya' as well as 'Aṇḍagā' for 'Aṇḍajāh' and 'Kammabhumiyā' as well as 'Kammabhūmigā' for 'Karmabhumijāh' both the forms are formed. To keep up the form as found in a particular place is not a fault of editing.

SAMAWĀO

The text redemption of this Sūtra is based on three specimens and the Vṛitti as well. In some places other works, too, have been used to redeem the text. In the specimens of the 'Prakīrṇa Samawāya' (Sūtra 234) the reading 'Assaseṇe' is not found. This is the name of the father of fourth Cakrawarti. In the absence of it, the arrangement of further names becomes inconsistent. In the Sangraha Gathas of the said Sūtra, the name 'Padmottara' is in excess. It has been taken as a recension. The reading 'Assaseṇe' is found in the Āwaśyaka Niryukti (399). Basing on it 'Assaseṇe' has been adopted as the text-reading.

In the Sangraha Gatha of the Prakirṇa Samawāya (Sūtra 230) Baldeva-Vasudeva's father's name are given. Basing on the Sthānānga (9/19) and the Āwaśyaka Niryukti the amendment has been carried out. The name of the third Baladeva-Vāsudeva's father is 'Rudda', but the manuscript of the Vṛitti of Samawāyānga mentions it as 'Soma' instead of 'Rudda'. In fact, 'Rudda' should follow 'Soma'.

1. See, Samawao, painnagasamawao, Sutra. 230, the first footnote.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In all the specimens of the Samawāya 30 (Sūtra 1, gatha 26) it reads 'Sajjhayawāyam'. The vrittikāra, too, explains it as 'Swādhyāyawādam'. But it is not relevent as far as the meaning is concerned. The said 'gāthā' is found in the Daśāṣrutaskandha (Sūtra 26) where the reading is 'Sabbhāwawāyam' instead of 'Sajjhayawāyam'. The Vṛittikāra of 'Daśāsrutaskandha' has given its Sanskrit form as 'Sadbhāwa wādam'. On reviewing the meaning critically, this reading appears to be relevent[1].

---

1. See, Samawao, Samawaya 30, Sutra. 1, the second footnote of Sutra 230.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Forward

The Classification of the Agamas

The most ancient part of the Jain literature is the Āgama. The Samawāyānga mentions two forms of the Āgama, such as, 1. Dwadaśanga gaṇipitaka[2] and 2. Ćaturadaśapūrwa[3], In the Nandi, two divisions of the Śrūta-Jyāña (Āgama) have been given. 1. Anga Praviṣṭa and Angavāhya[3]. The accounts, found regarding the Adhyayanas of the Sādhus and Sadhwis (monks and nuns), pertain to the Angas and pūrwas, as

1. The readers of the eleven Angas beginning from the Sāmayika—

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin ahijajai (Antagaḍa, Prathama Varga). This statement is found regarding Gautama, the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa angāin Ahijajai (Antāgaḍa, Panćam Varga, Prathama Adhyayana). This statement relates to Padmavati, the disciple of lord Ariṣtānemi.

Sāmāiyamāiyāin ckkarasa-angāin (Antagaḍa, Aṣtama Varga, Prathama Adhyayana). This statement pertains to Kāli, the disciple of lord Mahavīra.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin Ahijajai (Antagaḍa Saṣṭa Varga, 15th Adhyayana). This statement has been given regarding Atimuktakumara, the disciple of lord Mahavīra.

2. The readers of the twelve Angas—

The statement regarding Jālīkumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi, is given as such Bārasangī (Antagaḍa, Ćaturtha Varga, Prathama Adhyayana).

---

1. Samawayanga, Prakirnaka, Samawaya, Sutra. 88.
2. Ibid, Samawaya 14, Sutra. 2.
3. The Nandi, Sutra. 43.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. The readers of the fourteen Pūrwas—

Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tṛitiya Varga, Navama Adhyayana). This is the statement found regarding Sumukhakumāra the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tṛitīya Varga, Prathama Adhyayana). This statement is found regarding Aṇiyasakumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi.

There were three hundred and fifty ćaturdaśa-pūrwī munis of lord Pārśwa.[1]

There were three hundred ćaturdaṣa- pūrwī munis of lord Mahāvirā.[2]

The division, Anga-Praviṣta and Anga-Vāhya, have not been given in the Samawāyānga and Anuyogadwāra. This division first have been made in the Nandi. The later sthaviras composed the Anga-Vāhya. Many anga-vāhyas had been composed before the composition of the Nandi and they were done by the ćatūrdaśa-pūrwi or daśa-pūrwi sthaviras. They were, therefore, taken as solemn as the Āgama and two divisions were made of it such as, 1. Anga-praviṣta and 2. Anga-Vāhya. This division is not found in the Anuyogdwāra (sixth century of the Vira-Nirwaṇa). This was first done in the Nandi (tenth century of the Vira-Nirwaṇa)

When the Nandi was composed, the Āgama was classified threefold, 1. Pūrwa, 2. Anga-Praviṣta and 3. Anga-Vahya. What we have today is only 'Anga-Pravista and 'Anga-vahya'. The 'purwas' are extinct. Their extinction is a subject of delibration from the historical point of view.

PŪRWA

According to the Jaina tradition, the Pūrwa is the Akśaya-Koṣa (in exhaustible lexicon) of the Śruta-Jyañā (word knowledge). All do not hold one and the same view about the meaning of the title and their composition. The ancient Āćāryas hold that as they were composed before the 'Dwādaśāngī' they were given the title 'Purwa'[3] But the modern, scholars

1. Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 14.
2. Ibid, Sutra. 12.
3. Samawayanga vritti, Patra 101:

   Prathamam Purwam tasya Sarwa pravacnat purwam Kriyamanatwat.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

view that the 'Pūrwa' was the Śruta-Rāśi of the tradition of lord 'Pārśwa and preceding to Lord Mahāvīra, it was, therefore called 'Pūrwa'. Whatever view of the two is accepted, the conclusion is the same that the 'Pūrwas' were composed before the 'Dwadaśāngī' or the 'Dwādaśangi' is a later composition than the 'Pūrwas'[1].

In the form the 'Dwādaśāngi' is now found, the 'Pūrwas' are assimilated. The twelfth Anga is 'Driṣṭiwāda'. One of its divisions is 'Pūrwagata'. The fourteen 'Pūrwas' are included in it. The opinion that lord Mahāvira first composed the 'Pūrwagata 'Śruta', leads us to the conclusion that the forteen 'Pūrwas' and the twelfth Anga are one and the same. The 'Pūrwa-śruta was very difficult to understand. The common people could not follow it. The Angas were composed for the benefit of less intelligent persons. Jinabhadra-gaṇī Kśamāśramaṇa says 'The Dṛiṣṭiwāda contains all the word-knowledge (śabda-Jyaña). The eleven Angas, nevertheless, have been composed for the good of less intelligent people.[2] The eleven Angas were studied only by those monks (Sadhus) who were not very intelligent. The intelligent munis studied the 'Pūrwas'. From the order of classification of the Āgama, it is concluded that the eleven Angas are easier than Dṛiṣṭiwāda or Pūrwas or have been in a different order from theirs.

According to the Digambara tradition the Kewalis became extinct after 62 years of 'Vīra-nirwāṇa'. After that, for a hundred years only Srūta-Kewalis (Caturdaśa-Pūrwis) were found. Beyond that for one hundred and eightythree years only Daśapūrvīs were found. And, later to them for a period of two hundred and twenty years only the eleven-Angadharas were found.[3]

The discussion, given above, makes it quite clear that so long as the Āćāra etc. Angas were not composed, the Śruta-Raśī of lord Mahavira was called 'Ćaudaha Pūrwaś or 'Dṛiṣtīwāda'. When the eleven Āćāra

---

1. Nandi, Malayagiri vritti, Patra 240.
   Anye tu wyacaksate purwam purwagatasutrarthamarhan bhaste, Ganadhara api purwam purwagata Sutram Viracayanti, Pascadaearadikam.
2. Visesawasyaka Bhasya, Gatha 554.
   Ja-i-wi ya Bhutawa-e sawwassa waogayassa Nijjuhana Tahawi hu, dummehe pappa itthi oyaro ya.
3. Jayadhawala, Prastawana, Page 49.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

etc. Angas were composed, the Dṛiṣṭiwāda was given in the form of the twelfth Anga.

Though the two different accounts[1], such as, 'readers of the twelve Angas' and 'readers of the fourteen Pūrwas' are found, it cannot be said that the scholars in the fourteen Pūrwas were not scholars in the twelve Angas and vice-versa. Gautama Swami was called 'Dwādaśāngavit'[2]. He was a 'ćaturdaśa-pūrvī' as well as 'Angadhara'. A 'śruta-kewali' was somewhere called 'Dwādaśāngavit' and sometimes 'ćaturdaśa-pūrvī' as well.

As the eleven Angas are taken from or a collection of the Pūrwas, a 'ćaturdasa-pūrvi' is, of course, a 'Dwādaśangī' also. As the fourteen Pūrwas are incorporated in the twelfth Anga, a 'Dwādaśāngavit' too. We, therefore, reach this conclusion that the Āgama had only two ancient classifications 1. the Fourteen Pūrwas and 2. the eleven Angas. The 'Dwādaṣangi' had no independent standing. This is the title given to the Pūrwas and the Angas jointly.

Some modern scholars hold the Pūrwas, to be of the period of lord Pārśwa and the Angas of lord Mahāvīra. But this view is not correct. The tradition of the Pūrwas and the Angas was prevelent at the time of lord Ariṣṭanemi and lord Pārśwa too. That the Angas were composed for the use of less intelligent people has been told before. That the intelligence quotient of all the Munis at the time of lord Pārśwa was equal is incredible. The intelligence quotients have always differed in each and every age. Considering from the psychological and practical view, we reach the conclusion that the necessity of the Angas prevailed in the order of lord Pārśwa too. To support this view that at the time of lord Pārśwa only the Pūrwas and not the Angas existed, no evidence is, therefore, found. By common sense this fact is estabilished that the Pūrwas and the Angas were renovated according to the purport, language, style and necessity of the age in the order of lord Mahāvīra. Fancy has, perhaps, played a main role to support the view that the Pūrwas were received traditionally from lord Pārswa and the Angas were composed in the tradition of Lord Mahāvīra.

3. Anga-Praviṣṭa and Anga-Vāhya

It is heard by all that the gaṇadharas Gautama etc., composed the Pūrwas and the Angas at the time of lord Mahāvīra. A simple question

---

1. See the beginning of the preface.
2. Uttaradhyayana 23/7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

arises if other Munis did not compose the Āgama works. There had been fourteen thousand desciples of lord Mahāvīra[1]. Of them seven hundred were 'Kewalīs' and four hundred 'Wādīs'. That they did not take part in the composition of the Āgamas does not seem credible. The Nandī says that the disciples of Lord Mahāvīra composed fourteen thousand 'Prakīrṇakas'[2] besides the aforesaid 'Pūrwas' and 'Angas'. Nothing proves that the classification, such as 'Anga-Praviṣṭa' and 'Anga-Vāhya' was done at that time. When the later Āćāryas compiled the works after the 'Nirwana' of lord Mahāvīra, the discussion was, perhaps, held to classify them under the Āngamas or not and the question of their authenticity, too, arose. After the discussion it was decided to classify the works, composed by the 'ćaturdasa-pūrvī' and the 'Dasa-pūrvī' sthaviras, under the Āgama but they were not considered authentic by themselves. Their authenticity depended on others. That they are consistent with the 'Dwādaśāngī' was the touch-stone to give them the title of the Āgama. As their authenticity was dependent, the necessity was felt to keep them out of the class of the 'Anga Praviṣṭā' and, in this content only, the 'Anga-Vahya' class of the Āgama took place.

Jinabhadragaṇi Kṣmāṣramaṇa ascertains the kinds of 'Anga-Praviṣṭa and 'Anga-Vahya' on three grounds, such as—

1. That which is composed by a gaṇadhara.

2. That which is expounded by a Tīrthankara on the query of a gaṇadhara.

3. That which is pertaining to the firm-eternal truths, and is perpetual and permanent; and that Śruta only is entitled as 'Anga-Praviṣṭa'.

Contrary to this 1. that Śruta which is composed by a Sthavira, temporary or suited to the times only is entitled as 'Anga-Vāhya'[3].

The main ground to differenciate the Anga-Praviṣṭa from the Anga-

1. Samawayanga, Samawaya 14, Sutra 4.
2. Nandi, Sutra. 78.
   Coddaspa-i-nnagasasahassani Bhagwa-O Baddhamanassa.
3. Visesavasyakabhasya, Gatha 552.
   Ganahara-therakatham wa, Aesa. Mukka-wagarana-O wa. Dhuva-cala visesa-O wa, Anganamgesu Nanattam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

vāhya is based on the difference of the person who has spoken it[1]. The Āgama delivered by Lord Mahavira and compiled by the gaṇadharas, is accepted as the basic Angas of the Śruta-Puruṣa. It is, therefore called the 'Anga-Praviṣṭa.' According to Sarvārthsiddhi the speakers are of three kinds, 1. the Tīrthankara, 2. the Śruta-Kewali and 3. the Ārātiya[2]. The Āgamas Composed by the Ārātīya Āćāryas are regarded as 'Anga-Vāhya'. According to Āćārya Akalanka, the Āgamas composed by the Ārātiya-Āćārya reflect the meaning supported by the Angas[3]. They are, therefore, called the 'Anga-Vāhyas.'[3] The Anga-Vāhya Agamas are as good as the Pratyanga or Upānga of the Śruta-purusa.

ANGA

The twelve Āgamas incorporated in the Dwādaśāngī are called Angas. The word 'Anga' is found in the literature of Sanskrit and Prakrit both. In the Vedic literature the works assisting the study of Vedas are given the title of 'Anga' They are six—

1. **Siksa**—The work that expounds the rules of utterence of the words.
2. **Kalpa**—The scripture that expounds the vedic rites and rituals in an order and agreement.
3. **Vyakarana**—The scripture that expounds the theories of morphology and meaning of the words.
4. **Nirukta**—The scripture that expounds etamology of the words.
5. **Chandas**—The scripture that expounds the theories of morpheme to recite the Mantras.
6. **Jyotis**—The scripture that expounds the theories to find correct time for the rites of Yajna-Yāga etc.

The Vedas have been personified in the Vedic-literature. Accordingly the 'Sikṣā' has been regarded as nose, the' kalpa' as hands, the 'Vyākaraṇa' as mouth, the 'Nirukta' as ears, the Čhandas as feet and the Jyotiṣ as eyes of the Veda-person. They are therefore, called the parts of the body of Vedas[4]. In the Pali-literature, too, the word 'Anga' has beenu sed. At one place the 'Buddha-Vaćanas' have been called 'Nawānga' and 'Dwādaṣānga' at the other.

1. Tatwartha-bhasya, 1/20.
   Waktri-visesad dwaividhyam.
2. Sarvarthasiddhi, 1/20
   Trayo waktarah - Sarvajna Tirthankarah, itaro wa Srutakewali Aratiyasceti.
3. Tattwartha - Rajavarttika, 1/20.
   Aratiayacarya Kritangarthapratyasannarupamangavahyam.
4. Paniniyasiksa, 41, 12.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Nawanga

1. **Sutta**—The sermons of lord Buddha in prose.
2. **Geyya**—The mixed portion of prose and verse.
3. **Vaiyyakarana**—The works containing explanation.
4. **Gatha**—The works composed in verse.
5. **Udana**—The gistful and affectionate expressions delivered from the mouth of lord Buddha.
6. **Itibuttaka**—Small lectures beginning with the words, 'Lord Buddha said thus'.
7. **Jataka**—The stories of the former births of lord Buddha.
8. **Abbhutadhamma**—The work that explains the mysterious things or the superhuman powers born of the 'Yoga'.
9. **Vedalla**—Those sermons which have written in the form of dialogues.[1].

Dwadasanga

1. The Sutra, 2. the Geyya, 3. the Vyākarane, 4. the Gatha, 5. the Udana, 6. the Awadana, 7. The Itivṛittāka, 8. The Niduna, 9. the Vaipālya 10. The Jataka, 11. the Upadeśa-dharma and, 12. the Adbhuta-dharma.[2]

The Jaināgama has been divided into twelve Angas—

1. The Aćara 2. The Sūtrakṛita 3. The Sthāna 4. The Samawāya 5. The Bhagawati 6. The Jynātā Dharmekatha 7. the Upāsakadaśa 8. the Antakṛita 9. the Anuttaropapātika 10. the Praśna-Vyākaraṇa 11. the Vipāka and 12. the Dṛiṣtiwāda.

The word 'Anga' has been used in the three chief Indian philosophical schools. The main works of the Vedic and Buddhist literature are the Vedas and the Pitakas respectively. Nowhere the word 'Anga' has been added to them. The main works in the Jain literature have been classified as the Gaṇipitaka. The Gaṇipitaka has the twelve Angas—'Duwālasange gaṇipitage[3].

---

1. Saddharma Pundakrika Sutra, page 34.
2. Buddha Sanskrit Grantha 'Achisamayalankar' Ki tika, Page, 35.
   Sutram Geyam Vyakaranam, Gathoanavadanakam.
   Itibrittakam Nidanam, Vaipulayam ca Sajatakam.
   Upadesadbhutau dharman, Dwadasangamidam vacah.
3. Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 88.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The personification of 'Śruta-Puruṣa' too, is found in the Jain-tradition. The twelve Āgamas, Āćara etc., are like the parts of the 'Śruta Puruṣa'. They are, therefore, called the twelve Angas[1]. So the Dwādaśānga becomes the adjective of the Gaṇipitaka and the Śruta-Puruṣa' both.

ĀYĀRO

The title

This Āgama is the first Anga of the 'Dwādaśāngī'. As it contains the account of the conduct (Āćāra), the title 'ĀYĀRO'. It has two Śruta-skandhas—1. ĀYĀRO, 2. ĀYĀRAČULA

The Contents

The Samawāyānga and the Nandi give an account of the Āćārānga. According to that the present Sūtra explains the Āćara, Gočar, Vinaya, Vainayika (fruit of vinaya), (Utthitāsana, Niṣaṇāsana and Śayitāsana), Gamana, ćamkramaṇa. Dose of food etc., application of Yoga in self study etc., language, Samiti, Gupti, Śayya, Upadhi, Bhakta-Pāna (edibles and drinks), Udgama-Utthana, the purity of 'eṣṇā' (motives) etc[1]. the discernment of taking Śuddhāśuddha, Vṛita, Niyama, Tapas, Updhan etc[2].

Āćārya Umāswāti has expounded the topics of every Adhyayana in the Āćārānga in brief That is given in the order as under :[3]

1. Śaḍajīvakāya Yātnā.
2. Renunciating the glory of the wordly off-springs.
3. Winning over of the Pariṣahas, such as cold-hot etc.
4. Undaunted Samyaktwa.
5. Udvegas of the world.
6. The means of nullifying the 'Karmas' (deeds).
7. The endeavour to 'Vaiyavṛitya'.
8. The way to penance.

---

1. Mularadhna 4/599, Vijayodaya :
   Srutam Purusah Mukhcaranadyangasthaniyatwadangasabdenocyate.
2. (a) Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 89.
   (b) Nandi, Sutra. 80.
3. Prasamarati Prakarana,114-117.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

9. Renunciation of passion for woman.
10. Rules to receive the alms.
11. Bed without woman, Creature, eunuch etc.
12. Purity in movement.
13. Purity of language.
14. Method of begging cloth.
15. Method of begging bowls.
16. Purity of habit (Avagraha).
17. Purity of Place (Sthāna).
18. Purity of 'Visadya'.
19. Purity of 'Vyutsarga'.
20 Renunciation of attachment to sound
21. Renunciation of attachment to form.
22. Giving up 'Parakriya'.
23. Giving up 'Anyonya-kriya'.
24. Steadfastness to the Five Mahāvṛitas.
25. Libration from 'Sarvasangas' (all associations).

The Niryuktikāra has enumerated the topics of the nine Adhyayanas ol Brahmaćarya as under :

1. *Satya Parinna*—Jiva Samyama.
2. *Loga Vijaya*—Knowledge of bondage and libration.
3. *Siosanijja*—Equanimity of pleasure and pain.
4. *Sammatta*—Right vision.
5. *Loga-Sara*—Renunciation of worthless and adoration of the Ratnatrayi, worthy in the world.

---

1. Acaranga Niryukti, Gatha 33-34 :
Jiyasamjamo a logo jaha bajjhai jaha ya am pajahiyav vam,
Suhadukkhatitikkhaviya sammattam logasaro ya.
Nissangaya ya chatthe mohasamuttha parisahuwasagga,
Nijjanam atthamae nawame ya jinena evamti.

2, Tatwartha Rajavarttịka, 1/20.
Acare carya-vidhanam sudhyastaka paniasamiti-triguptivikalpam kathyate,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

6. *Dhuya*—non-attachment.
7. *Mahaparinna*—Enduring properly the Pariṣahas and Upsargas born of 'Moha'.
8. *Vimokkha*—Proper observanes of 'Niravaṇā' (the final state).
9. *Uvahanasuya*—Explanation of the conduct observed by lord Mahāvira[1].

Āćārya Akalaṅka holds that the total matter of the Āćārānga is concerning the 'Ćarya-Vidhana' (mode of behaviour and conduct)[2]. While Aparājit Suri opines that it is the ascertainment of the conduct of the 'Ratna-trayī'[1].

SŪYAGADO

The Title

This Āgāma, the second part of the Dwādasāngi, is given the title as 'Sūyagaḍo'. The Samawāya, the Nandi and the Anuyogadwār, all the three Āgāmas have this title only for it.[2] Bhadrawāhu-Swāmi, the Niryuktikāra has given three titles of this Āgama according to its tributes.[3]

1. Sūtagaḍa—Sūtakṛita
2. Suttakaḍa—Sūtrakrita
3. Sūyagaḍa—Sūćākrita

Originally this Āgama is 'Sūta' (hails from) by lord Mahāvīra and was given the form of a work by gaṇadhara. This is, therefore, entitle as 'Sutakrita'.

As the truth in it has been ascertained according to the 'Sūtrā', it is 'Sutrakṛita'.

As the 'Sūćanā' of 'Swa' and 'Para' Samaya has been given in it, it is called 'Sūćā-krita.'

---

1. Mularadhna, Aswasa 2, Sloka 130, vijayodaya : Ratnatrayacarana nirupanaparataya prathamabhangamacare sabdenocyate.
2. (a) Samawao, Paissagamawao, Sutra. 88.
   (b) Nandi, Sutra. 80.
   (c) Anuogadwarain, Sutra. 50.
3. Sutrakritanga-niryukti, Gatha 2: Sutagadam, suttakadam, suyagadam cewa gonna-in.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'Sūta', 'Sutta' and 'Sūya' are as a matter of fact, the Prakṛit forms of 'Sūtra' only. These different formations led to the imagination of the three attributive titles.

Originally, all the Angas were delivered by lord Mahāvīra and brought into a composed form by Gaṇadhara. Then, how can this Āgama only be called 'Sūtrakṛita'? Similarly, the second title, too, is common to all the Angas. The third is the significant basis of the title of this 'Āgama'. As the conduct has been ascertained in the context of a comparative preception (Sūtrnā) in this Āgama, it is concerned with 'Sūćana'. The Samawāya and the Nandi clearly state this—

Sūyagaḍe ṇam sasamayāsūhajjanti, Parasamaya Sūhajjanti sasamaya-parasamayā suhajjanti.[1] What is preceptive is called a 'Sutra'. The background of this Āgama mainly consists of preceptive element. Its title is, therefore, 'Sūtrakṛita'.

Another thought, which seems to touch the reality more closely, can be put forth regarding the title 'Sutrakṛita'. The Driṣṭiwāda is five fold—

1. Parikarma
2. Sūtra
3. Pūrwānuyoga
4. Pūrwāgata
5. Ćūlikā

According to Āćarya Vīrasena the Sūtra has an account of other philosophers[2]. As this Āgama was composed on that basis only, it was given the title 'Sūtrakṛita.' This meaning seems to be more logical than the other etomological meanings of the word 'Sūtrakṛita'. The 'Suttagaḍa' and the 'Suttanipāta' of the Budhists seem to be identical in their titles.

Anga and Anuyoga—

This Āgama has the second place in the Dwādāśāngi. There are four kinds of Anuyoga—

1. Ćaranakaranānuooga.
2. Dharmakathānuyoga.
3. Ganitānuyoga.
4. Drawyānuyoga.

---

1. (a) Samawao, paissagasamawao, Sutra 90.
   (b) Nandi, Sutra. 82.
2. Kasayapahuda, Part I, page 134.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Ćurṇikāra holds that this Āgama is 'ćaraṇakaraṇānuyoga (treatise on conduct).[1] Sīlānkasūri has classified it under 'Drawyānuyoga' (treatise on substances). According to him the Āćārānga is primarily a ćaraṇakaraṇayoga while 'Sūtrakṛitānga' is primarily a 'Drawyānuyoga'[2].

The Samawāya and the Nandi give an account of the 'Dwādaśāngī.' At the end of the account of the Angas, the lines read 'ewam ćarṇakaraṇa-paruwaṇayā'. Abhayadeva Sūri connotes the meaning of 'ćaraṇa' as 'Sramaṇa-dharma' and of 'Karaṇa' as 'Piṇḍa-viśuddhi, Samiti etc.'[3]

The ćūrṇikara has regarded the Kālikasruta as a 'ćaraṇakaranayoga' and the 'Driṣtiwāda' as a 'drawyanuyoga'.[4]

The Dwādaśāngī primarily expounds the Driṣtiwāda, treatise on substances and secondarily the code of conduct. The Ćurṇikara legimately regards this Āgama primarily as a treatise on the code of conduct while the Vrittikāra lying stress upon its ascertainment of Dravya (substance), calls it Dravyā-śaśtra (a treatise on substance). Both of these classifications have a dialectical variation.

ṬHAṆAM

The title

This Āgama is the third part of the Dwādaśāngī. It sets up the Jīva, Pudgala etc., in number-order. Hence the title, 'Ṭhaṇam'.

The Contents

Swa-samaya (Arhat-philosophy), Para-Samaya as well as swa-samaya and Para-samaya both have been set up in this Āgama. The Jīva and the Ajīva, the Loka and the Aloka have been founded here.[5]

One-ness of the Jīva and its sevarality, according to the views of the 'Sangraha Naya' and the 'Vyavahāra Naya,' have been expounded

---

1. Sutrakritainga Curni, page 5.
   iha carananu-o-gena adhikaro.
2. Srtrakritangaritti, page, 1.
   Tatracaranga carnakaranam pradhanyena Vyakhyatam, adhuna awasarayatam drawya pradhanyena sutrakritakhyam dwitiyamangam Vyakhyatumarabhyate.
3. Samawayangavritti, Patra 102.
   Caranam—Vratasramanadharma Samyamadyanekavidham.
   Karanam-Pindavisuddhi Samityadyaneka vidham.
   Sutrakritanga Curni—
4. Kaiyasuyam caranakarananuyogo isibhsiottar ajjhayanani dhammanuyogo, Surpannattadi ganitanuyogo; ditthiwado dawwanujogotti.
5. Samawao, painnagasamawao, Sutra. 92

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

in it. According to the Sangraha Naya, the Jīva is one and the same far as the soul is concerned. From the view point of the 'vyavahāra-naya' each and every Jīva is parted with, i.e. it is divided into two parts according to the knowledge and appaerance, into three parts according to the 'Karma-ćetnā' or 'Phrowge-utpāda' and 'Vināśa', into four parts because of its wandering in the four-fold motion; into five parts from the view point of 'Pariṇāmikādi' five states; into six parts due to the accession to the six directions, such as the East, West, North, South, up-ward and down-ward at the time of transgression to other birth; into seven parts according to the seven kinds of 'Syādasti-Syādnāsti'; into eight parts according to the eight 'Karmas'; into nine parts as it changes into the nine substances; and into ten parts from the view point of the 'Prithivi-Kāyika', 'Jala Kāyika', 'Agni-Kāyika', 'Wāyu-Kāyika', 'Pratyeka Vanaspati-Kāyika', 'Sādhāraṇa Vanaspati-Kāyika' species having two organs, species having three organs, species having four organs, and species having five organs.[1] Likewise, this Āgama gives an account of one-ness of 'Pudgala' etc. and their various 'Paryāyas' (modifications) counting from two to ten. From the viiew of 'Paryāyas', one and the same element parts with into innumerable and unlimited parts, and from the view point of the matter (Dravya), these innumerable parts conform into one and the same element. This exposition of conformity and deformity is well found in this Āgama.

Samawāo

The title

The Āgama is the fourth part of the 'Dwādaśāngī' having the title 'Samawāo'. The substances, Jīva-Ajiva etc., have been put into divisions or brought down properly in this Āgama, therefore, the title 'Samawāo'.[2] According to the Digamber literature, this Āgama speaks of similarity of the Jivadi substances therfore, called the 'Samawāo'.[3] The 'Samawāo'

---

1. Kasayapahuda, part I, page 123.
2. Samawao-Vrithi, patra 1,
   Samit-Samyaka avetyadhikyena ayanamayah Paticchedo Jivajivadi-vividha-padartha Sarthasya yasaminnasan Samawayah
   Samawayanti wa, Samawasaranti Sammilanti nanawidha Atmadayo Bhawa Bhawa abhidheya.aya Yasminnasan Samawaya iti.
3. Gommatasara Jivakanda Jivaprabodhni Tika, gatha 356.
   "Sam-Sangrahena Sadrisya-Samanyena Avayante jnayante jivadipadartha dravya kalabhavan a sritya asmitnniti 'Samawayangam.
   Nandi, Sutra. 83

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

gives an aocount of the 'Dwādaśangī'. And, as it is the fourth part of the 'Dwādaśangī', it narrates the 'Samawāo', too.

The Nandi-Sūtra discusses the 'Dwadaśangī in order. The table of contents of the 'Samawāo' has been given in it as under:

1. The description of the Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and Swa-Samaya as the well as Para-samaya.

2. The evolution of the number beginning from one to hundred.

3. The account of the Dwadaśanga ganipitaka.[1]

According to the 'Samawāyānga' the table of contents of the 'Samawā-o' is as follows:

1. The description of Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and swa-samaya as well as Para-samaya,
2. The evolution of the number beginning from one to hundred
3. The account of the 'Dwādaśānga-gaṇi- pitaka'.
4. Āhāra
5. Uććhwāsa
6. Leśyā
7. Āwāsa
8. Upapāta
9. Čyawana
10. Awagāha
11. Vedanā
12. Vidhāna
13. Upayoga
14. Yoga
15. Indriya (organs)
16. Kaṣāya
17. Yoni
18. Kulakara

---

1. Se kim tam samawac nam jiva samasijjanti, ajiva samaanjsa jti jivajiva samasijjanti.
Sasamae samasijjai, para-samaye samasijjai, sasamaya para sama-e samasijja-i. Loc sa masijiai, aloc samasijjai, lo-a-loe samasijjai, samawaenam ega-i-yanam eguttariyanam thanasaya-niwaddhiyanam bhawanam paruwana adhhawijja-i duwalasa vihassa ya ganipidagssa pallawagge samasijja-i.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

19. Tīrathankara
20. Gaṇadhara
21. Čakrawarti
22. Baladeva-Vasudeva[1].

A comparative study of both the tables of contents makes it clear that the table of contents given in the Nandi is a brief one, and that of the 'Samawa-o' large. The volume of the Sūtra, too, becomes short and long according to the tables of contents.

That the 'ekottarika Vṛiddhi' (Increasing one by one) takes place upto hundred is mentioned in both the accounts. In either of them, there is no mention of the 'Anekottarika Vriddhi'. The Anekottarika Vriddhi has not at all been mentioned in the Nandī Čūrnī, Hāribhadrīyā Vṛitti and the Malaya Girīyavṛitti, all the three Abhayadeva Sūri has discuss the Anekottarikā Vṛiddhi in his Vṛitti of Samawāyānga. According to him, the Ekottarika Vṛiddhi takes place upto hundred and beyond that the Anekottarikā Vṛiddhi.[2]

It appears that the Vṛittikāra has discussed it not on the account given in the 'Samawāyānga' but on the text then available to him.

On reviewing both the accounts, two questions arise—

1. Is not the present Samawāyānga different from the account of the Samawāyānga given in the Nandi ?

2. Is the present Samawāyānga is of the Vaćna by Devardhigaṇī ? If so, why then such a variation in both the accounts of the 'Samawāyānga' ?

In reply to the first question, it can be said that 'Dwādasānngi' is the final content of the Samawāyānga-Sutra according to the account, relating to the Samawāyānga, given in the Nandi. Many a content has been expounded beyond the 'Dwadaśāngī' in the present Samawāyānga. It is therefore, established that the present volume of the 'Samawāyānga' is different from that of the account of the Samawāyānga given in the Nandi.

1. Samawa-o, pa-i-nnagasamawo, Sutra. 92.
2. Samawa-o Vritti, patra 105.
'ca sabdasya canyatra sambandhatdkottarika anekottarika ca, tatra satam yawadekottarika parato gnekottariketi.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Difficult it is to give an assertive answer to the second question. So much, nevertheless, can be said that there had been various Vāćanās of the Āgamas. This is why a mention of various Vāćanās (Parittā Vāyaṇā) has been made while giving the account of each and every 'Anga'. Abhayadeva Sūri gives a mention of the large (Brihat) Vāćanā of the Samawāyānga[1]. From it, this may be inferred that the Nandī gives an account of the Samawāyānga relating to the short 'Vāćanā.'

It is established from the Vṛitti[2] written by him, that Abhayadeva Sūri had with him various Vāćanās of this Sūtra.

There can be two likelihoods regarding the enlarged edition of the 'Samawāyānga.'

1. That this Sūtra is based upon the Vāćanā different from that of the Vāćanā of Dewardhigaṇī,' or 2. That the portions beyond the 'Dwadasāngī' have been added to it after 'Devardhigaṇī'. Had this Sūtra depended on some different 'Vāćanā,' there would have been some tradition mentioned. This agelong traditional mention has been coming down that the Jyotiś-Kanḍa is based upon the 'Māthurī Vāćanā'. Had the present Samawāyānga, too, been based on the Māthurī Vāćanā, there would have been some traditional mention of it.

The first likelihood lacking the probablity of its support, the second likelihood gains the ground. But it too, is refuted by the Bhagwati, and the Sthānānga. The Bhagwati refers to the final part of the Samawāyānga for the full account of Kulakar, Tirathankar etc.[3] Likewise, the final part of the Samawāyānga has been referred to for the full account of the Baldeva-Vasudeva by the Sthānānga also[4]. It is, therefore, obvious that the appendix

---

1. (a) Samawao Vritti, Patra 58 : Brihadvacanayamanantaroktamatisayadwayamcradhi yate.
   (b) Ibid, Patra 69:
   Brihadvacanayamidamanyadatisayadwayamadhiyate.
2. Samawao Vritti, Patra 144 : Vacanantaretu paryasana Kalpo tasramentyabhi hitam.
3. Bhagwati Satara 5; Uddesaka 5.
4. Sthananga, 9/19-20.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

was added in the time of Devardhigaṇī only.

It is strange that one and the same editor gave two different accounts (in the Samawāyānga and the Nandi) of one and the same Āgama.

There were two main Vācanās, the Māthuri and the Vallabhi. There were many other secondary Vāćanās also. This is why there are many different readings. These different readings, probabily occured on adding the explanation or appendix portions. This can well be inferred that the later part of the Dwādasāngi in the Samawāyānga is its appendix. The account of the appendix was added to the account of the Samawāyānga with the result that its table of contents swelled more than the table of the Samawāyānga found in the Nandi. There is a summary of eleven stenzas of the 'Prajñāpnā' in the appendix. It is a matter of investigation why they were added here ?

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar **Ācharya Tulasi**

Delhi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं श्लो० १-८८ पृ० २५३-२६३

बंध-मोक्ख-पदं १, पंचमहब्भूत-पदं ७, एगप्प-वाद-पदं ६, तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पदं ११, अकारक-वाद-पदं १३, आयच्छट्ठ-वाद-पदं १५, बुद्धाणं पंचक्खंध-चतुधातु-वाद-पदं १७, णिस्सारता-निदंसण-पदं १६, णियति-वाद-पदं २८, अण्णाणिय-वाद-पदं ४१, सोगताणं कम्मोवचय-चिंता-पदं ५१, सुत्तकारस्स उत्तर-पदं ५६, पूइकम्म-आहार-दोस-पदं ६०, कयवाद-पदं ६४, अवतार-वाद-पदं ७०, अत्त-पवाद-पसंसा पदं ७२, सिद्ध-वाद-पदं ७४, उवसंहार-पदं ७५, जावणा पदं ७६, लोग-वाय-पदं ८०, अहिंसा-पदं ८३, भिक्खु-चरिया-पदं ८६ ।

बीयं अज्झयणं श्लो० १-७६ पृ० २६४-२७५

संबोधि-पदं १, अणिच्च-भावणा-पदं ५, कम्म-विवाग-पदं ७, कसाय-परिणाम-पदं ६, सिक्खा-पदं १०, वीर-पदं १२, कम्म-विधूणण-पदं १३, अणुलोम-परीसह-पदं १६, माण-विवज्जण-पदं २३, समता-धम्म-पदं ३८, सामण्णस्स माहप्प-पदं ३२, सुहुम सल्ल-पदं ३३, एगचारि-पदं ३४, राय-संसग्ग विवज्जण-पदं ४०, अहिगरण-विवज्जण-पदं ४१, गिहि-भायण-पदं ४२, उत्तम-धम्म-गहण-पदं ४३, बंभचेर-पदं ४७, मुणीणं विवेग-पदं ५०, आयहित-पदं ५२, सामाइय-पदं ५३, कम्मावचय-पदं ५५, काम-पुच्छा पदं ५६, आरंभ-परिणाम-पदं ६३, परलोग-संदेह-पदं ६४, परलोग-सद्दहणा-पदं ६५, आयतुला-पदं ६६, अगारवासे-धम्म-पदं ६७, सच्चोवकम्म-पदं ६८, असरण-भावणा-पदं ७०, बोहि-दुल्लह-पदं ७३, धम्मस्स तेकालियत्त-पदं ७४ ।

तइयं अज्झयणं श्लो० १-८२ पृ० २७६-२८६

ओघ-उवसग्ग-पदं १, सीत-परीसह-पदं ४, गिम्ह-परीसह-पदं ५, जायणा-परीसह-पदं ६, वध-परीसह-पदं ८, अक्कोस-परीसह-पदं ६, फास-परीसह पदं १२, केसलोय-बंभचेर-परीसह-पदं १३, वध-बंध-परीसह-पदं १४, उक्खेव-पदं १७, अणुकूल-परीसह-पदं १८, भोग-निमंतण-पदं ३२, अज्झत्थ-विसीदण-पदं ४०, परवाद-वयण-पदं ४७, अणुस्सुत-विसीदण-पदं ६१, सातं सातेण विज्जई-पदं ६६, अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पदं ६६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं श्लो० १-५३ पृ० २८७-२९३

इत्थिसंसग्ग-विवज्जण-पदं १, इत्थि-आसत्तस्स विडंबणा-पदं ३ ।

•

पंचमं अज्झयणं श्लो० १-५२ पृ० २९४-३००

णरग-वेदणा-पदं १ ।

•

छट्ठं अज्झयणं श्लो० १-२९ पृ० ३०१-३०४

महावीर-माहप्प-वण्णग-पदं १ ।

•

सत्तमं अज्झयणं श्लो० १-३० पृ० ३०५-३०९

ओघतो कुसील-पदं १, पासंड-कुसील-पदं ५, कुसील-विवाग-पदं १०, कुसील-दंसण-पदं १२, कुसील-उवालंभ-पदं १६, सलिंग-कुसील-पदं २१, सुसील-पदं २२, कुसील-पदं २३, सुसील-पदं २७ ।

•

अट्ठमं अज्झयणं श्लो० १-२७ पृ० ३१०-३१३

वीरिय-पदं १, बाल-वीरिय-पदं ४, पंडित-वीरिय-पदं १०, अबुद्ध-परक्कंत-पदं २३, बुद्ध-परक्कंत-पदं २४ ।

•

नवमं अज्झयणं श्लो० १-३६ पृ० ३१४-३१८

धम्म-पद १, मूलगुण-पदं ८, उत्तरगुण-पदं ११, भासा-विवेग-पदं २५, ससंग्गि-वज्जण-पदं २८, सामण्ण-चरिया-पदं २९ ।

•

दसमं अज्झयणं श्लो० १-२४ पृ० ३१९-३२२

समाधि-पदं १, चरित्त-समाधि-पदं ४, असमाधि-पदं १६, मूलगुण-समाहि-पदं २०' उत्तरगुण-समाहि-पदं २३ ।

•

एगारसमं अज्झयणं श्लो० १-३८ पृ० ३२३-३२७

मग्ग-सार-पदं १, अहिंसा-पदं ७, एसणा-पदं १३, भासा-समिति-पदं १६, धम्म-दीव-पदं २२, बोद्धदिट्ठी-समीक्खा-पदं २५, मग्ग-संधाण-पदं ३२ ।

•

बारसमं अज्झयणं श्लो० १-२२ पृ० ३२८-३३१

समोसरण-चउक्क-पदं १, अण्णाण-वादि-पदं २, वेणइयवादि-पदं ४, अकिरिय-वादि-पदं ५ किरिय-वादि-पदं ११ ।

•

तेरसमं अज्झयणं श्लो० १-२३ पृ० ३३२-३३५

उक्खेव-पदं १, सिस्स-दोस-गुण-पदं २, मद-परिहार-पदं १०, अणाणुगिद्ध-पदं १७, धम्म-वागरण-विवेग-पदं १८, निक्खेव-पदं २३ ।

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउद्दसमं अज्झयणं श्लो० १-२७ पृ० ३३६-३३६

बंभचेरवासे गंथसिक्खा-पदं १, बंभचेरवासे अणुसिट्ठि-सहण-पदं ७, बंभचेरवास-फल-पदं १२, बंभचेरवासे लद्धगंथस्स कायव्व-पदं १८।

पणरसमं अज्झयणं श्लो० १-२५ पृ० ३४०-३४२

अणेलिस-पदं १।

सोलसमं अज्झयणं सू० १-६ पृ० ३४३-३४४

उक्खेव-पदं १, माहण-पदं ३, समण-पदं ४, भिक्खु-पदं ५, निग्गंथ-पदं ६।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं सू० १-७२ पृ० ३४५-३६७

पउमवरपोंडरीय-पदं १, पढम-पुरिसजात-पदं ६, दोच्च-पुरिसजात-पदं ७, तच्च-पुरिसजात-पदं ८, चउत्थ-पुरिसजात-पदं ६, भिक्खु-पदं १०, पुव्वुत्त-णातस्स अट्ठ-पदं ११, तज्जीव-तस्सरीर-वादि-पदं १३, पंच महब्भूतवादि-पदं २३, ईसरकारणिय-पदं ३२, णियतिवादि-पदं ३६, भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं ४६, भिक्खुणो लोगनिस्सा विहार-पदं ५३, अहिंसा-धम्म-पदं ५६, भिक्खुचरिया-पदं ५६, धम्म-देसणा-पदं ६६, भिक्खु-वयणिज्ज-पदं ७१।

बीयं अज्झयणं सू० १-८१ पृ० ३६८-४०२

उक्खेव-पदं १, अधम्मपक्खे किरिया-पदं २, अट्ठादंड-पदं ३, अणट्ठादंड-पदं ४, हिंसादंड-पदं ५, अकस्मादंड-पद ६, दिट्ठिविपरियासियादंड-पदं ७, मोसवत्तिय-पदं ८, अदिण्णादाणवत्तिय-पदं ६, अज्झत्थिय-पदं १०, माणवत्तिय-पदं ११, मित्तदोसवत्तिय-पदं १२, मायावत्तिय-पदं १३, लोभवत्तिय-पदं १४, इरियावहिय-पदं १६, पावसुयज्झयण-पदं १८, चउद्दसविह-कूरकम्मकरण-पदं १६, सप्पओयणं कूरकम्मकरण-पदं २०, सद्दादि विसएहिं विरुद्धस्स कूरकम्मकरणं-पदं २१, संपदायलित्तस्स असब्भवहारकरण-पदं २५, वीमंसरहियस्स कूरकम्म-करण-पदं २६, धम्मपक्खे भिक्खुणो भिक्खायरियासमुट्ठाण-पदं ३३, भिक्खुणो लोगनिस्सा विहार-पदं ३७, अहिंसाधम्म-पदं ४०, भिक्खुचरिया-पदं ४३, धम्मदेसणा-पदं ५१, मीसग-पक्ख-पदं ५६, अधम्म-पक्ख-पदं ५८, धम्म-पक्ख-पदं ६३, मीसग-पक्ख-पदं ७१, तिपद-समोयार-पदं ७५, दुपद-समोयार-पदं ७६, अहिंसा-पदं ७७, उवसंहार-पदं ८०।

तइयं अज्झयणं सू० १-१०२ पृ० ४०३-४४८

उक्खेव-पदं १, पुढविजोणियरुक्खस्स आहार-पदं २, अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं ६, पुढविजोणियतणस्स आहार-पदं १०, पुढविजोणियओसहिस्स-आहार-पदं १४, पुढविजोणिय-हरियस्स आहार-पदं १८, पुढविजोणियकुहणस्स आहार-पदं २२, उदगजोणियरुक्खस्स आहार-पदं २३, अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं २७, उदगजोणियतणस्स आहार-पदं ३१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदगजोणियओसहिस्स आहार-पदं ३५, उदगजोणियहरियस्स आहार-पदं ३६, उदगजोणिय-सेवालादिस्स आहार-पदं ४३, रुक्खजोणियतसपाणस्स आहार-पदं ४४, अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ४७, तणजोणिय-तसपाणस्स आ हार-पदं ५०, ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५३, हरियजेणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५६, कुहणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५६, रुक्खजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६०, अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६३, तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६६, ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६६, हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ७२, सेवालादिजोणियतसपाणस्स आहार-पदं ७५, मणुस्सस्स आहार-पदं ७६, जलचरस्स आहार-पदं ७७, चउप्पय थलचरस्स आहार-पदं ७८, उरपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं ७६, भुयपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं ८०, खहचरस्स आहार-पदं ८१, विगलिंदियस्स आहार-पदं ८२, आउकायस्स आहार-पदं ८५, अगणिकायस्स आहार-पदं ८६, वाउकायस्स आहार-पदं ६३, पुढविकायस्स आहार-पदं ६७, निक्खेव-पदं १०१ ।

●

चउत्थं अज्झयणं सू० १-२५ पृ० ४४६-४५७

पइण्णा-पदं १, चोयगस्स अक्खेव-पदं २, हेउ-पदं ३, दिट्ठत-पदं ४, उवणय-पदं ५, णिगमण-पदं ६, चोयगस्स अक्खेव-पदं ७, सण्णि-असण्णि-दिट्ठंत-पदं ८, सण्णि-असण्णि-दिट्ठंतस्स परिसेस पदं १८, संजय-पदं २१ ।

●

पंचमं अज्झयणं श्लोक १-३३ पृ० ४५८-४६०

सासय-असासय पदं १, सरिस असरिस-पदं ६, अहाकम्म-पदं ८, सरीरवीरिय-पदं १०, लोगादीणं अत्थित्त-सण्णा-पदं १२, वइ-विवेग-पदं ३० ।

●

छट्ठं अज्झयणं श्लोक १-५५ पृ० ४६०-४६७

गोसालस्स अक्खेव-पदं १, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४, गोसालस्स अक्खेव-पद ७, अद्दगस्स उत्तर-पदं ८, गोसालस्स अक्खेव-पदं ११, अद्दगस्स उत्तर-पदं १२, गोसालस्स अक्खेव-पदं १५, अद्दगस्स उत्तर-पदं १७, गोसालस्स अक्खेव-पदं १६, अद्दगस्स उत्तर-पदं २०, बुद्ध-भिक्खुणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं २६, अद्दगस्स उत्तर-पदं ३०, वेय-वाईणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ४३, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४४, संख-परिवायगाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ४६, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४८, हत्थितवसाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ५२, अद्दगस्स उत्तर-पदं ५३ ।

●

सत्तमं अज्झयणं सू० १-३८ पृ० ४६८-४८६

उक्खेव-पदं १, लेव-गाहावइ-पदं ३, उदगपेढालपुत्तस्स पण्हाणुमइ-पदं ८, उदगपेढालपुत्तस्स पण्ह-पदं १०, भगवओ गोयमस्स उत्तर-पदं ११, उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्ह-पदं १२, भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं १३, उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा-पदं १५, भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर पदं १६, समणदिट्ठंत-पदं १७, पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं २०, णवभंगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय उवदंमण-पदं २६, तस-थावर-पाणाणं अव्वोच्छित्ति-पदं ३०, उवसंहार-पदं ३१ ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूयगडो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

समए

पढमो उद्देसो

बंध-मोक्ख-पदं

१. बुज्झेज्ज तिउट्टेज्जा बंधणं परिजाणिया ।
किमाह[1] बंधणं वीरे[2] ? किं वा जाणं तिउट्टइ ? ॥
२. चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि ।
अण्णं वा अणुजाणाइ[3] एवं[4] दुक्खा ण मुच्चई ॥
३. सयं तिवातए पाणे अदुवा अण्णेहिं घायए ।
हणंतं वाणुजाणाइ वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥
४. जस्सिं[5] कुले समुप्पण्णे जेहिं वा संवसे णरे ।
ममाती लुप्पती बाले अण्णमण्णेहिं मुच्छिए ॥
५. वित्तं सोयरिया[6] चेव सव्वमेयं ण ताणइ ।
'संधाति जीवितं चेव'[7] कम्मणा[8] उ तिउट्टइ ॥
६. एए गंथे विउक्कम्म एगे समणमाहणा ।
अयाणंता विउस्सिता[9] सत्ता कामेहिं माणवा ॥

पंचमहब्भूत-पदं

७. संति पंच महब्भूया[10] इहमेगेसिमाहिया ।
पुढवी आऊ[11] तेऊ वाऊ आगासपंचमा ॥

---

१. किमाहु (चू) ।
२. धीरे (चू) ।
३. अणुजाणाए (क) ।
४. एव (क) ।
५. जेसिं (ख); जंसी (चू) ।
६. सोअरिया (ख); सोदरिया (चू) ।
७. संखाए जीवियं चेव (क, ख, वृ, चूपा) ।
८. कम्मुणा (ख); कम्मणो (वृ); कम्मणा (वृपा) ।
९. वियोसिया (विओसिता), विउस्सिता (चू) ।
१०. महब्भूता (चू) ।
११. आऊ य (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. एए पंच महब्भूया तेब्भो[1] एगो[2] त्ति आहिया ।
अह[3] एसिं[4] 'विणासे उ'[5] विणासो होइ देहिणो[6] ॥

एगप्प-वाद-पदं

९. जहा य पुढवीथूभे एगे णाणा हि दीसइ ।
एवं भो ! कसिणे लोए विण्णू णाणा हि दीसए[7] ॥

१०. एवमेगे[8] त्ति जंपंति मंदा आरंभणिस्सिया ।
एगे[9] किच्चा सयं[10] पावं 'तिव्वं दुक्खं'[11] णियच्छइ ॥

तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पदं

११. पत्तेयं कसिणे आया जे बाला जे य पंडिया ।
संति पेच्चा[12] ण ते संति णत्थि सत्तोववाइया ॥

१२. णत्थि पुण्णे व पावे वा णत्थि लोए इओ परे[13] ।
सरीरस्स विणासेणं विणासो होइ देहिणो[14] ॥

अकारक-वाद-पदं

१३. कुव्वं च कारयं[15] चेव सव्वं कुव्वं ण विज्जइ[16] ।
एवं अकारओ अप्पा 'ते उ एवं'[17] पगब्भिया ॥

१४. जे ते उ वाइणो एवं लोए तेसिं कुओ[18] सिया ? ।
तमाओ ते तमं जंति मंदा आरंभणिस्सिया[19] ॥

---

१. ते भो (क, चूपा) ।
२. एक्को (क) ।
३. अध (चू) ।
४. तेसिं (ख, चू) ।
५. विणासेणं (क्व); विसंयोगे (चू) ।
६. देहिण (क, ख, चू) ।
७. वट्टइ (क, वृ) ।
८. एवमेगो (चू) ।
९. एगो (चू) ।
१०. सणं (क) ।
११. तेणं निव्वं (क, चू); तेणं तिप्पं (चूपा) ।
१२. पच्चा (क्व) ।
१३. परं (चू); वरे (क्व) ।
१४. देहिणं (ख, चू) ।
१५. कारवं (चू) ।
१६. विज्जए (क) ।
१७. एवं एते (ख); एवमेगे (चू) ।
१८. कतो (ख) ।
१९. मोहेण पाउता (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयच्छट्ठ-वाद-पदं

१५. संति पंच महब्भूया इहमेगेसि आहिया।
आयछट्ठा[1] पुणेगाहु[2] आया लोगे य सासए॥
१६. दुहओ ते ण विणस्संति[3] णो य उप्पज्जए असं।
सव्वेवि सव्वहा[4] भावा णियतीभावमागया[5]॥

बुद्धाणं पंचखंध-चतुधातु-वाद-पदं

१७. पंच खंधे वयंतेगे बाला उ खणजोइणो।
अण्णो अणण्णो णेवाहु[6] हेउयं व[7] अहेउयं॥
१८. पुढवी आऊ तेऊ य[8] तहा वाऊ य एगओ।
चत्तारि धाउणो रूवं एवमाहंसु जाणगा[9]॥

णिस्सारता-निदंसण-पदं

१९. अगारमावसंता[10] वि आरण्णा[11] वा वि पव्वया[12]।
इमं[13] दरिसणमावण्णा सव्वदुक्खा विमुच्चंति[14]॥
२०. 'तेणाविमं तिणच्चा णं[15] ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते ओहंतराऽऽहिया[16]॥
२१. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते संसारपारगा॥
२२. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते गब्भस्स पारगा॥
२३. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते जम्मस्स पारगा॥

---

१. आतच्छट्ठा (चू)।
२. पुणो आहु (क, ख)।
३. विण्णस्सति (क).
४. सव्वया (क, ख)।
५. नियत्तीभाव० (क, ख)। 'क' प्रतौ निम्न-स्थाने नियती० इत्यपि लिखितमस्ति।
६. णेगाहु (चू)।
७. च (क्व)।
८. × (क, ख)।
९. थावरे (वृ); जाणगा (वृपा)।
१०. आगार० (ख)।
११. अरण्णा (ख)।
१२. पव्वइया (क)।
१३. एतं (चू)।
१४. विमुच्चई (क, ख)।
१५. तेणा वि संधि णच्चा ण (क, ख, वृ)। वृत्तौ प्रत्योश्चायमेव पाठो लभ्यते, किन्तु चूर्णिगत-पाठोर्थविचारणया प्रकरणपाती प्रतिभाति, तेनात्र मूले स एव स्वीकृतः।
१६. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—ओहंतरा आहिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते दुक्खस्स पारगा।।

२५. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते मारस्स पारगा।।

२६. 'णाणाविहाइं दुक्खाइं अणुहवंति पुणो पुणो।
संसारचक्कवालम्मि वाहिमच्चुजराकुले ।।

२७. उच्चावयाणि गच्छंता गब्भमेस्संतणंतसो[1] ।
णायपुत्ते महावीरे एवमाहु[2] जिणोत्तमे'[3]।।

—त्ति बेमि।।

बीओ उद्देसो

णियति-वाद-पदं

२८. आघायं 'पुण एगेसिं'[4] उववण्णा पुढो जिया।
वेदयंति[5] सुहं दुक्खं अदुवा लुप्पंति[6] ठाणओ।।

२९. ण तं सयं कडं दुक्खं 'ण य'[7] अण्णकडं च णं।
सुहं वा जइ 'वा दुक्खं'[8] सेहियं वा असेहियं।।

३०. ण[9] सयं[10] कडं ण अण्णेहिं वेदयंति पुढो जिया।
संगइयं तं तहा तेसिं इहमेगेसिमाहियं ।।

३१. एवमेयाणि जंपंता बाला पंडियमाणिणो[11]।
णिययाणिययं संतं अयाणंता[12] अबुद्धिया।।

३२. एवमेगे उ[13] पासत्था 'ते भुज्जो'[14] विप्पगब्भिया।
एवंपुवट्ठिया[15] संता णऽत्तदुक्खविमोयगा[16] ।।

---

१. व्या० वि०—एष्यन्ति अनन्तशः।
२. °माहु (क, ख)।
३. संसारचक्कवालम्मि, भमंता [य पुणो पुणो]। उच्चावयं णियच्छंता, गब्भमेसंतणंतसो।। (चू)।
४. पुणिहेगेसिं (चू)।
५. वेदयंती (चू)।
६. विलुप्यन्ते (वृ)।
७. कओ (क, वृ); कत्तो (ख)।
८. वाऽसुहं (चू)।
९. तं (दी)।
१०. सइं (चू)।
११. पंडितवादिणो (चू)।
१२. अयाणमाणा (चू)।
१३. य (क)।
१४. अजाणंता (चू)।
१५. °पवट्ठिया (क). °उवट्ठिया (ख); व्या० वि०—एवं+अपि+उवट्ठिया।
१६. न ते दुक्खविमोक्खया (क, ख); °विमोक्खया (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. जविणो मिगा जहा संता परिताणेण[1] तज्जिया[2] ।
असंकियाइं संकंति संकियाइं असंकिणो ॥
३४. परिताणियाणि[3] संकंता पासियाणि असंकिणो ।
अण्णाणभयसंविग्गा संपलिंति तहिं तहिं ॥
३५. अह तं पवेज्ज वज्झं अहे वज्झस्स वा वए ।
'मुच्चेज्ज पयपासाओ'[4] 'तं तु मंदो ण देहई'[5] ॥
३६. अहियप्पाऽहियपण्णाणे[6] विसमंतेणुवागए[7] ।
से बद्धे पयपासाइं[8] तत्थ घायं[9] णियच्छइ ॥
३७. एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[10] अणारिया ।
असंकियाइं संकंति[11] संकियाइं असंकिणो ॥
३८. धम्मपण्णवणा जा सा[12] 'तं तु'[13] संकंति मूढगा ।
आरंभाइं[14] ण संकंति अवियत्ता अकोविया ॥
३९. सव्वप्पगं विउक्कस्सं[15] सव्वं णूमं विहूणिया[16] ।
अप्पत्तियं अकम्मंसे एयमट्ठं मिगे चुए ॥
४०. जे एयं[17] णाभिजाणंति मिच्छदिट्ठी[18] अणारिया ।
मिगा वा पासबद्धा ते घायमेसंतऽणंतसो[19] ॥

अण्णाणिय-वाद-पदं

४१. माहणा समणा एगे सव्वे णाणं सयं वए ।
'सव्वलोगे वि'[20] जे पाणा ण ते जाणंति किंचणं[21] ॥

---

१. परियाणेण (क, ख) ।
२. वज्जिया (क, ख, वृ); तज्जिया (वृपा) ।
३. परियाणियाणि (क, ख) ।
४. मुच्चेजा° (क); वधेज्ज पदपासातो (चू); मुच्चेज्ज पदपासादी (चूपा, वृपा) ।
५. तं च मंदे ण पेहती (चू); °देहते (क) ।
६. अहिते हित पण्णाणा (चू) ।
७. विसमं तेणुवागते (चू); विसमंतेऽणुवायए (क, वृपा) ।
८. पयपासेहिं (चू) ।
९. घंतं (चू) ।
१०. मिच्छादिट्ठी (चू) ।
११. संकिती (चू) ।
१२. तु (चू) ।
१३. तीसे (चू) ।
१४. आरंभाय (चू) ।
१५. विउक्कासं (चू) ।
१६. विधुणिया (चू) ।
१७. तेतं (चू) ।
१८. मिच्छा° (चू) ।
१९. व्या० वि —एषयन्ति अनन्तशः ।
२०. सव्वलोगंसि (चू) ।
२१. कंचणं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. मिलक्खू अमिलक्खुस्स जहा वुत्ताणुभासए[1] ।
ण हेउं से वियाणाइ[2] भासियं तऽणुभासए[3] ॥
४३. एवमण्णाणिया णाणं वयंता वि सयं सयं ।
णिच्छयत्थं ण जाणंति मिलक्खु व्व अबोहिया[4] ॥
४४. अण्णाणियाण वीमंसा 'अण्णाणे ण णियच्छइ'[5] ।
अप्पणो य[6] परं णालं कतो[7] अण्णाणुसासिउं ? ॥
४५. वणे मूढे जहा जंतू मूढणेयाणुगामिए[8] ।
'दो वि एए अकोविया'[9] तिव्वं सोयं णियच्छई[10] ॥
४६. अंधो अंधं पहं णेंतो[11] दूरमद्धाण गच्छई ।
आवज्जे उप्पहं जंतू[12] 'अदुवा पंथाणुगामिए'[13] ॥
४७. एवमेगे णियागट्ठी धम्ममाराहगा वयं ।
अदुवा[14] अहम्ममावज्जे ण ते सव्वज्जुयं[15] वए ॥
४८. एवमेगे वियक्काहिं णो अण्णं[16] पज्जुवासिया ।
अप्पणो य वियक्काहिं अयमंजू हि दुम्मई ॥
४९. एवं तक्काए[17] साहेंता धम्माधम्मे अकोविया ।
दुक्खं ते णातिवट्टंति[18] सउणी पंजरं जहा ॥
५०. सयं सयं पसंसंता गरहंता[19] परं वयं[20] ।
जे उ तत्थ विउस्संति 'संसारं ते[21] विउस्सिया[22] ॥

---

१. °भासती (चू) ।
२. वियाणेति (चू) ।
३. °भासती (चू) ।
४. अबोधिए (क, चू) ।
५. णाणे णेव णियच्छति (क, चू) ।
६. वि (वृ) ।
७. कुतो (क) ।
८. मुढेणे° (क, ख); मुढं णेयाणुगच्छति (वृ); मूढ-मूढाणुगामिए (चू) ।
९. दुहतो वि अकोविता (चू); उभयो वि न याणंति (चूपा) ।
१०. व्या० वि०--छन्दोदृष्ट्या एकवचनम्--णियच्छंति ।
११. णेति (चू) ।
१२. जतो (चू); जंतू (चूपा) ।
१३. अहुसक्खाणुगामिए (क) ।
१४. अपि (चूपा) ।
१५. सव्वुज्जुयं (ख); सव्वुज्जुगं (चू) ।
१६. परं (वृ) ।
१७. तक्काइ (ख) ।
१८. नातिउट्टंति (क); नाइतुट्टंति (ख, वृ); ण तिउट्टंति (चूपा) ।
१९. गरहंती (चू) ।
२०. वदिं (चू) ।
२१. संसारे ते (ख); संसरंते (चू) ।
२२. वि उसिया (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोगताणं कम्मोवचय-चिंता-पदं

५१. अहावरं पुरक्खायं किरियावाइदरिसणं[1] ।
कम्मचिंतापणट्ठाणं दुक्खखंधविवद्धणं[2] ॥
५२. जाणं काएणऽणाउट्टी[3] अबुहो 'जं च'[4] हिंसइ ।
पुट्ठो वेदेइ परं अवियत्तं खु सावज्जं ॥
५३. संतिमे तओ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं ।
अभिकम्मा य पेसा य मणसा[5] अणुजाणिया ॥
५४. एए उ तओ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं ।
एवं भावविसोहीए[6] णिव्वाणमभिगच्छइ[7] ॥
५५. पुत्तं 'पि ता'[8] समारंभ[9] आहारट्ठं[10] असंजए ।
भुंजमाणो वि[11] मेहावी कम्मुणा[12] णोवलिप्पते[13] ॥

सुत्तकारस्स उत्तर-पदं

५६. मणसा जे पउस्संति चित्तं तेसिं ण विज्जइ ।
अणवज्जं अतहं तेसिं ण ते संवुडचारिणो ॥
५७. इच्चेयाहिं दिट्ठीहिं सायागारवणिस्सिया ।
सरणं[14] ति मण्णमाणा[15] सेवंती पावगं[15] जणा ॥
५८. जहा आसाविणिं[17] णावं जाइअंधो दुरूहिया[18] ।
इच्छई[19] पारमागंतुं अंतराले[20] विसीयई ॥
५९. एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[21] अणारिया ।
'संसारपारकंखी ते'[22] संसारं अणुपरियट्टंति[23] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. °वाईण दरि° (ख) ।
२. संसारस्स पवड्ढणं (क, ख, वृपा) ।
३. °णाउट्टे (चू) ।
४. ज व (क); जे य (चू) ।
५. मणसा य (क) ।
६. भावणसुद्धीए (चू) ।
७. णेव्वाण° (चू) ।
८. पिया (क, ख); पिता (वृ) ।
९. समारब्भ (क्व) ।
१०. आहारेज्ज (क, ख) ।
११. य (क, ख) ।
१२. कम्मणा (ख) ।
१३. °लिप्पई (क, ख) ।
१४ हियं (चू) ।
१५. °माणा तु (चू) ।
१६. अहियं (चू) ।
१७. आस्साविणि (चू) ।
१८. दुरुभिया (चू) ।
१९. इच्छेज्जा (क); इच्छंतो (चू) ।
२०. अंतरा इ (क); अंतरा य (चू) ।
२१. मिच्छा° (चू) ।
२२. °पारमिच्छंता (चू) ।
२३. °यट्टइ (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइओ उद्देसो

पूइकम्म-आहार-दोस-पद

६०. जं किंचि वि[1] पूइकडं 'सड्ढी[2] आगंतु[3] ईहियं'[4] ।
सहस्संतरियं[5] भुंजे दुपक्खं चेव सेवई ॥

६१. तमेव अवियाणंता विसमंसि[6] अकोविया ।
'मच्छा वेसालिया चेव'[7] उदगस्सऽभियागमे[8] ॥

६२. उदगस्स प्पभावेणं 'सुक्कम्मि घातमेंति'[9] उ ।
ढंकेहि य कंकेहि य आमिसत्थेहिं[10] ते दुही ॥

६३. एवं तु समणा एगे वट्टमाणसुहेसिणो ।
मच्छा वेसालिया चेव[11] घायमेसंतणंतसो[12] ॥

कयवाद-पदं

६४. इणमण्णं तु अण्णाणं इहमेगेसिमाहियं ।
देवउत्ते अयं लोए बंभउत्ते[13] त्ति आवरे ॥

६५. 'ईसरेण कडे'[14] लोए पहाणाइ[15] तहावरे ।
जीवाजीवसमाउत्ते[16] सुहदुक्खसमण्णिए ॥

६६. 'सयंभुणा कडे'[17] लोए इति वुत्तं महेसिणा ।
मारेण संथुया माया तेण लोए असासए[18] ॥

---

१. उ (ख, चू);
२. व्या० वि० --विभक्तिरहितपदम्—सड्ढीहिं।
३. व्या० वि० —विभक्तिरहितपदं वर्णलोपश्च—आगन्तुकान् उद्दिश्य ।
४ सड्ढीमागंतुमीहियं (क, ख) ।
५. सहस्संतरकडं (चू) ।
६. विसमंसि (क) ।
७. °वेसारिया° (क); मच्छे वेतालिए चेव (चूपा) ।
८. उदगस्स अभिआगमे (चू) ।
९. सुक्कंसि घात° (ख); सुक्कंसि घंतमेति(चू) ।
१०. आमिसासीहि (चू) ।
११. व्या० वि० चेव—इव ।
१२. घंतमेसंत° (चू) ; व्या० वि—एष्यन्ति अनन्तशः ।
१३. °उत्ति (क, ख) ।
१४. इस्सरेण कते (चू) ।
१५. व्या वि०—पहाणाइ, अत्र 'कडे' इति वाक्यशेषः ।
१६. जीवाजीवेहिं संजुत्ते (चू) ।
१७. कते (चू) ।
१८. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
अतिवड्डियजीवा णं,
मही विण्णवते पभुं ।
ततो से माया संजुत्ते,
करे लोगस्सभिद्दवा ॥ (चू)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७. माहणा समणा एगे[1] आह अंडकडे जगे।
असो तत्तमकासी य अयाणंता मुसं वए॥

६८. 'सएहिं परियाएहिं'[2] 'लोगं बूया कडे त्ति य'[3]।
तत्तं ते 'ण वियाणंति'[4] 'णायं णाऽऽसी'[5] कयाइ वि॥

६९. अमणुण्णसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया।
समुप्पायमजाणंता किह[6] णाहिंति[7] संवरं ?॥

अवतार-वाद-पदं

७०. सुद्धे अपावए आया इहमेगेसिमाहियं।
'पुणो कीडापदोसेणं से तत्थ अवरज्झई॥

७१. इह संवुडे मुणी जाए पच्छा होइ अपावए।
वियडं व जहा भुज्जो णीरयं सरयं तहा'[8]॥

अत्त-पवाद-पसंसा-पदं

७२. एयाणुवीइ मेहावी 'बंभचेरं ण तं वसे'[9]।
पुढो पावाउया[10] सव्वे अक्खायारो सयं सयं॥

७३. 'सए सए'[11] उवट्ठाणे सिद्धिमेव[12] ण अण्णहा।
'अधो वि होति वसवत्ती'[13] सव्वकामसमप्पिए[14]॥

---

१. वेगे (क, ख)।
२. सएण परियाएण (चू)।
३. °त्ति या (क); °कडे विधि (चू); बूया लोए कडे विधि, लोकं बूया कडे ति च (चूपा)।
४. नाभिजाणंति (वृ)।
५. न विणासी (क, ख, वृ)।
६. कहं (ख)।
७. नाहंति (ख)।
८. कीलावण-प्पदोसेण, रजसा अवतारते।
इह संवुडे भवित्ताणं, सुद्धे सिद्धीए चिट्ठती।
पुणो कालेणऽणंतेणं, तत्थ से अवरज्झती॥ (चू)।
°इह संवुडे भवित्ताणं,
पेच्चा होति अपावए°। (चूपा)।
९. बंभचेरे ण ते वसे (क, वृ)।
१०. पावादिया (चू)।
११. सते सते (क)।
१२. व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः।
१३. अधो इहत्तवसमत्ती (क); इहेव होति° (चू); अबोही होति° (चूपा); 'ख' प्रतौ 'अधोधि' इति पाठोस्ति, किन्तु लिपिदोषेण 'वि' स्थाने 'धि' जातः इति प्रतीयते।
१४. °समप्पिओ (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्ध-वाद-पदं

७४. सिद्धा य ते अरोगा य इहमेगेसि आहियं।
सिद्धिमेवपुरोकाउं[1] सासए[2] गढिया णरा॥

उवसंहार-पदं

७५. असंवुडा अणादीयं भमिहिंति पुणो-पुणो।
कप्पकालमुवज्जंति[3] ठाणा आसुरकिब्बिसिय[4]॥
—त्ति बेमि॥

चउत्थो उद्देसो

जावणा-पदं

७६. एते जिया भो! 'ण सरणं'[5] 'बाला पंडियमाणिणो'[6]।
'हिच्चा णं'[7] पुव्वसंजोगं सितकिच्चोवएसगा[8]॥
७७. तं च भिक्खू परिण्णाय विज्जं 'तेसु ण'[9] मुच्छए।
अणुक्कस्से[10] अणवलीणे[11] मज्झेण[12] मुणि जावए॥
७८. सपरिग्गहा य सारंभा इहमेगेसिमाहियं।
'अपरिग्गहे अणारंभे'[13] भिक्खू जाणं[14] परिव्वए॥
७९. कडेसु घासमेसेज्जा विऊ दत्तेसणं चरे।
अगिद्धो विप्पमुक्को य ओमाणं परिवज्जए॥

लोगवाय-पदं

८०. 'लोगवायं णिसामेज्जा'[15] इहमेगेसिमाहियं।
विवरीयपण्णसंभूयं[16] 'अण्णवुत्त-तयाणुगं'[17]॥

---

१. ०पुरा० (क, चू); सिद्धमेव (ख)।
२. आसएहिं (चू)।
३. कप्पकालुववज्जंति (चू)।
४. ०किब्बिसिया (ख)।
५. असरणं (चूपा)।
६. जत्थ बालेऽवसीयइ (क, वृपा)।
७. जहित्ता (चू)।
८. सिताकिच्चोवदेसिता (क, वृपा); सिया-किच्चोवएसगा (ख); सितकिच्चोवगा सिया (चू)।
९. तेसि ण (क); ण तत्थ (चूपा)।
१०. अणुकम्मे (क); अणुक्कसाए (चू); अणुक्कसे (चूपा)।
११. अप्पलीणे (क, ख, वृ)।
१२. मज्झिमेण (क, चू)।
१३. अपरिग्गहो अणारंभो (ख, वृ)।
१४. ताणं (क, ख, वृ)।
१५. लोगावायं० (चू); लोकावादं णिसामेत्ता (चूपा)।
१६. विपरीतपण्णसंभूया (चू)।
१७. अणुण्णु वुतिताणुगं (क); अन्नेहिं बुइयाणुगं (ख); अण्णोण्णबुइताणुगा (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१. अणंते णितिए लोए सासए ण विणस्सई।
अंतवं णितिए लोए 'इइ धीरोऽतिपासई'[१]।
८२. 'अपरिमाणं वियाणाइ'[२] इहमेगेसि आहियं।
सव्वत्थ सपरिमाणं 'इह धीरोऽतिपासई'[३]॥

अहिंसा-पदं

८३. जे केइ[४] तसा पाणा चिट्ठंतदुव[५] थावरा।
परियाए[६] अत्थि से अंजू[७] जेण[८] ते तसथावरा॥
८४. उरालं[९] जगतो जोगं 'विवज्जासं पलेंति य'[१०]।
सव्वे अकंतदुक्खा[११] य अओ सव्वे अहिंसगा[१२]॥
८५. एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसइ कंचणं[१३]।
अहिंसा समयं चेव एयावंतं[१४] वियाणिया॥

भिक्खु-चरिया-पदं

८६. 'वुसिते विगयगिद्धी य'[१५] आयाणं सारक्खए।
चरियासणसेज्जासु भत्तपाणे य अंतसो॥
८७. एतेहिं तिहिं ठाणेहिं 'संजए सययं'[१६] मुणी।
उक्कसं[१७] जलणं णूमं[१८]- मज्झत्थं च विगिंचए॥
८८. समिए तु सया साहू पंचसंवरसंवुडे।
सितेहिं असिते भिक्खू आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥
—त्ति बेमि॥

---

१. इति धीरोतिपासति (क); इति वीरोऽधिपासति (चू)।
२. अमितं जाणती वीरे (चू)।
३. इति वीरोऽधिपासती (चू)।
४. केति (क, ख)।
५. चिट्ठंति अदुव (ख); व्या० वि०—द्विपदयो सन्धिः—चिट्ठंति+अदुव।
६. परिताए (क)।
७. जायं (चू)।
८. तेण (वृ)।
९. ओरालं (क)।
१०. विपरीय संपलेति य (क); °पलिंति य(चू)।
११. अक्कंत० (वृ); अकंत ° (वृपा)।
१२. अहिंसया (क), अहिंसिया (ख, वृ)।
१३. किंचणं (ख, च)।
१४. इत्तावय (क)।
१५. वुसेए य विगयगेही (क); वुसिए य विगतगेही (चू); अकसायी सदाऽधिगतगेधी(चूपा)।
१६. संजमेज्ज सया (चू)।
१७. उक्कासं (चू)।
१८. णूमं (क, ख, वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

वेयालिए

पढमो उद्देसो

संबोधि-पदं

१. संबुज्झह[1] किण्ण[2] बुज्झहा संबोही खलु पेच्च दुल्लहा।
णो हूवणमंति राइओ णो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥
२. डहरा बुड्ढा य पासहा[3] गब्भत्था वि[4] चयंति माणवा।
सेणे जह वट्टयं हरे एवं आउखयंमि तुट्टई ॥
३. 'मायाहि पियाहि लुप्पई णो सुलहा सुगई य[5] पेच्चओ'[6]।
'एयाइ भयाइ'[7] देहिया[8] आरंभा विरमेज्ज सुव्वए[9] ॥
४. जमिणं जगई पुढो जगा कम्मेहि लुप्पंति[10] पाणिणो।
सयमेव 'कडेहि गाहई'[11] णो तस्स[12] मुच्चे अपुट्ठवं[13] ॥

अणिच्च-भावणा-पदं

५. देवा गंधव्वरक्खसा असुरा भूमिचरा[14] सिरीसिवा[15]।
राया णरसेट्ठिमाहणा[16] 'ठाणा ते वि चयंति'[17] दुक्खिया ॥

---

१. भो ! सबुज्झह (चू)।
२. किण्णु (चू)।
३. पासह (ख)।
४. य (चू)।
५. वि (वृ)।
६. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
माता पितरो य भातरो,
विलभेज्जसु केण पेच्चए (चू)।
७. एयाइं भयाइं (क)।
८. पेहिया (ख)।
९. सुट्ठिए (वृपा)।
१०. विलुप्यन्ते (वृ)।
११. कडेहिं गाहंति (क); कडेऽवगाहए (चू)।
१२. तस्सा (क, ख); तेणं (चू)।
१३. पुट्ठव (क)।
१४. भूमिगता (चू)।
१५. सरि° (क)।
१६. णर-अधिपमाहणा (चूपा)।
१७. ते वि चयंति ठाणाइं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. 'कामेहि य संथवेहि य'[1] कम्मसहा[2] कालेण जंतवो ।
ताले जह बंधणच्चुए एवं आउखयम्मि[3] तुट्टई ॥

कम्म-विवाग-पदं

७. जे यावि 'बहुस्सुए[4] सिया[5] 'धम्मिए माहणे'[6] भिक्खुए सिया[7] ।
अभिणूमकडेहिं[8] मुच्छिए[9] तिव्वं से[10] कम्मेहिं किच्चती[11] ॥

८. अह पास विवेगमुट्ठिए[12] अवितिण्णे[13] इह भासई धुतं[14] ।
णाहिसि[15] आरं कओ परं ? वेहासे कम्मेहिं किच्चई ॥

कसाय-परिणाम-पदं

९. जइ वि य णिगिणे[16] किसे[17] चरे जइ वि य भुंजिय मासमंतसो ।
'जे इह'[18] मायादि[19] मिज्जई आगंता गब्भादणंतसो[20] ॥

सिक्खा-पदं

१०. पुरिसोरम[21] पावकम्मुणा[22] पलियंतं मणुयाण जीवियं ।
सण्णा इह काममुच्छिया मोहं जंति 'णरा असंवुडा'[23] ॥

---

१. कामेहि संथवेहि गिद्धा (वृ) ।
२. कम्मसहे (चू) ।
३. आउखए वि (चू) ।
४. व्या० वि०—बहुस्सुए धम्मिए माहणे भिक्खुए—सर्वत्रापि बहुवचनं युज्यते । अत्र बहुवचनान्तं क्रियापदं स्वीकृतम्, तेन वृत्तिकृता छान्दसत्वाद् बहुवचनं द्रष्टव्यम्—इति लिखितम् ।
५. भवे बहुस्सुता (चू) ।
६. धम्मिय माहण (ख, वृ, चू) ।
७. सुयी (चू) ।
८. °करेहिं (चू) ।
९. मुच्छिया (चू) ।
१०. ते (वृ, चू) ।
११. किच्चंति (वृ, चू) ।
१२. विवाग° (चूपा) ।
१३. अवि तिण्णे (चूपा) ।
१४. धुवं (क, ख, वृ) ।
१५. ण नेहिसि (चूपा) ।
१६. निगणे (क, ख) ।
१७. कसे (ख) ।
१८. जइ विह (चू) ।
१९. मायाति (क); मायाइ (ख); व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मायादिणा ।
२०. गब्भायणंतसो (क, ख, वृ); व्या० वि०—गर्भादिअनन्तशः ।
२१. व्या० वि०—पुरुष ! उपरम ।
२२. °कम्मणा (ख) ।
२३. असंवुडा नरा (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. जययं विहराहि जोगवं 'अणुपाणा पंथा'[1] दुरुत्तरा।
अणुसासणमेव पक्कमे[2] वीरेहिं सम्मं पवेइयं ॥

वीर-पदं

१२. 'विरया वीरा समुट्ठिया'[3] कोहाकायरियाइपीसणा[4] ।
पाणे ण हणंति सव्वसो पावाओ विरयाऽभिणिव्वुडा ॥

कम्म-विधूणण-पदं

१३. ण वि ता अहमेव लुप्पए[5] लुप्पंती लोगंसि[6] पाणिणो।
एवं सहिएऽहिपासए[7] अणिहे से पुट्ठेऽहियासए[8] ॥
१४. धुणिया कुलियं व लेववं कसए[9] देहमणासणादिहिं[10]।
अविहिंसामेव पव्वए अणुधम्मो मुणिणा पवेइओ ॥
१५. सउणी जह पंसुगुंडिया[11] विहुणिय धंसयई सियं रयं।
एवं दविओवहाणवं कम्मं खवइ तवस्सि माहणे ॥

अणुलोम-परीसह-पदं

१६. उट्ठियमणगारमेसणं 'समणं ठाणठियं तवस्सिणं'[12]।
डहरा वुड्ढा य पत्थए अवि सुस्से ण य तं लभे जणा[13] ॥
१७. जइ कालुणियाणि कासिया[14] जइ रोयंति[15] य पुत्तकारणा।
दवियं भिक्खुं समुट्ठियं णो 'लब्भंति णं सण्णवेत्तए'[16] ॥

---

१. अणुपत्थि पाणा (चूपा)।
२. प्रतिक्रामेद् (वृ); परक्कमे (चू)।
३. वीरा विरता हु पावका (चू)।
४. व्या० वि दीर्घत्वमलाक्षणिकम्।
५. लुप्पये (चू)।
६. लोगम्मि (क)।
७. सहिएहिं० (क)।
८. पुट्ठो अहियासए (क)।
९. किसए (ख)।
१०. व्या० वि०—दीर्घत्वमलाक्षणिकम्।
११. गंडिया (ख)।
१२. समणट्ठाणट्ठितं तवस्सियं (चू)।
१३. जणं (क); जणो (चू)।
१४. से करे (चू)।
१५. रोवंति (चू)।
१६. लब्भंति ण संठवेत्तए (क); लब्भिंति ण संठवित्तए (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. जइ तं[1] कामेहि लाविया 'जइ आणेज्ज तं बंधिता घरं'[2] ।
'तं जीवित[3] णावकंखिणं'[4,5] 'णो लब्भंति तं सण्णवेत्तए'[6] ॥
१९. सेहंति[7] य णं ममाइणो 'माय[8] पिया य सुया य भारिया'[9] ।
पोसाहि णे पासओ तुमं 'लोगं परं पि जहासि पोसणे'[10] ॥
२०. अण्णे अण्णेहि मुच्छिया मोहं जंति 'णरा असंवुडा'[11] ।
विसमं विसमेहि गाहिया ते पावेहिं पुणो पगब्भिया ॥
२१. 'तम्हा दवि[12] इक्ख पंडिए'[13] पावाओ विरएभिणिव्वुडे ।
'पणए वीरे महाविहिं'[14] सिद्धिपहं णेयाउयं धुवं[15] ॥
२२. वेयालियमग्गमागओ[16] मणवयसा काएण संवुडो ।
चिच्चा वित्तं च णायओ आरंभं च सुसंवुडे चरे[17] ॥

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

माण-विवज्जण-पदं

२३. तय[18] सं व जहाइ से रयं इइ संखाय मुणी ण मज्जई ।
गोयण्णतरेण माहणे[19] अहऽसेयकरी अण्णेसि इंखिणी ॥

---

१. वि य (ख); वि (वृ); णं (चू) ।
२. जति णेज्जाहि णं बंधिउं घरं (क) ।
३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—जीवितस्स ।
४. °कंखए (ख); णाभिकंखए (वृ) ।
५. जइ जीविय नावकंखति (क) ।
६. नो लब्भंति न संठवित्तए (क, ख); नो लब्भिंति न संठवित्तए (वृ) ।
७. सेहिंति (चू) ।
८. माया (ख) ।
९. माति पिति थि पती य भायरो (चू) ।
१०. परलोगं पि जहाहि उत्तमं (चू) ।
११. असंवुडा नरा (क) ।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दविए ।
१३. दविए व समिक्ख पंडिते (चू); तम्हा दवि इक्ख पंडिए (चूपा) ।
१४. पणता वीरा महाविधिं (चू); पणता वीधे तऽणुत्तरं (चूपा); पणया वीरा° (ख, वृ); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्—महावीहिं ।
१५. सिवं (चू); धुवं (चूपा) ।
१६. °मातओ (क) ।
१७. चरेज्जासि (क,ख); परिचएज्जासि(चूपा) ।
१८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—तयं ।
१९. जे विदू (चू, वृपा); माहणे (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. जो परिभवई परं जणं संसारे परिवत्तई[1] महं[2]।
अदु इंखिणिया उ पाविया[3] इह संखाय[4] मुणी ण मज्जई॥

२५. जे यावि अणायगे[5] सिया जे वि य पेसगपेसगे[6] सिया।
इद[7] मोणपयं उवट्ठिए णो लज्जे समयं सया चरे॥

२६. 'सम अण्णयरम्मि संजमे'[8] संसुद्धे समणे परिव्वए।
जा[9] आवकहा समाहिए दविए कालमकासि पंडिए॥

२७. दूरं अणुपस्सिया मुणी तीयं धम्ममणागयं तहा।
पुट्ठे फरुसेहिं माहणे अवि हण्णू 'समयंसि रीयइ'[10]॥

समता-धम्म-पदं

२८. पण्णसमत्ते[11] सया जए समता[12] धम्ममुदाहरे[13] मुणी।
सुहुमे[14] उ सया अलूसए 'णो कुज्झे[15] णो माणि[16] माहणे'[17]॥

२९. बहुजणणमणम्मि संवुडे 'सव्वट्ठेहिं णरे'[18] अणिस्सिए।
'हरए व सया अणाविले'[19] धम्मं पादुरकासि[20] कासवं॥

३०. बहवे पाणा पुढो सिया पत्तेयं 'समयं समीहिया'[21]।
जे मोणपयं उवट्ठिए विरइं[22] तत्थ अकासि[23] पंडिए॥

---

१. परियत्तती (चू)।
२. महे (क); चिरे (ख, चू, वृपा)।
३. पातिका (चूपा)।
४. संखाए (चू)।
५. अणातए (चू)।
६. पेस्सग० (चू)।
७. जे (क, ख, वृ)।
८. समे० (क, ख); समयन्तरम्मि० (चू); समयण्णतरम्मि वा सुते (चूपा)।
९. जे (क, ख)।
१०. समयाधियासए (वृपा, चूपा)।
११. ०समत्थे (क, ख); पण्हसमत्थे (चू, वृपा); पण्हसमत्ते (चूपा)।
१२. समिया (क); समिता (चू); व्या० वि०—समतयाः।
१३. ०मुदाहरेज्ज (चू)।
१४. सुहुमे (क)।
१५. कुप्पे (चू)।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—माणी।
१७. कधयंतो ण परं [णु] कोवये (चूपा)।
१८. सव्वट्ठेसु सदा (चू)।
१९. हरदे वतुमे [पतुमे ?] अणाउले (चू); ०अणाउरे (चूपा); ०अणाइले (क, चूपा)।
२०. प्रादु० (चू)।
२१. ०उवेहिया (क, वृपा); समियं उवेहाए (चू); समिया उवेहिता (चूपा)।
२२. विरयं (क)।
२३. मकासि (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. 'धम्मस्स य पारगे मुणी आरंभस्स य 'अंतए ठिए'[1]।
सोयंति य णं ममाइणो 'णो य'[2] लभंती णियं[3] परिग्गहं'[4]॥

सामण्णस्स माहप्प-पदं

३२. इहलोगे दुहावहं विऊ[5] परलोगे य 'दुहं दुहावहं'[6]।
विद्धंसणधम्ममेव तं[7] इइ विज्जं को गारमावसे ?॥

सुहुम-सल्ल-पदं

३३. 'महयं[8] पलिगोव[9] जाणिया जा वि य वंदणपूयणा इहं।
सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे विउमंता पयहिज्ज संथवं'[10]॥

एगचारि-पदं

३४. एगे चरे ठाणमासणे[11] सयणे एगे[12] 'समाहिए सिया'[13]।
भिक्खू उवहाणवीरिए वइगुत्ते अज्झत्थसंवुडे[14]॥
३५. णो पीहे 'ण यावपंगुणे'[15] दारं सुण्णघरस्स संजए।
पुट्ठे ण उदाहरे वइं[16] ण 'समुच्छे णो संथरे तणं'[17]॥
३६. जत्थत्थमिए अणाउले[18] समविसमाणि मुणी हियासए।
चरगा अदुवा वि भेरवा अदुवा तत्थ सिरीसिवा सिया॥

---

१. अंतिए ठिए (क); अंतिए ठित (चूपा)।
२. न (क)।
३. नियये (क); णितियं (चू)।
४. नागार्जुनीया विकल्पयन्ति—
सोऊण तयं उवट्ठितं,
केयि गिही विग्घेण उट्ठिता।
धम्मम्मि इधं अणुत्तरे,
तंपि जिणेज्ज इमेण पंडिते॥ (चू)।
नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
सोऊण तयं उवट्ठियं,
केइ गिही विग्घेण उट्ठिया।
धम्मम्मि अणुत्तरे मुणी,
तंपि जिणिज्ज इमेण पंडिए॥ (वृ)।
५. विदा (ख, चू)।
६. दुहा दुहावहा (चूपा)।
७. या (क, चू)।
८. महयं (वृ); महता (वृपा)।
९. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पलिगोवं।
१०. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—पलिमंथ महं विजाणिया, जाविय वंदणपूयणा इहं[इधं]। (चू);
सुहुमं सल्लं दुरुद्धरं,
तंपि जिणे एएण पंडिए। (चू, वृ)।
११. °आसणे (चू)।
व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः।
१२. एग (ख, चू)।
१३. समाहितो चरे (चू)।
१४. अज्झप्प° (चू)।
१५. णावपंगुणे (क, ख); °ज्वंगुणे (चू)।
१६. वयं (ख)।
१७. समुच्छति णो संथडे तणे (चू)।
१८. अणाइले (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. तिरिया मणुया[1] य[2] दिव्वगा[3] उवसग्गा तिविहा धियासए[4]।
लोमादीयं पि[5] ण हरिसे सुण्णागारगए महामुणी ॥
३८. णो अभिकंखेज्ज[6] जीवियं णो वि य पूयणपत्थए सिया।
'अब्भत्थमुवेंति भेरवा'[7] सुण्णागारगयस्स भिक्खुणो ॥
३९. उवणीयतरस्स ताइणो भयमाणस्स विविक्कमासणं[8]।
सामाइयमाहु तस्स जं[9] जो अप्पाणं[10] भए ण दंसए ॥

राय-संसग्ग-विवज्जण-पदं

४०. उसिणोदगतत्तभोइणो[11] धम्मठियस्स[12] मुणिस्स हीमतो[13]।
संसग्गि[14] असाहु[15] राईहिं असमाही उ तहागयस्स वि ॥

अहिगरण-वज्जण-पदं

४१. अहिगरणकरस्स[16] भिक्खुणो वयमाणस्स पसज्झ दारुणं।
अट्ठे 'परिहायई बहू'[17] अहिगरणं ण करेज्ज पंडिए[18]॥

गिहि-भायण-पदं

४२. सीओदग[19] पडिदुगंछिणो[20] अपडिण्णस्स लवावसक्किणो[21]।
सामाइयमाहु तस्स जं[22] जो[23] गिहिमत्तेऽसणं ण भुंजई[24]॥

---

१. मणुसा (चू, वृ)।
२. व (क)।
३. दिव्विया (चू)।
४. हियासिया (ख, वृपा); विसेविया (चू)।
५. × (ख)।
६. जावऽभिकंख (चू)।
७. अब्भत्थुमुवंति भेरवा (क); पठ्यते च—"अप्पुरथमुवेंति भेरवा" (चू)।
८. विवित्त° (क, चू)।
९. तं (चू)।
१०. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं।
११. °भोयणो (चू)।
१२. धम्मट्ठिस्स (चू)।
१३. ह्रीमतो (चू)।
१४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—°संसग्गी असाहू।
१५. मसाहु (क)।
१६. °कडस्स (क, ख)।
१७. परिहायते धुवं (चू)।
१८. संजए (चू)।
१९. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सीओदगस्स।
२०. °दुगुंछिणो (चू)।
२१. °सेक्किणो (क); °संकिणो (ख); हस्तलिखितवृत्त्यादर्शे—अवसक्किणोत्ति—अवसर्पिणः।
२२. तं (चू)।
२३. जं (चू)।
२४. भक्खति (चू)।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

उत्तम-धम्म-गहण-पदं

४३. ण य संखयमाहु जीवियं तह वि य बालजणो पगब्भई।
बाले पावेहि मिज्जई[1] इइ संखाय मुणी ण मज्जई॥

४४. छंदेण[2] पलेतिमा पया बहुमाया मोहेण पाउडा।
वियडेण पलेंति माहणे सीउण्हं[3] वयसा हियासए॥

४५. कुजए अपराजिए जहा अक्खेहिं कुसलेहिं दीव्वयं[4]।
कडमेव गहाय णो कलिं णो तेयं[5] णो चेव दावरं॥

४६. एवं लोगम्मि ताइणा[6] बुइए जे[7] धम्मे अणुत्तरे।
तं गिण्ह हियं ति उत्तमं[8] कडमिव सेसऽवहाय[9] पंडिए॥

बंभचेर-पदं

४७. उत्तर[10] मणुयाण आहिया गामधम्म[11] इति मे अणुस्सुयं।
जंसी[12] विरया समुट्ठिया कासवस्स अणुधम्मचारिणो॥

४८. जे 'एय चरंति'[13] आहियं णाएण[14] महया महेसिणा।
ते उट्ठिय[15] ते समुट्ठिया अण्णोण्णं सारेंति धम्मओ॥

४९. मा पेह पुरा पणामए अभिकंखे उवहिं धुणित्तए[16]।
जे 'दूवण[17]ण ते हि'[18]णो णया ते जाणंति समाहिमाहियं॥

मुणीणं विवेग-पदं

५०. णो काहिए[19] होज्ज संजए पासणिए ण य संपसारए।
णच्चा धम्मं अणुत्तरं कयकिरिए य ण यावि मामए॥

---

१. मज्जती (चूपा)।
२. छण्णेण (चू)।
३. सीयुण्हं (चू)।
४. दिव्वयं (क); दिव्वव (चू)।
५. तीयं (ख); त्रेतं (चू)।
३. ताणिणो (क); ताइणो (चू)।
७. ऽयं (चू)।
८. उत्तिमं (क)।
९. व्या० वि०—विभक्तिरहितं सन्धिश्च—सेसं अवहाय।
१०. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तरा।
११. गामधम्मा (क)। व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—गामधम्मे।
१२. जंसि (ख)।
१३. एयं° (क) °करंति (चू)।
१४. नायएण (चू)।
१५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उट्ठिया
१६. हुणित्तए (वृ)।
१७. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दूवणया, ये दुरूपनताः न ते हि समाधिं जानन्ति, ये नो नताः—विषयेषु न प्रणताः—सन्ति ते समाधिं जानन्ति।
१८. दूमणएहिं (क, वृपा)।
१९. काधीए (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. छण्णं च पसंस[1] णो करे ण य उक्कोस[2] पगास[3] माहणे।
तेसिं सुविवेगमाहिए[4] पणया जेहिं[5] सुझोसियं[6] धुयं[7] ॥

आयहित-पदं

५२. अणिहे[8] सहिए सुसंवुडे धम्मट्ठी उवहाणवीरिए ।
विहरेज्ज समाहितिंदिए[9] 'आतहितं दुक्खेण लब्भते'[10] ॥

सामाइय-पदं

५३. ण हि णूण पुरा अणुस्सुयं[11] अदुवा तं तह णो अणुट्ठियं[12]।
मुणिणा सामाइयाहियं[13] णातएण[14] जगसव्वदंसिणा ॥

५४. एवं मत्ता[15] महंतरं[16] धम्ममिणं[17] सहिया बहू जणा।
गुरुणो छंदाणुवत्तगा विरया तिण्ण महोघमाहियं[18] ॥

—ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

कम्मावचय-पदं

५५. संवुडकम्मस्स भिक्खुणो जं दुक्खं पुट्ठं अबोहिए।
तं संजमओऽवचिज्जई[19] मरणं हेच्च वयंति पंडिया ॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पसंसं।
२. उक्कास (क, चू); व्या० वि०—विभक्ति-रहितपदम्—उक्कोसं।
३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पगासं।
४. च विवेग० (वृ); सुविवेग० (वृपा)।
५. धम्मे (चू)।
६. सुज्झोसियं (क, चू, वृपा)।
७. धूयं (ख, वृ)।
८. अणहे (वृपा)।
९. °इंदिए (ख); °तेंदिए (चू)।
१०. आयहियं खु दुहेण लब्भइ (क, ख)।
११. मऽणुस्सुतं (चू)।
१२. °समुट्ठियं (क, ख); अदुवाऽवितधं णो अधिट्ठितं (चू); अदुवाऽवितहं णो° (वृपा)।
१३. सामाइगं पदं (चू)।
१४. नाएणं (क)।
१५. माता (चू)।
१६. महत्तरं (चूपा, वृपा)।
१७. °मिमं (चू)।
१८. मघोघ° (चू)।
१९. °विचिज्जती (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काम-मुच्छा-पदं

५६. जे विण्णवणाहिऽजोसिया[1] संतिण्णेहि समं वियाहिया।
'तम्हा उड्ढं ति पासहा'[2] अद्दक्खू कामाइं रोगवं॥

५७. अग्गं वणिएहि आहियं[3] धारेंती रायाणया[4] इहं।
'एवं परमा महव्वया अक्खाया उ सराइभोयणा'[5]॥

५८. जे इह सायाणुगा णरा अज्झोववण्णा कामेहि मुच्छिया।
किवणेण[6] समं[7] पगब्भिया ण वि जाणंति समाहिमाहियं॥

५९. वाहेण जहा व विच्छए अबले होइ गवं पचोइए।
'से अंतसो अप्पथामए णाईवचए अबले विसीयइ'[8]॥

६०. एवं कामेसणाविऊ[9] अज्ज सुए पयहेज्ज[10] संथवं।
कामी कामे ण कामए लद्धे वा वि[11] अलद्ध[12] कण्हुई॥

६१. मा पच्छ असाहुया भवे[13] अच्चेही[14] अणुसास[15] अप्पगं।
अहियं च असाहु[16] सोयई से थणई परिदेवई[17] बहुं॥

६२. इह जीवियमेव पासहा[18] 'तरुण एव वाससयस्स तुट्टई'[19]।
'इत्तरवासं व बुज्झहा'[20] गिद्ध[21] णरा कामेसु[22] मुच्छिया[23]॥

---

१. °वणाहजोसिया (क); °वणाअभोसिया (ख); °ऽझोसिया (वृपा); ऽझूसिया (चू)।
२. उड्ढं तिरियं अधे तहा (वृपा); उड्ढं तिरियं अधेतिधा (चूपा)।
३. आणियं (चू); आहितं (चूपा)।
४. राईणिया (क, ख)।
५. एवं परमाणि महव्वताणि, अक्खाताणि सरातिभोयणाणि (चू)।
६. किमणेण (चू, वृपा)।
७. समा (वृ)
८. जेण तस्स तहि अप्पथामता, अचयंतो खलु सेऽवसीदतो (चू); से अंतए अप्पथामए, नातिचए अबले विसीदति (चूपा)।
९. कामेसणं विऊ (क, ख, चूपा)।
१०. पयहामि (चू); पजहेज्ज (क, चूपा)।
११. × (क)।
१२. अलद्धे (चू)।
१३. तवे (चू)।
१४. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१५. अणुसासे (चू)।
१६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१७. परितप्पती (चू)।
१८. पस्सधा (चू)।
१९. तरुणेव० (ख); तरुणगो वाससयस्स तिउट्टति (चू); दुब्बलवाससया तिउट्टति (चूपा); °वाससयाउ तुट्टति (वृपा)।
२०. इत्तर वासे य बुज्झह (क)।
२१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा।
२२. कामेहिं (क)।
२३. त्रिप्पिता (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरंभ-परिणाम-पदं

६३. जे इह आरंभणिस्सिया आयदंड[1] एगंतलूसगा ।
गंता ते पावलोगयं चिररायं[2] आसुरियं[3] दिसं ॥

परलोग-संदेह-पदं

६४. ण य संखयमाहु जीवियं तह वि य बालजणो पगब्भई ।
पच्चुप्पण्णेण कारियं के[4] दट्ठुं परलोगमागए ? ॥

परलोग-सद्दहणा-पदं

६५. अदक्खुव[5] ! दक्खुवाहियं सद्दहसू अदक्खुदंसणा ! ।
हंदि ! हु सुणिरुद्धदंसणे मोहणिज्जेण[6] कडेण कम्मुणा ॥

आयतुला-पदं

६६. दुक्खी मोहे पुणो पुणो णिव्विंदेज्ज सिलोगपूयणं ।
एवं सहिएऽहिपासए[7] 'आयतुलं पाणेहि संजए'[8] ॥

अगारवासे धम्म-पदं

६७. गारं पि य[9] आवसे णरे अणुपुव्वं पाणेहि संजए ।
समया सव्वत्थ सुव्वए देवाणं गच्छे सलोगयं ॥

सच्चोवक्कम-पदं

६८. सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं[10] ।
सव्वत्थ विणीयमच्छरे[11] उंछं भिक्खु[12] विसुद्धमाहरे ॥

६९. सव्वं णच्चा अहिट्ठए धम्मट्ठी उवहाणवीरिए ।
गुत्ते जुत्ते सया जए आयपरे परमायतट्ठिए ॥

असरण-भावणा-पदं

७०. वित्तं पसवो य णाइओ[13] 'तं बाले'[14] सरणं ति मण्णई ।
एए मम 'तेसि वा'[15] अहं णो ताणं सरणं ण[16] विज्जई ॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—आयदंडा ।
२. चिरकालं (चू) ।
३. आसूरियं (चू) ।
४. को (ख) ।
५. अदक्खुव (चू) ।
६. मोहणिएण (चू)।
७. ऽधिपासिया (चू) ।
८. °तुले पाणेहि भवेज्जसि (चू) ।
९. × (ख) ।
१०. करेहु° (क, चू); करेज्ज° (ख); करेज्जुवक्कमं (चूपा) ।
११. अवणीत° (वृ) ।
१२. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१३. नायतो (क); णातयो (चू) ।
१४. बालजणो (चू) ।
१५. तेसु वा (क); तेसु वि (ख); तेसु या (वृ); °वी (चू) ।
१६. च (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१. अब्भागमियम्मि वा दुहे अहवोवक्कमिए[1] भवंतिए[2]।
एगस्स गई य[3] आगई विदुमंता सरणं ण मण्णई ॥
७२. सव्वे सयकम्मकप्पिया अवियत्तेण दुहेण पाणिणो।
हिंडंति भयाउला सढा जाइजरामरणेहिऽभिद्दुया[4] ॥

बोहि-दुल्लह-पदं

७३. इणमेव[5] खणं वियाणिया[6] णो सुलभं 'बोहिं च'[7] आहियं।
एवं सहिएऽहिपासए[8] आह जिणे इणमेव सेसगा ॥

धम्मस्स तेकालियत्त-पदं

७४. अभविंसु पुरा वि भिक्खवो आएसा वि भविंसु[9] सुव्वया।
एयाइं गुणाइं आहु[10] ते कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥
७५. तिविहेण वि पाण[11] मा हणे आयहिए अणियाण[12] संवुडे।
एवं सिद्धा अणंतगा[13] संपइ[14] जे य अणागयावरे ॥
७६. एवं[15] से उदाहु अणुत्तरणाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरणाणदंसणधरे।
अरहा णायपुत्ते भगवं वेसालिए[16] वियाहिए[17] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. अहवा उवक्कमिए (क)।
२. भवंतए (चू); भवंतरे (वृ); भवंतिए (वृपा)।
३. व (क, चू)।
४. वाधिजरामरणेहऽभिद्दुता (चू)।
५. इणमो य (चू, वृ)।
६. विताणिता (चू)।
७. बोधी य (चू)।
८. ऽहियासए (ख); ऽहिपस्सिया (चू); ऽधियासए (चूपा, वृपा)।
९. भवंति (क, ख)।
१०. आह (चू)।
११. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पाणा।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणियाणे।
१३. अणंतसो (क, ख)।
१४. संपत (चू)।
१५. तुलना—उत्तरज्झयणाणि ६।१७।
१६. वेसालीए (चू)।
१७. 'क' प्रतौ अस्यानन्तरमेकः श्लोकः अतिरिक्तो लभ्यते—
इतिकम्मवियालमुत्तमं,
जिणवरेण सुदेसियं सया।
जे आचरंति आहिय,
खवितरया वहिंति ते सिवं गतिं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं

उवसग्गपरिण्णा

पढमो उद्देसो

ओघ-उवसग्ग-पदं

१. सूरं मण्णइ अप्पाणं जाव जेयं ण पस्सई ।
जुज्झंतं दढधम्मा[न्ना ?]णं[1] सिसुपालो व महारहं ।।
२. पयाया सूरा रणसीसे संगामम्मि उवट्ठिए ।
माया पुत्तं ण जाणाइ जेएण परिविच्छए[2] ।।
३. एवं सेहे वि अप्पुट्ठे भिक्खुचरिया[3] - अकोविए ।
सूरं मण्णइ अप्पाणं जाव लूहं ण सेवए ।।

सीत-परीसह-पदं

४. जया हेमंतमासम्मि सीयं फुसइ सवायगं ।
तत्थ मंदा विसीयंति[4] रज्जहीणा[5] व खत्तिया ।।

गिम्ह-परीसह-पदं

५. पुट्ठे गिम्हाहितावेणं विमणे सुपिवासिए[6] ।
तत्थ मंदा विसीयंति मच्छा अप्पोदए जहा ।।

जायणा-परीसह-पदं

६. सया दत्तेसणा दुक्खं जायणा दुप्पणोल्लिया ।
कम्मंता[7] दुब्भगा[8] चेव इच्चाहंसु पुढोजणा ।।

---

१. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठश्चूर्ण्यनुसारी, यथा— दृढधन्वानम् ।
२. °विच्छिए (क, ख) ।
३. भिक्खाचरिए (क); भिक्खाचरिया (ख वृ) ।
४. वसीयंति (क) ।
५. रट्ठ° (चू) ।
६. सुप्पिवासिए (क) ।
७. कम्मत्ता (क, ख, वृ) ।
८. दूहगा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. एए सद्दे[1] अचायंता गामेसु णगरेसु वा[2] ।
तत्थ मंदा विसीयंति संगामम्मि व भीरुणो[3] ।।

वध-परीसह-पदं

८. अप्पेगे खुज्झियं[4] भिक्खुं[5] सुणी डंसइ लूसए ।
तत्थ मंदा विसीयंति तेउपुट्ठा[6] व पाणिणो ।।

अक्कोस-परीसह-पदं

९. अप्पेगे पडिभासंति[7] पाडिपंथियमागया[8] ।
'पडियारगया एए'[9] जे एए एव[10]-जीविणो ।।

१०. अप्पेगे वइं[11] जुंजंति णिगिणा[12] पिंडोलगाहमा ।
मुंडा कंडू-विणट्ठंगा उज्जल्ला[13] असमाहिया ।।

११. एवं विप्पडिवण्णेगे अप्पणा उ अजाणया ।
तमाओ ते तमं जंति मंदा मोहेण पाउडा[14] ।।

फास-परीसह-पदं

१२. पुट्ठो य दंसमसगेहिं तणफासमचाइया ।
ण मे दिट्ठे परे लोए किं[15] परं मरणं सिया ? ।।

केसलोय-बंभचेर-परीसह-पदं

१३. संतत्ता केसलोएणं बंभचेरपराइया ।
तत्थ मंदा विसीयंति 'मच्छा पविट्ठा'[16] व केयणे ।।

---

१. सद्दा (ख) ।
२. य (क) ।
३. भीरुया (ख) ।
४. भुज्झियं (क, ख); खुधियं (वृ) ।
५. भिक्खू (चू) ।
६. तेज° (क) ।
७. परि° (क, चू) ।
८. पडिपथिय° (क, ख) ।
९. परियार° (क); तद्दारवेत्तणिज्जेते (चूपा) ।
१०. एवं (क) ।
११. वति (ख) ।
१२. चरगा (चू) ।
१३. उज्जाया (चूपा)
१४. °पाउता (चू); मतिमंदा इत्थिगाउया (चूपा) ।
१५. जइ (क, ख, वृ)
१६. मच्छाविट्ठा (ख)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वध-बंध-परीसह-पदं

१४. आयदंडसमायारा मिच्छासंठियभावणा ।
हरिसप्पओसमावण्णा केई लूसंतिऽणारिया[1] ॥

१५. अप्पेगे पलियंतंसि चारो[2] 'चोरो त्ति'[3] सुव्वयं ।
बंधंति भिक्खुयं बाला कसायवसणेहि[4] य ॥

१६. तत्थ दंडेण संवीते मुट्ठिणा अदु फलेण वा ।
णाईणं सरई बाले इत्थी वा कुद्धगामिणी ॥

उवखेव-पदं

१७. एए भो कसिणा[5] फासा फरुसा[6] दुरहियासया[7] ।
हत्थी वा सरसंवीता[8] कीवावसगा[9] गया गिहं ॥

—ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अनुकूल-परीसह-पदं

१८. अहिमे[10] सुहुमा संगा भिक्खूणं जे दुरुत्तरा ।
जत्थ एगे[11] विसीयंति ण चयंति[12] जवित्तए[13] ॥

१९. अप्पेगे णायओ[14] दिस्स रोयंति परिवारिया[15] ।
पोस णे तात ! पुट्ठो सि कस्स 'तात ! जहासि'[16] णे ॥

---

१. लूसंत° (क); लूसेंति° (चू) ।
२. चारि (क, ख) ।
३ चोरित्ति (क) ।
४. °वयणेहि (क, ख, वृ) ।
५. फरुसा (चू) ।
६. कसिणा (चू) ।
७. दुरु° (क, ख) ।
८. °संवीते (ख) ।
९. कीवाऽवस (क, वृ); कीवा अवसा (ख); तिव्वसढा (वृपा); तिव्वसढगा (चूपा) ।
१०. अह इमे (ख); अथ इमे (चू) ।
११. मंदा (चू) ।
१२. चएत्ता (चू) ।
१३. जहित्तए (क); जवइत्तए (चू) ।
१४. नातिगा (ख) ।
१५. °यारिया (क) ।
१६. तात चयासि (ख, वृ); परिच्चयासि (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. पिया ते थेरओ तात! ससा[2] ते खुड्डिया इमा।
भायरो ते सगा[2] तात! सोयरा किं जहासि[3] णे? ॥

२१. मायरं पियरं पोस[4] एवं लोगो[4] भविस्सइ।
एवं खु लोइयं[5] तात! जे पालेंति[6] उ[7] मायरं।

२२. उत्तरा महुरुल्लावा[8] पुत्ता ते तात! खुड्डया।
भारिया ते णवा तात! मा सा अण्णं जणं गमे ॥

२३. एहि तात[9]! घरं जामो मा तं कम्म[10] सहा वयं।
बीयं पि ताव[11] पासामो जामु ताव सयं गिहं ॥

२४. गंतुं तात! पुणाऽऽगच्छे[12] ण तेणाऽसमणो सिया।
अकामगं परक्कमंतं[13] को तं[14] वारेउमरहइ? ॥

२५. जं किंचि अणगं तात! तं पि सव्वं समीकतं।
हिरण्णं ववहाराइ तं पि दाहामु[15] ते वयं ॥

२६. इच्चेव[16] णं सुसेहंति[17] कालुणीयउवट्ठिया[18]।
विबद्धो णाइसंगेहि तओऽगारं पहावइ ॥

२७. जहा रुक्खं वणे जायं[19] मालुया पडिबंधइ।
एवं[20] णं पडिबंधंति[21] णायओ असमाहिए[22] ॥

---

१. व्या० वि०—शृण्वंतीति श्रवा :—आणाउववायवयणणिद्देसे य चिट्ठंति (चू)।
२. सया (क); सगा (ख, वृ)।
३. चयासि (ख, वृ)।
४ एस लोए (क)।
५. खलु लोय (ख)।
६. पोसइ (क); पालयति (ख)।
७. पोसे पिउ (क्व)।
८. इतरा मधुरोल्लावा (चूपा)।
९. ताव (चू)।
१०. व्या० वि०—'अकृथा:' इति क्रियाशेषः।
११. तात (ख, वृ)।
१२. पुणोगच्छे (क, ख)।
१३. परक्कमं (क); परिकम्मं (ख)।
१४. ते (क, ख)।
१५. दासामो (चू)।
१६. इच्चेवं (चू)।
१७. सुसेहित्ति (क); सुसिक्खंतं (चू); सुसेहिंति (चूपा)।
१८. कालुणीयासमुट्ठिया (क); °समुट्ठिया (ख); कालुणतो° (चू)।
१९. वणे जातं जधा रुक्खं (चू)।
२०. एव (क)।
२१. परिवेढंति (चू)।
२२. असमाहिणा (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. विबद्धो[1] णाइसंगेहिं[2] हत्थी वा वि णवग्गहे।
पिट्ठओ परिसप्पंति 'सूती गो व्व अदूरगा'[3]॥
२९. एए संगा मणुस्साणं पायाला व अतारिमा।
कीवा 'जत्थ य किस्संति'[4] णाइसंगेहि मुच्छिया॥
३०. तं च भिक्खू परिण्णाय सव्वे संगा महासवा।
जीवियं णावकंखेज्जा सोच्चा धम्ममणुत्तरं॥
३१. अहिमे[5] संति आवट्टा[6] कासवेण पवेइया।
बुद्धा जत्थावसप्पंति सीयंति अबुहा जहिं॥

भोग-णिमंतण-पदं

३२. रायाणो रायऽमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया।
णिमंतयंति भोगेहिं भिक्खुयं साहुजीविणं॥
३३. हत्थस्स[7]-रह-जाणेहिं विहारगमणेहि य।
'भुंज भोगे इमे सग्घे'[8] महरिसी! पूजयामु तं[9]॥
३४. वत्थगंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
भुंजाहिमाइं भोगाइं आउसो[10]! 'पूजयामु तं'[11]॥
३५. जो तुमे णियमो चिण्णो भिक्खुभावम्मि सुव्वया[12]!।
अगारमावसंतस्स सव्वो 'संविज्जए तहा'[13]॥
३६. चिरं दूइज्जमाणस्स दोसो दाणिं कुओ[14] तव?।
इच्चेव णं णिमंतेंति णीवारेण[15] व सूयरं॥
३७. चोइया भिक्खुचरियाए[16] अचयंता जवित्तए[17]।
तत्थ मंदा विसीयंति उज्जाणंसि व दुब्बला॥

---

१. विबद्धे (चू)।
२. नाय° (क)।
३. °अदूरए (क); सूतिय व्व अदूरतो (चू)।
४. °कीसंति (क); जत्थ विसण्णेसी (चू); जत्थ विसण्णासी, जत्थावकीसंति (चूपा)।
५. अह इमे (क); अहो इमे (चू, वृपा); अध इमे (चूपा)।
६. याऽवट्टा (चू); आवट्टा (चूपा)।
७. व्या० वि०–सन्धिपदमिदम्—हत्थि+अस्स।
८. °सक्खे (क); भुंजाहिमाइं भोगाइं (चू)।
९. ते (चू)।
१०. आयसो (चू)।
११. पूजयामि ते (चू)।
१२. उत्तमो (चू)।
१३. सो चिट्ठती तधा (चू); संविज्जते तधा (चूपा)।
१४. कओ (क)।
१५. णीयारेण (चू)।
१६. भिक्खुवज्जाए (क)।
१७. जवइत्तए (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. अचयंता व[1] लूहेण उवहाणेण तज्जिया ।
तत्थ मंदा विसीयंति 'पंकंसि व'[2] जरग्गवा ॥
३९. एवं[3] णिमंतणं लद्धं मुच्छिया गिद्ध[4] इत्थिसु ।
अज्झोववण्णा कामेहिं[5] चोइज्जंता 'गिहं गय'[6] ॥

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-विसीदण-पदं

४०. जहा संगामकालम्मि 'पिट्ठओ भीरु[7] वेहइ'[8] ।
वलयं गहणं णूमं को जाणइ पराजयं ? ॥
४१. मुहुत्ताणं[9] मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ[10] तारिसो ।
पराजियाऽवसप्पामो इति भीरू उवेहई ॥
४२. एवं तु समणा एगे अबलं णच्चाण अप्पगं ।
अणागयं भयं दिस्स अवकप्पंति मं सुयं ॥
४३. 'को जाणइ'[11] वियोवातं[12] इत्थीओ उदगाओवा ? ।
चोइज्जंता पवक्खामो ण[13] णे अत्थि पकप्पियं ॥
४४. इच्चेवं[14] पडिलेहंति वलयाइ[15] पडिलेहिणो ।
वितिगिछसमावण्णा[16] पंथाणं व अकोविया ॥
४५. जे उ संगामकालम्मि णाया सूरपुरंगमा ।
'ण ते पिट्ठमुवेहिंति'[17] किं परं मरणं सिया[18] ? ॥

---

१. य (चू) ।
२. सिरंसि व (क, वृ); उज्जाणंसि (ख); थलंसि व (क्व) ।
३. एयं (चू) ।
४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा ।
५. कामेसु (चू) ।
६. गया गिहं (ख) ।
७. व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—भीरू ।
८. पिट्ठिओ० (क); पच्छतो भीरू वेहति (चू) ।
९. मुहुत्ताण (क) ।
१०. हवति (क, चू) ।
११. के जाणंति (चू) (निर्युक्ति गा० ४१) ।
१२. विउवायं (क) ।
१३. नो (क) ।
१४. इच्चे व णं (क, ख) ।
१५. वलय (ख) ।
१६. विनिगिच्छं० (वृ) ।
१७. नो ते पुट्ठ० (ख); ०पिट्ठतो पेहंति (चू) ।
१८. भवे (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. एवं 'समुट्ठिए भिक्खू'[1] वोसिज्जा[2] गारबंधणं।
आरंभं तिरियं[3] कट्टु अत्तत्ताए[4] परिव्वए ॥

परवादवयण-पदं

४७. तमेगे परिभासंति भिक्खुयं साहुजीविणं[5]।
जे 'एवं परिभासंति'[6] अंतए ते समाहिए[7] ॥

४८. संबद्धसमकप्पा हु 'अण्णमण्णेसु मुच्छिया'[8]।
पिंडवायं गिलाणस्स जं सारेह दलाह य ॥

४९. एवं तुब्भे सरागत्था अण्णमण्णमणुव्वसा।
णट्ठ-सप्पह-सब्भावा संसारस्स अपारगा ॥

५०. अह ते पडिभासेज्जा[9] भिक्खू मोक्खविसारए।
एवं तुब्भे पभासंता[10] दुपक्खं[11] चेव सेवहा ॥

५१. तुब्भे भुंजह पाएसु गिलाणाभिहडं[12] ति य।
तं च बीओदगं भोच्चा तमुद्देस्सादि[13] जं कडं ॥

५२. लित्ता तिव्वाभितावेणं[14] उज्झिया[15] असमाहिया।
णाइकंडूइयं सेयं[16] अरुयस्सावरज्झई[17] ॥

५३. तत्तेण अणुसिट्ठा[18] ते अपडिण्णेण जाणया।
ण एस णियए[19] मग्गे असमिक्खा[20] वई किई[21] ॥

---

१. समुट्ठितं भिक्खुं (चू)।
२. वोसिच्चा (क)।
३. (वि) तिरियं (चू)।
४. आतत्ताए(क); आतत्ताए, आतथाए(चूपा)।
५. °जीवियं (क)।
६. तं उ० (क); तं उ एवं भासंति (चू)।
७. ऽसमाहिते(चू); व्या० वि०—अत्र पञ्चम्येकवचने 'समाहीए' इतिरूपं भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
८. अण्णमण्णसमुच्छिता (चू); अण्णमण्णेहिं मुच्छिया (चू) (निर्युक्ति गा० ४१)।
९. परिभासेज्जा (ख, वृ); परिभासिज्ज (क)।
१०. पभासिता (क); ऽवभासंता (चू)।
११. दुवक्खं (चू)।
१२. गिलाणाभिहडम्मि (क); गिलाणोअभिहडं ति (ख, चू)
१३. तमुद्दिस्सादि (क); तमुद्देसा य (ख)।
१४. तिक्खा° (ख); तिव्वाभिलेवेणं (चूपा)।
१५. उज्जया (क); उज्जुया (ख); उज्जाता (चू)।
१६. साधु (चू)।
१७. अरुयस्स° (क); अरुकस्सावरुज्झति (चूपा)।
१८. अणुसट्ठा (क, चू)।
१९. णितिए (चू)।
२०. व्या० वि०—अकारस्य दीर्घत्वम्।
२१. कति (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४. एरिसा जा[1] वई एसा 'अग्गे वेणु व्व करिसिया'[2]।
गिहिणं[3] अभिहडं सेयं भुंजिउं ण उ[4] भिक्खुणं[5]॥
५५. धम्मपण्णवणा 'जा सा'[6] सारम्भाण विसोहिया।
ण उ एयाहि दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं॥
५६. सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं अचयंता[7] जवित्तए।
तओ वायं णिराकिच्चा[8] ते भुज्जो वि पगब्भिया॥
५७. रागदोसाभिभूयप्पा[9] मिच्छत्तेण अभिद्दुया[10]।
अक्कोसे[11] सरणं जंति टंकणा इव पव्वयं॥
५८. बहुगुणप्पकप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए[12]।
जेणण्णे ण[13] विरुज्झेज्जा तेणं तं तं समायरे॥
५९. इमं च धम्ममायाय कासवेण पवेइयं[14]।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए[15] समाहिए॥
६०. संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।
उवसग्गे णियामित्ता[16] आमोक्खाए[17] परिव्वएज्जासि॥

—त्ति बेमि॥

चउत्थो उद्देसो

अणुस्सुत-विसीदण-पदं

६१. आहंसु महापुरिसा पुव्विं तत्ततवोधणा।
'उदएण सिद्धिमावण्णा'[18] तत्थ मंदो विसीयइ॥

---

१. भो (ख); भे (चूपा)।
२. अग्गवेणु॰ (ख); अग्गिवेलव्व करिसिता (चू); अग्गे वेलुव्व करिसिति (चूपा)।
३. गिहिणो (ख, चू)।
४. व्या॰ वि॰—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
५. भिक्खुणो (ख, चू)।
६. एसा (चू)।
७. अचएंता (चू)।
८. णिरे किच्चा (चू); नरे किच्चा (क)।
९. रागदोस॰ (ख)।
१०. अभिदुया (ख)।
११. आओसे (ख)।
१२. आतसमाहितो (चू)।
१३. णो (ख)।
१४. पवेदिदं (चू)।
१५. अगिणेण (चू)।
१६. अधियासेंतो (चू)।
१७. अमोक्खाए (चू)।
१८. भोज्जा सीतोदगं सिद्धा (चू); मंदेऽवसीयति (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. अभुंजिया णमी वेदेही[1] रामउत्ते[2] य[3] भुंजिया।
बाहुए उदगं भोच्चा तहा तारागणे[4] रिसी॥

६३. आसिले देविले चेव दीवायण[5] महारिसी।
पारासरे दगं भोच्चा बीयाणि[6] हरियाणि य॥

६४. एए पुव्वं[7] महापुरिसा आहिया इह संमया।
भोच्चा बीयोदगं[8] सिद्धा इइ[9] मेयमणुस्सुयं॥

६५. तत्थ मंदा विसीयंति वाहच्छिण्णा व गद्दभा।
पिट्ठओ परिसप्पंति[10] पीढसप्पीव[11] संभमे॥

सातं सातेण विज्जई-पदं

६६. इहमेगे उ भासंति[12] सातं सातेण विज्जई।
'जे तत्थ'[13] आरियं[14] मग्गं परमं च[15] समाहियं[16]॥

६७. मा एयं अवमण्णंता अप्पेणं 'लुंपहा बहुं'[17]।
एयस्स अमोक्खाए 'अयोहारि व्व'[18] जूरहा॥

६८. 'पाणाइवाए वट्टंता'[19] 'मुसावाए असंजया'[20]।
अदिण्णादाणे वट्टंता मेहुणे य परिग्गहे॥

---

१. विदेहि (ख)।
२. रामगुत्ते (क, वृ); रामाउत्ते (चू); वृत्तिकारेण 'रामगुप्त' इति व्याख्यातम्, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे नैतत्सम्यक् प्रतिभाति।
३. व (क)।
४. नारायणे (वृ); चूर्णौ (पुण्यविजयजी द्वारा संपादित, पृ० ९५) 'नारायणे' इति पाठो मुद्रितोस्ति, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे 'तारागणे' पाठो युज्यते। संभवतो लिपिदोषेण 'तकार' स्थाने 'नकारो जातः।
५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दीवायणे।
६. बीताणि (चू)।
७. पुव्वि (चू)।
८. सीतोदगं (चू)।
९. जह (चू)।
१०. अणुधावंति (चू)।
११. पिट्ठ० (क्व)।
१२. मन्नंते (चू, वृपा)।
१३. जितत्थ (चू)।
१४. आयरियं (चू)।
१५. ति (चू)।
१६. समाधिता (चू)।
१७. बहु लुंपध (चू)।
१८. अयहारी व (क, चू)।
१९. पाणाइवाए व मक्खंता (क)।
२०. ०य संजया (क); मुसावादे वऽसंजता (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पदं

६९. एवमेगे[1] उ[2] पासत्था पण्णवेंति अणारिया ।
'इत्थीवसं गया'[3] बाला जिणसासणपरंमुहा ॥

७०. जहा गंडं पिलागं वा परिपीलेत्ता[4] मुहुत्तगं ।
एवं विण्णवणित्थीसु[5] दोसो तत्थ कओ[6] सिया ? ॥

७१. जहा 'मंधादए णाम'[7] थिमियं पियति[8] दगं ।
एवं विण्णवणित्थीसु[9] दोसो तत्थ कओ[10] सिया ? ॥

७२. जहा विहंगमा पिंगा थिमियं पियति[11] दगं ।
एवं विण्णवणित्थीसु[12] दोसो तत्थ कओ[13] सिया ? ॥

७३. 'एवमेगे उ पासत्था'[14] मिच्छादिट्ठी[15] अणारिया ।
अज्झोववण्णा कामेहिं पूयणा इव तरुणए[16] ॥

७४. अणागयमपस्संता[17] पच्चुप्पण्णगवेसगा[18] ।
ते पच्छा परितप्पंति[19] 'झीणे आउम्मि'[20] जोव्वणे ॥

७५. जेहिं काले परक्कंतं[21] 'ण पच्छा परितप्पए'[22] ।
ते धीरा[23] बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवियं ॥

७६. जहा णई वेयरणी दुत्तरा[24] इह सम्मता ।
एवं लोगंसि णारीओ दुत्तरा[25] अमईमया[26] ॥

---

१. एवमेते (चू) ।
२. य (क) ।
३. इत्थीवसगा (क), इत्थीवसगता (चू) ।
४. परिपीलिज्ज (क, ख); णिपीलेत्ता (चू) ।
५. °वणत्थीसु (चू) ।
६. कुतो (चू) ।
७. मंधायती नाम (क); मंधातइण्णाम (चू) ।
८. भुंजती (क, ख) ।
९. °वणत्थीसु (चू) ।
१०. कुओ (चू) ।
११. भुंजती (क, ख) ।
१२. °वणत्थीसु (चू) ।
१३. कुओ (चू) ।
१४. एवं तु समणा एगे (चू) ।
१५. मिच्छदिट्ठी (ख) ।
१६. यद्यपि चूर्णीपाठे 'तरुणए' इत्येव पाठो मुद्रितोऽस्ति, किन्तु 'तण्णगे—छावके' इति व्याख्यांशेन प्रतीयते मौलिकः पाठः 'तण्णगे' इति आसीत्, किन्तु कठिनशब्दानां सरलीकरणपद्धत्या अत्रापि परिवर्तनं जातमिति संभाव्यते ।
१७. °मपासंता (चू) ।
१८. °गवेसए (क); °गवेसणा (चू) ।
१९. अणुसोयंति (चू) ।
२०. खीणे° (ख); झीणाउम्मि (चू) ।
२१. परिक्कंतं (क, चू) ।
२२. सुकडं तेसि सामण्णं (चू) ।
२३. वीरा (क) ।
२४. दुरुत्तरा (ख) ।
२५. दुरुत्तरा (ख); दुरुत्तराओ (चू) ।
२६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७. जेहिं 'णारीण संजोगा'[1] पूयणा पिट्ठओ कया।
सव्वमेयं णिराकिच्चा[2] ते ठिया सुसमाहीए[3]॥

७८. एए ओघं तरिस्संति समुद्दं व[4] ववहारिणो।
जत्थ पाणा विसण्णासी[5] 'किच्चंती सयकम्मुणा'[6]॥

७९. तं च भिक्खू परिण्णाय सुव्वए समिए चरे।
मुसावायं विवज्जेज्जा[7] 'ऽदिण्णादाणं च'[8] वोसिरे॥

८०. उड्ढमहे तिरियं वा जे केई तसथावरा।
सव्वत्थ 'विरतिं कुज्जा'[9] संति णिव्वाणमाहियं॥

८१. इमं च धम्ममायाय कासवेण पवेइयं।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए समाहिए॥

८२. संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।
उवसग्गे णियामित्ता[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥
—त्ति बेमि॥

---

१. ते णारि संजोगा (चू)।
२. णिरेकिच्चा (क, चू)।
३ सुसमाहिए (क, ख)।
४. × (ख)।
५. विसन्नासं (क); विषण्णाः सन्तः (वृ)।
६. °सयकम्मणा (ख); कच्चंति सह कम्मणा (चू)।
७. च वज्जिज्जा (ख); विवज्जेज्जा (चू)।
८. अदिण्णादि च (चू)।
९. विज्जं विरतिं (चू)।
१०. नियाएत्ता (क); हियासित्ता (ख); णिरेकिच्चा (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

इत्थिपरिण्णा

पढमो उद्देसो

इत्थीसंसग्ग-विवज्जण-पदं

१. जे मायरं च पियरं च विप्पजहाय[1] पुव्वसंजोगं ।
एगे सहिए चरिस्सामि आरतमेहुणो[2] विवित्तेसी[3] ।।
२. सुहुमेणं तं परक्कम्म छण्णपएण इत्थीओ मंदा ।
'उवायं पि ताओ जाणंति'[4] जह[5] लिस्संति भिक्खुणो एगे ।।
३. पासे भिसं णिसीयंति अभिक्खणं पोसवत्थं[6] परिहिंति ।
कायं अहे वि दंसंति 'बाहु मुद्धट्टु कक्खमणुव्वजे'[7] ।।
४. सयणासणेहिं जोग्गेहिं[8] इत्थीओ एगया णिमंतेंति ।
एयाणि चेव से जाणे पासाणि विरूवरूवाणि ।।
५. णो तासु[9] चक्खु संधेज्जा णो वि य 'साहसं समणुजाणे'[10] ।
णो सद्धियं[11] पि विहरेज्जा एवमप्पा 'सुरक्खिओ होइ'[12] ।।

---

१. विप्पजधाय (चू) ।
२. °मेधुणो (चू) ।
३. विवित्तेसु (वृ); विवित्तेसि (वृपा); विवित्तमेसी (चूपा) ।
४. °जाणिसु (क, ख, वृपा); जाणंति ता उवायं च (चू) ।
५. जहा (ख); जध (चू) ।
६. °वत्थ (क, ख) ।
७. बाहु उद्धट्टु° (क); बाहु मुद्धत्तु° (ख); बाहु उद्धट्टु कक्खं परामुसे (चू) ।
८. जोगेहिं (क, ख) ।
९. तासि (चू) ।
१०. साहसमभिजाणेज्जा (क); °समभिजाणे(ख)
११. सहियं (ख) ।
१२. रक्खित्तु सेओ (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. आमंतिय 'ओसवियं वा'[1] भिक्खुं आयसा णिमंतेंति।
एयाणि चेव से जाणे[2] सद्दाणि विरूवरूवाणि'[3] ॥
७. मणबंधणेहि णेगेहिं कलुणविणीयमुवगसित्ताणं[4] ।
अदु मंजुलाइं भासंति आणवयंति[5] भिण्णकहाहिं ॥
८. सीहं जहा व कुणिमेणं णिब्भयमेगचरं पासेणं ।
एवित्थियाओ[6] बंधंति संवुडमेगतियमणगारं ॥
९. अह तत्थ पुणो णमयंति रहकारो व णेमिं अणुपुव्वीए[7] ।
बद्धे मिए व पासेणं फंदंते वि ण मुच्चई ताहे ॥
१०. अह सेऽणुतप्पई पच्छा भोच्चा पायसं व विसमिस्सं ।
एवं विवागमायाए[8] संवासो ण[9] कप्पई दविए ॥
११. तम्हा उ[10] वज्जए इत्थी विसलित्तं व कंटगं णच्चा ।
ओए कुलाणि वसवत्ती आघाए[11] ण से वि[12] णिग्गंथे ॥
१२. जे एयं 'उंछं तऽणुगिद्धा'[13,14] अण्णयरा हु ते कुसीलाणं ।
सुतवस्सिए[15] वि से भिक्खू णो विहरे[16] सहणमित्थीसु[17] ॥
१३. अवि[18] धूयराहिं सुण्हाहिं धाईहिं अदुवा दासीहिं ।
महतीहिं[19] वा कुमारीहिं संथवं से ण कुज्जा अणगारे ॥
१४. अदु णाइणं व सुहिणं वा अप्पियं दट्ठुं एगया होइ ।
'गिद्धा सत्ता'[20] कामेहिं रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि ॥
१५. समणं 'पि दट्ठूदासीणं'[21] तत्थ वि ताव एगे कुप्पंति ।
अदु[22] भोयणेहिं णत्थेहिं इत्थीदोससंकिणो होंति[23] ॥

---

१. ओसविय (ख); ओसविया णं (चूपा)।
२. जाणिया (क); जाणि (चू)।
३. णिमंतणादीणि (चू); विरूवरूवाणि (चूपा)।
४. °मुवागसित्ताणं (क, ख); °मुपकम्मित्ताण (चू)।
५. आणमेयंति (क); आणमयंति (चू)।
६. एवित्थिया (क); एवं इत्थियाओ (ख)।
७. अणुपुव्वी (ख); अणुपुव्वीए (चू)।
८. विवेग° (क, ख, वृपा, चूपा); विवागमणिसा (चू)।
९. न वि (ख)।
१०. हु (क, चू)।
११. आघाय (क)।
१२. व (क)।
१३. व्या० वि० सन्धिपदम्—तयणुगिद्धा।
१४. उच्छं अणुगिद्धा (क, ख)।
१५. सुतमस्सिए (चू)।
१६. विग्हे (चू)।
१७. सहणं इत्थीसु (क)।
१८. अविए (क)।
१९. महल्लीहिं (चू)।
२०. गिद्ध मत्ता (ख)।
२१. पि दट्ठू° (ख); दट्ठुणुदासीणं (वृपा); पि दट्ठूदासीणा (चूपा)।
२२. अह (क); अदुवा (ख); अथवा (वृ)।
२३. भवंति (चू)।

१६. कुव्वंति संथवं ताहिं पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं ।
तम्हा समणा ! 'ण समेंति आयहियाए'[1] सण्णिसेज्जाओ ।।
१७. बहवे गिहाइं अवहट्टु 'मिस्सीभावं पत्थुया एगे'[2]
धुवमग्गमेव[3] पवयंति[4] वायावीरियं कुसीलाणं ।।
१८. सुद्धं रवइ परिसाए अह रहस्सम्मि दुक्कडं कुणइ[5] ।
जाणंति य णं 'तथा वेदा'[6] माइल्ले महासढेऽयं ति ।।
१९. 'सयं दुक्कडं ण वयइ'[7] 'आइट्ठो वि'[8] पकत्थइ[9] बाले ।
वेयाणुवीइ[10] मा कासी चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो ।।
२०. उसिया वि इत्थिपोसेसु[11] पुरिसा इत्थिवेयखेत्तण्णा[12] ।
पण्णासमण्णिया वेगे[13] णारीणं वसं उवकसंति[14] ।।
२१. अवि[15] हत्थपायछेयाए[16] अदुवा वद्धमंसउक्कंते[17] ।
अवि[18] तेयसाभितावणाइं[19] तच्छिय[20] खारसिंचणाइं च ।।
२२. अदु[21] कण्णणासियाछेज्जं[22] कंठच्छेयणं[23] तितिक्खंती ।
इति एत्थ पाव-संतत्ता ण य बेंति पुणो ण काहिंति[24] ।।
२३. सुयमेयमेवमेगेसिं[25] 'इत्थीवेदे वि'[26] हु सुयक्खायं ।
एयं पि ता वइत्ताणं अदुवा[27] कम्मुणा[28] अवकरेंति ।।

---

१. न समेंति आयाहियाय (क); तु जधाहि आतहिओ (चू); उ जहाहि आअहिताओ (वृपा); ण समिति (समेंति) आतहिओ (चूपा) ।
२. मिस्सीभावं पण्णता एगे (क); मिस्सीभावपण्हया (चू); मिस्मीभावपत्थुया (वृ); मिस्सीभावं पणता (टी) ।
३. धुय° (क) ।
४. भासिसु (चू) ।
५. करेत्ति (ख) ।
६. तधावेता (चू); तथाविदः (वृ) ।
७. सयदुक्कडं च अवदते (क); सयदुक्कडं अवदते (चू) ।
८. आइट्ठे व (क); आउट्टो वि (चू) ।
९. पकप्पई (क) ।
१०. वेयाणुवीयी (चू) ।
११. °पोसेहिं (चू) ।
१२. °खेदन्ना (ख, चू) ।
१३. एगे (चू) ।
१४. उवणमंति (चू) ।
१५. अदु (चू) ।
१६. °च्छेदांति (क); °च्छेज्जाइं (चू) ।
१७. °उक्कंतं (क); °मंसउक्कंते (चू) ।
१८. अदु (चू) ।
१९. °तवणाइं (क, चू) ।
२०. तच्छेतुं (चू) ।
२१. अह (क) ।
२२. °नासछेज्जं (ख); कण्णच्छेज्जं नासं वा (चू) ।
२३. कंठकिज्जणं (चू) ।
२४. कग्गिस्सामो (चू); काहिंति (चूपा) ।
२५. सुतमेवमेतमेगेसिं (चू) ।
२६. इत्थीवेदम्मि य (क); इत्थीवेदेत्ति (ख) ।
२७. अहवा (क); अध पुण (चू) ।
२८. कम्मणा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. अण्णं मणेण चिंतेंति 'अण्णं वायाए कम्मुणा'[1] अण्णं ।
तम्हा 'ण सद्दहे भिक्खू'[2] बहुमायाओ इत्थिओ णच्चा ॥

२५. जुवती समणं बूया चित्तवत्थालंकारविभूसिया[3] ।
विरया चरिस्सहं रुक्खं[4] धम्माइक्ख णे भयंतारो ! ॥

२६. अदु साविया-पवाएणं अहगं साहम्मिणी 'य तुब्भं ति'[5] ।
जउकुम्भे जहा उवज्जोई संवासे[6] विऊ विसीदेज्जा ॥

२७. जउकुम्भे जोइसुवगूढे[7] आसुभितत्ते णासमुवयाइ ।
एवित्थियाहिं[8] अणगारा 'संवासेण णासमुवयंति'[9] ॥

२८. कुव्वंति 'पावगं कम्मं'[10] पुट्ठा वेगेवमाहंसु[11] ।
णा[12] हं करेमि पावं ति अंकेसाइणी ममेस त्ति ॥

२९. बालस्स मंदयं बीयं[13] जं च कडं अवजाणई भुज्जो ।
दुगुणं करेइ से पावं पूयणकामो[14] विसण्णेसी ॥

३०. संलोकणिज्जमणगारं आयगयं णिमंतणेणाहंसु ।
वत्थं वा[15] ताइ ! पायं वा अण्णं पाणगं पडिग्गाहे ॥

३१. णीवारमेवं[16] बुज्झेज्जा णो 'इच्छे अगारमागंतुं'[17] ।
'बद्धे विसयपासेहिं'[18] मोहमावज्जइ[19] पुणो मंदे ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१. वाया अन्नं च कम्मणा (ख) ।
२. तम्हा णो सद्दहेतव्वं (चू) ।
३. य चित्तलंकारवत्थगाणि परिहित्ता (क, ख) ।
४. लूहं (ख, चू); मोणं (वृपा) ।
५. समणाणं (क, ख) ।
६. संवासेण (चू) ।
७. °सुवगूहे (क); अवगूढे (ख); जोतिमुवगूढे (चू); व्या० वि—द्विपदयोः सन्धिः—जोइसा+उवगूढे ।
८. एवित्थिगासु (चू) ।
९. °णासमवेंति (क); संवासेणाऽसुविणस्संति (चू) ।
१०. पावकम्मं (चू, वृ) ।
११. वेगे एव माहंसु (क, ख) ।
१२. नो (ख) ।
१३. बितियं (ख, चू) ।
१४. पूयण-कामए (क, चू) ।
१५. व (ख, चू) ।
१६. णीयार° (चू); णीयारमन्तं (चूपा) ।
१७. °आगार° (ख); इच्छेज्ज अगारं गंतु (चू); इच्छेज्ज अगारमावत्तं (चूपा, वृपा) ।
१८. बद्धे य विसयदामेहिं (क); संबद्धोविसयदामेहिं (चू) ।
१९. °मागच्छति (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ उद्देसो

इत्थी-आसत्तस्स विडंबणा-पदं

३२. ओए सया ण रज्जेज्जा भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा[1]।
भोगे[2] समणाण सुणेहा 'जह भुंजंति भिक्खुणो एगे'[3]॥

३३. अह तं तु भेयमावण्णं मुच्छियं भिक्खुं काममइवट्टं[4]।
पलिभिंदियाण तो[5] पच्छा पादुद्धट्टु मुद्धि पहणंति[6]॥

३४. जइ केसियाए[7] मए भिक्खू! णो विहरे सहणमित्थीए।
'केसे वि अहं लुंचिस्सं'[8] णण्णत्थ मए चरेज्जासि[9]॥

३५. अह णं से होइ उवलद्धे 'तो पेसेंति तहाभूएहिं'[10]।
अलाउच्छेयं[11] पेहेहि[12] वग्गुफलाइं आहराहि त्ति॥

३६. दारूणि सागपागाए[13] पज्जोओ वा भविस्सई राओ।
पायाणि य मे रयावेहि एहि य ता मे 'पट्ठि उम्मद्दे'[14]॥

३७. वत्थाणि य मे पडिलेहेहि 'अण्णं पाणमाहराहि'[15] त्ति।
'गंधं च'[16] रओहरणं च 'कासवगं च समणुजाणाहि'[17]॥

३८. अदु अंजणिं अलंकारं कुक्कययं[18] मे पयच्छाहि।
लोद्धं च लोद्धकुसुमं च वेणुपलासियं[19] च गुलियं च॥

३९. कोट्ठं[20] 'तगरं अगरुं च'[21] संपिट्ठं सह[22] उसीरेणं[23]।
तेल्लं 'मुहे भिलिंगाय'[24] वेणुफलाइं सण्णिहाणाए॥

---

१. विरज्जेज्जा (चू); विरज्जेज्ज (चूपा)।
२. भोग (क)।
३. एगे किल जधा भुंजंते (चू)।
४. कामेसु अतिअट्टं (चू)।
५. ततो (ख)।
६. पहणंतु (क); पहणंति (ख)।
७. केसियाए (क, ख)।
८. केसाणविहु लुंचिसु (क)।
९. विचरेज्जासि (चू)।
१०. ततो णं देसेति तधारूवेहिं (चू)।
११. लाउच्छेयं (क, ख)।
१२. पेहाहि (ख)।
१३. अण्णपागाए (चू, वृपा)।
१४. पट्ठि उम्महे (चू)।
१५. अन्नपाणं च आहराहि (क, ख); अण्णपाणं वा मे आहराहि (चू)।
१६. गंधं व (चूपा, वृपा)।
१७. कासव समणाणुजाणाहि (वृ); कासवगं मे आणयाहि (चू)।
१८. कुकुहगं (चू)।
१९. वेलुपलासीं (चू)।
२०. कुट्ठं (क)।
२१. अगरुं तगरं च (ख)।
२२. समं (चू)।
२३. हिरिवेरेणं (चू)।
२४. मुहिं भिलिंजाए (क); मुहिं भिजाए (ख), मुहं भिलिंजाए (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. णंदीचुण्णगाइं पाहराहि[1] 'छत्तोवाहणं च जाणाहि'[2] ।
सत्थं च सूवच्छेयाए आणीलं च वत्थं रावेहि[3] ॥

४१. सुफणिं च सागपागाए[4] आमलगाइं[5] दगाहरणं[6] च ।
तिलगकरणिं[7] अंजणसलागं घिंसु मे विहुयणं[8] विजाणाहि[9] ॥

४२. संडासगं च फणिहं[10] च[11] सीहलिपासगं च आणाहि ।
आयंसगं च पयच्छाहि दंतपक्खालणं[12] पवेसेहि ॥

४३. पूयफलं[13] तंबोलं च 'सूई-सुत्तगं च जाणाहि'[14] ।
कोसं च मोयमेहाए 'सुप्पुक्खल-मुसल-खारगलणं च'[15] ।

४४. वंदालगं[16] च करगं च वच्चघरगं[17] च आउसो ! खणाहि ।
सरपायगं[18] च जायाए गोरहगं च सामणेराए ॥

४५. 'घडिगं सह डिंडिमएणं'[19] चेलगोलं कुमारभूयाए ।
वासं इममभिआवण्णं[20] आवसहं 'जाणाहि भत्ता'[21] ! ॥

४६. आसंदियं च णवसुत्तं पाउल्लाइं[22] संकमट्ठाए ।
'अदु पुत्तदोहलट्ठाए'[23] 'आणप्पा हवंति दासा वा'[24] ॥

---

१. पहराहि (क, ख) ।
२. छत्तग जाणाहि उवाहणा उ वा (चू) ।
३. रयावेहि (क, ख) ।
४. सूवपाताए (चू) ।
५. आमलगा (चू) ।
६. दगाहरणिं (चू) ।
७. तिलकरणिं (चूपा) ।
८. विधूणयं (वृ); विधूवणं (चू) ।
९. जाणाहि (चू) ।
१०. फणिगं (चू) ।
११. × (क) ।
१२. °पक्खालग च (क) ।
१३. पूयप्फल (चू) ।
१४. सूचिं° (वृ); सूचिं जाणाहि सुत्तगं (चू) ।
१५. सुप्पुक्खलगं च खारगलणाए (क); सुप्पुक्खलगं च खारगालगं च (ख); सुप्पुदुक्खलं च खारगलणं च (वृ) ।
१६. चंदालगं (क, ख, वृ) व-च वर्णयोः लिपिसादृश्यहेतुकमिदं परिवर्तनं संभाव्यते ।
१७. वच्चघरं (वृ) ।
१८. सरपायं (ख); सरपादगं (चू) ।
१९. घडियं च सडिंडिमयं च (क, ख) ।
२०. समणाहियावण्णं (क); समभिआवण्णं (ख) ।
२१. च जाण भत्तं च (क, ख, वृ) । अत्र संभाव्यते 'भत्ता' शब्दस्य अर्थानवधारणतया लिपिकारैः 'भत्तं च' इति पाठः उल्लिखितः । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठः आसीत्, तेनासावेव व्याख्यातः ।
२२. पाउल्लाइ (क); पाउल्लगाइं (चू) ।
२३. पुत्तस्स डोहलट्ठाए (क, चूपा) ।
२४. आणप्पे भवति दासमिव (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. जाए फले समुप्पण्णे 'गेण्हसु वा णं अहवा जहाहि'[1]।
अह पुत्तपोसिणो एगे 'भारवहा हवंति उट्टा वा'[2]॥

४८. 'राओ वि उट्ठिया संता'[3] दारगं 'संठवेंति धाई वा'[4]।
सुहिरीमणा वि ते संता वत्थधुवा[5] हवंति हंसा[6] वा॥

४९. एवं[7] बहुहिं कयपुव्वं भोगत्थाए जेऽभियावण्णा[8]।
दासे मिए व पेस्से[9] वा पसुभूए व से ण वा केई[10]॥

५०. 'एवं खु तासु विण्णप्पं'[11] संथवं संवासं च चएज्जा[12]।
तज्जातिया इमे कामा वज्जकरा य एव मक्खाया॥

५१. 'एवं भयं ण'[13] सेयाए 'इइ से अप्पगं'[14] णिरुंभित्ता।
णो इत्थि णो पसुं[15] भिक्खू णो सयं पाणिणा णिलिज्जेज्जा[16]॥

५२. सुविसुद्धलेसे मेहावी परकिरियं च वज्जए णाणी।
मणसा वयसा[17] काएणं सव्वफाससहे अणगारे॥

५३. इच्चेवमाहु से वीरे 'धुयरए धुयमोहे से भिक्खू'[18]।
तम्हा अज्झत्थविसुद्धे सुविमुक्के[19] 'आमोक्खाए परिव्वएज्जासि'[20]॥

—त्ति बेमि॥

---

१. गेण्हाहि व णं छड्डेहि व णं (चू)।
२. भरवाहो भवति उट्टो वो लद्दितओ (चू)।
३. एगे राओ वि उट्ठित्ता (क)।
४. सण्णवेंति धाव इवा (चू)।
५. वत्थधोवा (क, ख); वत्थाधुवा (चू)।
६. हंसो (चू)।
७. एतं (चू)।
८. इत्थिआभिआवण्णा (चू)।
९. पेसे (क, ख)।
१०. केति (चूपा)।
११. एतं खु तासि वेण्णप्प (चू)।
१२. वज्जेज्जा (ख)।
१३. एतं भयण्ण (चू)।
१४. इह सेयऽप्पगं (चू)।
१५. पसू (चू)।
१६. णिलेज्ज (चू)।
१७. वयस (क)।
१८. धूतरायमग्गे सभिक्खू (चू); धूतरायमग्गे स भिक्खू (वृपा)।
१९ × (चू); सुमुक्के (वृ)।
२०. विहरेज्जामुक्खाए (क)।

पंचमं अज्झयणं

णरयविभत्ती

पढमो उद्देसो

णरग-वेदणा-पदं

१. पुच्छिसुहं[1] केवलियं महेसिं कहंऽभितावा णरगा पुरत्था ? ।
अजाणओ[2] मे मुणि बूहि[3] जाणं कहं णु बाला णरगं उवेंति ? ।।
२. एवं मए[4] पुट्ठे महाणुभावे[5] इणमब्बवी[6] कासवे आसुपण्णे ।
पवेयइस्सं दुहमट्ठदुग्गं आदीणियं[7] दुक्कडिणं[8] पुरत्था ।।
३. जे केइ बाला इह जीवियट्ठी[9] पावाइं[10] कम्माइँ करेंति रुद्दा ।
ते घोररूवे तिमिसंधयारे तिव्वाभितावे[11] णरए पडंति ।।
४. तिव्वं तसे पाणिणो थावरे य जे हिंसई आयसुहं पडुच्चा[12] ।
जे लूसए होइ अदत्तहारी ण सिक्खई सेयवियस्स किंचि ।।
५. पागब्भि पाणे बहुणं तिवाई[13] अणिव्वुडे[14] घायमुवेइ[15] बाले ।
'णिहो णिसं'[16] गच्छइ अंतकाले अहोसिरं कट्टु उवेइ दुग्गं ।।
६. हण 'छिंदह भिंदह णं दहेह'[17] सद्दे सुणेत्ता[18] परधम्मियाणं ।
ते णारगा ऊ[19] भयभिण्णसण्णा कंखंति कं णाम दिसं वयामो ? ।।

---

१. पुच्छिस्सहं (ख) ।
२. अविजाणओ (चू) ।
३. ब्रूहि (चू) ।
४. मया (चू) ।
५. °भागे (चू); °भावे (चूपा) ।
६. इणमो° (वृ) ।
७. आदाणियं (चू), आदीणियं (चूपा) ।
८. दुक्कडियं (ख, वृ); दुक्कडिणं (वृपा) ।
९. जीवियट्ठा (क) ।
१०. कूराइं (चू) ।
११. तिव्वाणुभावे (चू) ।
१२. पडुच्च (ख) ।
१३. तिवाती (क); तिवादि (चू) ।
१४. अनिव्वुए (घ) ।
१५. वातगतिं उवेंति (चू) ।
१६. णिधोणत (चू) ।
१७. °डहाह (क); छिंदध भिंदध णं दहह (चू) ।
१८. सुणंति (क) ।
१९. तू (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. इंगालरासिं जलियं सजोइं ओवमं भूमिमणुक्कमंता[1] ।
ते डज्झमाणा कलुणं थणंति अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठिईया ॥
८. जइ ते सुया वेयरणीऽभिदुग्गा ‘णिसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया’[2] ।
तरंति ते वेयरणीऽभिदुग्गं उसुचोइया[3] सत्तिसु हम्ममाणा ॥
९. कोलेहिं[4] विज्झंति असाहुकम्मा णावं उवेंते[5] सइविप्पहूणा ।
‘अण्णे तु’[6] सूलाहि तिसूलियाहिं दीहाहि विद्धूण अहे करेंति ॥
१०. ‘केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलेंति महालयंसि ।
कलंबुयावालुयमुम्मुरे य लोलेंति पच्चंति[7] य तत्थ अण्णे’[8] ॥
११. असूरियं णाम महाभितावं[9] अंधं तमं दुप्पतरं महंतं ।
उड्ढं अहे यं[10] तिरियं दिसासु समाहिओ[11] जत्थगणी झियाइ[12] ॥
१२. जंसी गुहाए जलणेऽतिवट्टे[13] अविजाणओ[14] डज्झइ लुत्तपण्णो[15] ।
‘सया य’[16] कलुणं’[17] पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं ॥
१३. चत्तारि अगणीओ समारभेत्ता जहिं कूरकम्मा भितवेंति बालं[18] ।
ते तत्थ चिट्ठंतऽभितप्पमाणा[19] मच्छा व जीवंतुवजोइपत्ता[20] ॥
१४. संतच्छणं णाम महाभितावं ते णारगा जत्थ असाहुकम्मा[21] ।
हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं फलगं व तच्छंति कुहाडहत्था ॥
१५. रुहिरे पुणो वच्च-समुस्सियंगे[22] भिण्णुत्तिमंगे[23] परिवत्तयंता ।
पयंति णं णेरइए फुरंते सजीवमच्छे[24] व अयो-कवल्ले ॥

---

१. °अणोक्कमंता (चू) ।
२. खुरो जधा णिसितो तिक्खसोता (चू) ।
३. असि° (चू) ।
४. कालेहि (क); कीलेहि (ख) ।
५. उवेंती (चू) ।
६. भिन्नेत्थ (चू) ।
७. पययंति (ख) ।
८. × (चू) ।
९. महब्भियावं (क) ।
१०. या (चू) ।
११. समूसिओ (ख); समूसिते (चूपा, वृपा) ।
१२. झियायती (क) ।
१३. जलणातियट्टे (चू) ।
१४. अजाणतो (वृ) ।
१५. लूयपन्ने (क) ।
१६. × (चू) ।
१७. सया य कसिणं (वृपा) ।
१८. मदा (चू) ।
१९. चिट्ठंति अभि° (क); चिट्ठंति भित°(ख) ।
२०. जीव उवजोति° (चू); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—जीवंता+उवजोइपत्ता ।
२१. °कम्मी (चू) ।
२२. समूसितंतो (वृ); समूसितंग (वृपा) ।
२३. भिदुत्तमंगे (ख) ।
२४. °मच्छा (क); सज्जो व्व मच्छे (चू); सज्जोक्कमत्थे (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. णो चेव ते तत्थ मसीभवंति[1] ण मिज्जई तिव्वभिवेयणाए[2]।
तमाणुभागं[3] अणुवेययंता[4] दुक्खंति दुक्खी[5] इह दुक्कडेणं[6]॥
१७. 'तहिं च'[7] ते लोलणसंपगाढे[8] गाढं सुतत्तं अगणिं वयंति।
ण तत्थ सायं[9] लभंतीऽभिदुग्गे[10] अरहियाभितावे[11] तह वी तवेंति॥
१८. से सुव्वई[12] णगरवहे[13] व सद्दे 'दुहोवणीताण पदाण'[14] तत्थ[15]।
उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा पुणो पुणो ते सरहं[16] दुहेंति[17]॥
१९. पाणेहि णं पाव[18] विओजयंति तं भे पवक्खामि जहातहेणं।
दंडेहि तत्था सरयंति बाला सव्वेहि दंडेहि पुराकएहिं॥
२०. ते हम्ममाणा[19] 'णरगे पडंति'[20] पुण्णे[21] दुरूवस्स महाभितावे[22]।
ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी तुट्टंति कम्मोवगया[23] किमीहिं॥
२१. सया[24] कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं।
अंदूसु पक्खिप्प 'विहत्तु देहं'[25] 'वेहेण सीसं सेऽभितावयंति'[26]॥
२२. छिंदंति बालस्स खुरेण णक्कं[27] ओट्ठे वि छिंदंति दुवे वि कण्णे।
जिब्भं विणिक्कस्स[28] विहत्थिमेत्तं तिक्खाहि सूलाहि भितावयंति[29]॥
२३. ते तिप्पमाणा 'तलसंपुड व्व'[30] राइंदियं तत्थ थणंति बाला[31]।
'गलंति ते सोणियपूयमंसं'[32] पज्जोइया खारपदिद्धियंगा[33]॥

---

१. ०भवेंति (चू)।
२. तिव्वऽतिवे० (चू)।
३. तमाणुभावं (ख); कम्माणभागं (चू)।
४. अणुवेदयंती (चू)।
५. दुक्खा (क); सोयं (चू)।
६. दुक्कडाणं (क)।
७. तेहिं पि (चू)।
८. लोलुअसं० (क, चू); लोलेण० (ख)।
९. सादं (चू)।
१०. लहईभिदुग्गे (क, ख)।
११. अरहब्भियावा (क); ०तावा (ख)।
१२. सुच्चई (ख)।
१३. गामवधे (चू)।
१४. ०याणि पयाणि (ख); उदिण्णकम्माए पयय (चू)।
१५. तत्था (क)।
१६. सहरिसं (चू)।
१७. विधंति (चूपा)।
१८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पावा।
१९. हिंसमाणा (क); हम्ममाणे (चू)।
२०. णरगं उवेंति (चू)।
२१. पुण्णं (चू)।
२२. महब्भियावे (क); महब्भितावं (चू)।
२३. कम्मोवसगा (चू)।
२४. सया य (क)।
२५. हणंति वालं (चू)।
२६. वेहेण तं सेभितविंति सीसं (क); वेधेहिं विधीत सिराणि तेसिं (चू); वेढेण तावेंति सिराणि तेसिं (चूपा)।
२७. नासं (क)।
२८. विणिक्किस्स (चू)।
२९. तिवातयंति (क); निपातयंति (चू)।
३०. तलसंपुडच्चा (चू)।
३१. मंदा (चू)।
३२. समीरिता सरुधिर-मंसदेहा (चू)।
३३. खारपयच्छितंगा (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. जइ[1] ते सुया लोहियपूयपाई[2] बालागणी तेयगुणा परेणं ।
कुंभी महंताऽहियपोरुसीया[3] समूसिया लोहियपूयपुण्णा ।।
२५. पक्खिप्प तासुं पपचंति बाले अट्टस्सरे[4] ते कलुणं रसंते ।
तण्हाइया ते तउतंबतत्तं पज्जिज्जमाणट्टयरं रसंति ।।
२६. अप्पेण[5] अप्पं इह वंचइत्ता भवाहमे 'पुव्वसए सहस्से'[6] ।
चिट्ठंति तत्था[7] बहुकूरकम्मा 'जहाकडे कम्म'[8] तहा से[9] भारे ।।
२७. समज्जिणित्ता कलुसं अणज्जा इट्ठेहि कंतेहि य विप्पहूणा[10] ।
ते दुब्भिगंधे कसिणे य फासे कम्मोवगा कुणिमे आवसंति ।।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

णरग-वेदणा-पदं

२८. अहावरं सासयदुक्खधम्मं तं भे पवक्खामि जहातहेणं ।
बाला जहा दुक्कडकम्मकारी वेयंति कम्माइं[11] पुरेकडाइं ।।
२९. हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं 'उदरं विकत्तंति खुरासिएहिं'[12] ।
गेण्हित्तु[13] बालस्स विहत्तु[14] देहं वद्धं[15] थिरं पिट्ठउ[16] उद्धरंति ।।
३०. बाहू पकत्तंति[17] य मूलओ से थूलं[18] वियासं मुहे आडहंति ।
रहंसि जुत्तं सरयंति बालं आरुस्स विज्झंति[19] तुदेण पट्ठे[20] ।।

---

१. जे (क) ।
२. लोहितापागपायी (चू) ।
३. °पोरिसीणा (क); °पोरसीया (ख) ।
४. °स्सरं (क, चू) ।
५. अप्पाण (चू) ।
६. पुव्वा सतसहस्से (चू) ।
७. व्या० वि०—छंदोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
८. °कडे कम्मे (क); जधकडे कम्मे (चू) ।
९. सि (ख) ।
१०. विप्पहीणा (चू) ।
११. पावाइं (क) ।
१२. उदराइं फोडेंति खुरेहिं तेसिं (चू); °खुरासितेहिं, °खुरासिगेहिं (चूपा); वृत्तौ 'क्षुरप्रासिभिः' इति व्याख्यातमस्ति अस्यानुसारेण 'खुरप्पसीहिं' इति पाठस्य परिकल्पना जायते ।
१३. गिहित्तु (क) ।
१४. विहत्त (क); विविधं हंतं (वृ); विहण्ण (चू) ।
१५. वज्झं (क, चू) ।
१६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१७. पकप्पंति (क) ।
१८. थुलं (क) ।
१९. विंधंति (ख, चू) ।
२०. पिट्ठे (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. अयं व तत्तं जलियं सजोइं तओवमं[1] भूमिमणुक्कमंता[2] ।
ते डज्झमाणा कलुणं थणंति उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ॥
३२. बाला बला भूमिमणुक्कमंता[3] पविज्जलं[4] लोहपहं व तत्तं ।
जंसीऽभिदुग्गंसि[5] पवज्जमाणा[6] पेसे व[7] दंडेहि पुरा करेंति ॥
३३. ते संपगाढंमि पवज्जमाणा सिलाहि हम्मंति भिपातिणीहिं[8] ।
संतावणी णाम चिरट्ठिईया संतप्पई[9] जत्थ असाहुकम्मा[10] ॥
३४. कंदूसु[11] पक्खिप्प पयंति बालं तओ विदड्ढा पुण उप्पतंति[12] ।
ते उड्ढकाएहि पखज्जमाणा[13] अवरेहि खज्जंति सणप्फएहिं ॥
३५. समूसियं णाम विधूमठाणं 'जं सोयतत्ता'[14] कलुणं थणंति ।
अहोसिरं[15] कट्टु विगत्तिऊणं[16] अयं व सत्थेहि समूसवेंति ॥
३६. समूसिया तत्थ विसूणियंगा पक्खीहि खज्जंति अओमुहेहिं ।
संजीवणी[17] णाम चिरट्ठिईया जंसी पया हम्मइ[18] पावचेया ॥
३७. तिक्खाहि सूलाहि ऽभितावयंति[19] वसोवगं सावययं[20] व लद्धं ।
ते सूलविद्धा कलुणं थणंति एगंतदुक्खं दुहओ गिलाणा ॥
३८. सया जलं ठाण[21] णिहं महंतं जंसी 'जलंतो अगणी अकट्ठो'[22] ।
चिट्ठंति तत्था[23] बहुकूरकम्मा अरहस्सरा[24] केइ चिरट्ठिईया ॥

---

१. तत्तोवम (क); चूर्णीकृता प्रथमोद्देशकस्य सप्तमश्लोके 'ततोवमं' पाठो व्याख्यात :—तत्रऽयसकभल्लतुल्लं, अत्रतु 'तदोवमं' पाठो व्याख्यातः, तदस्या ओपम्यं तदोपमा । वृत्तिकारस्य व्याख्यायां उभयत्रापि साम्यमस्ति ।
२. °मणोक्कमेत्ता (क); °मणोक्कमंता (चू) ।
३. भूमिअणोक्कमंता (चू) ।
४. विपज्जलं (चू); पविज्जलं (चूपा) ।
५. °दुग्गा (चू) ।
६. बहुकूरकम्मा (चू) ।
७. व्व (क) ।
८. ऽभिपातिमाहिं (चू) ।
९. सतप्पते (चू) ।
१०. °कम्मी (क, चू) ।
११. कंडूसु (चू) ।
१२. उप्फिडंति (चू) ।
१३. पक्खिज्जमाणा (ख); विलुप्पमाणा (चू) ।
१४. ज सामितत्ता (क); विगिच्चमाणा (चू); जंसि विउक्कंता, जंसि उवियंता (चूपा) ।
१५. अहे° (क) ।
१६. विगंति° (चू) ।
१७. संजीवणा (चू) ।
१८. हम्मंति (क) ।
१९. निवाययंति (क); वधेंति वाला (चू); तिवाययंति (क्व) ।
२०. सोयरिय (क); सोवरिया (चू); सावरिया (चूपा) ।
२१. नाम (ख, चू) ।
२२. जलंती अगणी अकट्ठा (क, चू) ।
२३. वद्धा (ख, वृ) ।
२४. अरहितस्सरा (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. चिया महंतीउ[1] समारभित्ता छुब्भंति ते तं कलुणं रसंतं।
आवट्टई तत्थ असाहुकम्मा सप्पी जहा छूढं[2] जोइमज्झे।।
४०. सया कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं।
हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं 'सत्तुं व'[3] दंडेहि समारभंति।।
४१. भंजंति बालस्स वहेण पट्ठिं[4] सीसं पि भिंदंति[5] अयोघणेहिं।
ते भिण्णदेहा फलगा व तट्ठा तत्ताहि आराहि णियोजयंति।।
४२. अभिजुंजिया रुद्द[6] असाहुकम्मा उसुचोइया हत्थिवहं[7] वहंति।
एगं दुरूहित्तु दुवे तओ वा 'आरुस्स विज्झंति ककाणओ से'[8]।।
४३. बाला बला भूमिमणुक्कमंता[9] पविज्जलं कंटइलं महंतं।
विवद्धतप्पेहि विसण्णचित्ते[10] समीरिया कोट्टबलिं करेंति।।
४४. वेयालिए णाम महाभितावे एगायए पव्वयमंतलिक्खे।
हम्मंति तत्था बहुकूरकम्मा परं सहस्साण मुहुत्तगाणं[11]।।
४५. संबाहिया दुक्कडिणो थणंति अहो य राओ परितप्पमाणा।
एगंतकूडे णरए महंते कूडेण तत्था विसमे हया उ।।
४६. 'भंजंति णं पुव्वमरी सरोसं समुग्गरे ते मुसले गहेउं।
ते भिण्णदेहा रुहिरं वमंता ओमुद्धगा धरणितले पडंति'[12]।।
४७. अणासिया णाम महासियाला पगब्भिया[13] तत्थ सयावकोवा[14]।
खज्जंति[15] तत्था बहुकूरकम्मा अदूरया[16] संकलियाहि बद्धा।।
४८. सयाजला णाम णईऽभिदुग्गा पविज्जला[17] लोहविलीणतत्ता।
जंसीऽभिदुग्गंसि पवज्जमाणा एगायताऽणुक्कमणं[18] करेंति।।
४६. एयाइँ फासाइँ फुसंति बालं णिरंतरं तत्थ चिरट्ठिईयं[19]।
ण हम्ममाणस्स उ होइ[20] ताणं एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं।।

---

१. व्या० वि०—अत्र ओकारस्य ह्रस्वत्वम्।
२. पडियं (चू)।
३. सत्तुव्व (क्व)।
४. पुट्ठिं (ख)।
५. भंजंति (चू)।
६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—रुद्दं।
७. हत्थितुल्लं (चू)।
८. °ककाणओ से (क); आरुब्भ विंधंति किकाणतो सि (चू)।
९. भूमिअणोक्कमंता (चू)।
१०. विवण्ण° (क, ख)।
११. मुहुत्तगस्स (चू)।
१२. × (चू)।
१३. पगब्भिणो (क); पागब्भिणो (ख)।
१४. सताय° (क); सयाप° (ख); सदावऽकोप्पा (चू); सदावऽकोप्पं (चूपा)।
१५. खायंति (चू)।
१६. अदूरिया (क)।
१७. पविज्जलं (वृ)।
१८. एकाणिका° (चू)।
१९. चिरट्ठिईया (चू)।
२०. अत्थि (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं तमेव[1] आगच्छइ संपराए।
एगंतदुक्खं भवमज्जिणित्ता 'वेदेंति दुक्खी तमणंतदुक्खं'[2]॥
५१. एयाणि सोच्चा णरगाणि धीरे ण हिंसए कंचण[3] सव्वलोए।
एगंतदिट्ठी अपरिग्गहे उ[4] बुज्झेज्ज लोगस्स[5] वसं ण गच्छे॥
५२. एवं 'तिरिक्खमणुयामरेसुं चउरंतणंतं तयणूविवागं'[6]।
स[7] सव्वमेयं इइ[8] वेयइत्ता कंखेज्ज कालं धुयमायरंते[9]॥
—त्ति बेमि॥

---

१. तधेव (चू)।
२. वेदेति एगो तमणंतकालं (चू)।
३. किंचण (ख)।
४. य (चू)।
५. लोभस्स (चू)।
६. तिरिक्खमणुयासुरेसुं चतुरंतणं न तयणुविवागं (ख); तिरिक्खेसु वि चातुरंतं, अणंतकालं तदणुव्विवागं (चू)।
७. से (ख)।
८. इध (चू)।
९. °मायरेज्ज (ख); मायरंति (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

महावीरत्थुई

महावीर-माहप्प-वण्णग-पदं

१. पुच्छिंसु णं समणा माहणा य अगारिणो[1] या परतित्थिया य।
से के 'इमं णितियं'[2] धम्ममाहु अणेलिसं? साहुसमिक्खयाए[3]॥

२. कहं व[4] णाणं? कह दंसणं से? सीलं कहं णायसुयस्स आसि?।
जाणासि णं भिक्खु! जहातहेणं अहासुयं बूहि जहा णिसंतं॥

३. 'खेयण्णए से कुसले मेहावी'[5,6] अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स जाणाहि धम्मं च धिइं च पेह[7]॥

४. 'उड्ढं अहे यं'[8] तिरियं दिसासु 'तसा य जे थावर[9] जे य पाणा'[10]।
'से णिच्चणिच्चेहिं'[11] समिक्ख पण्णे 'दीवे व धम्मं समियं उदाहु'[12]॥

५. से सव्वदंसी अभिभूयणाणी णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे[13] सव्वजगंसि विज्जं 'गंथा अतीते'[14] अभए अणाऊ॥

६. से भूइपण्णे अणिएयचारी ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तवति सूरिए[15] वा वइरोयणिंदे[16] व 'तमं पगासे'[17]॥

---

१. अकारिणो (चू)।
२. इणेगंतहियं (क, चू); इमं हितगं (चूपा)।
३. °याते (क); साधुसमिक्ख दाए (चू)।
४. च (क, ख)।
५. आसुपण्णे (वृ); महेसी (वृपा)।
६. खेतण्णे कुसले आसुपण्णे महेसी (चू)।
७. पिहा (क); पेछं (चू); वेहि (वृपा)।
८. °य (वृ); उड्ढे अधे वा (चू)।
९. व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—थावरा।
१०. जे थावरा जे य तसा य पाणा (चू)।
११. स णिच्चणिच्चे य (चू)।
१२. समिया एवं दीवसमो तहा ऽऽह (चू)।
१३. अणुत्तरं (चू)।
१४. ०अदीते (क); गंथातीते (चू)।
१५. तप्पति (क, ख)।
१६. वइरोव° (क); वेरोयणेंदो (चू)।
१७. तमप्पगासे (क); °पभासे (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं णेता मुणी कासवे[1] आसुपण्णे ।
इंदे व देवाण महाणुभावे सहस्सणेता[2] 'दिवि णं'[3] विसिट्ठे ॥

८. से पण्णया[4] अक्खयसागरे वा महोदही वा वि अणंतपारे ।
अणाइले या[5] अकसाइ[6] मुक्के[7] सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥

९. से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए 'वा वि'[8] मुदागरे से विरायए णेगगुणोववेए ॥

१०. सयं सहस्साण उ जोयणाणं तिकंडगे[9] पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणउतिं[10] सहस्से उद्धस्सिए[11] हेट्ठ सहस्समेगं ॥

११. पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए[12] जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य[13] जंसी[14] रइं वेययई महिंदा ॥

१२. से[15] पव्वए सद्दमहप्पगासे विरायती कंचणमट्ठवण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु[16] य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥

१३. महीए[17] मज्झम्मि ठिए णगिंदे पण्णायते सूरियसुद्धलेसे[18] ।
एवं सिरीए उ स भूरिवण्णे[19] मणोरमे 'जोयति अच्चिमाली'[20] ॥

१४. सुदंसणस्सेस[21] जसो गिरिस्स[22] पवुच्चती महतो पव्वतस्स ।
एतोवमे समणे णातपुत्ते[23] जाती-जसो-दंसण - णाण - सीले ॥

१५. गिरीवरे वा णिसढायताणं[24] रुयगे व सेट्ठे वलयायताणं ।
ततोवमे से जगभूतिपण्णे[25] मुणीण 'मज्झे तमुदाहु'[26] पण्णे ॥

---

१. कासव (ख) ।
२. °णेत्ता (चू); °णेता (चूपा) ।
३. दिविण (चू) ।
४. पन्नसा (चू) ।
५. से (चू) ।
६. अकसाय (चू) ।
७. भिक्खू (क, ख, चू, वृपा) ।
८. वासि (ख, वृ) ।
९. तिकंडि से (क, चू); तिकंड से (ख) ।
१०. णवणवते (क, ख) ।
११. उड्ढुस्सिते (चू); उड्ढं थिरे (चूपा) ।
१२. भूमिते ठिते (क, चू) ।
१३. या (क) ।
१४. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१५. स (चू) ।
१६. व्या० वि०—अत्र सप्तम्याः बहुवचने 'गिरीसु' इति रूपं भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१७. महीय (ख, चू) ।
१८. सूरियलेस्सभूते (चू) ।
१९. भूतिवण्णे (चू) ।
२०. अच्चीसहस्समालिणी (णो ?) (चू) ।
२१. °स्सेव (क, ख) ।
२२. गिरिस्सा (क) ।
२३. नाय° (क, ख) ।
२४. व्या० वि०—द्विपदयो; सन्धिः—णिसढे+आयताणं ।
२५. °भूतपण्णे (चू) ।
२६. मावेदमुदाहु (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. अणुत्तरं धम्ममुदीरइत्ता अणुत्तरं झाणवरं झियाइ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं[1] ॥

१७. अणुत्तरग्गं परमं महेसी 'असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गतिं साइमणंत[2] पत्ते णाणेण सीलेण य दंसणेण'[3] ॥

१८. 'रुक्खेसु णाते जह सामली वा'[4] जंसी रतिं वेययंती[5] सुवण्णा।
वणेसु या णंदणमाहु सेट्ठं[6] णाणेण सीलेण य[7] भूतिपण्णे ॥

१९. थणितं व सद्दाण अणुत्तरं उ चंदे व ताराण महाणुभावे[8]।
गंधेसु वा[9] चंदणमाहु सेट्ठं एवं[10] मुणीणं अपडिण्णमाहु ॥

२०. जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे णागेसु वा 'धरणिंदमाहु सेट्ठं'[11]।
खोओदए[12] 'वा रस'[13]-वेजयंते तहोवहाणे[14] मुणि[15] वेजयंते ॥

२१. हत्थीसु एरावणमाहु[16] णाते सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु या गरुले वेणुदेवे णिव्वाणवादीणिह[17] णायपुत्ते ॥

२२. जोहेसु णाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा 'जह अरविंदमाहु'[18]।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥

२३. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु या अणवज्जं वयंति।
तवेसु या[19] उत्तम[20] बंभचेरं लोगुत्तमे समणे[21] णायपुत्ते ॥

२४. ठितीण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा[22] जह सव्वधम्मा ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ॥

२५. पुढोवमे धुणती विगयगेही ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं[23] समुद्दं व महाभवोघं अभयंकरे वीर[24/25] अणंतचक्खू ॥

---

१. अपेव संखेंदुवदातसुद्धं (चू);
संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं (चूपा)।
२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—साइमणंतं।
३. णाणेण सीलेण य दंसणेण।
असेसकम्मं स विसोधइत्ता,
सिद्धीगतिं सातियणंत पत्ते (चू)।
४. रुक्खेहि णाता जह कूडसामली (चू)।
५. वेययती (क, ख)।
६. सेट्ठे (क)।
७. उ (चू)।
८. °भागे (चू)।
९. या (ख)।
१०. सेट्ठे (चू)।
११. धरणिंदे आहु सेट्ठे (क); धरणमाहुसेट्ठं (चू)।
१२. खातोदए (क)।
१३. रसतो (चू)।
१४. तवो° (क, ख, वृ)।
१५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मुणी।
१६. °माह (क)।
१७. णेव्वाण° (चू)।
१८. अरविंदं वदंति (चू)।
१९. वा (क)।
२०. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तमं।
२१. भगवं (चू)।
२२. णेव्वाण° (चू)।
२३. तरित्तु (ख); तरित्ता (चू)।
२४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—वीरे।
२५. वीरे (क, चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. कोहं च माणं च तहेव मायं लोभं चउत्थं अज्झत्तदोसा[1]।
एताणि चत्ता अरहा महेसी ण कुव्वई पाव[2] ण कारवेइ ॥
२७. किरियाकिरियं[3] वेणइयाणुवायं अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से[4] सव्ववायं इह[5] वेयइत्ता उवट्ठिए सम्म[6] स दीहरायं[7] ॥
२८. से[8] वारिया इत्थि[9] सराइभत्तं[10] उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता 'अपरं परं'[11] च सव्वं पभू वारिय सव्ववारी[12] ॥
२९. सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं[13] समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं।
तं सद्दहंताऽऽय[14] जणा अणाऊ 'इंदा व'[15] देवाहिव[16] आगमिस्सं[17] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. °दोसं (क)।
२. पावं (क)।
३. किरियं अकिरियं (ख, चू)।
४. स (चू)।
५. इति (क, ख, वृ)।
६. व्या वि० —अत्र अनुस्वारलोपः।
७. संजमदीहरायं (क, ख, वृ)।
८. स (चू)।
९. व्या० वि० — विभक्तिरहितपदम् — इत्थि।
१०. सराय° (क)।
११. आरं पारं (क, ख, वृपा)।
१२. सव्ववारे (क); सव्ववारं (ख, वृ)।
१३. अरिहंत° (ख)।
१४. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः वर्णलोपश्च—सद्दहंता आदाय।
१५. इंदा वि (क); इंदे व (ख)।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—देवाहिवा।
१७. आगमिस्संति (क, ख, वृ); आगमिस्से (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं अज्झयणं

कुसीलपरिभासितं

ओघतो कुसील-पदं

१. पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ 'तण रुक्ख'[1] बीया य तसा य पाणा ।
जे अंडया जे य जराउ[2] पाणा संसेयया जे रसयाभिहाणा ॥

२. एताइं कायाइं पवेइयाइं एतेसु जाणे[3] पडिलेह[4] सायं ।
'एतेहि काएहि य'[5] आयदंडे 'पुणो-पुणो विप्परियासुवेति'[6] ॥

३. जाईपहं[7] अणुपरियट्टमाणे 'तसथावरेहिं विणिघायमेति'[8] ।
से जाति[9]-जातिं बहुकूरकम्मे जं कुव्वती मिज्जति[10] तेण बाले ॥

४. अस्सिं च लोए अदुवा परत्था[11] सयग्गसो वा तह अण्णहा वा ।
संसारमावण्ण[12] 'परं परं ते'[13] बंधंति वेयंति य दुण्णियाणि[14] ॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम् —तणा रुक्खा ।
२. व्या० वि० —विभक्तिरहितं वर्णलोपश्च — जराउया ।
३. जाणं (वृ) ।
४. पडिलेहि (क) ।
५. एएण काएण य (ख); एतेसु काएसु तु (चू) ।
६. एतेसु या विप्परियासुविंति (क, ख, वृ); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—विप्परियास-मुवेति ।
७. जाईवहं (चू, वृपा) ।
८. °वरेसुं विणिग्घात° (चू) ।
९. जानि (वृ) ।
१०. मज्जते (चूपा) ।
११. पुरत्था (क) ।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—संसार-मावण्णा ।
१३. परंपरेण (चू) ।
१४. व्या० वि०—बंधानुलोम्यात् 'दुण्णीयाणि' अत्र ईकारस्य ह्रस्वत्वम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासंड-कुसील-पदं

५. जे मायरं च[1] पियरं च[2] हिच्चा समणव्वए[3] अगणि[4] समारभिज्जा।
अहाहु[5] से लोए कुसीलधम्मे[6] भूयाइ जे हिंसति आतसाते॥

६. उज्जालओ[7] पाण[8]ऽतिवातएज्जा[9] णिव्वावओ अगणि[10]ऽतिवातएज्जा[11]।
तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं ण पंडिते अगणि[12] समारभिज्जा॥

७. पुढवी वि जीवा आऊ वि जीवा पाणा य[13] संपातिम[14] संपयंति।
संसेदया[15] कट्ठसमस्सिता य एते दहे अगणि[16] समारभंते॥

८. हरियाणि भूयाणि विलंबगाणि आहार-देहाइं[17] पुढो सियाइं।
जे छिंदई आतसुहं[18] पडुच्च[19] 'पागब्भि-पण्णो'[20] बहुणं[21]तिवाती[22]॥

९. जाइं च वुड्ढिं च विणासयंते बीयाइ 'अस्संजय आयदंडे'[23]।
अहाहु से लोए अणज्जधम्मे बीयाइ[24] से हिंसइ आयसाते॥

कुसील-विवाग-पदं

१०. गब्भाइ मिज्जंति बुयाबुयाणा णरा परे[25] पंचसिहा कुमारा।
जुवाणगा[26] मज्झिम[27] थेरगा[28] य चयंति ते आउखए[29] पलीणा॥

---

१. वा (क)।
२. व (क)।
३. समणव्वदे (क); समणव्वते (ख)।
४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
५. अथाऽऽह (चू)।
६. अणज्जधम्मे (चू)।
७. उज्जालिया (चू)।
८. व्या० वि—द्विपदयोः सन्धिः—पाणा अतिवातएज्जा।
९. तिवातयंति (चू); तिवातएज्जा (वृपा)।
१०. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—अगणिं अतिवातएज्जा।
११. निव्वातएज्जा (क); निपातएज्जा (चू)।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
१३. ति (क); इ (ख)।
१४. व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्–संपातिमा।
१५. संसेइया (क)।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
१७. देहाय (ख, वृ)।
१८. आयसातं (चू)।
१९. पडुच्चा (क)।
२०. पागब्भिपाणे (क, ख, वृ)।
२१. व्या० वि० –छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
२२. निवाती (चू)।
२३. अस्संजति यायदडे (क)।
२४. हरियादि (क)।
२५. वरे (क)।
२६. युवाणगा (चू)।
२७. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्–मज्झिमा।
२८. पोरुसा (वृपा)।
२९. आउक्खए (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. 'बुज्झाहि जंतू ! इह माणवेसु दट्ठुं भयं बालिएणं अलंभे'[1] ।
एगंतदुक्खे जरिए हु[2] लोए सकम्मुणा विप्परियासुवेति ॥

कुसील-दंसण-पदं

१२. इहेगे मूढा पवदंति मोक्खं आहारसंपज्जणवज्जणेणं[3] ।
एगे य सीतोदगसेवणेणं हुतेण एगे पवदंति मोक्खं ॥

१३. पाओसिणाणाइसु णत्थि मोक्खो खारस्स[4] लोणस्स अणासणेणं[5] ।
ते मज्जमंसं लसुणं 'चऽभोच्चा'[6] अण्णत्थ वासं परिकप्पयंति[7] ॥

१४. उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति सायं च पातं उदगं फुसंता ।
उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी सिज्झिसु[8] पाणा बहवे दगंसि ॥

१५. मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य मंगू[9] य उट्टा[10] दगरक्खसा य ।
अट्ठाणमेयं कुसला वयंति उदगेण 'सिद्धिं जमुदाहरंति'[11] ॥

१६. उदगं जती[12] कम्ममलं हरेज्जा एवं सुहं[13] इच्छामित्तमेव[14] ।
'अंधं व'[15] णेयारमणुस्सरंता[16] पाणाणि चेवं विणिहंति[17] मंदा ॥

१७. पावाइं कम्माइं पकुव्वओ हि सीओदगं[18] तू जइ तं हरेज्जा ।
सिज्झिसु एगे दगसत्तघाती मुसं वयंते जलसिद्धिमाहु[19] ॥

१८. हुतेण जे सिद्धिमुदाहरंति[20] सायं च पायं अगणिं फुसंता ।
एवं सिया सिद्धि हवेज्ज तेसिं[21] अगणिं फुसंताण कुकम्मिणं पि ॥

---

१. संबुज्झहा जंतवो माणुसत्तं,
दट्ठुं भयं बालिसेणं अलंभो (क, ख, वृ) ।

२. व (ख, वृ); अस्मिन् श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च पाठभेदोर्थभेदश्चापि विद्यते । चूर्णिपाठोर्थ-विचारणया स्वाभाविकः प्रतिभाति, तेन स स्वीकृतः । वृत्तिकारेण प्रतिदोषेण विपर्ययं गतः पाठो लब्धस्तेन व्याख्यायां जटिलता जातेति संभाव्यते ।

३. आहारसपंचगवज्जणेणं (चूपा, वृपा);
आहारओ पंचगवज्जणेणं (वृपा) ।

४. खाणस्स (क) ।

५. अणासतेणं (क) ।

६. च भोच्चा (वृ); अत्र चूर्णौ वृत्तौ च महानर्थभेदो विद्यते ।

७. °गप्पयंति (क) ।

८. सिज्झंसु (क, ख) ।

९. मग्गू (क, ख, वृ) ।

१०. उट्टा (ख, वृ); अत्र लिपिसादृश्येन 'उद्दा' स्थाने 'उट्टा' पाठोस्ति जातः । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठः आसीत् किन्तु जलचर-प्रकरणे 'उद्दा' पाठ एव संगतोस्ति

११. जे सिद्धिमुदाहरंति (क, ख, वृ) ।

१२. व्या० वि० —छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।

१३. पुण्णं (चू) ।

१४. इच्छामेत्तंतो वा (क) ।

१५. अंधव्व (क) ।

१६. °मणुसरित्ता (क, ख) ।

१७. विहेढंति (चू) ।

१८. सिओ° (चू) ।

१९. दगसिद्धि° (क) ।

२०. मोक्खमुदा° (चू) ।

२१. तम्हा (क, ख, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसील-उवालंभ-पदं

१९. अपरिच्छ[1] दिट्ठिं[2] ण हु एव सिद्धी एहिंति ते घातमबुज्झमाणा[3] ।
'भूतेहिं जाण'[4] पडिलेह सातं'[5] विज्जं गहाय तसथावरेहिं[6] ॥

२०. थणंति लुप्पंति तसंति कम्मी पुढो[7] जगा[8] परिसंखाय[9] भिक्खू ॥
तम्हा विऊ विरए आयगुत्ते दट्ठुं तसे य प्पडिसाहरेज्जा[10] ॥

सलिंग-कुसील-पदं

२१. जे धम्मलद्धं विणिहाय[11] भुंजे वियडेण साहट्टु य जे सिणाइ[12] ।
जे धावती[13] 'लूसयई व वत्थं'[14] अहाहु से णागणियस्स[15] दूरे ॥

सुसील-पदं

२२. कम्मं परिण्णाय दगंसि धीरे वियडेण'जीवेज्ज य'[16]'आदिमोक्खं ।
'से बीयकंदाइ अभुंजमाणे विरए सिणाणाइसु इत्थियासु'[17] ॥

कुसील-पदं

२३. जे मायरं च पियरं च हिच्चा गारं तहा पुत्तपसुं धणं च ।
'कुलाइं जे धावति साउगाइं'[18] अहाहु से सामणियस्स दूरे ॥

२४. कुलाइं जे धावति साउगाइं 'आघाइ धम्मं उदराणुगिद्धे'[19] ।
'से आरियाणं गुणाणं'[20] सतंसे 'जे लावएज्जा असणस्स हेउं'[21] ॥

२५. 'णिक्खम्म दीणे'[22] परभोयणम्मि[23] 'मुहमंगलिओदरियं[24] पगिद्धे'[25] ।
णीवारगिद्धे व महावराहे 'अदूर एवेहिइ'[26] घातमेव ॥

---

१. अपरिक्ख (ख) ।
२. दिट्ठं (क, ख, वृ) ।
३. घंतम° (चू) ।
४. जाण (क, ख) ।
५. भूतेहिं जाण पडिलेह सातं (आयारो २।५२) ।
६. त्तस° (क) ।
७. पुट्ठो (क) ।
८. जगाइं (चू) ।
९. पडिसखाए (चू) ।
१०. या पडि° (चू); यं प्पडिसंह° (ख) ।
११. न णिहाय (क); व णिघाय (चू) ।
१२. सिणाइ (क, ख) ।
१३. धोवति (ख) ।
१४. लीसएज्जा वि वत्थं (चूपा) ।
१५. णं अणियस्स (चू) ।
१६. जे जीवति (चू) ।
१७. ते बीज-कंदादि अभुंजमाणा, विरता सिणाणा अदु इत्थिगातो (चू) ।
१८. आघाति धम्मं उदराणुगिद्धो (चू) ।
१९. आघाति अक्खाइउदराओ गिद्धो (चू) ।
२०. अहाहु से आयरियाण (क, ख) ।
२१. जे लावए ता असणादिहेतुं (चू) ।
२२. णिक्खंदहीणे (चू) ।
२३. परभोयणत्थि (चू) ।
२४. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मुहमंगलिओ+ओदरियं ।
२५. मुहमंगलिउदरियाणुगिद्धे (क); मुहमंगलिए उदराणुगिद्धे (ख) ।
२६. अदूरए एहंति (ख); अदूरते वेसति (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. अण्णस्स पाणस्सिहलोइयस्स अणुप्पियं भासति सेवमाणे।
पासत्थयं चेव कुसीलयं च णिस्सारए होइ जहा पुलाए॥

सुसील-पदं

२७. अण्णायपिंडेणऽहियासएज्जा णो[1] पूयणं तवसा आवहेज्जा[2]।
'सद्देहि रूवेहि असज्जमाणे सव्वेहिं कामेहि विणीय गेहिं'[3]॥
२८. सव्वाइं संगाइं अइच्च धीरे[4] सव्वाइं दुक्खाइं तितिक्खमाणे।
अखिले अगिद्धे अणिएयचारी 'अभयंकरे भिक्खु[5] अणाविलप्पा'[6]॥
२९. भारस्स जाता[7] मुणि[8] भुंजएज्जा[9] कंखेज्ज 'पावस्स विवेग'[10] भिक्खू।
दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा संगामसीसे 'व परं दमेज्जा'[11]॥
३०. 'अवि हम्ममाणे'[12] फलगावतट्ठी[13] समागमं कंखइ अंतगस्स।
णिद्धूय कम्मं ण पवंचुवेइ[14] अक्खक्खए वा सगडं ति बेमि॥

---

१. ण (चू)।
२. आवहुज्जा (चू)।
३. अण्णे य पाणे य अणाणुगिद्धे, सव्वेसु कामेसु णियत्तएज्जा (चू)।
४. वीरे (क, ख)।
५. व्या० वि०—भिक्खू।
६. ण सिलोयकामी परिव्वएज्जा (चू)।
७. जत्ता (क)।
८. व्या० वि०—मुणी।
९. भुंजमाणे (चू)।
१०. यो पाव विवेग (चू); व्या० वि०—विवेगं।
११. च परं० (क); अवरे दमेइ (चू)।
१२. अणिहम्ममाणे (चूपा)।
१३. °यतट्ठी (क)।
१४. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—पवंचं+उवेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं अज्झयणं

वीरियं

वीरिय-पदं

१. दुहा वेयं[1] सुयक्खायं[2] वीरियं ति पवुच्चई।
किण्णु वीरस्स वीरितं[3]? 'केण वीरो त्ति वुच्चति'[4]?॥

२. कम्ममेव[5] पवेदेंति[6] अकम्मं वा[7] वि सुव्वया[8]॥
'एतेहिं दोहिं ठाणेहिं जेहिं'[9] दीसंति मच्चिया॥

३. पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहावरं।
तब्भावादेसओ[10] वा वि बालं पंडियमेव वा॥

बाल-वीरिय-पदं

४. सत्थमेगे[11] सुसिक्खंति अतिवाताय[12] पाणिणं।
एगे[13] मंते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो॥

---

१. चेतं (क, चू)।

२. समक्खात (चू)।

३. वीरत्तं (क, ख, वृ)।

४. कहं चेयं पवुच्चति (क, ख)।

५. कम्ममेगे (क, ख, वृ); अत्र वृत्तिकृता 'एगे' इति पाठः स्वीकृतः, किन्तु अत्र प्रवेदनं तीर्थंकराणां विद्यते, न तु मतान्तरसूचनमस्ति तेन नासौ पाठो घटते।

६. परिण्णाय (चू); पभासंति (चूपा)।

७. चा (वृ)।

८. मुच्चति (क); सुव्वया! (वृ)।

९. 'एतेहिं दोहिं ठाणेहिं, जेहिं' अत्र तृतीया करणेनार्थस्य जटिलता जाता। चूर्णौ तृतीयान्तः पाठो नास्ति व्याख्यातः। तत्र 'एते एव द्वे स्थाने' इति पाठो व्याख्यातोस्ति तेन 'एते एव दुवे ठाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते। यद्येष पाठः स्यात् तदा व्याख्याया जटिलतापि समाप्ता स्यात्। उत्तराध्ययने (५।२) पि एतत् संवादी पाठो लभ्यते—'संतिमेव दुवे ठाणा' पुनश्च 'जम्मि' अथवा 'जेहिं' इति पाठावपि सुसंगच्छाते; °जम्मि (चू)।

१०. तब्भाव° (चू)।

११. अत्थ° (चू)।

१२. °वादाय (क)।

१३. केइ (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. माइणो कट्टु मायाओ 'कामभोगे समारभे'[१] ।
हंता छेत्ता पगतित्ता आय-सायाणुगामिणो ॥
६. मणसा वयसा चेव कायसा चेव अंतसो ।
आरतो परतो वा वि दुहा वि य असंजता ॥
७. वेराइं कुव्वती वेरी 'ततो वेरेहिं रज्जती'[२] ।
पावोवगा य आरंभा दुक्खफासा य अंतसो ॥
८. संपरायं[३] णियच्छंति[४] अत्तदुक्कडकारिणो[५] ।
रागदोसस्सिया बाला पावं कुव्वंति ते बहुं ॥
९. एतं सकम्मविरियं[६] बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो अकम्मविरियं पंडियाणं सुणेह मे ॥

पंडित-वीरिय-पदं

१०. दविए बंधणुम्मुक्के सव्वतो छिण्णबंधणे ।
पणोल्ल[७] पावगं कम्मं सल्लं 'कंतति अंतसो'[८] ॥
११. णेयाउयं सुयक्खातं उवादाय समीहते ।
भुज्जो भुज्जो दुहावासं असुहत्तं तहा तहा ॥
१२. ठाणी विविहठाणाणि चइस्संति ण संसओ ।
अणितिए[९] अयं[१०] वासे 'णातीहि य'[११] सुहीहि य ॥
१३. एवमायाय मेहावी अप्पणो[१२] गिद्धिमुद्धरे ।
आरियं[१३] उवसंपज्जे सव्वधम्ममकोवियं[१४] ॥
१४. सहसंमइए[१५] णच्चा धम्मसारं सुणेत्तु[१६] वा ।
'समुवट्ठिए अणगारे पच्चक्खाय पावए'[१७] ॥

---

१. °समायरे (क); °समाहरे (चू); आरंभाय तिउट्टइ (चूपा, वृपा) ।
२. जेहिं वेरेहिं कच्चति (चू) ।
३. संपराइगं (क); संपरागं (चू) ।
४. नियच्छंति (चू) ।
५. अत्ता° (चू) ।
६. °वीरियं (ख) ।
७. पणोल्लो (क, ख) ।
८. कंतइ अप्पणो (वृपा) ।
९. अणीयए (क, ख) ।
१०. इमे (चू) ।
११. नायएहि (क, ख) ।
१२. अप्पणा (चू) ।
१३. आयरियं (ख, चूपा) ।
१४. सव्वे धम्मा अकोपिता (चू); °गोवियं (ख, वृपा) ।
१५. सहसंमुइए (क); सह सम्मुत्तियाए (चू) ।
१६. सुणेत्त (चू) ।
१७. समुवट्ठिए उ° (ख); उवट्ठिते य मेधावी (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. जं किंचुवक्कमं[1] जाणे 'आउक्खेमस्स अप्पणो।
तस्सेव अंतरा खिप्पं सिक्खं सिक्खेज्ज पंडिए'[2] ॥

१६. जहा कुम्मे सअंगाइं सए देहे समाहरे।
एवं 'पावेहिं अप्पाणं'[3] अज्झप्पेण समाहरे ॥

१७. साहरे[4] हत्थपाए य मणं[5] सव्विंदियाणि य।
पावगं च[6] परीणामं भासादोसं च पावगं[7] ॥

१८. 'अणु माणं'[8] च मायं च तं परिण्णाय पंडिए।
'सुतं मे इह मेगेसिं एयं वीरस्स वीरियं'[9] ॥

१९. 'उड्ढमहे तिरियं दिसासु जे पाणा तस थावरा ॥
सव्वत्थ विरतिं कुज्जा संति-णिव्वाणमाहितं'[10] ॥

२०. पाणे य णाइवाएज्जा अदिण्णं पि य णातिए[11]।
सातियं[12] ण मुसं बूया एस धम्मे वुसीमओ ॥

२१. 'अतिक्कमंति वायाए मणसा वि ण पत्थए।
सव्वओ संवुडे दंते आयाणं सुसमाहरे'[13] ॥

२२. कडं च कज्जमाणं[14] च आगमेस्सं[15] च पावगं।
सव्वं तं णाणुजाणंति आयगुत्ता[16] जिइंदिया ॥

---

१. किन्तुवक्कमं (क); किंचिउवक्कमं (चू); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—किंचि+उवक्कमं।

२. आउक्खेमं च अप्पणो। तस्सेव अंतरद्धा, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिते (चू)।

३. पावाइं मेहावी (क, ख, वृ)।

४. संहरे (चू)।

५. कायं (चू)।

६. तु (ख)।

७. तारिसं (क, ख, वृ)।

८. अइमाणं (चूपा, वृपा)।

९. आययट्ठं सुयादाय एवं वीरस्स वीरियं (क, ख); साया गारवणिहुते, उवसंते णिहे चरे (क, ख); साया गारवणिहुए, उवसंते णिहे चरे (वृ); सुयं मे इह मेगेसिं, एवं वीरस्स वीरियं (वृपा); आययट्ठं सुआदाय, एयं वीरस्स वीरियं (वृपा)।

१०. ×(क, ख); अयं च श्लोको न सूत्रादर्शेषु दृष्टः, टीकायां तु दृष्टः इति कृत्वा लिखितः (वृ)।

११. नायए (क); णादिए (ख)।

१२. साइयं (ख); सादियं (वृ)।

१३. ०सुसमाहिए (क);
अयं भावरते निच्चं,
भवे भिक्खू सुसंवुडे।
अतिक्कमं तिपावाए,
मणसा वि ण पत्थए ॥ (चू)।

१४. कीर० (चू)।

१५. ०मिस्सं (ख)।

१६. आउगुत्ता (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अबुद्ध-परक्कंत-पदं

२३. जे याऽबुद्धा[1] महाभागा[2] वीरा ऽसम्मत्तदंसिणो[3]।
असुद्धं तेसि परक्कंतं सफलं होइ सव्वसो ।।

बुद्ध-परक्कंत-पदं

२४. जे उ[4] बुद्धा महाभागा[5] वीरा सम्मत्तदंसिणो ।
सुद्धं तेसिं परक्कंतं अफलं होइ सव्वसो ।।
२५. तेसिं 'तु तवोसुद्धो'[6] णिक्खंता जे[7] महाकुला ।
'अवमाणिते परेणं तु ण सिलोगं वयंति ते'[8] ।।
२६. अप्पपिंडासि पाणासि अप्पं भासेज्ज सुव्वए ।
खंतेऽभिणिव्वुडे दंते 'वीतगेही सया जए'[9] ।।
२७. झाणजोगं[10] समाहट्टु कायं वोसेज्ज[11] सव्वसो ।
तितिक्खं परमं णच्चा आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ।।
—त्ति बेमि ।।

---

१. अबुद्धा (क) ।
२. महानागा (चू) ।
३. असमत्त० (ख); ०दरिसिणो (चू)
४. य (ख, वृ) ।
५. महानागा (चू) ।
६. पि तवो ऽसुद्धो (क,वृ); तु तवो असुद्धो(ख) ।
७. जे य (क) ।
८. जं नेवन्ने वियाणंति, न सिलोगं पवेयए (क, ख, वृ) ।
९. विगतगेधी ण रज्जति (चू) ।
१०. ०योगं (चू) ।
११. विउ० (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं

धम्मो

धम्म-पदं

१. कयरे धम्मे अक्खाए[1] माहणेण मईमता ? ।
अंजुं[2] धम्मं जहातच्चं[3] 'जिणाणं तं सुणेह मे'[4] ॥
२. माहणा खत्तिया वेस्सा[5] चंडाला अदु बोक्कसा ।
एसिया वेसिया सुद्दा 'जे य'[6] आरंभणिस्सिया ॥
३. परिग्गहे णिविट्ठाणं 'वेरं तेसिं'[7] पवड्ढई ।
आरंभसंभिया[8] कामा ण ते दुक्खविमोयगा ॥
४. आघातकिच्चमाहेउं[9] णाइओ[10] विसएसिणो ।
अण्णे हरंति तं वित्तं 'कम्मी कम्मेहि किच्चती'[11] ॥
५. 'माता पिता ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
णालं ते मम[12] ताणाए लुप्पंतस्स सकम्मुणा'[13] ॥

---

१. आघात (चू) ।
२. अज्जू (ख); अंजु (चू) ।
३. अहा° (क); जधातधा (चू) ।
४. जणगा० (ख); जणगा तं सुणे धम्मे (चूपा, वृपा) ।
५. वेसा (क, ख) ।
६. जेऽन्ने (क) ।
७. पावं लेसि (वृ); तेसि पावं (चू); वेरं तेसिं (वृपा) ।
८. °संवुता (चू); °सम्मुता (चुपा) ।
९. °माधाए (चू); °माधेतुं (चूपा) ।
१०. णायतो (क) ।
११. °कच्चती (क); कम्माजय एसति (चू) ।
१२. तव (क, ख, वृ) ।
१३. तुलना—माया पिया ण्हुसा भाया,
भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाय,
लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥
—उत्तरज्झयणाणि ६।३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. एयमट्ठं सपेहाए[1] परमट्ठाणुगामियं
णिम्ममो णिरहंकारो चरे भिक्खू जिणाहियं ।।

(युग्मम्)

७. 'चिच्चा वित्तं च पुत्ते य'[2] णाइओ य परिग्गहं ।
'चिच्चाण अंतगं सोयं'[3] णिरवेक्खो परिव्वए ।।

मूलगुण-पदं

८. 'पुढवी आऊ'[4] अगणी वाऊ[5] 'तण रुक्ख'[6] सबीयगा ।
अंडया 'पोय जराऊ रस संसेय'[7] उब्भिया ।।
९. एतेहिं छहिं काएहिं तं विज्जं ! परिजाणिया ।
मणसा कायवक्केणं णारंभी ण परिग्गही ।
१०. मुसावायं[8] बहिद्धं च उग्गहं च अजाइयं[9] ।
सत्थादाणाइं लोगंसि तं विज्जं ! परिजाणिया ।।

उत्तरगुण-पदं

११. पलिउंचणं च भयणं च थंडिल्लुस्सयणाणि य ।
धुत्तादाणाणि[10] लोगंसि तं विज्जं ! परिजाणिया ।।
१२. 'धावणं रयणं चेव वमणं च विरेयणं ।
वत्थिकम्मं सिरोवेधे'[11] तं विज्जं ! परिजाणिया ।।
१३. गंधमल्लं[12] सिणाणं च दंतपक्खालणं तहा ।
परिग्गहित्थिकम्मं च तं विज्जं ! परिजाणिया ।।

---

१. व्या० वि०—अत्र 'सं' शब्दस्य अनुस्वार-लोपः—'संपेहाए' (संप्रेक्ष्य) । सम्मंपेहाए (चू) । 'स पेहाए' स प्रेक्षापूर्वकारी (वृ) । उत्तराध्ययन (६।४) संदर्भे चूर्णिव्याख्या संगतास्ति । सपेहाए (स्वप्रेक्षया) इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

२. ०या (क); चेच्चा पुत्ते य मित्ते य (चू) ।

३. चेच्चाण अत्तगं सोतं (चू); चेच्चा अणंतगं सोयं (चूपा); चेच्चाण अंतकं सोयं, चेच्चाण अत्तगं सोयं, चेच्चाणऽणंतगं सोयं (वृपा) ।

४. पुढवाऽऽतु (चू) ।

५. वायू (चू) ।

६. व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—तणा रुक्खा ।

७. व्या० वि०—विभक्तिरहितं वर्णलोपश्च—पोयया जराउया रसया ससेइया ।

८. ०वातं (चू) ।

९. अजाइया (क, ख); मऽजाइयं (चू) ।

१०. धूणायाणयं (क); धूणादाणाइं (ख); वृत्तिकृता 'धूण' इति पाठो व्याख्यातः धूनयेति प्रत्येकं क्रिया योजनीया(वृ); किन्तु चूर्णीगतः पाठोर्थदृष्ट्या स्वाभाविकः प्रतिभाति ।

११. धोयणं रयणं चेव, वत्थीकम्म विरेयणं । वमणंजणपलीमंथं (क, ख, वृ) ।

१२. ०मल्ल (ख, वृ, चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. उद्देसियं कीयगडं[1] पामिच्चं चेव आहडं।
'पूतिं अणेसणिज्जं'[2] च तं विज्जं! परिजाणिया॥

१५. आसूणिमक्खिरागं[3] च गिद्धुवघायकम्मगं[4] ।
उच्छोलणं च 'कक्कं च'[5] तं विज्जं! परिजाणिया॥

१६. संपसारी कयकिरिए[6] पसिणायतणाणि[7] य।
सागारियं पिंडं च तं विज्जं! परिजाणिया॥

१७. अट्ठापदं[8] ण सिक्खेज्जा वेधादीयं[9] च णो वए।
हत्थकम्मं विवायं च तं विज्जं! परिजाणिया॥

१८. उवाणहाओ[10] छत्तं च णलियं[11] बालवीयणं[12]।
परकिरियं अण्णमण्णं च तं विज्जं! परिजाणिया॥

१९. उच्चारं पासवणं हरितेसु ण करे मुणी।
वियडेण वावि साहट्टु णायमेज्ज[13] कयाइ[14] वि॥

२० परमत्ते[15] अण्णपाणं ण भुंजेज्ज कयाइ वि।
परवत्थं अचेलो वि तं विज्जं! परिजाणिया॥

२१. आसंदी पलियंके य[16] णिसिज्जं च गिहंतरे।
संपुच्छणं[17] सरणं वा तं विज्जं! परिजाणिया॥

२२. 'जसं कित्ती'[18] सिलोगं च जा य वंदणपूयणा।
सव्वलोगंसि जे कामा तं विज्जं! परिजाणिया॥

२३. जेणेहं[19] णिव्वहे भिक्खू अण्णपाणं तहाविहं।
अणुप्पदाणमण्णेसिं तं विज्जं! परिजाणिया॥

---

१. कीतकडं (चू)।
२. पूइयं णेस° (क); पूयं अणे° (ख)।
३. आसूणियमक्खि° (चू)।
४. गेहुवघाय° (चू)।
५. कक्केणं (चू)।
६. य कयकिरीते (क, ख)।
७. पासणिया° (चू)।
८. अट्ठावयं (ख)।
९. वेहाईयं (ख); वेधातीतं (वृ); वेधादीयं (वृपा)।
१०. पाणहाओ य (क, ख, वृ)।
११. नालीयं (ख)।
१२. °वीयणी (क)।
१३. नाच° (ख)।
१४. कदादि (क)।
१५. परगत्ते (चू)।
१६. पलियंकं च (चू)।
१७. संपुच्छणं च (क, चू)।
१८. जस किति (ख, चू)।
१९. जणेहि (क); जेणिहं (चू); जेणिह (चूपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

['सीलमंते असीले वा तेसिं दाणं विवज्जए।
णिज्जरट्ठाए दायव्वं तं विज्जं! परिजाणिया"[1]]॥
२४. एवं उदाहु णिग्गंथे महावीरे महामुणी।
अणंतणाणदंसी से धम्मं देसितवं सुतं॥

भासा-विवेग-पदं

२५. भासमाणो ण भासेज्जा 'णो य'[2] वम्फेज्ज मम्मयं[3]।
'माइट्ठाणं विवज्जेज्जा'[4] 'अणुवीइ वियागरे'[5]॥
२६. 'संतिमा तहिया'[6] भासा जं वइत्ताणुतप्पई।
जं छणं[7] तं ण वत्तव्वं एसा आणा णियंठिया॥
२७. होलावायं सहीवायं गोयवायं[8] च णो वए।
तुमं तुमं ति अमणुण्णं[9] सव्वसो तं ण वत्तए॥

संसग्गि-वज्जण-पदं

२८. अकुसीले सदा भिक्खू 'णो य'[10] संसग्गियं भए।
सुहरूवा तत्थुवसग्गा पडिबुज्झेज्ज ते विदू॥

सामण्ण-चरिया-पदं

२९. 'णण्णत्थ अंतराएणं'[11] परगेहे ण णिसीयए।
गाम-कुमारियं किड्डं णाइवेलं हसे मुणी॥
३०. 'अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए'[12]।
चरियाए अप्पमत्तो 'पुट्ठो तत्थऽहियासए'[13]॥
३१. हम्ममाणो ण कुप्पेज्जा वुच्चमाणो ण संजले।
सुमणो अहियासेज्जा ण य कोलाहलं करे॥

---

१. अयं श्लोकः केवलं चूर्णावेव व्याख्यातो लभ्यते।
२. णेय (क); नेव (ख)।
३. मामयं (क, वृपा)।
४. मायाठाणं ण सेवेज्ज (चू)।
५. अणुवीय° (क); अणुचिंतिय° (ख); °उदाहरे (वृ); अणुचिंतिय वाहरे (चू)।
६. तत्थिमा तइया (क, ख, वृ)।
७. छन्नं (क, ख, वृपा)।
८. सोलवादं (चू); गोतावादं (चूपा)।
९. अपडिण्णे (चू)।
१०. नेव (क, ख)।
११. नन्नत्थंतरा° (क)।
१२. अणिस्सिओ उरालेहिं, अपमत्तो परिव्वए। (चू); अणिस्सिओ° (वृपा)।
१३. पुट्ठो सम्माधियासए (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. 'लद्धे कामे'[१] ण पत्थेज्जा विवेगे 'एवं माहिए'[२] ।
आयरियाइं[३] सिक्खेज्जा 'बुद्धाणं अंतिए'[४] सया ॥
३३. सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुप्पण्णं सुतवस्सियं ।
वीरा[५] जे अत्तपण्णेसी धितिमंता जिइंदिया ॥
३४. गिहे दीवमपासंता[६] पुरिसादाणिया णरा ।
ते वीरा बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवियं ॥
३५. अगिद्धे सद्दफासेसु आरंभेसु अणिस्सिए ।
'सव्वं तं'[७] समयातीतं जमेतं[८] लवियं बहु ॥
३६. अइमाणं च मायं च तं परिण्णाय पंडिए ।
गारवाणि य सव्वाणि णिव्वाणं[९] संधए मुणि ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१. लद्धीकामे (चूपा, वृपा) ।
२. एम माहिए (क); एस आहिए (ख) ।
३. आरियाइं (वृ); आयरियाइं (वृपा) ।
४. सुबुद्धाणंतिए (चू) ।
५. धीरा (वृपा) ।
६. °मपस्संता (क) ।
७. सव्वेतं (चू) ।
८. जमिदं (चू) ।
९. णेव्वाणं (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं अज्झयणं

समाही

समाधि-पदं

१. आघं मइमं[1] अणुवीइ धम्मं अंजु[2] समाहिं तमिणं[3] सुणेह।
अपडिण्णे[4] भिक्खू[5] समाहिपत्ते 'अणिदाणभूते सुपरिव्वएज्जा'[6]॥
२. उड्ढं अहे यं[7] तिरियं दिसासु तसा य जे थावर[8] जे य पाणा।
हत्थेहि पादेहि य संजमित्ता[9] अदिण्णमण्णेसु य णो गहेज्जा॥
३. सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे[10] लाढे चरे आयतुले पयासु[11]।
आयं ण कुज्जा इह जीवियट्ठी चयं ण कुज्जा सुतवस्सि[12] भिक्खू॥

चरित्त-समाधि-पदं

४. सव्विंदियाभिणिव्वुडे[13] पयासु चरे मुणी सव्वओ विप्पमुक्के।
पासाहि पाणे य पुढो विसण्णे[14] 'दुक्खेण अट्टे'[15] परिपच्चमाणे[16]॥

---

१. मईमं (ख)।
२. अंजू (क, ख)।
३. तधियं (चू)।
४. अपडिण्ण (ख)।
५. भिक्खू उ (ख)।
६. °भूते परिवएज्जा (वृ); °भूतेसु परिव्वएज्जा (वृपा, चूपा); °भूते सुपरि° वृपा)।
७. त (क); या (चू)।
८. व्या० वि०—थावरा।
९. संजमंतो (चू)।
१०. वितिगिंछ° (चू)।
११. पयासुं (चू)।
१२. व्या० वि०—सुतवस्सी।
१३. °दियभि° (क); °दियणिव्वुडे (चू)।
१४. वि सत्ते (क, वृ); विसंते (चूपा)।
१५. दुक्खट्टितऽट्टे (चूपा)।
१६. परितप्पमाणे (ख, चू, वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. एतेसु[1] बाले य[2] पकुव्वमाणे आवट्टती[3] 'कम्मसु पावएसु'[4] ।
अतिवाततो कीरति पावकम्मं णिउंजमाणे उ[5] करेइ कम्मं ॥

६. आदीणवित्ती[6] वि करेति पावं मंता हु[7] एगंतसमाहिमाहु ।
बुद्धे समाहीय[8] रए विवेगे पाणाइवाया विरते ठितप्पा[9] ॥

७. सव्वं जगं तू[10] समयाणुपेही पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा ।
उट्ठाय 'दीणे तु'[11] पुणो विसण्णे[12] संपूयणं चेव सिलोयकामी ॥

८. आहाकडं[13] चेव णिकाममीणे[14] णिकामसारी[15] य विसण्णमेसी ।
इत्थीसु[16] सत्ते य पुढो य बाले परिग्गहं चेव पकुव्वमाणे[17] ॥

९. 'वेराणुगिद्धे णिचयं करेति'[18] इतो चुते से दुहमट्ठदुग्गं[19] ।
तम्हा तु मेधावि[20] समिक्ख धम्मं चरे मुणी सव्वतो विप्पमुक्के ॥

१०. आयं[21] ण कुज्जा इह जीवितट्ठी[22] असज्जमाणो य[23] परिव्वएज्जा ।
णिसम्मभासी य विणीयगिद्धी[24] हिंसण्णितं वा ण कहं करेज्जा ॥

११. आहाकडं वा ण णिकामएज्जा णिकामयंते य ण संथवेज्जा ।
धुणे उरालं अणवेक्खमाणे[25] चेच्चाण सोयं अणुवेक्खमाणे[26] ॥

१२. एगत्तमेवं[27] अभिपत्थएज्जा 'एतं पमोक्खे'[28] ण मुसं ति पास ।
एसप्पमोक्खे अमुसेऽवरे[29] वी अकोहणे सच्चरए तवस्सी[30] ॥

---

१. एवं तु (वृपा, चूपा) ।
२. तु (चू) ।
३. आउट्टती (चूपा, वृपा) ।
४. कम्मेहिं पावएहिं (चू) ।
५. वि (ख) ।
६. आदीणभोई (क, चू, वृपा) ।
७. उ (क, ख) ।
८. समाहीउ (क) ।
९. ठितच्चा, ठितच्ची (चूपा, वृपा) ।
१०. तं (ख) ।
११. दीणो य (क, ख) ।
१२. विसत्तो (क) ।
१३. अधाकडं (चू) ।
१४. णियायमीणे (चूपा) ।
१५. नियामचारी (क, ख, वृपा) ।
१६. इत्थीहिं (चू) ।
१७. ममायमाणे (चू) ।
१८. आरंभसत्ता णिचयं करेंति (चू); आरंभसत्तो० (वृपा) ।
१९. ०दुग्गे (चू) ।
२०. व्या० वि०—मेधावी ।
२१. छंदं (चू, वृपा); आय (चूपा) ।
२२. जीवियट्ठी (वृ) ।
२३. उ (क) ।
२४. ०गिद्धि (वृ); ०मेधी (चू) ।
२५. अणुवेहमाणे (ख, वृ) ।
२६. अणुपेहमाणे (क, वृ) ।
२७. ०मेयं (ख) ।
२८. एवं पमुक्खो (क, ख, वृ) ।
२९. वरे (वृ) ।
३०. तपस्सी (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. इत्थीसु या 'आरयमेहुणे उ'[1] परिग्गहं चेव अकुव्वमाणे[2]।
'उच्चावएसु विसएसु ताई'[3] 'ण संसयं'[4] भिक्खु[5] समाहिपत्ते ॥
१४. अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू तणादिफासं तह सीतफासं।
'उण्हं च दंसं'[6] चऽहियासएज्जा सुब्भिं च दुब्भिं च तितिक्खएज्जा ॥
१५. गुत्ते[7] वईए य समाहिपत्ते लेसं समाहट्टु परिव्वएज्जा।
गिहं ण छाए ण वि छादएज्जा[8] सम्मिस्सिभावं[9] पजहे पयासु ॥

असमाधि-पदं

१६. जे केइ लोगम्मि उ अकिरियाता[10] अण्णेण पुट्ठा धुतमादिसंति[11]।
आरंभसत्ता गढिया य लोए धम्मं ण जाणंति विमोक्खहेउं ॥
१७. 'तेसिं पुढो छंदा माणवाणं किरिया-अकिरियाण व पुढोवादं'[12]।
'जातस्स बालस्स पकुव्व देहं'[13] पवड्ढती[14] वेरमसंजयस्स ॥
१८. आउक्खयं[15] चेव अबुज्झमाणे ममाइ से साहसकारि[16][17] मंदे।
अहो य राओ[18] परितप्पमाणे अट्टे सुमूढे अजरामरे[19] व्व ॥
१९. जहाय[20] वित्तं पसवो य सव्वे जे बंधवा जे य पिया य मित्ता।
लालप्पई 'से वि उवेति मोहं'[21] अण्णे जणा तं सि[22] हरंति वित्तं ॥

---

१. °मेहुणा उ (ख, वृ); अरतमेधुणे या (चू)। व्या० वि०—आ+अरत+मैथुनः—विरत-मैथुनः इत्यर्थः।
२. अमायमीणे (चू)।
३. उच्चावएहिं विसएहिं ताया (चू)।
४. णिस्संसयं (क, ख, वृ); ण संसयं (वृपा)।
५. व्या० वि०—भिक्खू।
६. तेउं च० (ख); तेउ च सद्दं (चू)।
७. गुत्तो (क)।
८. छावएज्जा (क, ख)।
९. सम्मिस्स° (क, ख, वृ); सम्मिस्सि° (वृपा)।
१०. अकिरियाआ (क); अकिरिय आया (ख)।
११. °मादियंति (चू)।
१२. पुढो य छंदा इह माणवातो, किरियाकिरीण च पुढो य वायं (क); पुढो य छंदा इह माणवा तु, किरियाकिरीणं च पुढो य वायं (ख); पुढो छंदा इह माणवा उ, किरिया किरियाणं च पुढोवायं (वृ)।
१३. जाताण बालस्स पगब्भणाए (चूपा); जायाए बालस्स पगब्भणाए (वृपा)।
१४. पवड्ढते (चू)।
१५. आयु° (चू)।
१६. व्या० वि०—साहसकारी।
१७. सहस्स° (चू)।
१८. रातो य (चू)।
१९. °मरि (क, ख)।
२०. जहाहि (क, ख)।
२१. से वि य एइ मोहं (क, ख); ते वि उवेंति घंत (चू)।
२२. से (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलगुण-समाहि-पदं

२०. सीहं जहा खुद्दमिगा[1] चरंता दूरे[2] चरंती परिसंकमाणा।
एवं तु मेहावि[3] समिक्ख धम्मं 'दूरेण पावं परिवज्जएज्जा'[4]॥
२१. संबुज्झमाणे उ[5] णरे मतीमं पावाओ अप्पाण[6] णिवट्टएज्जा।
'हिंसप्पसूताणि दुहाणि'[7] मत्ता[8] 'वेराणुबंधीणि महब्भयाणि'[9]॥
२२. मुसं ण बूया मुणि[10] अत्तगामी[11] णिव्वाणमेयं[12] कसिणं समाहिं।
सयं ण कुज्जा ण वि[13] कारवेज्जा करंतमण्णं[14] पि य णाणुजाणे॥

उत्तरगुण-समाहि-पदं

२३. 'सुद्धे सिया जाए ण दूसएज्जा'[15] 'अमुच्छितो अणज्झोववण्णो'[16]।
धितिमं 'विमुक्के ण य'[17] पूयणट्ठी ण सिलोयकामी[18] य परिव्वएज्जा॥
२४. णिक्खम्म गेहाओ णिरावकंखी कायं विओसज्ज[19] णिदाणछिण्णे।
णो जीवितं णो मरणाभिकंखी चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के॥
—त्ति बेमि॥

---

१. खुड्ड° (चू)।
२. दूरेण (वृ)।
३. व्या० वि०—मेहावी।
४. पावाणि दूरेण विवज्जएज्जा (चू)।
५. य (ख, चू)।
६. अप्पाणं (क)।
७. °सूयाइं दुहाइं (क, ख)।
८. मंता (क, ख)।
९. णेव्वाणभूते व परिव्वएज्जा (चू, वृपा)।
१०. व्या० वि०—मुणी।
११. °कामी (चू)।
१२. °मेवं (चू)।
१३. य (क, चू)।
१४. करेंत° (चू)।
१५ सुद्धेसिया जायण दूसएज्जा (चू)।
१६. अमुच्छिए न य अज्झोववण्णे (क, ख)।
१७. विप्पमुक्के ण (चू)।
१८. °गामी (क, ख, वृ)।
१९. विओस्सेज्ज (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगारसमं अज्झयणं

मग्गो

मग्ग-सार-पदं

१. कयरे मग्गे अक्खाते[1] माहणेण मतीमता ? ।
जं मग्गं उज्जु[2] पावित्ता ओहं तरति दुरुत्तरं ।।

२. तं 'मग्गं अणुत्तरं'[3] सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणं[4] ।
जाणासि[5] णं जहा भिक्खू ! तं णे बूहि[6] महामुणी ! ।।

३. जइ णे केइ पुच्छेज्जा 'देवा अदुव माणुसा'[7] ।
तेसिं तु कयरं मग्गं आइक्खेज्ज ? कहाहि णो[8] ।।

४. जइ वो केइ पुच्छेज्जा देवा अदुव माणुसा ।
'तेसिमं पडिसाहेज्जा मग्गसारं सुणेह मे'[9] ।।

५. अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं ।
जमादाय इओ पुव्वं समुद्दं[10] ववहारिणो ।।

---

१. आघाते (चू) ।
२. अंजु (चू); व्या० वि०—उज्जुं ।
३. मग्गमणुत्तरं (ख) ।
४. °मोक्खगं (क) ।
५. जाणेहि (चू) ।
६. बूहि (चू) ।
७. अत्र चूर्णीविवरणानुसारेण 'देवा तिरिय माणुसा' इति पाठस्य परिकल्पना जायते, तच्चेत्थम्—"तिरिया मणुस्सा, उत्तरगुण-लद्धिं वा पडुच्च तियं (तिरियं ?) अपि कश्चिद् गिरा वत्ति (वि त ?), वयसा वि पुच्छेज्ज ।"
८. णे (चू) ।
९. तेसिं तु इमं मग्गं, आइक्खेज्ज सुणेध मे (चू. वृपा); तेसिं तु° (चूपा) ।
१०. समुद्दं व (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. अतरिंसु तरंतेगे तरिस्संति अणागया।
तं सोच्चा पडिवक्खामि जंतवो! तं सुणेह मे॥

अहिंसा-पदं

७. पुढवीजीवा पुढो सत्ता आउजीवा तहागणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता तण[1] रुक्खा सबीयगा॥
८. अहावरे[2] तसा पाणा एवं छक्काय[3] आहिया।
'इत्ताव एव'[4] जीवकाए 'णावरे विज्जती कए'[5]॥
९. सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया।
सव्वे अकंतदुक्खा[6] य अतो सव्वे अहिंसया[7]॥
१०. एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसति कंचणं[8]।
अहिंसा-समयं चेव एतावंतं विजाणिया॥
११. 'उड्ढं अहे'[9] तिरियं च जे केइ तसथावरा।
'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा'[10] संति णिव्वाणमाहियं॥
१२. पभू दोसे णिराकिच्चा[11] ण विरुज्झेज्ज केणइ।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव अंतसो॥

एसणा-पदं

१३. संवुडे से[12] महापण्णे[13] धीरे[14] दत्तेसणं चरे।
एसणासमिए णिच्चं वज्जयंते अणेसणं॥
१४. भूयाइं समारंभ[15] 'साधू उद्दिस्स'[16] जं कडं।
तारिसं तु ण गेण्हेज्जा[17] अण्णपाणं[18] सुसंजए॥

---

१. व्या० वि०—तणा।
२. °वरा (चू)।
३. व्या० वि—छक्काया।
४. इत्तावये (क, ख); एताव ता (चू)।
५. नावरे कोइ विज्जई (क्व)।
६. अक्कंत° (ख)।
७. न हिंसया (क, वृ); अहिंसका (चू)।
८. किंचणं (क, ख)।
९. उड्ढं अहे य (ख); उड्ढमहे (चू)।
१०. °विज्जा (क, वृ)। ३।४।२० श्लोके चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विज्जं विरतिं' पाठः स्वीकृतः, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठो व्याख्यातः। इह च चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठः स्वीकृतः, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं विज्जा' पाठो व्याख्यातः।
११. णिरे° (चू)।
१२. य (चू)।
१३. °पुण्णे (क)।
१४. वीरे (क)।
१५. च समारंभ (क); च समारब्भ (ख)।
१६. समुद्दिस्स य (क); समुद्दिस्सा य (ख); साहू मुद्दिस्स (वृ); तमुद्दिस्सा य (क्व)।
१७. भुंजिज्जा (वृ)।
१८. अण्णं° (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. पूतिकम्मं[1] ण सेवेज्जा[2] एस धम्मे वुसीमतो।
जं किंचि अभिसंकेज्जा[3] सव्वसो[4] तं ण कप्पते[5]।।

भासा-समिति-पदं

१६. 'ठाणाइं संति सड्ढीण गामेसु णगरेसु वा।
अत्थि वा णत्थि वा धम्मो? अत्थि धम्मो त्ति णो वते।।
१७. अत्थि वा णत्थि वा पुण्णं? अत्थि पुण्णं ति णो वए।
अधवा णत्थि पुण्णं ति एवमेयं महब्भयं'[6]।।
१८. 'दाणट्ठयाय जे पाणा'[7] हम्मंति तसथावरा।
तेसिं सारक्खणट्ठाए 'अत्थि पुण्णं ति'[8] णो वए।।
१९. जेसिं तं उवकप्पेंति 'अण्णं पाणं'[9] तहाविहं।
तेसिं लाभंतरायं ति तम्हा णत्थि त्ति णो वए।।
२०. जे य दाणं पसंसंति[10] वधमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति वित्तिच्छेदं करेंति ते।।
२१. दुहओ वि जे[11] ण भासंति अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं णिव्वाणं[12] पाउणंति ते।।

धम्म-दीव-पदं

२२. 'णिव्वाण-परमा'[13] बुद्धा णक्खत्ताण व चंदमा[14]।
तम्हा सया जए दंते णिव्वाणं[15] संधए मुणी।।

---

१. पूती° (क)।
२. सेवेज्ज (चू)।
३. अभिकंखेज्जा (क, ख, वृ)।
४. सव्वतो (क)।
५. भोत्तए (चू)।
६. हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए। ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु नगरेसु वा।। तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णं ति नो वए। अह वा नत्थि पुण्णं ति, एवमेयं महब्भयं।। (क, ख, वृ); इदं गाथा-द्वयमस्माभिश्चूर्ण्यनुसारि स्वीकृतम्। अत्र वृत्त्यनुसारि गाथा-द्वयं त्रुटितप्रकरणमिवाभाति। श्रद्धालोः प्रश्न-परिपाटी चूर्णौ स्वाभाविकी विद्यते। षोडशे श्लोके धर्मोस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तरं च। सप्तदशे श्लोके पुण्यमस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तरं च। वृत्तौ षोडशे श्लोके नास्ति धर्माधर्म-सम्बन्धी कोपि प्रश्नः। सप्तदशे च पुण्य-सम्बन्धी प्रश्नो नास्ति केवलमपृष्टस्य प्रश्नस्योत्तरमस्ति। एतेन प्रतीयते वृत्त्यनुसारी पाठो सम्बद्धोस्ति।
७. दाणट्ठताए जे सत्ता (चू)।
८. तम्हा अत्थि त्ति (चू)।
९. अण्णपाणं (क, ख, वृ)।
१०. पडिसेधेंति (चू)।
११. ते (क, ख, वृ)।
१२. णेव्वाणं (चू)।
१३. णिव्वाणपरमं (क,ख,वृपा); णेव्वाण° (चू)।
१४. चंदिमा (क)।
१५. णेव्वाणं (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. बुज्झमाणाण पाणाणं किच्चंताणं[1] सकम्मणा[2]।
आघाति[3] साधुतं[4] दीवं पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥
२४. आयगुत्ते सया दंते छिण्णसोए[5] णिरासवे[6]।
जे धम्मं सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं ॥

बोद्धदिट्ठि-समीक्खा-पदं

२५. तमेव अविजाणंता अबुद्धा बुद्धवादिणो[7]।
बुद्धा मो त्ति य मण्णंता अंतए ते[8] समाहिए ॥
२६. ते य बीयोदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं।
'भोच्चा झाणं'[9] झियायंति अखेतण्णा असमाहिया ॥
२७. जहा ढंका य कंका य कुलला[10] मग्गुका सिही।
मच्छेसणं झियायंति झाणं ते कलुसाधमं ॥
२८. एवं तु समणा एगे[11] मिच्छदिट्ठी[12] अणारिया।
विसएसणं झियायंति कंका वा कलुसाधमा ॥
२९. 'सुद्धं मग्गं विराहित्ता इहमेगे उ दुम्मती।
उम्मग्गगया दुक्खं घातमेसंति तं तहा'[13] ॥
३०. जहा आसाविणि[14] णावं जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छई[15] पारमागंतु अंतरा य विसीदति ॥
३१. एवं तु समणा एगे मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोतं कसिणमावण्णा आगंतारो महब्भयं ॥

मग्ग-संधाण-पदं

३२. 'इमं च धम्ममादाय कासवेण पवेदितं।
तरे सोयं महाघोरं अत्तत्ताए परिव्वए'[16] ॥

---

१. कच्चं° (क)।
२. सकम्मुणा (चू)।
३. अक्खाति (चू)।
४. साहुतं (क, ख); असौ शब्दः 'साधुकं' अस्ति, तकारश्रुत्या 'साधुतं' जातमिति प्रतीयते।
५. °स्सोते (चू)।
६. अणासवे (क, ख)।
७. बुद्धमाणिणो (क, ख, वृ)।
८. दूरतो (चू)।
९. झाणं णाम (चू)।
१०. पिलजा (चू)।
११. वेगे (क)।
१२. मिच्छा° (क)।
१३. चूर्णिकृता नासौ श्लोको व्याख्यातः।
१४. आसाविणी (चू)।
१५. इच्छेज्जा (चू)।
१६. इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. विरते गामधम्मेहिं जे केई जगई जगा।
तेसिं अत्तुवमायाए[1] थामं कुव्वं परिव्वए ॥

३४. अतिमाणं च मायं च तं परिण्णाय पंडिए।
सव्वमेयं णिराकिच्चा[2] णिव्वाणं[3] संधए मुणी ॥

३५. 'संधए साहुधम्मं'[4] च पावधम्मं णिराकरे[5]।
उवधाणवीरिए भिक्खू कोहं माणं 'ण पत्थए'[6] ॥

३६. जे य बुद्धा अतिक्कंता जे य बुद्धा अणागया।
संती तेसिं पइट्ठाणं भूयाणं[7] जगई जहा ॥

३७. 'अह णं वतमावण्णं'[8] फासा उच्चावया फुसे।
ण तेहिं[9] विणिहण्णेज्जा वातेण व महागिरी ॥

३८. संवुडे से महापण्णे धीरे[10] 'दत्तेसणं चरे'[11]।
णिव्वुडे कालमाकंखे एवं[12] केवलिणो मतं ॥

—ति बेमि ॥

संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।
तरे सोतं महाघोरं, अत्तताए परिव्वएज्जासि ॥
(चू); क्वचित्पश्चार्धस्यान्यथा पाठः—
'कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए' (वृ); उपरिनिर्दिष्टचूर्णिपाठस्य तुलना तृतीयाध्ययनस्थ ८१,८२, श्लोकयोः षट्पदेभ्यो जायते।

१. अत्तुवमाणेण (चू); ता उवमाऽऽताए (चूपा)।
२. णिरेकिच्चा (चू)।
३. णेव्वाणं (चू)।
४. सद्दहे साधुधम्मं (चूपा, वृपा)।
५. णिरे करे (चू)।
६. च वज्जए (क, ख)।
७. भूयाण (क)।
८. अवेणं भेदमावण्णं (चूपा)।
९. तेसु (क, ख)।
१०. बुद्धे, (चू); वीरे (चूपा)।
११. दत्तेसणचरे (वृ)।
१२. एतं (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं अज्झयणं

समोसरणं

समोसरण-चउक्क-पदं

१ चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाइं पुढो वयंति।
किरियं अकिरियं 'विणयं ति'[1] तइयं अण्णाणमाहंसु चउत्थमेव॥

अण्णाणवादि-पदं

२. अण्णाणिया ता[2] कुसला वि संता असंथुया णो वितिगिच्छ[3] तिण्णा।
अकोविया आहु अकोविएहिं[4] अणाणुवीईति[5] मुसं वदंति॥
३. 'सच्चं असच्चं इति चिंतयंता'[6] असाहु[7] 'साहु त्ति'[8] उदाहरंता।

वणइयवादि-पदं

जेमे जणा वेणइया अणेगे पुट्ठा वि भावं विणइंसु णाम[9]॥
४. अणोवसंखा इति ते उदाहु अट्ठे स ओभासइ[10] अम्ह एवं।

अकरियवादि-पदं

लवावसक्की[11] य अणागएहिं णो किरियमाहंसु अकिरियआया[12]॥

---

१. विणइत्ति (क)।
२. ताव (चू)।
३. व्या० वि०—वितिगिच्छं।
४. अकोविए ते (क); अकोवियाय (ख)।
५. °वाई य (ख); °वीय त्ति (चू)।
६. सच्चं मोसं° (चू); °इति भासयंता। (चूपा)।
७. व्या० वि—असाहुं।
८. साधु ति (चू)।
९. णामा (चू)।
१०. नो भासइ (चूपा)।
११. लवावसंकी (क, ख); लवं—कर्म तस्मादपशङ्कितुम्—अपसर्तुं शीलं येषां ते लवापशङ्किनः (वृ)।
१२.°वाई (ख, वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. संमिस्सभावं सगिरा[1] गिहीते[2] से[3] मुम्मुई[4] होइ[5] अणाणुवाई।
इमं दुपक्खं इममेगपक्खं आहंसु छलायतणं च कम्मं॥
६. ते[6] एवमक्खंति अबुज्झमाणा विरूवरूवाणिह[7] अकिरियाता[8]।
जमाइइत्ता बहवे मणूसा भमंति संसारमणोवदग्गं॥
७. णाइच्चो उदेइ[9] ण अत्थमेइ ण चंदिमा वड्ढति हायती वा।
सलिला[10] ण संदंति ण वंति[11] वाया[12] वंझे णितिए[13] कसिणे हु लोए॥
८ जहा हि[14] अंधे सह जोइणा वि रूवाणि णो पस्सइ हीणणेत्ते।
संतं पि[15] ते एवमकिरियआता[16] किरियं ण पस्संति णिरुद्धपण्णा॥
९. संवच्छरं सुविणं[17] लक्खणं च णिमित्तदेहं च उप्पाइयं च।
अट्ठंगमेयं बहवे अहित्ता[18] लोगंसि जाणंति अणागताइं॥
१०. केई[19] णिमित्ता तहिया भवंति केसिंचि 'ते विप्पडिएंति'[20] णाणं।
ते विज्जभावं[21] अणहिज्जमाणा 'आहंसु विज्जापलिमोक्खमेव'[22]॥

किरियवादि-पदं

११. ते एवमक्खंति[23] समेच्च लोगं 'तहा-तहा'[24] समणा माहणा य।
सयंकडं णऽण्णकडं च दुक्खं आहंसु 'विज्जाचरणं पमोक्खं'[25]॥
१२. ते चक्खु[26] लोगस्सिह[27] णायगा उ[28] मग्गाणुसासंति[29] हियं पयाणं[30]।
तहा तहा सासयमाहु लोए जंसी पया माणव! संपगाढा॥

---

१. च गिरा (चू)।
२. गहीते (ख)।
३. ते (चू)।
४. मुम्मिया (क)।
५. होंति (चू)।
६. त (क)।
७. विरूवरूवाणि (वृ)।
८. अकिरियवाई (क, ख, वृ)।
९. उट्ठेति (चू)।
१०. सरितो (चू)।
११. वयंति (ख)।
१२. वायवो (चू)।
१३. नियते (क, ख, वृ)।
१४. य (क, चू)।
१५. तु (चू)।
१६. °किरियवाई (क, ख, वृ)।
१७. सुमिणं (चू)।
१८. अधिज्जिता (चू)।
१९. केयी (चू)।
२०. तं विप्पडिएति (क, ख, वृ)।
२१. भासं (चू); विज्जहरिसं (चूपा)।
२२. जाणामु लोगंसि वयंति मंदा (ख, वृपा)।
२३. एयमक्खंते (चू)।
२४. तधागता (चू); तधा तधा (चूपा)।
२५. °चरणप्पमोक्खं (ख)।
२६. व्या० वि०—चक्खू।
२७. लोगंसिह (क, ख, वृ)।
२८. ओ (क)।
२९. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मग्गं+अणुसासंति।
३०. पजाणं (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. 'जे रक्खसा जे जमलोइया वा'[1] जे आसुरा[2] गंधव्वा य काया।
आगासगामी य पुढोसिया ते[3] पुणो पुणो विप्परियासुवेंति[4] ॥

१४. जमाहु ओहं सलिलं अपारगं जाणाहि णं भवगहणं[5] दुमोक्खं।
जंसी विसण्णा विसयंगणाहिं[6] दुहतो वि लोयं अणुसंचरंति ॥

१५. ण कम्मुणा कम्म खवेंति बाला अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा[7]।
मेधाविणो 'लोभमया वतीता'[8] संतोसिणो णो पकरेंति पावं ॥

१६. ते तीतउप्पण्णमणागयाइं[9,10] लोगस्स जाणंति तहागताइं।
णेतारो अण्णेसि[11] अणण्णणेया बुद्धा हु ते अंतकडा भवंति ॥

१७. ते णेव कुव्वंति ण कारवेंति भूताभिसंकाए[12] दुगुंछमाणा।
सदा जता विप्पणमंति धीरा विण्णत्ति[13]-वीरा य भवंति एगे ॥

१८. डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे ते आततो पासइ सव्वलोगे।
उवेहती[14] लोगमिणं महंतं 'बुद्धप्पमत्तेसु[15] परिव्वएज्जा[16] ॥

१९. जे आततो परतो वा[17] वि णच्चा अलमप्पणो होति अलं परेसिं।
तं जोइभूयं च सतताऽवसेज्जा[18,19] जे पाउकुज्जा अणुवीइ धम्मं।

२०. अत्ताण[20] जो जाणइ जो य लोगं 'जो आगतिं'[21] जाणइ ऽणागतिं च।
जो सासयं जाण[22] असासयं च जातिं[23] मरणं च चयणोववातं[24] ॥

---

१. जे रक्खसाया जमलोइया य (क, ख, वृ)।
२. या सुरा (वृ)।
३. जे (ख, वृ); य (चू)।
४. °समेंति (चू)।
५. °ग्गहणं (चू)।
६. °गणासु (चू)।
७. वीरा (वृ)।
८. लोभ-भयादतीता (वृपा)।
९. व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः।
१०. तीवमुप्पण्ण° (क); तीयमुप्पण्ण° (ख)।
११. मण्णेसि (चू)।
१२. °संकाति (क)।
१३. विदित्तु (चू, वृ), विण्णत्ति (चूपा, वृपा)।
१४. उव्वेहती (ख, वृ)।
१५. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—बुद्धे+अप्पमत्तेसु। बुद्धे+पमत्तेसु।
१६. बुद्धेऽप्पमत्ते सुपरिव्वएज्जा (चूपा)।
१७. या (ख, चू)।
१८. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—सततं+आवसेज्जा।
१९. सतावसेज्जा (क, ख)।
२०. आताण (चू); व्या० वि०—अत्ताणं।
२१. गइं च जो (क, ख)।
२२. जाणइ(ख); व्या०वि०—अत्र इकारलोपः—जाणइ।
२३. जाती (क, ख)।
२४. जणोववायं (क, ख); °पवादं (चू)।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

२१. अहो वि सत्ताण विउट्टणं च जो आसवं जाणति संवरं च।
दुक्खं च जो जाणइ णिज्जरं च[1] 'सो भासिउमरिहति'[2] किरियवादं॥

२२. सद्देसु रूवेसु असज्जमाणे[3] 'रसेसु गंधेसु'[4] अदुस्समाणे।
णो जीवियं णो मरणाभिकंखे[5] आयाणगुत्ते 'वलया विमुक्के'[6]॥

—त्ति बेमि॥

---

१. वा (चू)।

२. आइक्खिउ मरिहति सो (चूपा)।

३. अमुच्छमाणो (चू)।

४. गंधेसु रसेसु (क, ख); रसेहिं गंधेहि (चू)।

५. मरणाहिकंखी (क, ख); मरण विपत्थए (चू); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मरण +अभिकंखे।

६. माया विमुक्के (चूपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरसमं अज्झयणं

आहत्तहीयं

उक्खेव-पदं

१. आहत्तहीयं[1] तु पवेयइस्सं[2] णाणप्पगारं पुरिसस्स जातं।
सतो य धम्मं असतो य सीलं संतिं असंतिं करिस्सामि पाउं॥

सिस्स-दोस-गुण-पदं

२. अहो य रातो य समुट्ठितेहिं तहागतेहिं पडिलब्भ[3] धम्मं।
समाहिमाघातमजोसयंता[4] सत्थारमेवं[5] फरुसं वयंति॥
३. विसोहियं ते[6] अणुकाहयंते जे या ऽऽतभावेण[7] वियागरेज्जा[8]।
अट्ठाणिए 'होइ बहूगुणाणं'[9] जे णाणसंकाए[10] मुसं वदेज्जा[11]॥
४. जे यावि[12] पुट्ठा पलिउंचयंति आदाणमट्ठं[13] खलु वंचयंति।
असाहुणो ते इह साहुमाणी मायण्णिएहिंति[14] अणंतघातं॥

---

१. °धिज्जं (चू)।
२. पवेइयस्सं (ख)।
३. °लंभ (चू)।
४. °मभूसयंता (चू)।
५. °मेव (चू)।
६. वा (चू)।
७. आत° (चू)।
८. वियागरेंति (चू)।
९. होति बहूणिवेसे (चूपा, वृपा); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१०. °संकाइ (क)।
११. वदंति (चू)।
१२. आवि (चू)।
१३. आताण° (क)।
१४. °एसिंति (क, ख); °एसंति (क्व) व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मायण्णिआ+एहिंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. जे कोहणे होइ जगट्ठभासी[1] विओसितं 'जे य'[2] उदीरएज्जा।
अद्धे[3] व से दंडपहं गहाय अविओसिते घासति[4] पावकम्मी ॥
६. 'जे विग्गहिए अ णायभासी'[5] ण से समे होइ अझंझपत्ते।
ओवायकारी य हिरीमणे[6] य एगंतदिट्ठी[7] य अमाइरूवे[8] ॥
७. से पेसले सुहुमे पुरिसजाते जच्चण्णिते चेव सुउज्जुयारे[9]।
बहुं पि अणुसासिए जे तहच्चा[10] समे हु से होइ अझंझपत्ते ॥
८. जे यावि अप्पं वसुमं[11] ति मंता संखाय वायं अपरिच्छ[12] कुज्जा।
तवेण वाहं अहिए[13] ति मंता[14] अण्णं जणं पस्सति[15] बिंबभूतं[16] ॥
९. एगंतकूडेण तु[17] से पलेइ ण विज्जई मोणपदंसि गोते[18]।
जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा वसुमण्णतरेण[19] अबुज्झमाणे ॥

मद-परिहार-पदं

१०. जे माहणे 'खत्तिए जाइए'[20] वा तहुग्गपुत्ते[21] तह लेच्छवी[22] वा।
जे पव्वइए[23] परदत्तभोई 'गोतेण जे थब्भति माणबद्धे'[24] ॥
११. ण तस्स जाती व कुलं व ताणं णण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं।
णिक्खम्म से सेवइऽगारिकम्मं[25] ण से पारए[26] होति विमोयणाए[27] ॥

---

१. जगतट्ठ° (चू); जयट्ठ° (क, चूपा; वृपा)।
२. वा पुणो (चू, वृ)।
३. अंधे (क, ख, वृ)।
४. धासति (ख); धृष्यते (वृ)।
५. जे विग्गहीए अन्नायभासी (क, ख, वृ); जे कोहणे होति उ णायभासी (चूपा); °अन्नाणभासी (ख)। अत्र 'अ नायभासी' इत्यस्य रूपान्तरं 'अन्नायभासी' इति जातम्, संभवतो लिपिदोषेणैव विपर्ययो जातः। व्या० वि०—णातिभासी।
६. हिरीमते (चू)।
७. एगंतसड्ढी (वृपा)।
८. अमायरूवी (चू)।
९. स उज्जुकारी (चू); सुउज्जुचारे (वृपा)।
१०. तहच्चा (क, ख, वृ)।
११. वुसिमं (चू)।
१२. अपरिक्ख (चू)।
१३. सहिते त्ति (क, वृ); सहिउ त्ति (ख)।
१४. मत्ता (ख); णच्चा (चू)।
१५. पासइ (ख)।
१६. चिंधभूतं (चूपा)।
१७. य (क)।
१८. गुत्ते (क); गोत्ते (ख)।
१९. वसु पण्णऽण्णतरेण (चू)।
२०. जातिए खत्तिए (क); खत्तिय जायए (ख)
२१. तह उग्गपुत्ते (क, ख)।
२२. लेच्छए (क); लेच्छई (ख, वृ)।
२३. पव्वईए (चू)।
२४. गोत्तेण° (क, ख); गोत्ते ण जे थंभभिमाणबद्धे (वृ)।
२५. °ऽगारिअंगं (वृ); °ऽगारिकम्मं (वृपा)।
२६. पारगो (वृ); पारके (चू)।
२७. विमोक्ख° (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. णिक्किंचणे[1] 'भिक्खु[2] सुलूहजीवी'[3] जे गारवं[4] होइ सिलोगगामी[5] ।
आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो पुणो-पुणो विप्परियासुवेति ॥

१३. जे भासवं भिक्खु[6] सुसाहुवादी पडिहाणवं[7] होइ विसारए य ।
आगाढपण्णे 'सुय-भावियप्पा'[8] अण्णं जणं पण्णसा[9] परिहवेज्जा ॥

१४. एवं ण से होति समाहिपत्ते जे पण्णसा[10] भिक्खु[11] विउक्कसेज्जा[12] ।
अहवा वि जे लाभमदावलित्ते[13] अण्णं जणं खिंसति बालपण्णे ॥

१५. पण्णामदं चेव तवोमदं च णिण्णामए[14] गोयमदं च भिक्खू ।
आजीवगं चेव चउत्थमाहु से पंडिए उत्तमपोग्गले से ॥

१६. एयाइं मदाइं विगिंच 'धीरा णेताणि सेवंति'[15] सुधीरधम्मा ।
ते सव्वगोतावगता[16] महेसी उच्चं अगोतं[17] च गतिं वयंति[18] ॥

अणाणुगिद्ध-पदं

१७. भिक्खू मुतच्चे[19] तह[20] दिट्ठधम्मे 'गामं व णगरं व'[21] अणुप्पविस्सा ।
से एसणं जाणमणेसणं च 'जो अण्णपाणे य'[22] अणाणुगिद्धे ॥

धम्म-वागरण-विवेग-पदं

१८. अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू बहुजणे वा तह एगचारी ।
एगंतमोणेण वियागरेज्जा एगस्स जंतो गतिरागती य ॥

---

१. निगिणेविया (चू) ।
२. व्या० वि०—भिक्खू ।
३. भिक्खू सलूह० (क) ।
४. व्या० वि०—अत्र वर्णलोपः—गारववं ।
५. चूर्णौ नासौ शब्दो व्याख्यातोस्ति ।
६. व्या० वि०—भिक्खू ।
७. पणिधाणवं (चू); पडिभाणवं (चूपा) ।
८. सुवि० (ख, वृ) ।
९. पण्णया (ख) ।
१०. पण्णवं (ख) ।
११. व्या० वि०—भिक्खू ।
१२. ०सेति (चू) ।
१३. लाभमदेण मत्ते (चू); जातिमदेण मत्तो (चूपा) ।
१४. तन्नामए (क) ।
१५. धीरे ण ताणि संवेज्ज (क, चू) ।
१६. ०गोत्तावगया (क) ।
१७. अगोत्तं (क) ।
१८. उवेंति (ख) ।
१९. सुयच्चा (क); मुयच्चा (ख) ।
२०. कइ (चू) ।
२१. गामं च णगरं च (क, ख); गामे व णगरे व (चू) ।
२२. अण्णस्स पाणस्स (क, ख, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. सयं समेच्चा अदुवा वि सोच्चा भासेज्ज धम्मं हितयं पयाणं !
जे गरहिता सणिदाणप्पओगा णताणि[1] सेवंति सुधीरधम्मा ।।

२०. केसिंचि तक्काए[2] अबुज्झ भावं खुद्दं[3] पि गच्छेज्ज असद्दहाणे[4] ।
आउस्स कालातियारं वघातं[5] लद्धाणुमाणे य[6] परेसु अट्ठे ।।

२१. कम्मं च छंदं च विगिंच[7] धीरे विणएज्ज तु[8] सव्वतो[9] आतभावं[10] ।
रूवेहिं लुप्पंति भयावहेहिं[11] विज्जं गहाय[12] तसथावरेहिं ।।

२२. ण पूयणं चेव सिलोय[13] कामे[14] पियमप्पियं कस्सइ[15] णो करेज्जा[16] ।
सव्वे अणट्ठे परिवज्जयंते अणाइले[17] या अकसाइ[18,19] भिक्खू ।।

निक्खेव-पदं

२३. 'आहत्तहीयं समुपेहमाणे'[20] सव्वेहिं पाणेहिं णिहाय[21] दंडं ।
णो जीवियं णो मरणाहिकंखे[22] 'परिव्वएज्जा वलया विमुक्के'[23] ।।
—त्ति बेमि ।।

---

१. णेताणि (क, ख) ।
२. तक्काइ (क) ।
३. खुड्डं (क) ।
४. अबुज्झमाणे (चू) ।
५. वघाते (क) ।
६. तु (चू) ।
७. विविंच (क) ।
८. ओ (क, ख) ।
९. सुव्वते (क) ।
१०. पाव° (वृ); आय° (वृपा) ।
११. भयारएहिं (क) ।
१२. गहाया (चू) ।
१३. व्या० वि०—सिलोयं ।
१४. गामी (क); कामी (ख) ।
१५. कस्सति (क, चू) ।
१६. कहेज्जा (चू) ।
१७. अणाउले (क, ख, वृ) ।
१८. व्या० वि०—अकसाई ।
१९. अकसाय (क, ख) ।
२०. आहत्तधिज्जं समुपेधमाणे (चू) ।
२१. विहाय (क); णिक्खिप्प (चू); 'णिहाय' अस्य संस्कृतरूपं 'निहाय' इति युज्यते । 'निधाय' इत्यस्य 'परित्यज्य' इत्यर्थः कथं स्यात् ?
२२. °कंखी (क, ख, वृ, चू) ।
२३. चरेज्ज मेधावी वलय-विप्पमुक्के (वृ); चरेज्ज मेधावी वलया विमुक्के (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउद्दसमं अज्झयणं

गंथो

बंभचेरवासे गंथसिक्खा-पदं

१. गंथं विहाय[1] इह[2] सिक्खमाणो उट्ठाय[3] सुबंभचेरं वसेज्जा।
ओवायकारी विणयं सुसिक्खे जे छेए[4] से विप्पमादं ण कुज्जा ॥

२. जहा दिया-पोतमपत्तजात्तं सावासगा[5] पवितुं मण्णमाणं।
तमचाइयं तरुणमपत्तजायं[6] ढंकादि अव्वत्तगमं हरेज्जा ॥

३. एवं तु 'सिक्खे वि अपुट्ठधम्मे णिस्सारं वुसिमं मण्णमाणो'[7]।
दियस्स छावं व अपत्तजातं हरिंसु णं पावधम्मा अणेगे ॥

४. ओसाणमिच्छे मणुए समाहिं अणोसिते णंतकरे[8] ति णच्चा।
ओभासमाणे दवियस्स वित्तं ण णिक्कसे बहिया आसुपण्णो ॥

५. जे[9] ठाणओ[10] या[11] सयणासणे या[12] परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते।
समितीसु गुत्तीसु य आयपण्णे[13] वियागरेंते[14] य पुढो वएज्जा ॥

---

१. विधाय (चू)।
२. इति (चूपा)।
३. उत्थाय (चू)।
४. छेगे (चू)।
५. सवा० (चू)।
६. ०मपक्खगं वा (चू)।
७. सेहं पि अपुट्ठधम्मं, णिस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा। (क, ख, वृ); ०णिस्सारं० (वृपा)।
८. व्या० वि०—ण+अतकरे।
९. चूर्णौ 'सद्दाणि सोच्चा' अयं पंचमः श्लोकः, 'जे ठाणओ या' असौ षष्ठः श्लोको वर्तते।
१०. ठाणए (चू)।
११. य (ख); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१२. य (ख)।
१३. आसुपण्णे (क)।
१४. ०रेति (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि अणासवे[1] तेसु परिव्वएज्जा ।
णिद्दं च भिक्खू ण 'पमाय[2] कुज्जा'[3] कहं कहं वी[4] वितिगिच्छ[5] तिण्णे ॥

बंभचेरवासे अणुसिट्ठि-सहण-पदं

७. डहरेण वुड्ढेण ऽणुसासिते तु[6] रातिणिएणाऽवि[7] समव्वएणं ।
सम्मं तयं[8] थिरतो णाभिगच्छे णिज्जंतए वावि अपारए से ॥
८. विउट्ठितेणं समयाणुसिट्ठे[9] डहरेण वुड्ढेण 'ऽणुसासिते तु'[10] ।
अब्भुट्ठिताए[11] घडदासिए[12] वा अगारिणं[13] वा समयाणुसिट्ठे ॥
९. ण तेसु कुज्झे[14] ण य पव्वहेज्जा ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा ।
तहा करिस्सं ति पडिस्सुणेज्जा[15] सेयं खु मेयं ण पमाद[16] कुज्जा ॥
१०. वणंसि मूढस्स जहा अमूढा[17] मग्गाणुसासंति[18] हितं पयाणं ।
'तेणा वि'[19] मज्झं इणमेव सेयं जं मे बुधा सम्मऽणुसासयंति[20] ॥
११. 'अह तेण'[21] मूढेण अमूढगस्स कायव्व[22] पूया सविसेसजुत्ता ।
एतोवमं[23] तत्थ उदाहु वीरे[24] अणुगम्म 'अत्थं उवणेइ'[25] सम्मं ॥

बंभचेरवास-फल-पदं

१२. णेता जहा अंधकारंसि राओ मग्गं ण जाणाति अपस्समाणे[26] ।
से सुरियस्सा[27] अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाति पगासितंसि ॥

---

१. अणासए (चू) ।
२. व्या० वि०—पमायं ।
३. पमायएज्जा (चू) ।
४. वा (चू); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
५. वितिगिछं (क, ख); व्या० वि०—वितिगिच्छ ।
६. ऊ (क) ।
७. °ण वा (वृ) ।
८. तगं (चू) ।
९. °सट्ठे (वृ) ।
१०. व चोइते उ (क); उ चोइते य (ख) ।
११. अच्चुट्ठिताए (वृ) ।
१२. व्या० वि० छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१३. °रिणा (क) ।
१४. कुप्पे (चू) ।
१५. °णेत्ता (चू) ।
१६. व्या० वि०—पमादं ।
१७. अमूडे (चू) ।
१८. व्या० वि० –द्विपदयोः सन्धिः—मग्ग + अणुसासंति ।
१९. तेणेव (क, चू) ।
२०. समणु° (क); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—सम्मं । अणुसासयति ।
२१. तेणावि (चू) ।
२२. व्या० वि०—कायव्वा ।
२३. एवोवमं (क) ।
२४. धीरे (चू) ।
२५. अट्ठं उवणेंति (चू) ।
२६. अपासमाणे (चू) ।
२७. सूरियस्स (ख, चू); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. एवं तु सेहे वि अपुट्ठधम्मे धम्मं ण जाणाति अबुज्झमाणे ।
से कोविए[1] जिणवयणेण पच्छा सूरोदए पासइ चक्खुणेव ॥
१४. उड्ढं अहे यं[2] तिरियं[3] दिसासु 'तसा य जे थावर[4] जे य'[5] पाणा ।
'सया जए तेसु परिव्वएज्जा'[6] मणप्पओसं अविकंपमाणे ॥
१५. कालेण पुच्छे समियं[7] पयासु आइक्खमाणो दवियस्स वित्तं ।
तं सोयकारी य[8] पुढो पवेसे संखाइमं[9] केवलियं समाहिं ॥
१६. अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण तायी एएसु या संति[10] णिरोधमाहु[11] ।
ते एवमक्खंति तिलोगदंसी ण भुज्जमेतं[12] ति पमायसंगं ॥
१७. णिसम्म से भिक्खु[13] समीहमट्ठं[14] पडिभाणवं होति 'विसारदे य'[15] ।
आदाणमट्ठी[16] वोदाण-मोणं उवेच्च 'सुद्धेण उवेइ मोक्खं'[17] ॥

बंभचेरवासे लद्धगंथस्स कायव्व-पदं

१८. संखाए[18] धम्मं च वियागरंति बुद्धा हु ते अंतकरा भवंति ।
ते पारगा दोण्ह विमोयणाए संसोधियं[19] पण्हमुदाहरंति ॥
१९. 'णो छादए णो वि य लूसएज्जा'[20] माणं ण सेवेज्ज 'पगासणं च'[21] ।
ण यावि पण्णे परिहास[22] कुज्जा 'ण याऽऽसिसावाद[23] वियागरेज्जा[24] ॥
२०. भूयाभिसंकाए[25] दुगुंछमाणे ण णिव्वहे मंतपएण गोयं[26] ।
ण किंचिमिच्छे[27] मणुए पयासुं असाहुधम्माणि ण संवएज्जा[28] ॥

---

१. कोवितो (चू) ।
२. हस्तलिखितवृत्तौ—य ।
३. तिरिया (चू) ।
४. व्या० वि०—थावरा ।
५. जे थावरा जे य तसा य (चू) ।
६. सदा जतो तंसि परक्कमंतो (चू) ।
७. समितं (क) ।
८. × (क) ।
९. सखाणिमं (चू) ।
१०. व्या० वि०—संती ।
११. निरोह० (क, ख) ।
१२. भूय एतं (चू) ।
१३. व्या० वि० — भिक्खू ।
१४. समीहियट्ठं (ख,वृ); व्या० वि०—समीक्ष्य—मकार: अलाक्षणिक: ।
१५. विसारतेता (क) ।
१६. आयाणअट्ठी (ख); व्या० वि०—मकार: अलाक्षणिक: ।
१७. सुद्धे ण उवेति मारं (चू, वृपा) ।
१८. संखाय (क, चूपा) ।
१९. संसोहिया (चू, वृपा) ।
२०. णो छादएज्जा ण य लूसिता वा (चू) ।
२१. पगासए वा (चू) ।
२२. व्या० वि० —परिहासं ।
२३. ण यासियावाय (ख); व्या० वि० —आसिसावादं ।
२४. वियाकरेज्जा (चू) ।
२५. °संकाइ (क, ख) ।
२६. गुत्तं (क) ।
२७. किंत्ति° (चू) ।
२८. संठवेज्जा (चू); संघएज्जा (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. हासं पि णो संधए[1] पावधम्मे[2] ओए तहियं[3] फरुसं वियाणे[4]।
णो तुच्छए णो य[5] विकत्थएज्जा[6] अणाइले[7] या 'अकसाइ[8] भिक्खू[9]॥
२२. संकेज्ज 'या ऽसंकितभाव'[10] भिक्खू विभज्जवायं च वियागरेज्जा[11]।
भासादुगं धम्मसमुट्ठितेहिं[12] वियागरेज्जा समयाऽसुपण्णे[13]॥
२३. अणुगच्छमाणे वितहं ऽभिजाणे[14] तहा तहा साहु[15] अकक्कसेणं।
ण कत्थई[16] भास[17] विहिंसएज्जा णिरुद्धगं वावि ण दीहएज्जा॥
२४. समालवेज्जा पडिपुण्णभासी णिसामिया[18] समियाअट्ठदंसी[19]।
आणाए सिद्धं[20] वयणं भिजुंजे[21] अभिसंधए[22] पावविवेग[23] भिक्खू॥
२५. अहाबुइयाइं सुसिक्खएज्जा 'जएज्ज या'[24] णाइवेलं वएज्जा।
से दिट्ठिमं दिट्ठि[25] ण लूसएज्जा से जाणइ भासिउं तं समाहिं॥
२६. अलूसए णो पच्छण्णभासी 'णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्णं'[26]।
सत्थारभत्ती अणुवीचि[27] वायं सुयं[28] च 'सम्मं पडिवादएज्जा'[29]॥
२७. से सुद्धसुत्ते उवहाणवं च धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ[30]।
आएज्जवक्के कुसले वियत्ते से अरिहइ भासिउं तं समाहिं॥

—त्ति बेमि॥

---

१. संधइ (ख)।
२. °धम्मं (चू)।
३. तहितं (क); तहीयं (चू)।
४. ऽभिजाणे (चू)।
५. व (क)।
६. पकत्थएज्जा (चू); विकथएज्जा (क, ख, चूपा, वृपा); पकंथएज्जा (चूपा)।
७. अणाउले (ख)।
८. अकयाए (वृ); व्या० वि०—अकसाई।
९. अविरुद्धसेवी (चू)।
१०. वोसंकितभाव (चू); व्या० वि०—असंकितभावे।
११. वितागरिज्जा (क); वियाकरेज्जा (चू)।
१२. धम्ममुव° (ख); सम्मसमु° (चू)।
१३. समया सुपण्णे (वृ)।
१४. तिजाणे (क); विजाणे (ख)।
१५. व्या० वि०—साहू।
१६. कुव्वइ (क); कत्थई (ख)।
१७. व्या० वि०—भासं।
१८. णिसामियं (चू)।
१९. सम्मिया° (क)।
२०. सुद्धं (क, ख)।
२१. भिउंजे (क, ख)।
२२. कखेज्ज या (चू)।
२३. व्या० वि०—पावविवेगं।
२४. जएज्जसु (चू)।
२५. व्या० वि०—दिट्ठिं।
२६. °करेज्ज ताणी (क, ख); णो सुत्तमण्णं च करेज्ज ताई (वृ); णो सुत्तमत्थं° (चू, वृपा)।
२७. °वीति (क)।
२८. सोउं (चू)।
२९. धम्मं पडिवाययंति (ख)।
३०. तत्था (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णरसमं अज्झयणं

जमईए

अणेलिस-पदं

१. जमतीतं पडुप्पण्णं आगमिस्सं च णायओ[1]।
सव्वं मण्णति 'तं ताई'[2] दंसणावरणंतए ॥
२. अंतए वितिगिच्छाए[3] से जाणइ[4] अणेलिसं।
अणेलिसस्स अक्खाया ण से होइ तहिं तहिं ॥
३. तहिं तहिं सुयक्खायं से य सच्चे सुआहिए[5]।
सदा सच्चेण संपण्णे मेत्तिं भूतेसु[6] कप्पए ॥
४. भूतेसु[7] ण विरुज्झेज्जा एस धम्मे वुसीमओ।
वुसीमं[8] जगं परिण्णाय[9] अस्सिं जीवियभावणा ॥
५. भावणाजोगसुद्धप्पा जले णावा व आहिया।
णावा व तीरसंपण्णा[10] सव्वदुक्खा तिउट्टति ॥
६. तिउट्टती[11] उ मेहावी जाणं लोगंसि[12] पावगं।
तुट्टंति[13] पावकम्माणि णवं कम्ममकुव्वओ ॥

---

१. नातओ (क); जाणति (चू)।
२. मेधावी (चू)।
३. °गिच्छाए (क)।
४. संजाणति (चू)।
५. अणेलिसो (चू)।
६. भूतेहिं (क)।
७. भूतेहिं (क)।
८. बुसिमं (क); साहू (ख)।
९. परिण्णाए (चू)।
१०. °संपत्ता (ख)।
११. अतिउट्टती (चू)।
१२. लोगस्स (चू)।
१३. खिज्जंति (चू); अतिवट्टंति (चूपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अकुव्वओ णवं णत्थि कम्मं णाम विजाणतो[1]।
गच्चाण[2] से महावीरे जे ण जाई[3] ण मिज्जती[4]।।
८. ण मिज्जती[5] महावीरे जस्स णत्थि पुरेकडं[6]।
'वाऊ व'[7] जालमच्चेइ[8] 'पिया लोगंसि'[9] इत्थिओ।।
९. इत्थिओ जे ण सेवंति आदिमोक्खा हु ते जणा।
ते जणा बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवितं।।
१०. 'जीवितं पिट्ठओ'[10] किच्चा अंतं पावंति कम्मुणं[11]।
कम्मुणा संमुहीभूता[12] जे मग्गमणुसासति।।
११. 'अणुसासणं पुढो पाणी वसुमं पूयणा सते।
अणासते जते दंते'[13] दढे आरतमेहुणे।।
१२. 'णीवारे व ण लीएज्जा'[14] छिण्णसोते अणाइले[15]।
अणाइले सदा दंते संधिं पत्ते अणेलिसं।।
१३. अणेलिसस्स खेयण्णे[16] ण विरुज्झेज्ज केणइ[17]।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव चक्खुमं[18]।।
१४. 'से हु चक्खू मणुस्साणं जे कंखाए य अंतए'[19]।
अंतेण खुरो वहती चक्कं अंतेण लोट्टति[20]।।
१५. अंताणि धीरा सेवंति तेण अंतकरा इहं।
इह माणुस्सए ठाणे धम्ममाराहिउं[21] णरा।।

---

१. विजाणति (ख, वृ)।
२. विन्नाय (ख, वृ)।
३. छप्रा० वि०—जायइ=जाई।
४. मिज्जति (क); मज्जती (चू)।
५. मज्जते (चू); भिज्जति (वृपा)।
६. परेरयो (चू)।
७. वाउ व्व (ख)।
८. जालं अंचेति (चू)।
९. पियो लोगस्स (चू)।
१०. अतीतं पिच्छतो (चू)।
११. कम्मुणा (क, ख, वृपा)।
१२. संमुहब्भूतो (चू)।
१३. अणुसासति पुढो पाणे, वुसिमं पूयणाऽऽसंसति। अणासए सदा दंते (चू); °अणासवे सदा दंते (चूपा)।
१४. णीवारे य° (क); णीयारे व ण लिज्जेजा (चूपा)।
१५. अणाविले (ख); अणाउले (चूपा, वृपा)।
१६. खेतण्णे (चू)।
१७. केणयि (चू)।
१८. अंतए (चू)।
१९. °जं कंखाउ अंतए (क); से चक्खु लोगम्सिध, जं कंखाय करेति अंतगं (चू)।
२०. लोट्टति (ख)।
२१. °माराहगा (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. णिट्ठितट्ठा व देवा व उत्तरीए त्ति 'मे सुतं'[1]।
सुतं च मेतमेगेसिं अमणुस्सेसु णो तहा ॥
१७. अंतं करेंति दुक्खाणं इहमेगेसि आहितं।
आघातं पुण एगेसिं दुल्लभेऽयं समुस्सए ॥
१८. इतो विद्धंसमाणस्स पुणो 'संबोहि[2] दुल्लभा'[3]।
'दुल्लभाओ तहच्चाओ जे धम्मट्ठं वियागरे'[4] ॥
१९. जे धम्मं सुद्धमक्खंति पडिपुण्णमणेलिसं।
अणेलिसस्स जं ठाणं तस्स जम्मकहा कुतो[5] ? ॥
२०. कुतो कयाइ[6] मेहावी उप्पज्जंति तथागता[7] ?।
तथागता[8] अपडिण्णा चक्खू लोगस्सणुत्तरा[9] ॥
२१. अणुत्तरे य ठाणे से कासवेण पवेदिते।
जं किच्चा णिव्वुडा[10] एगे णिट्ठं पावेंति पंडिया ॥
२२. पंडिए वीरियं लद्धं णिग्घायाय पवत्तगं[11]।
धुणे पुव्वकडं[12] कम्मं णवं चावि ण कुव्वइ ॥
२३. ण कुव्वइ महावीरे अणुपुव्वकडं रयं।
रयसा संमुहीभूते[13] कम्मं हेच्चाण जं मतं ॥
२४. जं मतं सव्वसाहूणं तं 'मतं सल्लगत्तणं'[14]।
साहइत्ताण तं तिण्णा देवा वा अभविंसु ते ॥
२५. अभविंसु पुरा वीरा[15] आगमिस्सा वि सुव्वया।
दुण्णिबोहस्स मग्गस्स अंतं पाउकरा तिण्ण[16] ॥

—त्ति बेमि ॥

———

१. इमं सुतं (क, ख)।
२. व्या० वि०—संबोही।
३. बोही सुदुल्लहा (वृ)।
४. दुल्लभा य तधच्चा जे, धम्मट्ठी विदितपराऽवरा (चू)।
५. कओ (ख)।
६. कताइं (क); कदायि (चू)।
७. तहागया (क, ख)।
८. तथागता य (चू)।
९. °त्तरं (क); अत्तस्स° (चू)।
१०. णिव्वुता (चू)।
११. पव्वत्तए (चू)।
१२. °कतं (चू)।
१३. °भूता (ख, चू)।
१४. मदं सल्लकत्तणं (क); सम्मुहुब्भुता (चूपा)।
१५. धीरा (क, ख)।
१६. तिण्णे (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं अज्झयणं

गाहा

उक्खेव-पदं

१. अहाह भगवं—एवं से दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे[1]—माहणे त्ति[2] वा, समणे त्ति वा, भिक्खू त्ति वा, णिग्गंथे त्ति वा ।।

२. पडिआह[3]—भंते ! कहं[4] दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे— माहणे त्ति वा ? समणे त्ति वा ? भिक्खू त्ति वा ? णिग्गंथे त्ति वा ? तं 'णो बूहि'[5] महामुणी !

माहण-पदं

३. इतिविरतसव्वपावकम्मे[6] पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुण्ण-परपरिवाद-अरतिरति-मायामोस-'मिच्छादंसणसल्ले विरते'[7] समिए सहिए सया जए, णो कुज्झे णो माणी "माहणे" त्ति वच्चे ।।

समण-पदं

४. एत्थ वि समणे अणिस्सिए अणिदाणे आदाणं च अतिवायं च 'मुसावायं च'[8] बहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पेज्जं च दोसं च—इच्चेव 'जतो-जतो'[9] आदाणाओ[10] अप्पणो पद्दोसहेऊ[11] 'ततो-ततो'[12] आदाणाओ पुव्वं पडिविरते सिआ[13] दंते दविए वोसट्ठकाए "समणे" त्ति वच्चे ।।

---

१. वुच्चे (क, ख) ।
२. इ (क) सर्वत्र ।
३. °आहु (चू) ।
४. कहं नु (ख) ।
५. णे० (क, ख); °ब्रूहि (चू) ।
६. विरए सव्वपावकम्मेहिं (ख) ।
७. °सल्लविरते (ख, वृ) ।
८. × (चू) ।
९. जातो जातो (चू) ।
१०. आदाणतो (क) ।
११. °हेतुं (क) ।
१२. तातो तातो (चू) ।
१३. पाणाइवायाओ (क, ख); भवति (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खु-पदं

५. एत्थ वि भिक्खू 'अणुण्णते णावणते'[1] दंते दविए[2] वोसट्ठकाए संविधुणीय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा संखाए परदत्तभोई "भिक्खू" त्ति वच्चे ॥

णिग्गंथ-पदं

६. एत्थ वि णिग्गंथे एगे एगविदू[3] बुद्धे संछिण्णसोए[4] सुसंजए सुसमिए सुसामाइए आतप्पवादपत्ते[5] विऊ दुहओ वि सोयपलिछिण्णे[6] णो पूयासक्कारलाभट्ठी[7] धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे समियं[8] चरे दंते दविए वोसट्ठकाए "णिग्गंथे" त्ति वच्चे[9] । 'से एवमेव जाणह जमहं भयंतारो'[10] ।

— त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ परिमाण
कुल अक्षर २४३१७
अनुष्टुप् श्लोक ७५६ अक्षर २९

---

१. अणुण्णते विणीए नामए (क, ख); अणुण्णत्ते नामए (वृ); अणुण्णए नावणए महेसी (उत्तरज्झयणं २१।२०); अणुन्नए नावणए (दसवेआलियं ५।१।१३) ।
२. शुद्धात्मा शुद्धद्रव्यभूतः (वृ) ।
३. एगंतिए विदू (चूपा); एगंतविदू (वृपा) ।
४. छिन्नसोते (चू) ।
५. आयवायपत्ते (वृ) ।
६. सोतपलिच्छण्णे (चू) ।
७. पूयणट्ठी (चू) ।
८. समयं (वृ) ।
९. विज्जं (चू) ।
१०. सेवमायाणधभयंतारो (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

पोंडरीए

पउमवरपोंडरीय-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं[1] भगवया एवमक्खायं—इह[2] खलु पोंडरीए णामज्झयणे। तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते—से जहाणामए पोक्खरणी[3] सिया बहुउदगा[4] बहुसेया बहुपुक्खला[5] लद्धट्ठा पोंडरीकिणी[6] पासादिया[7] दरिसणीया[8] अभिरूवा पडिरूवा ।।

२. तीसे णं पोक्खरणीए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया[9] ऊसिया[10] रुइला वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता 'पासादिया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा'[11] ।।

३. तीसे णं पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए[12] बुइए—अणुपुव्वट्ठिए ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए[13] °दरिसणीए अभिरूवे° पडिरूवे ।।

४. सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणीए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया ऊसिया रुइला[14] °वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता पासादिया दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

---

१. तेण (चू) ।
२. इहं (चू) ।
३. पुक्खरिणी (क, ख) ।
४. बहूदगा (चू) ।
५. × (चू) ।
६. पोंडरिगिणी (क, ख); पोंडरीगिणी (चू) ।
७. पासादीया (ख, वृपा) ।
८. दरिसणिज्जा (चू) ।
९. °पुव्वु° (क) ।
१०. उस्सिता (चू) ।
११. जाव पडिरूवा (क) ।
१२. पउमे (चू) ।
१३. सं० पा०—पासादिए जाव पडिरूवे ।
१४. सं० पा०—रुइला जाव पडिरूवा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए—अणुपुव्वट्ठिए[1] •ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए दरिसणीए अभिरूवे° पडिरूवे ।।

पढम-पुरिसजात-पदं

६. अह पुरिसे पुरत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं[2], तीसे पुक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं ऊसियं[3] •रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहमंसि[4] पुरिसे 'देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू'[5]। अहमेतं पउमवरपोंडरीयं 'उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा'[6] से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे—पढमे पुरिसजाते'[7] ।।

दोच्च-पुरिसजात-पदं

७. अहावरे दोच्चे पुरिसजाते[8]–अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं, तीसे पुक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[9] •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

---

१. सं० पा०—अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे ।

२. पुक्खरिणिं (क, ख); चूर्णिसम्मते पाठे सर्वत्रापि 'पोक्खरणी' अथवा 'पुक्खरणी' एवं रकारयुक्तः पाठो विद्यते । आदर्शयोः सर्वत्र 'पुक्खरिणी' एवं रिकारयुक्तः पाठो विद्यते । यद्यपि संस्कृतदृष्ट्यासौ पाठः समीचीनः प्रतिभाति किन्तु प्राकृतदृष्ट्या रकारयुक्तः पाठः प्राचीनोस्ति ।

३. सं० पा०—ऊसियं जाव पडिरूवं ।

४. °मंसी (चू) ।

५. खेयन्ने कुसले पंडिते वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरक्कमण्णू (क, ख); कुसले पंडिते धम्मण्णू देसकालण्णू खेतण्णे वियत्ते मेधावी अबाले मग्गत्थे मग्गण्णे मग्गस्स गइपरकमण्णू (वृ) ।

६. उण्णिक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (क, ख); उक्खेस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (वृ); उण्णेक्केस्समिति° (चू) । अत्र 'इति कट्टु' इति पदमतिरिक्तं संभाव्यते । चूर्णिकृता नैतद् व्याख्यातम् । वृत्तिकारस्य सम्मुखे उक्तपदयुक्त आदर्शः आसीत् तेन वृत्तिकृता तद् व्याख्यातम्, किन्तु व्याख्यायां काचिज्जटिलतैव प्रतीयते ।

७. सऽग्गे, अउत्तरा विसण्णे—पढमे पुरिसे (चू) सर्वत्र । °तीसे सेयंसि णि [वि ?] सण्णे (वृ) ।

८. °ज्जाए (चू) ।

९. सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं च एत्थ[1] एगं पुरिसजायं पासइ पहीणतीरं, अपत्तपउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णं'[2]।

तए णं से पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसे 'अदेसकालण्णे अखेत्तण्णे अकुसले अपंडिए अविअत्ते अमेधावी बाले णो मग्गण्णे णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णे णो परक्कमण्णू'[3], जण्णं एस पुरिसे[4] "अहं देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले[5] •पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेयं° पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एस पुरिसे मण्णे।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेत पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं। जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, 'अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे'[7]—दोच्चे पुरिसजाते।

तच्च-पुरिसजात-पदं

८. अहावरे तच्चे पुरिसजाते—अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[8] •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं।

ते तत्थ दोण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए[9], •अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे[10]।

---

१. एत्थं (क); तत्थ (ख)।

२. °निसण्णं(ख); सङ्गे, अउत्तरा विसण्णं (चू)।

३. अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (क, ख); अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गण्णू णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (वृ)। वृत्तौ प्रथमपुरुषजातसूत्रे 'कुसले पंडिए खेयन्ने' असौ क्रमो विद्यते। प्रस्तुत सूत्रे च 'अखेयन्ने अकुसले अपंडिए' असौ क्रमः पूर्वसूत्रात् भिन्नोस्ति।

४. अत्र ८,६,१० सूत्रानुसारेण 'एवं मण्णे' इति पाठो युज्यते।

५. सं० पा०—कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं।

६. वुच्चा (ख)।

७. अंतरा सेयंसि निसण्णे (क, ख)।

८. सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं।

९. सं० पा०—णो पाराए जाव सेयंसि।

१०. निसण्णे (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो परक्कमण्ण, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे —"अम्हे तं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे ।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिए विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए[1] •पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे—तच्चे पुरिसजाते ॥

चउत्थ-पुरिसजात-पदं

६. अहावरे चउत्थे पुरिसजाते—अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति 'तं महं'[2] एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[3] •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

ते तत्थ तिण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते[4] •पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[5] •अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे—"अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे ।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे[6] •कुसले पंडिए विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए[7] •पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि° विसण्णे— चउत्थे पुरिसजाते ॥

---

१. सं० पा०—सेए जाव सेयंसि ।
२. × (क, ख) ।
३. सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।
४. सं० पा०—अपत्ते जाव सेयंसि ।
५. सं० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू ।
६. सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू ।
७. सं० पा०—सेए जाव विसण्णे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खु-पदं

१०. अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[1] °कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू अण्णतरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं[2] °अणुपुव्वट्ठियं ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं।
ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते[3] °पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए°, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे।
तए णं से भिक्खू एवं वयासी—अहो! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[4] °अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे—"अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे।
अहमंसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[5] °कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से भिक्खू णो अभिक्कमे तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरं ठिच्चा सद्दं कुज्जा—'उप्पयाहि खलु भो! पउमवरपोंडरीया! उप्पयाहि'[7]। अह से उप्पतिते पउमवरपोंडरीए॥

पुव्वुत्त-णातस्स-अट्ठ-पदं

११. किट्टिए णाए समणाउसो! अट्ठे पुण से जाणितव्वे[8] भवति।
भंतेति! 'णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य समणं भगवं महावीरं'[9] वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—किट्टिए णाए भगवया[10] अट्ठं पुण से ण जाणामो[11]।

---

१. सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।
२. सं० पा०—पउमवरपोंडरीयं जाव पडिरूवं।
३. सं० पा०—अपत्ते जाव अंतरा।
४. सं० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू।
५. सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।
६. कट्टु इति वच्चा (क); कट्टु इति वुच्चा (ख)।
७. उप्पदाहि खलु भो पउमवर! उप्पदाहि खलु भो पउमवर! (चू); ऊर्ध्वमुत्पततोत्पतत (वृ)।
८. आजाणि° (चू)।
९. समणं भगवं महावीरं निग्गंथा य निग्गंथीओ य (क, ख)।
१०. समणाउसो (क, ख); प्रयुक्ताप्रयुक्तप्रतिषु 'समणाउसो' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थविचारणयासौ न सम्यक् प्रतिभाति। चूर्णौ—'से किट्टिते भगवता', वृत्तौ च—'ज्ञातं भगवता' इति लभ्यते तेनात्र मूले 'भगवया' इति पाठः स्वीकृतः।
११. आयाणामो (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणाउसोति ! समणे भगवं महावीरे ते[1] बहवे णिग्गंथे[2] य णिग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—हंता समणाउसो ! आइक्खामि विभयामि[3] किट्टेमि पवेदेमि सअट्ठं सहेउं सणिमित्तं[4] भुज्जो भुज्जो उवदंसेमि ।।

१२. से बेमि—लोयं च खलु मए अप्पाहट्टु[5] समणाउसो ! सा[6] पोक्खरणी बुइया ।
कम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उदए बुइए ।
कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सेए बुइए ।
जणजाणवए[7] च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया ।
रायाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एगे महं पउमवर-पोंडरीए बुइए ।
अण्णउत्थिया य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते चत्तारि पुरिसजाया बुइया ।
धम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से भिक्खू बुइए ।
धम्मतित्थं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से तीरे बुइए ।
धम्मकहं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सद्दे बुइए ।
णिव्वाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उप्पाए बुइए ।
एवमेयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एवमेयं बुइयं ।

तज्जीव-तस्सरीर-वादि-पदं

१३. इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया[8] मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं[9] उववण्णा[10], तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया[11] वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[12] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत[13]-मलय-मंदर-महिंदसारे[14] जाव[15] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ।।

---

१. ते य (ख) ।
२. निग्गंथा (क) ।
३. विभावेमि (क, ख, वृ) । अत्र वृत्तिकृता 'विभावयामि' इति व्याख्यातम्, प्रत्योरपि 'विभावेमि' पाठ उपलभ्यते. किन्तु ६७ सूत्रस्य सदर्भे 'विभयामि' इति चूर्णिगतपाठः समीचीनोस्ति ।
४. सकारणं (चू) ।
५. आहट्टु (वृ); अप्पाहट्टु (वृपा) ।
६. × (क, ख) ।
७. °वयं (क) ।
८. संति एगतिया (क) ।
९. लोगत्तं (क, ख) ।
१०. उववत्ता (क) ।
११. उच्चागोत्ता (ख) ।
१२. हुस्समंता (क); रहस्समंता (क्व) ।
१३. महयाहिमवंत-महंत (ओ० सू० १४) ।
१४. 'क' प्रतौ वृत्तौ च संक्षिप्तपाठो वर्तते । चूर्णौ राजवर्णको व्याख्यातोस्ति । 'ख' प्रतौ संक्षिप्तपाठस्य पूर्तीकृतपाठस्य च मिश्रणं जातम् । पूर्वं राजवर्णकस्यौपपातिकानुसारी पाठो लिखितोस्ति ततश्च 'रायवण्णओ जहा उववाइए जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति' ।
१५. ओ० सू० १४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, 'नागा नागपुत्ता'[1], कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता[2] ।।

१५. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । 'तत्थ अण्णतरेणं'[3] धम्मेणं पण्णत्तारो, 'वयं इमेणं'[4] धम्मेणं पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे[5] एस धम्मे सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवइ, तं जहा -उड्ढं पायतला, अहे केसग्गमत्थया, तिरियं तयपरियंते जीवे । एस 'आया पज्जवे'[6] कसिणे । एस जीवे जीवति, एस मए णो जीवति । सरीरे धरमाणे धरति, विणट्ठम्मि य णो धरति । एययंतं[7] जीवियं भवति । आदहणाए परेहिं णिज्जइ । अगणिझामिए सरीरे कवोतवण्णाणि अट्ठीणि भवंति । आसंदीपंचमा पुरिसा गामं पच्चागच्छंति । एवं असंते असंविज्जमाणे ।

१६. 'जेसिं तं'[8] सुयक्खायं भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा[9], ते 'णो एवं'[10] विप्पडिवेदेंति अयमाउसो ! आया दीहे ति वा हस्से[11] ति वा । परिमंडले ति वा वट्टे ति वा तंसे ति वा चउरंसे ति वा आयते ति वा 'छलंसे ति वा'[12] । किण्हे ति वा णीले ति वा लोहिए ति वा हालिद्दे ति वा सुक्किल्ले ति वा । सुब्भिगंधे ति वा दुब्भिगंधे ति वा । तित्ते ति वा कडुए ति वा कसाए ति वा अंबिले ति वा महुरे ति वा । कक्खडे ति वा मउए ति वा गरुए[13] ति वा लहुए ति वा सीए ति वा उसिणे ति वा णिद्धे ति वा लुक्खे ति वा । एवं असंते असंविज्जमाणे ।।

---

१. नाया नायपुत्ता (ख) ।
२. चूर्णौ केचिदन्येपि शब्दा व्याख्याताः । द्रष्टव्यमोवाइयं सू० २३ ।
३. तत्थन्न० (क, ख) ।
४. वयमेतेणं (क) ।
५. मए (ख, वृ) ।
६. आयपज्जवे (क, ख) ।
७. एतंतं (क); एयंतं (ख) ।
८. जेसि तं असंते असंविज्जमाणे तेसिं तं (क, ख); पुरोवर्तिसूत्रत्रयस्य (१६-१८) संदर्भेसौ पाठोशुद्धः प्रतिभाति, लिपिदोषेण पाठपरिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । वृत्तौ पाठस्य स्पष्टता नोपलभ्यते किन्तु व्याख्यानुसारेण निम्नपाठः कल्पितुं शक्यते—जेसिं तं असंतो असंविज्जमाणे तेसिं तं सुयक्खाय भवति, जेसिं पुण अण्णो० । चूर्णिगतपाठो मूले स्वीकृतः ।
९. व्या० वि०—जेसिं त सुयक्खायं भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्णं सरीरं, ते णो एव विप्पडिवेदेंति, तम्हा (तस्मादप्येवाऽसुअक्खातं—चू) इत्यन्वयः ।
१०. एवं नो (ख) ।
११. ह्रस्से (क) ।
१२. छलंसिए ति वा अट्ठंसे ति वा (ख) ।
१३. गुरुए (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. जेसिं तं सुयक्खायं भवइ—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा ते णो एवं उवलभंति —

से जहाणामए केइ[1] पुरिसे कोसीओ[2] असिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! असी, अयं कोसो । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो[3]—अयमाउसो ! आया, 'अयं सरीरे'[4] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मुंजाओ इसियं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! मुंजे '[इमा ?] इसिया'[5] । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, 'अयं सरीरे'[6] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मंसाओ अट्ठिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! मंसे, अयं अट्ठी । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे करतलाओ आमलकं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! करतले, अयं आमलए । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे दहीओ णवणीयं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! णवणीयं, अयं दही । एवमेव णत्थि केइ[7] °पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे तिलेहिंतो तेल्लं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! तेल्लं, अयं पिण्णाए । एवमेव[8] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे इक्खूओ[9] खोयरसं[10] अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! खोयरसे, अयं छोए । एवमेव[11] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे अरणीओ अग्गिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! अरणी, अयं अग्गी । एवमेव[12] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता

---

१. केवि (क) ।
२. कोसओ (ख) ।
३. उवदंसेइ (क, ख) ।
४. इम सरीरं (ख) ।
५. अयं असीया (क); इयं इसिया (ख) ।
६. इदं सरीरं (ख) सर्वत्र ।
७. स० पा०—केइ जाव सरीरे ।
८. सं० पा०—एवमेव जाव सरीरे ।
९. उक्खूतो (क) ।
१०. खोत्त° (क); खोत° (ख) ।
११,१२. सं० पा०—एवमेव जाव सरीरे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं० सरीरे। एवं असंते असंविज्जमाणे ॥

१८. जेसिं तं सुयक्खायं भवइ, तं जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा, तं मिच्छा॥

१९. से हंता[1] हणह खणह छणह डहह पयह आलुंपह विलुंपह सहसक्कारेह विपरामुसह। एतावताव[2] जीवे, णत्थि परलोए॥

२०. ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुकडे[3] इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा। एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति[4] भोयणाए॥

२१. एवं एगे पागब्भिया णिक्खम्म मामगं धम्मं पण्णवेंति। तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा[5] साधु सुयक्खाते समणेति[6] ! वा माहणेति[7] वा।
कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो[8], तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा 'वत्थेण वा'[9] पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा।
तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु[10]॥

२२. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए।
ते[11] अप्पणा अप्पडिविरया भवंति। सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।
ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसंजोगा[12] आरियं मग्गं असंपत्ता—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेहिं[13] विसण्णा।
इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतस्सरीरिए[14] आहिए॥

---

१. हंता तं (ख)।
२. एतावता (ख)।
३. सुक्कडे (क, ख)।
४. समारभंति (चू)।
५. रोयमाणा (क)।
६,७. °त्ति (ख)।
८. पूययामि (ख)।
९. गंधेण वा ४ (चू)। चतुःसंख्याङ्कः संभवतः वस्त्रगंधमाल्यालङ्कारान् सूचयति द्रष्टव्यम्—रायपसेणइयं सू० ८०२।
१०. णिगाययइंसु (क)।
११. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।
१२. °संजोगं (क, ख)।
१३. कामभोगेसु (ख)।
१४. °तच्छरीरए (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमहब्भूतवादि-पदं

२३. अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पंचमहब्भूइए त्ति आहिज्जइ – इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं[1] •लोगं उववण्णा, तं जहा – आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[2] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥

२४. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ॥

२५. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति। कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए। तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो। से एवमायाणह भयंतारो! जहा मे एस धम्मे सुयक्खाते° सुपण्णत्ते भवति—इह खलु पंचमहब्भूया जेहिं णो[3] कज्जइ किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा, 'अवि अंतसो'[4] तणमायमवि ॥

२६. तं च पदोद्देसेणं[5] पुढोभूतसमवायं[6] जाणेज्जा, तं जहा—पुढवी एगे महब्भूते, आऊ दुच्चे महब्भूते, तेऊ तच्चे[7] महब्भूते, वाऊ चउत्थे महब्भूते, आगासे पंचमे महब्भूते। इच्चेते पंच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्माविया[8] अकडा णो कित्तिमा[9] 'णो कडगा'[10] अणादिया अणिधणा अवंझा अपुरोहिता सतंता सासया ॥

२७. आयछट्ठा पुण एगे एवमाहु—सतो णत्थि विणासो, असतो णत्थि संभवो। एताव ताव जीवकाए, एताव ताव अत्थिकाए, एताव ताव सव्वलोए, एतं मुहं लोगस्स करणयाए, अवि अंतसो[11] तणमायमवि ॥

२८. से किणं किणावेमाणे, हणं घायमाणे, पयं पयावेमाणे, अवि अंतसो पुरिसमवि विक्किणित्ता घायइत्ता, 'एत्थं पि जाणाहि'[12] णत्थित्थ दोसो ॥

---

१. सं० पा०—अणुपुव्वेणं जाव सुपण्णत्ते।
२. ओ० सू० १४।
३. अस्माकम् (वृ)।
४. अवि यंतसो (क); इति० (ख)।
५. पिहुद्देसेणं (क, ख)।
६. समवायं (चू)।
७. ततिए (क)।
८. अणिमेता (क)।
९. कत्तिमा (चू)।
१०. × (चू)।
११. यंतसो (क)।
१२. इत्थं पि जाणीहि (क); एत्थ वि जाण (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा[1] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा। 'एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ।।

३०. एवं[2] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति[3] ?] । तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा[4] •तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति वा माहणे ति ! वा। कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ।।

३१. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ।

ते[5] अप्पणा अप्पडिविरिया भवंति । सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति । एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा ।

ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति । पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता°— इति ते णो हव्वाए णो पाराए, 'अंतरा कामभोगेसु विसण्णा'[6] ।

दोच्चे पुरिसजाते पंचमहब्भूइए त्ति आहिए ।।

ईसरकारणिय-पदं

३२. अहावरे तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा[7] •पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति–महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[8] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ।।

---

१. सं० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए ।

२. एवमेव (ख) ।

३. प्रथमपुरुषप्रकरणे २१ सूत्रे वृत्तिकारेण—सांप्रतं तत्प्रज्ञापितशिष्यव्यापारमधिकृत्याह—'तं सद्दहमाणा' इति संबन्धयोजना कृता सा अग्रिमेषु त्रिष्वपि पुरुषेषु तथैव युज्यते । यदि 'त सद्दहमाणा' इत्यादिपाठस्य कर्त्ता 'ते अणारिया विप्पडिवण्णा' स्यात् तदा 'साधु-सुयक्खाते' इत्यादिपाठस्य संबन्धो न घटेत ।

४. सं० पा०—पत्तियमाणा जाव इति ।

५. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम् ।

६. जाव विसण्णे (क) ।

७. सं० पा०—पाईणं वा जाव सुयक्खाते ।

८. ओ० सू० १४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ॥

३४. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति। कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए। तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो। से एवमायाणह भयंतारो! जहा मे एस धम्मे॰ सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति—इह खलु धम्मा पुरिसादिया[1] पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता[2] पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति—

से जहाणामए गंडे सिया सरीरे जाए सरीरे संवुड्ढे[3] सरीरे अभिसमण्णागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[4] •पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता॰ पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति।

से जहाणामए अरई सिया सरीरे जाया सरीरे संवुड्ढा[5] सरीरे अभिसमण्णागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[6] •पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता॰ पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति।

से जहाणामए वम्मिए[7] सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[8] •पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव॰ अभिभूय चिट्ठंति।

से जहाणामए रुक्खे सिया पुढविजाए[9] •पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए॰ पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[10] •पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव॰ अभिभूय चिट्ठंति।

से जहाणामए पुक्खरिणी सिया[11] •पुढविजाया पुढविसंवुड्ढा पुढविअभिसमण्णागया॰ पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[12]

---

१. व्या॰ वि॰—पुरुषः—ईश्वरः।
२. 'पुरिससंभूता ''पुरिसअभिसमण्णागता' एते वाक्ये वृत्तौ न व्याख्याते।
३. वुड्ढे (क, वृ)।
४. सं॰ पा॰—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव।
५. अभिसंवुड्ढा (क, ख); वुड्ढा (वृ)।
६. सं॰ पा॰—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव।
७. विम्मिए (ख)।
८. सं॰ पा॰—पुरिसादिया जाव अभिभूय।
९. सं॰ पा॰—पुढविजाए जाव पुढविमेव।
१०. सं॰ पा॰—पुरिसादिया जाव अभिभूय।
११. सं॰ पा॰—सिया जाव पुढविमेव।
१२. सं॰ पा॰—पुरिसादिया जाव अभिभूय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए उदगपुक्खले सिया[1] •उदगजाए उदगसंवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए° उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[2] •पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय° चिट्ठति ।

[3]•से जहाणामए उदगबुब्बुए सिया उदगजाए उदगसंवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति° ॥

३५. जं पि य इमं समणाणं णिग्गंथाणं उद्दिट्ठं पणीयं[4] विअंजियं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा—आयारो[5] •सूयगडो, ठाणं, समवाओ, वियाहपण्णत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं°, दिट्ठिवाओ—सव्वमेयं मिच्छा, ण एतं तहियं, ण एतं आहातहियं ।

इमं सच्चं इमं तहियं इमं आहातहियं—ते एवं सण्णं कुव्वंति, ते एवं सण्णं संठवेंति, ते एवं सण्णं सोवट्ठवयंति। तमेवं ते तज्जातियं दुक्खं णातिवट्टंति[6], सउणी पंजरं जहा ॥

३६. ते णो विप्पडिवेदेंति तं जहा—किरिया इ वा[7] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा। एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ॥

३७. एवं[8] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति ?] । [9]•तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा। कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ॥

---

१. सं० पा०—सिया जाव उदगमेव ।
२. सं० पा०—पुरिसादिया जाव चिट्ठति ।
३. सं० पा०—एवं उदगबुब्बुए भणियव्वे ।
४. पणियं (क, ख) ।
५. सं०पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।
६. ण तिउट्टंति (वृपा) ।
७. स० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए ।
८. एवमेव (क, ख) ।
९. सं० पा०—एवं सद्दमाणा जाव इति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ।
ते[1] अप्पणा अप्पडिविरया भवंति । सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति । एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा ।
ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति । पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता°—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा ।
तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिए ॥

णियतिवादि-पदं

३९. अहावरे चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा[2] °पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[3] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥

४०. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ॥

४१. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे एस धम्मे° सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति । इह खलु दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे किरियमाइक्खइ, एगे पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ ।
जे य पुरिसे किरियमाइक्खइ, जे य पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ, दो वि ते पुरिसा तुल्ला एगट्ठा कारणमावण्णा[4] ॥

४२. बाले पुण एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे । अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा 'जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा'[5], अहमेयमकासि । परो

---

१. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम् ।
२. सं० पा०—पाईणं वा जाव सुयक्खाते ।
३. ओ० सू० १४ ।
४. एककारणापन्नत्वादिति (वृ) ।
५ तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा जूरामि वा (क, वृ); तप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा जं दुक्खइ वा[1] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, परो एयमकासि। एवं से बाले सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ॥

४३. मेहावी पुण एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे। अहमंसि दुक्खामि वा[2] •सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा, णो अहं एयमकासि। परो वा जं दुक्खइ वा[3] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, णो परो एयमकासि। एवं से मेहावी सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ॥

४४. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा जे तसथावरा पाणा ते एवं संघायमागच्छंति, ते एवं विप्परियायमावज्जंति,[4] ते एवं विवेगमागच्छंति, ते एवं विहाणमागच्छंति, ते एवं संगइयंति उवेहाए ॥

४५. ते णो एयं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा[5] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा। एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ॥

४६. एवं ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति ?]। तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा। कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ॥

४७. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए। ते[6] अप्पणा अप्पडिविरिया भवंति। सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्ण पि आइयंतं समणुजाणंति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा। ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा°। चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिए ॥

---

१. सं० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।
२. सं० पा०—दुक्खामि वा जाव परितप्पामि।
३. सं० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।
४. विप्परियास° (क, ख)।
५. सं० पा०—किरिया इ वा जाव णिरए इ वा जाव चउत्थे।
६. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. इच्चेते चत्तारि पुरिसजाया णाणापण्णा णाणाछंदा 'णाणासीला णाणादिट्ठी'[1] णाणारुई णाणारंभा णाणाअज्झवसाणसंजुत्ता 'पहीणा पुव्वसंजोगा'[2] आरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा ।।

भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं

४९. से बेमि--पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा[3] भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे[4], °उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे° दुरूवा वेगे । तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाणि भवंति, तं जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[5] वा । तेसिं च णं जणजाणवयाइं परिग्गहियाइं भवंति, तं जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[6] वा । तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया । सतो वा वि एगे णायओ य[7] उवगरणं च[8] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया । असतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ।।

५०. जे ते सतो वा असतो वा णायओ 'य उवगरणं च'[9] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहिं णातं भवति[10]—इह खलु पुरिसे "अण्णमण्णं[11] ममट्ठाए" एवं विप्पडिवेदेति[12], तं जहा—खेत्तं मे वत्थू[13] मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे 'धणं मे'[14] धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावतेयं मे सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे । एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसिं ।

से मेहावी पुव्वमेव[15] अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा—इह[16] खलु मम अण्णतरे दुक्खे

---

१. णाणादिट्ठी णाणासीला (क) ।
२. पहीणपुव्वसंजोगा (क, ख); प्रहीणः पूर्वसंयोगः यैः (वृ) ।
३. मणूसा (क) ।
४. सं० पा०—अणारिया वेगे जाव दुरूवा ।
५. अप्पयरो वा भुज्जयरो (क, ख) ।
६. अप्पयरो वा भुज्जयरो (ख) ।
७. य अणातयो य (चू) ।
८. च अणुवगरणं च (चू) ।
९. य अणायओ य उवगरणं च (क, ख); य अणायओ य उवगरणं च अणुवगरणं च (चू) ।
१०. भवति, तं जहा (ख, वृ) ।
११. अन्यद् अन्यद् वस्तु उद्दिश्य (वृ) ।
१२. विप्परियावेति (क) ।
१३. वत्थुं (क) ।
१४. धणम्मे (क) ।
१५. पुव्वा° (ख) ।
१६. तं इह (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता ! भयंतारो ! कामभोगा[1] ! मम अण्णतरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयह —अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं। माऽहं[2] दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। 'एवमेव णो लद्धपुव्वं'[3] भवति।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमंसि। से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं[4] कामभोगे विप्पजहिस्सामो॥

५१. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—माता मे पिता मे भाया मे 'भगिणी मे भज्जा मे'[5] पुत्ता मे 'णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे'[6] सुही मे सयणसंगंथसंथुया मे। एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसिं। से[7] मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा—इह खलु ममं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे[8] °अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे° दुक्खे णो सुहे।

से हंता ! भयंतारो ! णायओ ! इमं मम अण्णयरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयह[9]—अणिट्ठं[10] °अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं° णो सुहं। माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा[11] °जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोयह[12]—

---

१. कामभोगाइं (क, ख)।
२. ताऽहं (क, ख); द्रष्टव्यम्—५१ सूत्रस्य 'मा मे' पदस्य पादटिप्पणम्।
३. लद्धपुव्वे (क); एवं णो० (ख); वृत्तौ—'न चायमर्थस्तेन दुःखितेन 'एवमेवे' ति यथा प्रार्थितस्तथैव लब्धपूर्वो भवति, अग्रिमसूत्रे 'न चैतत्तेन दुःखितेन लब्धपूर्वं भवति'···एवमेव नो लब्धपूर्वं भवति' इति व्याख्यातमस्ति।
४. वयं च (ख)।
५. भज्जा मे भगिणी मे (क)।
६. धूया मे पेसा मे णत्ता मे सुण्हा मे (ख)।
७. एवं से (क, ख)।
८. सं० पा०—अणिट्ठे जाव दुक्खे।
९. परियादियध (क)।
१०. सं० पा०—अणिट्ठं जाव णो सुहं।
११. सं० पा०—सोयामि वा जाव परितप्पामि।
१२. परिमोएह (क); पूर्वस्मिन् सूत्रे 'पडिमोयह' इति पदमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणिट्ठाओ[1] •अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेवं[2] णो लद्धपुव्वं भवइ।

तेसिं वा वि भयंताराणं मम णाययाणं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे[3] •अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे° णो सुहे।

से हंता ! अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अण्णतरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयामि—अणिट्ठं[4] •अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं° णो सुहं, 'मा मे'[5] दुक्खंतु वा[6] •सोयंतु वा जूरंतु वा तिप्पंतु वा पीडंतु वा° परितप्पंतु वा। इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोएमि—अणिट्ठाओ[7] •अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेव[8] णो लद्धपुव्वं भवति।

अण्णस्स दुक्खं अण्णो णो परियाइयइ[9], अण्णेण कतं[10] अण्णो णो पडिसंवेदेइ, पत्तेयं जायइ, पत्तेयं मरइ, पत्तेयं चयइ, पत्तेयं उववज्जइ, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा,[11] •पत्तेयं विण्णू, पत्तेयं° वेदणा।

इति खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं णाइसंजोगे विप्पजहइ, णाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु णातिसंजोगा, अण्णो अहमंसि। से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं णाइसंजोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं णातिसंजोगं विप्पजहिस्सामो॥

५२. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं[12], तं जहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे सीसं मे[13] आउं मे बलं मे वण्णो मे तया मे

---

१. सं० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

२. एवामेव (क); एवमेयं (वृ)।

३. सं० पा०—अणिट्ठे जाव णो सुहे।

४. सं० पा०—अणिट्ठं जाव णो सुहं।

५. मम ज्ञातयः (वृ) अत्र 'मा' शब्दोस्ति तथैव पूर्ववर्ती द्वयोः संदर्भयोरपि 'मा' शब्दो युज्यते। एकत्र 'मा' शब्दः प्रतिष्वपि लभ्यते, एकत्र च 'ताहं' अथवा 'नाहं' इति अस्पष्टोल्लेखः प्राप्यते। उत्तरवर्तिसंदर्भानुसारेण प्रथमे संदर्भेपि 'मा' एव शब्दो युज्यते।

६. सं० पा०—दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु।

७. सं० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

८. एवामेव (ख)।

९. पडियादियति (क); परियादियति (ख); पडियाइयइ (प्रत्यापिबति) (वृ)।

१०. कतं कम्मं (क); कडं कम्मं (वृ); कडं(चू)।

११. सं० पा०—एवं विण्णू वेदणा।

१२. °तरागं (क)।

१३. मे सीलं मे (क, ख)। अत्र 'शील' शब्दोऽधिकः प्रतीयते। शीलस्य नात्र कश्चित् प्रसङ्गः। वृत्तिकृता लिखितमपि पुष्णातीदम्—'एतच्च हस्तपादादिकं स्पर्शनेन्द्रियपर्यवसानं शरीरावयवसंबन्धित्वेन विवक्षितम्'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाया मे सोयं मे चक्खु मे घाण मे जिब्भा मे फासा[1] मे ममाति[2], वयाओ परिजूरइ[3], तं जहा—आऊओ वलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ[4] °चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ° फासाओ। सुसंधिता[5] संधी विसंधीभवति, वलितरंगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवंति[6]। जं पि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवचियं[7], एयं पि य मे[8] अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति ।।

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पदं

५३. एयं संखाए से भिक्खु भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव। तसा चेव, थावरा चेव ।।

५४. इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सयं[9] समारंभंति, अण्णेण वि समारंभावेंति, अण्णं पि समारंभंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सयं परिगिण्हंति, अण्णेण वि परिगिण्हावेंति, अण्णं पि परिगिण्हंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे। जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो।

कस्स णं तं हेउं ?

जहा पुव्वं तहा अवरं, जहा अवरं तहा पुव्वं।

अंजू एते[10] अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव।

जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा दुहओ पावाइं कुव्वंति, इति संखाए दोहि वि अंतेहिं अदिस्समाणो। इति भिक्खू रीएज्जा ।।

---

१. स्पर्शनेन्द्रियम् (वृ)।

२. ममातिज्जति (क, ख)।

३. पडिजूरइ (ख)।

४. सं० पा०—सोयाओ जाव फासाओ।

५. सुसंधितो (क्व)।

६. भवंति, तं जहा (क, ख, वृ); अत्र 'तं जहा' इति पाठो नावश्यकः प्रतिभाति, किन्तु वृत्तिकारेणादर्शे लब्धः तेन व्याख्यातः। चूर्णौ नैष लभ्यते।

७. °वइयं (ख)।

८. × (ख)।

९. सतं (क)।

१०. वेते (क)।

५५. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा एवं से परिण्णातकम्मे, एवं से ववेयकम्मे,[1] एवं से वियंतकारए भवइ त्ति मक्खायं[2] ।।

अहिंसा-धम्म-पदं

५६. तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाए[3] •आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए °तसकाए।
से जहाणामए मम असायं[4] दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[5] वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स[6] वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्ज-माणस्स वा[7] परिताविज्जमाणस्स वा [8]किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा[8] जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।
सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा[9] •अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा ° कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्ज-माणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति। एवं णच्चा सव्वे पाणा[10] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे ° सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जा-वेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा[11] ण उद्दवेयव्वा ।।

५७. से बेमि—जे[12] अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा[13] अरहंता भगवंतो[14] सव्वे ते एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—सव्वे पाणा[15] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे ° सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ।।

५८. एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोगं खेयण्णेहिं पवेइए[16] ।।

भिक्खुचरिया-पदं

५९. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ[17] •विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ

---

१. विवेय° (क); वियवेय (ख)।
२. व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः।
३. सं० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए।
४. अस्सायं (ख)।
५. लेलूण (ख)।
६. आउट्टि° (ख)।
७. वा ताविज्जमाणस्स वा (क)।
८. उद्दविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा (क); किलामिज्जमाणस्स वा (चू); परि-क्लाम्यमानस्य° (वृ)।
९. सं० पा०—दंडेण वा जाव कवालेण।
१०. सं० पा०—पाणा जाव सत्ता।
११. परितापेयव्वा (क)।
१२. जे य (क)।
१३. आगमिस्सा (क, ख)।
१४. भगवंता (क, ख)।
१५. सं० पा०—पाणा जाव सत्ता।
१६. तोलनीयम्—आयारो ४।१, २।
१७. सं० पा०—पाणाइवायाओ जाव विरए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरए मेहुणाओ ° विरए परिग्गहाओ । णो 'दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा'[1], णो अंजणं, णो वमणं, णो विरेयणं[2], णो धूवणे, णो तं परियाविएज्जा'[3] ।।

६०. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिणिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा[4]—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण[5] वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बंभचेरवासेणं, इमेण वा जायामायावुत्तिएणं[6] धम्मेणं इतो चुते पेच्चा[7] देवे सिया 'कामभोगाण वसवत्ती'[8], सिद्धे वा अदुक्खमसुहे[9] । एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया ।।

६१. से भिक्खू 'सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं'[10] अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६२. से भिक्खू[11]—जे इमे तसथावरा पाणा भवंति—ते णो सयं समारंभइ, णो अण्णेहिं[12] समारंभावेइ, अण्णे समारंभंते वि ण समणुजाणइ —इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६३. से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सयं परिगिण्हइ, 'णो अण्णेणं'[13] परिगिण्हावेइ, अण्णं परिगिण्हंतंपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६४. से भिक्खू—जं पि य इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ—णो तं सयं करेइ, 'णो अण्णेणं'[14] कारवेइ, अण्णं पि करेंतं 'ण समणुजाणइ'[15]—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६५. से[16] भिक्खू जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए

---

१. दंतवणेणं दंते धोवेज्जा (चू) ।
२. चूर्णौ वृत्तौ च 'विरेयणं' व्याख्यातमस्ति; प्रत्योः नोपलभ्यते ।
३. °वितेज्जा (क) ।
४. कुज्जा (ख) ।
५. मुएण (क, ख) ।
६. °वत्तिएणं (ख) ।
७. पिच्चा (क, ख) ।
८. कामं कमी कामवसवत्ती (चू) ।
९. °मसुभे (ख) ।
१०. सद्देसु जाव फासेसु (क) ।
११. चूर्णौ वृत्तौ चास्य पाठांशस्य संबन्धः पूर्वसूत्रेण योजितः, किन्तु 'से भिक्खु' 'जे इमे' इति सूत्रस्य कर्तृपदमस्ति, तेनास्माभिः प्रस्तुत-सूत्रेणैवास्य सम्बन्धयोजना कृता । अग्रिमसूत्रे चूर्णिकृतापि इत्थमेव योजना कृतास्ति ।
१२. वण्णेहिं (ख); अत्र पारिपार्श्विकप्रकरणे कारितानुमोदने प्रायः एकवचनमस्ति किन्तु अत्र बहुवचनं लभ्यते ।
१३. णेवण्णेणं (क) ।
१४. नेवण्णेणं (क, ख) ।
१५. णाणुजाणइ (क, ख) ।
१६. तोलनीयम्—'आयारचूला' १।१२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ[1] समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं, तं चेतियं सिया, तं णो सयं भुंजइ, णो अण्णेणं भुंजावेइ, अण्णं पि भुंजंतं ण समणुजाणइ —इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ॥

६६. से भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा—तं विज्जइ तेसिं परक्कमे। जस्सट्ठाए चेतियं सिया, तं जहा—अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं धातीणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं[2] पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसिं माणवाणं भोयणाए।
तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठितं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थातीतं सत्थपरिणामितं अविहिंसितं एसितं वेसितं सामुदाणियं पण्णमसणं[3] कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजण-वणलेवणभूयं, संजमजायामायावुत्तियं[4] बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले ॥

धम्म-देसणा-पदं

६७. से भिक्खू मायण्णे अण्णयरिं दिसं वा अणुदिसं वा पडिवण्णे धम्मं आइक्खे विभए किट्टे, उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—'संतिं विरतिं'[5] उवसमं णिव्वाणं सोयवियं[6] अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं ॥

६८. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ किट्टए धम्मं ॥

६९. से भिक्खू धम्मं किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो अण्णेसिं विरूव-रूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा। णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ॥

---

१. समारम्भ (क)।
२. आदेसाणं (ख)।
३. व्या० वि०—प्राज्ञम्—गीतार्थेन उपात्तम्।
४. °वत्तियं (ख)।
५. संतिविरतिं (क, ख, वृ); वृत्तिकारेण 'संतिविरइं' इति संयुक्तपाठः स्वीकृतः, तथा च—शान्तिः—उपशमः क्रोधजयस्तत्प्रधाना प्राणातिपातादिभ्यो विरतिः शान्तिविरतिः, यदि वा शान्तिः—अशेषक्लेशोपशमरूपा तस्यै—तदर्थं विरतिः शान्तिविरतिस्तां कथयेत् (वृ), किन्तु चूर्णिकारेण 'जहा धुते' इति समर्पणं कृतम्। आचारस्य धुताध्ययने (६।१०२) 'संतिं विरतिं' इति असंयुक्तः पाठोस्ति। तमनुसृत्यास्माभिस्तथैव स्वीकृतः।
६. तथा सोयवियं (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७०. इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए[1] धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया। जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, ते एवं सव्वोवगता, ते एवं सव्वोवरता, ते एवं सव्वोवसंता, ते एवं सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति बेमि ॥

भिक्खु-वयणिज्ज-पदं

७१. एवं से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे, से जहेयं बुइयं, अदुवा पत्ते पउमवरपोंडरीयं, अदुवा अपत्ते पउमवरपोंडरीयं।

७२. एवं से भिक्खू परिण्णायकम्मे परिण्णायसंगे परिण्णायगेहवासे उवसंते समिए सहिए सया जए। से एय[2]-वयणिज्जे, तं जहा—समणे ति वा माहणे ति वा खंते ति वा दंते ति वा गुत्ते ति वा मुत्ते ति वा इसी ति वा मुणी ति वा कती[3] ति वा विदू ति वा भिक्खू ति वा लूहे ति वा तीरट्ठी ति वा चरणकरणपारविउ।

—त्ति बेमि ॥

१. अंतियं से (क)।
२. एवं (ख)।
३. किती (ख)।

बीअं अज्झयणं

किरियाठाणे

उक्खेव-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु किरियाठाणे णामज्झयणे[1] पण्णत्ते। तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु संजूहेणं दुवे ठाणा एवमाहिज्जंति, तं जहा—धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव ।।

अधम्मपक्खेकिरिया-पदं

२. तत्थ णं जे से पढमठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे[2], तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[3] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं इमं एयारूवं दंडसमादाणं[4] संपेहाए, तं जहा—णेरइएसु तिरिक्खजोणिएसु माणुसेसु देवेसु जे यावण्णे तहप्पगारा पाणा विण्णू वेयणं वेयंति। तेसिं पि य णं इमाइं तेरस किरियाठाणाइं भवंतीति मक्खायं[5], तं जहा—अट्ठादंडे[6], अणट्ठादंडे[7], हिंसादंडे, अकस्मादंडे[8], दिट्ठिविपरियासियादंडे[9], मोसवत्तिए,

---

१. णाममज्झयणे (क)।
२. विहंगे (क, ख)।
३. हुस्स° (क)।
४. डंड° (ख)।
५. मक्खायाइं (क, चू)।
६. व्या० वि०—अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।
७. व्या० वि०—अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।
८. अकम्हा° (क, ख); इह चाकस्मादित्ययं शब्दो मगधदेशे सर्वेणाप्यागोपालाङ्गनादिना संस्कृतएवोच्चार्यत इति (वृ०, सू० ६)।
९. °विप्परि° (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदिण्णादाणवत्तिए, अज्झत्थिए, माणवत्तिए, मित्तदोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरियावहिए ॥

अट्ठादंड-पदं

३. पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिए[1] त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ[2] पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं[3] वा मित्तहेउं वा णागहेउं वा भूयहेउं वा जक्खहेउं वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति, अण्णेण वि णिसिरावेति अण्णं पि णिसिरंतं समणुजाणति। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।

पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिए[4] त्ति आहिए ॥

अणट्ठादंड-पदं

४. अहावरे दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति, ते णो अच्चाए णो[5] अजिणाए णो मंसाए णो सोणियाए णो हिययाए णो पित्ताए णो वसाए णो पिच्छाए[6] णो पुच्छाए णो बालाए णो सिंगाए णो विसाणाए 'णो दंताए णो दाढाए'[7] णो णहाए णो ण्हारुणिए णो अट्ठीए णो अट्ठिमिंजाए[8],

'णो हिंसिसु मे त्ति, णो हिंसंति मे त्ति, णो हिंसिस्संति'[9] मे त्ति,

णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणाए[10] णो अगारपरिवूहणयाए[11] णो समणमाहण-वत्तणाहेउं[12] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[13] भवति।

से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता ओदवइत्ता[14] उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति[15]—अणट्ठादंडे।

से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवंति, तं जहा—इक्कडा इ वा

---

१. अट्ठादंडे (वृ)।
२. केति (क, ख)।
३. परियार° (चू)।
४. अट्ठादंडे (क, ख)।
५. एवं हियाए पित्ताए (क, ख)।
६. पिछाए (क)।
७. वृत्तौ नैतौ शब्दौ व्याख्यातौ स्तः।
८. °मंजाए (ख)।
९. चूर्णौ कालत्रयेपि एकवचनम्।
१०. पसुपोसणयाए (क)।
११. °परिवंहणताए (क)।
१२. °वत्तियहेउं (क)।
१३. किंचि परियादित्ता (क); किञ्चित् परित्राणं (वृ)।
१४. उवद्दवइत्ता (क)।
१५. भवति—से (क)।

कडिणा[1] इ वा जंतुगा इ वा परगा इ वा मोरका इ वा तणा इ वा कुसा इ वा कुच्छगा[2] इ वा पव्वगा[3] इ वा पलाला[4] इ वा—ते णो पुत्तपोसणाए[5] णो पसुपोसणाए णो अगारपरिवूहणयाए[6] णो समणमाहणवत्तणाहेउं[7] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[8] भवति ।

से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता ओदवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवइ—अणट्ठादंडे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा 'पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा'[9] तणाइं ऊसविय-ऊसविय सयमेव अगणिकायं णिसिरति, अण्णेण वि अगणिकायं णिसिरावेति, अण्णं पि अगणिकायं णिसिरंतं समणुजाणति—अणट्ठादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[10] ति आहिज्जइ ।

दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

हिंसादंड-पदं

५. अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिज्जइ —

से जहाणामए केइ पुरिसे ममं वा ममियं[11] वा अण्णं वा अण्णियं[12] वा 'हिंसिसु वा, हिंसंति वा, हिंसिस्संति'[13] वा, तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरइ, अण्णेण वि णिसिरावेइ, अण्णं पि णिसिरंतं समणुजाणइ—हिंसादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[14] ति आहिज्जइ ।

तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

---

१. कठिणा (ख) ।
२. कुच्चग (आयारचूला—२।६३) ।
३. पप्पगा (क, ख); पिप्पलगं (आयारचूला—२।६३) ।
४. पलालए (क, ख) ।
५. °पोसणयाए (क) सर्वत्र ।
६. अगारपोसणयाए (क, ख) ।
७. समणमाहणपोसणयाए (क, ख) ।
८. किंचि परियादित्ता (क); किमपि परित्राणाय (वृ) ।
९. वृत्तौ नेमौ शब्दौ स्वीकृतौ स्तः, यथा—कच्छादिकेषु दशसु स्थानेषु वनदुर्गपर्यन्तेषु ।
१०. सावज्जे (क, ख) ।
११. ममिं (ख) ।
१२. अण्णिं (ख) ।
१३. वृत्तौ कालत्रये पि एकवचनमस्ति, किन्तु इतः पूर्वस्मिन् सूत्रे कालत्रये पि तत्र बहुवचनं व्याख्यातमस्ति ।
१४. सावज्जे (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकस्मादंड-पदं

६. अहावरे चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मादंडवत्तिए[1] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा[2] °दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा° पव्वयविदुग्गंसि वा मियवत्तिए[3] मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता "एते मिय" त्ति काउं अण्णयरस्स मियस्स वहाए उसुं[4] आयामेत्ता णं णिसिरेज्जा, से[5] "मियं वहिस्सामि" त्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा 'चडगं वा'[6] लावगं वा कवोयगं वा कविं वा कविंजलं वा विंधित्ता भवति—इति[7] खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसइ—अकस्मादंडे[8]।
से जहाणामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा परगाणि वा रालाणि वा णिलिज्जमाणे[9] अण्णयरस्स तणस्स वहाए सत्थं णिसिरेज्जा, से "सामगं तणगं मुकुंदुगं[10] वीहीऊसियं[11] कलेसुयं तणं छिंदिस्सामि" त्ति कट्टु सालिं वा वीहिं वा कोद्दवं वा कंगुं वा परगं वा रालयं वा छिंदित्ता भवति—इति खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसति—अकस्मादंडे। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[12] ति आहिज्जइ।
चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मादंडवत्तिए आहिए॥

दिट्ठिविपरियासियादंड-पदं

७. अहावरे पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिए[13] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूयाहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे मित्तं अमित्तमिति[14] मण्णमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादंडे।
से जहाणामए केइ पुरिसे गामघायंसि वा णगरघायंसि वा खेडघायंसि कब्बडघायंसि मडंबघायंसि वा दोणमुहघायंसि वा पट्टणघायंसि वा

---

१. अकम्हा° (ख)।
२. सं० पा०—कच्छंसि वा जाव पव्वयविदुग्गंसि वा; कच्छंसि वा जाव वणविदुग्गंसि वा (ख); कच्छे वा यावद् वनदुर्गे वा (वृ)।
३. °वित्तिए (ख)।
४. उसुगं (क)।
५. स (ख)।
६. × (क)।
७. इह (क, ख)।
८. अकम्हा° (ख) सर्वत्र।
९. णिलिज्जमाणे (ख)।
१०. मुकुंदगं (ख); कुमुदगं (क्व)।
११. वाहिरूसितं (क)।
१२. सावज्जे (क)।
१३. °दंडे (क, ख)।
१४. अमित्तमेव (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसमघायंसि वा सण्णिवेसघायंसि वा णिगमघायंसि वा रायहाणिघायंसि वा अतेणं तेणमिति मण्णमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादंडे।
एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[1] ति आहिज्जइ।
पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिए[2] त्ति आहिए॥

मोसवत्तिय-पदं

८. अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं[3] वा अगारहेउं वा परिवारहेउं सयमेव मुसं वयति, अण्णेण वि मुसं वयावेइ, मुसं वयंतं पि अण्णं समणुजाणति।
एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिए॥

अदिण्णादाणवत्तिय-पदं

९. अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा[4] °णाइहेउं वा अगारहेउं वा° परिवारहेउं वा सयमेव अदिण्णं आदियति, अण्णेण वि अदिण्णं आदियावेति, अदिण्णं आदियंतं पि अण्णं समणुजाणइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिए॥

अज्झत्थिय-पदं

१०. अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे[5] अज्झत्थिए[6] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे—णत्थि णं केइ किंचि विसंवादेइ—सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे[7] करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाति, तस्स णं अज्झत्थिया असंसइया[8] चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जंति, तं जहा—कोहे माणे माया लोहे[9]। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थिए त्ति आहिए॥

---

१. सावज्जे (क)।
२. °दंडे (क, ख)।
३. णाय° (क, ख)।
४. सं० पा०—आयहेउं वा जाव परिवारहेउं।
५. किरियाठाणे (क, ख)।
६. अज्झत्थवत्तिए (ख)।
७. °सागरपविट्ठे (वृ)।
८. आसंसइया (ख)।
९. लोहे। अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणवत्तिय-पदं

११. अहावरे णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे जाइमदेण वा कुलमदेण वा बलमदेण वा रूवमदेण वा तवमदेण वा सुयमदेण वा लाभमदेण वा इस्सरियमदेण वा पण्णामदेण वा, अण्णयरेण वा मदट्ठाणेणं मत्ते समाणे परं हीलेति णिंदेति खिंसति गरिहति[1] परिभवति अवमण्णति। "इत्तरिए[2] अयं, अहमंसि पुण विसिट्ठजाइ-कुलबलाइगुणोववेए"—एवं अप्पाणं समुक्कसे[3]। देहा चुए कम्मबिइए[4] अवसे पयाति, तं जहा—गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं। चंडे थद्धे चवले माणी यावि भवइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिए॥

मित्तदोसवत्तिय-पदं

१२. अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं[5] वा पिईहिं[6] वा भाईहिं वा भइणीहिं वा भज्जाहिं वा धूयाहिं वा पुत्तेहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे तेसिं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव 'गरुयं दंडं णिव्वत्तेति'[7], तं जहा—सीओदगवियडंसि वा कायं उब्बोलेत्ता[8] भवइ, उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता[9] भवइ, अगणिकायेणं कायं उद्दहित्ता[10] भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया[11] वा 'कसेण[12] वा छियाए वा'[13] लयाए वा 'अण्णयरेण वा दवरएण'[14] पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[15] वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता[16] भवति।

---

१. गरहति (ख)।
२. इत्तिरिए (क)।
३. समुक्कोसे (ख)।
४. °वितिए (क)।
५. मादीहिं (क)।
६. पितिहिं (ख)।
७. गुरुयं डंडं वत्तेति (क)।
८. उबोलेत्ता (क); उच्छोलित्ता (ख); उद्ब्रोडयिता—अत्र 'बोल' धातु प्रयोगो वर्तते। वृत्तावपि 'बोलयिता' इति व्याख्यातमस्ति। प्राचीनलिप्यां संयुक्त-बकारस्य तथा संयुक्तछकारस्य, असंयुक्त-बकारछकारयोरपि सादृश्यमस्ति, ततो लिपिदोषेण 'उबो[ब्बो]लेत्ता' स्थाने 'उच्छोलेत्ता' जातमिति प्रतीयते।
९. उसिंसचित, (चू)।
१०. उवडहित्ता (ख); उड्डहित्ता (चू)।
११. तयाइ (ख)।
१२. कमेण (क;) कडएण (चू)।
१३. × (वृ)।
१४. × (क, ख, चू)।
१५. लेलूण (ख)।
१६. उपताडयिता (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहप्पगारे पुरिसजाते संवसमाणे दुम्मणा भवंति, पवसमाणे सुमणा भवंति ।
तहप्पगारे पुरिसजाते दंडपासी, दंडगरुए[1], दंडपुरक्खडे, अहिते इमंसि लोगंसि, अहिते परंसि लोगंसि, संजलणे कोहणे, पिट्ठिमंसियावि[2] भवइ । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जति ।
दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिए ।।

मायावत्तिय-पदं

१३. अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिज्जइ[3]—जे इमे भवंति गूढायारा तमोकासिया[4] उलूगपत्तलहुया[5] पव्वयगुरुया, ते आरिया वि संता अणारियाओ भासाओ पउंजंति[6], अण्णहा संतं अप्पाणं अण्णहा मण्णंति, अण्णं पुट्ठा अण्णं वागरेंति, अण्णं आइक्खियव्वं अण्णं आइक्खंति ।
से जहाणामए केइ पुरिसे अंतोसल्ले तं सल्लं णो सयं[7] णीहरति, णो अण्णेण णीहरावेति[8], णो पडिविद्धंसेति, एवमेव णिण्हवेति, अविउट्टमाणे अंतो-अंतो रियाति[9], एवमेव माई मायं कट्टु णो आलोएइ, णो पडिक्कमेइ, णो णिंदइ, णो गरहइ, णो विउट्टइ, णो विसोहेइ, णो अकरणाए अब्भुट्ठेइ, णो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ ।
माई अस्सिं लोए पच्चायाति, माई[10] परंसि लोए पच्चायाति[11], णिंदइ[12], पसंसति, णिच्चरति, ण[13] णियट्टति, णिसिरिया[14] दंडं छाएइ, माई[15] असमाहडसुहलेस्से[16] यावि भवइ । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ ।
एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिए ।।

लोभवत्तिय-पदं

१४. अहावरे बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिज्जइ[17]—जे इमे भवंति[18]

---

१. °गुरुए (क, ख) ।
२. पट्ठि° (ख) ।
३. आहिज्जइ, तं जहा—(वृ) ।
४. तमोकाइया (चू) ।
५. उलुग° (ख, चू) ।
६. विउंजंति (क, चू); विप्पउंजंति (ख) ।
७. सति (क) ।
८. णीहारा° (ख) ।
९. भियाति (ख); भोसियाति (चू) ।
१०. माती (क) ,
११. पुणो पुणो पच्चा (वृ) ।
१२. निंदइ महाय (क); निंदइ गरहइ (ख); निंदा गरहा (चू) ।
१३. णो (चू) ।
१४. निसिरिय (ख, चू) ।
१५. मायी (क, ख) ।
१६. असमाहिद° (क); असमाहडलेस्से (चू) ।
१७. आहिज्जइ, तं जहा—(वृ) ।
१८. भवन्ति, तं जहा (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरण्णिया आवसहिया गामंतिया कण्हुईरहस्सिया[1] णो बहुसंजया, णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा[2] सच्चामोसाइं एवं विउंजंति— अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया[3] अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति। तओ[4] विप्पमुच्चमाणा भुज्जो 'एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[5] जाइमूयत्ताए'[6] पच्चायंति। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।

दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिए॥

१५. इच्चेताइं दुवालस किरियट्ठाणाइं दविएणं समणेणं वा माहणेणं वा सम्मं सुपरिजाणियव्वाणि[7] भवंति॥

इरियावहिय-पदं

१६. अहावरे तेरसमे[8] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु अत्तत्ताए संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाण-भंड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमियस्स उच्चार-पासवण-खेल-'सिंघाण-जल्ल'[9]-पारिट्ठा-

---

१. कण्हुतीराहुसिया (क)।

२. अप्पणो (क)।

३. गढिया गरहिया (क, ख); असौ 'गढिया' शब्दस्यैव रूपान्तरमस्ति। वृत्तिकारेण चत्वार एव शब्दा व्याख्याताः, यथा—मूर्च्छिता गृद्धा ग्रथिता अध्युपपन्नाः।

४. तातो (क)।

५. तम्मूय° (क); × (ख); तमोकाइयत्ताए (चू)।

६. 'एलमूयत्ताए' इति पाठश्चतुर्षु स्थलेषु विद्यते। तत्र अग्रिमः पाठः सर्वत्र भिन्नोस्ति, यथा—

२।२।१४ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए।

२।२।१८ एलमूयत्ताए तमंधयाए।

२।२।५६ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए।

२।७।२५ एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए।

२।२।१४ स्थाने चूर्णौ 'तमोकाइयत्ताए' पाठोस्ति, २।२।१८, २।७।२५ अनयोः स्थलयोरपि 'तमोकाइयत्ताए' इत्यस्य तुल्यार्थतास्ति। तेन प्रतीयतेत्र तमोवाचकः पाठः प्रयुक्तोस्ति। 'तमूयत्ताए' इत्यपि 'तमोयत्ताए' [तमस्तया] इत्यस्य ऊकारकृतः प्रयोगो वर्तते। अस्माभिः यस्मिन् स्थले यादृशः पाठो लब्धः तादृशः एव स्वीकृतः।

७. पडिलेहितव्वाणि (चू)।

८. तेरसे (क)।

९. जल्ल-सिंघाणग (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स[1] कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइ-गुत्तस्स[2] कायगुत्तस्स गुत्तिंदियस्स गुत्तबंभयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स[3] आउत्तं चिट्ठमाणस्स आउत्तं णिसीयमाणस्स आउत्तं तुयट्टमाणस्स 'आउत्तं भुंजमाणस्स आउत्तं भासमाणस्स'[4] आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा णिक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हणिवायमवि, अत्थि विमाया सुहुमा किरिया इरियावहिया णाम कज्जइ—सा पढमसमए बद्धपुट्ठा[5] बितियसमए[6] वेइया ततियसमए णिज्जिण्णा। सा बद्धपुट्ठा उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा सेयकाले अकम्मयाऽवि[7] भवइ[8]। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं[9] आहिज्जइ।

तेरसमे[10] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिए ॥

१७. से बेमि—जे य अईया जे य पडुप्पण्णा जे य आगमेस्सा अरहंता भगवंता सव्वे ते एयाइं चेव तेरस किरियट्ठाणाइं भासिंसु वा भासेंति वा भासिस्संति वा, पण्णवेंसु वा पण्णवेंति वा पण्णवेस्संति वा, एवं चेव तेरसमं किरियट्ठाणं सेविंसु वा सेवंति वा सेविस्संति वा ॥

पावसुयज्झयण-पदं

१८. अदुत्तरं च णं पुरिस-विजय-विभंगमाइक्खिस्सामि—इह खलु णाणापण्णाणं णाणाछंदाणं णाणासीलाणं णाणादिट्ठीणं णाणारुईणं[11] णाणारंभाणं णाणाज्झव-साणसंजुत्ताणं 'इहलोगपडिबद्धाणं परलोगणिप्पिवासाणं विसयतिसियाणं इणं'[12] णाणाविहं 'पावसुयज्झयणं भवइ'[13], तं जहा—१. भोमं २. उप्पायं ३. सुविणं

---

१. वयसमि° (ख)।
२. वयगु° (ख)।
३. आणपाणमाणस्स (चू)।
४. आउत्तं भुंजमाणस्स (ख); × (चू)।
५. बद्धा° (ख)।
६. बिईय° (ख)।
७. अकम्मं या वि (चू)।
८. तोलनीयम्—भगवती ३।१४८।
९. तप्पत्तियं सावज्जं ति (क, ख); प्रयुक्तप्रत्योः तथान्येष्वपि प्रचुरेषु आदर्शेषु 'सावज्जं' अथवा 'सावज्जे' पाठोत्र लभ्यते, किन्तु पूर्ववर्ति-द्वादशक्रियास्थानगताभ्यासेन लिपिप्रमादोसौ-जात इति प्रतीयते। अर्थविचारणया नासौ पाठः संगतोस्ति। ईर्यापथिक्याः क्रियाया बन्धो न च नाम सावद्यो भवति। चूर्णौ वृत्तौ चापि नास्ति स पाठो व्याख्यातः। चूर्णिकारेण स्पष्टं कृतमस्ति विवेचनम्—हेट्ठिल्ला पुण सावज्जा चेव बारस किरिया-ट्ठाणाइं भवंति, एवं पव्वइओ वा उप्पव्वइओ वा, एवं सरागसंयतस्स सावज्जो चेव (चूर्णी पृ० ३५३)। वृत्तिकारेणापि 'सावज्ज' शब्दस्य नोल्लेखः कृतः। एवं तावद् वीतरा-गस्येर्याप्रत्ययिकं कर्म 'आधीयते'—संबध्यते। (वृत्तिपत्र ५८ पंक्ति ६)।
१०. तेरसे (क)।
११. °रुतीणं (क)।
१२. × (क, ख)।
१३. पावसुत्तपसंगं वण्णइस्सामि (चू); पावसुयज्झयणं एवं भवइ (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अंतलिक्खं ५. अंगं ६. सरं ७. लक्खणं ८. वंजणं ९. इत्थिलक्खणं १०. पुरिसलक्खणं ११. हयलक्खणं १२. गयलक्खणं १३. गोणलक्खणं १४. मेंढलक्खणं १५. कुक्कुडलक्खणं १६. तित्तिरलक्खणं १७. वट्टगलक्खणं १८. लावगलक्खणं १९. चक्कलक्खणं २०. छत्तलक्खणं २१. चम्मलक्खणं २२. दंडलक्खणं २३. असिलक्खणं २४. मणिलक्खणं २५. कागणिलक्खणं २६. सुभगाकरं २७. दुब्भगाकरं २८. गब्भाकरं २९. मोहणकरं ३०. आहव्वणिं ३१. पागसासणिं[1] ३२. दव्वहोमं ३३. खत्तियविज्जं[2] ३४. चंदचरियं ३५. सूरचरियं ३६. सुक्कचरियं ३७. बहस्सइचरियं[3] ३८. उक्कापायं ३९. दिसादाहं[4] ४०. मियचक्कं ४१. वायसपरिमंडलं ४२. पंसुवुट्ठिं[5] ४३. केसवुट्ठिं ४४. मंसवुट्ठिं ४५. रुहिरवुट्ठिं ४६. वेयालिं ४७. अद्धवेयालिं ४८. ओसोवणिं[6] ४९. तालुग्घाडणिं[7] ५०. सोवागिं ५१. सावरिं[8] ५२. दामिलिं[9] ५३. कालिंगिं ५४. गोरिं ५५. गंधारिं ५६. 'ओवतणिं ५७. उप्पतणिं'[10] ५८. जंभणिं ५९. थंभणिं ६०. लेसणिं ६१. आमयकरणिं ६२. विसल्लकरणिं ६३. पक्कमणिं[11] ६४. अंतद्धाणिं[12] । एवमाइयाओ विज्जाओ अण्णस्स हेउं पउंजंति[13], पाणस्स हेउं पउंजंति, वत्थस्स हेउं पउंजंति, लेणस्स हेउं पउंजंति, सयणस्स हेउं पउंजंति, अण्णेसिं वा विरूवरूवाणं कामभोगाण हेउं पउंजंति, तेरिच्छं[14] ते विज्जं सेवंति[15], ते अणारिया विप्पडिवण्णा कालमासे कालं किच्चा 'अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु'[16] उववत्तारो भवंति । ततो वि विप्पमुच्चमाणा[17] भुज्जो एलमूयत्ताए तमंधयाए पच्चायंति ॥

चउद्दसविह-कूरकम्मकरण-पदं

१९. से एगइओ आयहेउं वा 'णाइहेउं वा'[18] अगारहेउं वा परिवारहेउं वा णायगं वा सहवासियं वा णिस्साए—१. अदुवा अणुगामिए २. अदुवा उवचरए

---

१. पागसासणं (ख) ।
२. खत्तीविज्जं (ख) ।
३. विहप्फति° (क) ।
४. दिसीदाहं (क) ।
५. पंसुवुट्ठी (क) ।
६. ओसोयणिं (क) ।
७. तालुग्घाडणं (ख) ।
८. सावरिं (क); शाम्बरी (वृ) ।
९. दामलिं (ख) ।
१०. उप्पतणिं णिवडतणिं कंपणिं (चू) ।
११. × (चू) ।
१२. अंतद्धाणिं आयमणिं (ख) ।
१३. विउंजंति (क) सर्वत्र ।
१४. तिरिच्छं (क्व) ।
१५. सेवेंति (क, ख) ।
१६. अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं ठाणाइं (क, ख) ।
१७. विप्पमुक्का (वृ) ।
१८. णायहेउं वा (क), णायहेउं वा सयणहेउं वा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. अदुवा पाडिपहिए[1] ४. अदुवा संधिच्छेयए[2] ५. अदुवा गंठिच्छेयए[3] ६. अदुवा ओरब्भिए ७. अदुवा सोयरिए[4] ८. 'अदुवा वागुरिए ९. अदुवा साउणिए[5] १०. अदुवा मच्छिए ११. अदुवा गोवालए[6] १२. अदुवा गोघायए १३. अदुवा सोवणिए[7] १४. अदुवा सोवणियंतिए।

से एगइओ अणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगमिय[8] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति - इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ उवचरगभावं पडिसंधाय तमेव उवचरिय[9] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव[10], पडिपहे ठिच्चा हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ— इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ संधिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[11], संधिं छेत्ता भेत्ता[12] •लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ गंठिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[13], गंठिं छेत्ता भेत्ता[14] •लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं[15] उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ ओरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता[16] •छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति[17]।

---

१. पाडिवधिए (क)।
२. संधिछेदए (ख)।
३. गंठिभेदए (क); गंठिछेदए (ख)।
४. सोवरिए (क, ख); अत्र लिपिदोषेण 'सोकरिए' अथवा 'सोयरिए' स्थाने 'सोवरिए' इति पाठो जातः।
५. अदुवा साउणिए अदुवा वागुरिए (वृ)।
६. गोपालए (क)।
७. सोवणितिए (क); सोतेणिए (ख)।
८. अणुगमियाणुगामित (क); अणुगामियाणुगमिय (ख); उपचर्य अनुव्रज्य च (वृ); अणुगमिय-अणुगमिय (क्व)।
९. °चरितं (ख)।
१०. व्या० वि०—तदेव प्रातिपथिकत्वं कुर्वन्।
११. व्या० वि०—'प्रतिपद्यते' इति क्रियाशेषः।
१२. सं० पा०—भेत्ता जाव इति।
१३. व्या० वि०—'अनुयाति' इति क्रिया शेषः।
१४. सं० पा०—भेत्ता जाव इति।
१५. अप्पाणं (क, ख)।
१६. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।
१७. भवति। एसो अभिलावो सव्वत्थ (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से एगइओ सोयरियभावं[1] पडिसंधाय महिसं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[2] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ वागुरियभावं पडिसंधाय मियं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[3] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ साउणियभावं पडिसंधाय सउणिं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[4] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ मच्छियभावं पडिसंधाय मच्छं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[5] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

'से एगइओ गोवालगभावं पडिसंधाय तमेव गोणं[6] परिजविय[7] हंता[8] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ गोवायगभावं पडिसंधाय गोणं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[9] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति'[10]।

से एगइओ सोवणियभावं पडिसंधाय सुणगं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[11] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ सोवणियंतियभावं पडिसंधाय मणुस्सं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[12] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता° आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति॥

---

१. सोवरिय० (ख)। चूर्णौ क्रमप्राप्तं सौकरिकपदं व्याख्यातं नास्ति। गोघातकभावस्यानन्तरं "केइ पुण भणंति—सोयरियभावं ति महिसं, अण्णतरो तव्वत्तिरित्तो गोणादि"—(चूर्णी पृ० ३५७) इति उल्लेखः प्राप्यते। वृत्तिकारस्य सम्मुखेपि सौकरिकपदस्य पाठः स्पष्टो नासीदिति प्रतीयते—"अत्रान्तरे सौकरिकपदं, तच्च स्वबुद्ध्या व्याख्येयम् सौकरिकाः—श्वपचाश्चाण्डालाः—खट्टिका इत्यर्थः" (वृत्ति पत्र ६३ पं० २)।

२. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

३,४,५. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

६. गोणं वा (क, ख)।

७. परिजविय-परिजविय (क)।

८,९. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

१०. से एगइओ गोघायगभावं°। से एगइओ गोवालगभावं°। (क, ख)।

११. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

१२. सं० पा०—हंता जाव आहारं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्पओयणं कूरकम्मकरण-पदं

२०. से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठेत्ता अहमेयं हणामि[1] त्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा [चडगं वा[2] ?] लावगं वा कवोयगं वा [कविं वा ?][3] कविंजलं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[4] •छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ--इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ॥

सद्दादि विसएहिं विरुद्धस्स कूरकम्मकरण-पदं

२१. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुरा-थालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं सस्साइं झामेइ, अण्णेण वि अगणिकाएणं सस्साइं झामावेइ, अगणिकाएणं सस्साइं झामेंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति[5] ॥

२२. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुरा-थालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण[6] वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, कप्पंतं वि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[7] •पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२३. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुरा-थालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ, अण्णेण वि झामावेइ, झामंतं पि अण्णं समणु-जाणइ—इति से महया[8] •पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२४. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुरा-थालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा कुंडलं वा[9] मणिं वा मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ, अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[10] •पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ।

---

१. आहणामि (क) ।

२,३. अस्याध्ययनस्य षष्ठे सूत्रे इमौ शब्दौ स्तः । अयमुल्लेखः स्वतंत्रसूत्राणां संकेतोथवा व्याख्यामात्रमिति स्पष्टं न परिज्ञायते ।

४. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता ।

५. चूर्णौ अस्य सूत्रस्य व्याख्याया अन्ते 'एवं फासे वि' 'आहतो भरितो वा केणइ असुइणा खेलेणं उविट्ठेण वा' इत्युल्लिखितमस्ति ।

६. घोडाण (क) ।

७,८. सं० पा०—महया जाव भवति ।

९. वा गुणिं वा (क) ।

१०. सं० पा०—महया जाव भवति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपदायलित्तस्स असव्ववहारकरण-पदं

२५. से एगइओ केणइ वि आदाणेणं विरुद्धे समाणे[1], समणाणं वा माहणाणं वा 'दंडगं वा छत्तगं वा'[2] भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिगं वा भिसिगं वा चेलगं[3] वा चिलिमिलिगं वा 'चम्मगं वा चम्मछेयणगं'[4] वा चम्मकोसियं वा सयमेव अवहरइ[5], •अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ—इति से महया[6] •पावकम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ।।

वोमंसरहियस्स कूरकम्मकरण-पदं

२६. से एगइओ नो वितिगिंछइ[7]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं ओसहीओ झामेइ[8], •अण्णेण वि अगणिकाएणं ओसहीओ झामावेइ, अगणिकाएणं ओसहीओ° झामेंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[9] •पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ।।

२७. से एगइओ णो वितिगिंछइ[10]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, अण्णं पि कप्पंतं समणुजाणइ[11]—•इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति° ।।

२८. से एगइओ णो वितिगिंछइ[12]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा[13] •गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा° गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ[14], •अण्णेण वि झामावेइ, झामंतं पि अण्णं° समणुजाणइ ।।

---

१. समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं (क, ख); प्रस्तुतसूत्रं 'समणमाहणेन' संबद्धमस्ति, तेनात्र 'अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं' इति पाठो नैव युज्यते । पूर्ववर्तिषु सूत्रेषु प्रवर्तमानः पाठोसौ अत्रापि लिपिप्रमादेन पूर्वप्रचलितक्रमाभ्यासेन वा लिखितोस्तीति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च अपहरणस्य यानि कारणानि प्रदर्शितानि तेभ्योपि उक्तानुमानस्य परिपुष्टिर्जायते । चूर्णौ यथा—"इमो अण्णो पासंडत्थाण दिट्ठिरागेणं वादे वा पराइतो सयमेव तेसिं अण्णं किंचि णत्थि जं अत्थि तं अवहरति." वृत्तौ च यथा—"अथैकः कश्चित्स्वदर्शनानुरागेण वा, वादपराजितो वाऽन्येन वा केनचिन्निमित्तेन कुपितः सन्नेतत्कुर्यादित्याह ।

२. छत्तगं वा दंडगं वा (ख), तोलनीयं—आयारचूला २।४६ ।

३. चेलं वा (क) ।

४. चम्मं वा चम्मछेदणं (क) ।

५. सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ ।

६. सं० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता ।

७. °गिंछइ, तं जहा (ख, वृ) ।

८. सं० पा०—झामेइ जाव झामेंतं ।

९. सं० पा०—महया जाव भवति ।

१०. °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ) ।

११. सं० पा०—समणुजाणइ° ।

१२. °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ) ।

१३. सं० पा०—उट्टसालाओ वा जाव गद्दभ° ।

१४. सं० पा०—झामेइ जाव समणुजाणइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. से एगइओ णो वितिगिंछइ[1]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा[2] •कुंडलं वा मणिं वा° मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ[3], •अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ ॥

३०. से एगइओ णो वितिगिंछइ[4]—समणाण वा माहणाण वा दंडगं वा[5] •छत्तगं वा भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिगं वा भिसिगं वा चेलगं वा चिलिमिलिगं वा चम्मगं वा° चम्मछेयणगं वा सयमेव अवहरइ[6], •अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ—इति से महया[7] •पावकम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ॥

३१. से एगइओ समणं वा माहणं वा दिस्सा णाणाविहेहिं 'पावेहिं कम्मेहिं'[8] अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा णं अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा णं फरुसं वदित्ता भवइ, कालेण वि[9] से अणुपविट्ठस्स 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा'[10] णो दवावेत्ता भवति, "जे इमे[11] भवंति—वोण्णमंता भारक्कंता[12] अलसगा वसलगा 'किवणगा समणगा'[13], ते इणमेव[14] जीवितं धिज्जीवियं[15] संपडिब्रूहेंति"। णाइ ते 'पारलोइयस्स अट्ठस्स'[16] किंचि वि सिलिस्संति[17], ते दुक्खंति ते सोयंति ते जूरंति ते तिप्पंति ते पिट्टंति[18] ते परितप्पंति ते दुक्खण-जूरण-सोयण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण-वह-बंध[19]-परिकिलेसाओ अपडिविरता[20] भवंति। ते महता आरंभेण ते महता समारंभेण ते महता आरंभसमारंभेण विरूवरूवेहिं पावकम्म-

---

१. °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।
२. सं० पा०—गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं।
३. सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।
४. °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।
५. सं० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं।
६. सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।
७. स० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता।
८. पावकम्मेहिं (क, ख)।
९. वि य (क)।
१०. असणं वा पाणं वा जाव (क); असणं वा ४ जाव (ख)।
११. अपरं च दानोद्यत निषेधयति तत्प्रत्यनीकतया, एतच्च ब्रूते—ये इमे पाषण्डिका भवंति··· (वृ)।
१२. भारोक्कंता (क, ख)।
१३. किमणगा पव्वयंति (क); किवणगा समणगा पव्वयंति (ख); °श्रमणा भवंति—प्रव्रज्यां गृह्णन्ति (वृ)।
१४. अणमेव (क); इणामेव (ख)।
१५. धीजीवितं (क)।
१६. पारलोयस्स° (क); पारलोयस्स अट्ठाए (ख); पारलोइयं अत्थं (चू); पारलोइयस्स अट्ठस्स साहणं (वृ)।
१७. सिलीसंति (ख)।
१८. १।४२,४३,५१—निर्दिष्टाङ्केषु सूत्रेषु 'पीड' धातुप्रयोगो वर्तते, अत्र च तस्मिन्नेव प्रकरणे 'पिट्ट' धातुप्रयोगो लभ्यते। नानयोः कश्चिदर्थभेदः संभाव्यते।
१९. बंधण (ख)।
२०. अप्पडिविरया (क्व)·

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किच्चेहिं उरालाइं[1] माणुस्सगाइं[2] भोगभोगाइं भुंजित्तारो भवंति, तंजहा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले[3]।

सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-'पायच्छित्ते सिरसा ण्हाए कंठेमालकडे[4] आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारिय-सोणिसुत्तग-मल्ल-दामकलावे अहयवत्थपरिहिए चंदणोक्खित्तगाय-सरीरे'[5] महइमहालियाए कूडागारसालाए महइमहालयंसि सीहासणंसि इत्थीगुम्मसंपरिवुडे 'सव्वराइएणं जोइणा झियायमाणेणं'[6] महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइय-रवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति—भण देवाणुप्पिया! किं करेमो? किं आहरेमो? किं उवणेमो? किं उवट्ठावेमो[7]? किं भे हियइच्छियं[8]? किं भे आसगस्स सयइ?

तमेव पासित्ता अणारिया एवं वयंति—देवे खलु अयं पुरिसे! देवसिणाए खलु अयं पुरिसे! 'देवजीवणिज्जे खलु अयं पुरिसे'[9]! अण्णे वि य णं उवजीवंति।

तमेव पासित्ता आरिया वयंति—अभिक्कंतकूरकम्मे खलु अयं पुरिसे, अइधूए[10], अइआयरक्खे दाहिणगामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लहबोहिए[11] यावि भविस्सइ॥

३२. इच्चेतस्स ठाणस्स उट्ठिता[12] वेगे अभिगिज्झंति, अणुट्ठित्ता वेगे अभिगिज्झंति, अभिझंझाउरा अभिगिज्झंति।

एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुण्णे 'अणेयाउए असंसुद्धे'[13] असल्लगत्तणे

---

१. ओरालाइं (क)।

२. मणुस्स° (क, ख)।

३. यद्यपि चूर्णिकारवृत्तिकाराभ्यां 'जे इमे भवंति' इतः 'समणगा' पर्यन्तं अन्तर्वाक्यं स्वीकृतं किन्तु यत्तदोः सम्बन्धेन बहुवचनस्य सम्बन्धेन च 'सयणं सयणकाले', पर्यन्तं अन्तर्वाक्यं युज्यते।

४. × (चू)।

५. पायच्छित्ते कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे सिरसा ण्हाए कंठे मालकडे—वृत्तौ चिन्हित-पाठ-स्थाने एतावानेव पाठो निर्दिष्टक्रमेण व्याख्यातोस्ति।

६. एतावान् पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

७. आविद्धवेमो (क), आचिट्ठामो, आविट्ठवेमो (क्व)।

८. हियं° (ख)।

९. चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

१०. अइधुत्ते (क)।

११. °बोहियाए (ख)।

१२. उवट्ठिते (क)।

१३. असंबुद्धे अणेयाउए (क); अणेयाऊए असंबुद्धे (ख); वृत्तौ नैष पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रत्योः 'असंबुद्धे' पाठो लभ्यते किन्तु 'आवश्यक' चतुर्थाध्ययने 'केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं' अनेन क्रमेणासौ पाठो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे[1] अणिज्जाणमग्गे[2] असव्वदुक्खपहीण-मग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।
एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

धम्मपक्खे भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं

३३. अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा[3] भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे हस्समंता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवंति, [4]तं जहा—अप्पयरा वा भुज्जयरा वा। तेसिं च णं जणजाणवयाइं परिग्गहियाइं भवंति, तं जहा—अप्पयरा वा भुज्ज-यरा वा। तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया। सतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया। असतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ॥

३४. जे ते सतो वा असतो वा णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहिं णातं भवति - इह खलु पुरिसे अण्णमण्णं ममट्ठाए एवं विप्पडिवेदेति, तं जहा— खेत्तं मे वत्थू मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे धणं मे धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावतेयं मे सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे। एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसिं।

से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा —इह खलु मम अण्णतरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा —अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता ! भयंतारो ! कामभोगा ! मम अण्णतरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयह—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं। माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ

विद्यते। तत् प्रतिपक्षरूपत्वेनात्र 'अणयाउए असंसुद्धे' इति पाठो युज्यते। केषुचित् मुद्रितप्रतिषु इत्थं लभ्यमानोप्यस्ति, तेनास्माभिर्मूलेसौ स्वीकृतः।

१. अपरिणिव्वाणमग्गे (वृ)।

२. × (क, वृ)।

३. मणुया (ख)।

४. सं० पा०—एसो आलावगो तहा णेयव्वो जहा पोंडरीए जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिनिव्वुड त्ति बेमि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमंसि। से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो? इति संखाए णं वयं कामभोगे विप्पजहिस्सामो।।

३५. से मेहावी जाणेज्जा--बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा--माता मे पिता मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे सुही मे सयणसंगंथसंथुया मे। एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसिं। से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा। इह खलु मम अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा--अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता! भयंतारो! णायओ! इमं मम अण्णयरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयह--अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं। माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोयह--अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेवं णो लद्धपुव्वं भवइ।

तेसिं वा वि भयंताराणं मम णाययाणं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा--अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता! अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अण्णतरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयामि--अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं, मा मे दुक्खंतु वा सोयंतु वा जूरंतु वा तिप्पंतु वा पीडंतु वा परितप्पंतु वा। इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोएमि--अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति।

अण्णस्स दुक्खं अण्णो णो परियाइयइ, अण्णेण कतं अण्णो णो पडिसंवेदेइ, पत्तेयं जायइ, पत्तेयं मरइ, पत्तेयं चयइ, पत्तेयं उववज्जइ, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा, पत्तेयं विण्णू, पत्तेयं वेदणा।

इति खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं णाइसंजोगे विप्पजहइ, णाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु णातिसंजोगा, अण्णो अहमंसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं णाइसंजोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं णातिसंजोगे विप्पजहिस्सामो ।।

३६. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे सीसं मे आउं मे बलं मे वण्णो मे तया मे छाया मे सोयं मे चक्खुं मे घाणं मे जिब्भा मे फासा मे ममाति, वयाओ परिजूरइ, तं जहा—आऊओ बलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ फासाओ। सुसंधिता संधी विसंधीभवति, वलितरंगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवंति। जं पि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवचियं, एयं पि य मे अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति ।।

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पदं

३७. एयं संखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव। तसा चेव, थावरा चेव ।।

३८. इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सयं समारंभंति, अण्णेण वि समारंभावेंति, अण्णं पि समारंभंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सयं परिगिण्हंति, अण्णेण वि परिगिण्हावेंति, अण्णं पि परिगिण्हंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे। जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो।

कस्स णं तं हेउं ?

जहा पुव्वं तहा अवरं, जहा अवरं तहा पुव्वं।

अंजू एते अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव।

जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, दुहओ पावाइं कुव्वंति, इति संखाए दोहि वि अंतेहिं अदिस्समाणो।

इति भिक्खू रीएज्जा ।।

३९. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा एवं से परिण्णातकम्मे, एवं से ववेयकम्मे, एवं से वियंतकारए भवइ त्ति मक्खायं।

अहिंसाधम्म-पदं

४०. तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जहाणामए मम असायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।
सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति। एवं णच्चा सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा॥

४१. से बेमि—जे अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा अरहंता भगवंतो सव्वे ते एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा॥

४२. एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोगं खेयण्णेहिं पवेइए॥

भिक्खुचरिया-पदं

४३. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ विरए मेहुणाओ विरए परिग्गहाओ। णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं, णो वमणं, णो विरेयणं, णो धूवणे, णो तं परियाविएज्जा॥

४४. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिणिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बंभचेरवासेणं, इमेण वा जायामायावुत्तिएणं धम्मेणं इतो चुते पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती, सिद्धे वा अदुक्खमसुहे। एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया॥

४५. से भिक्खू सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

४६. से भिक्खू—जे इमे तसथावरा पाणा भवंति—ते णो सयं समारंभइ, णो अण्णेहिं समारंभावेइ, अण्णे समारंभंते वि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

४७. से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिगिण्हइ, णो अण्णेणं परिगिण्हावेइ, अण्णं परिगिण्हंतंपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

४८. से भिक्खू—जं पि य इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ—णो तं सयं करेइ, णो अण्णेणं कारवेइ, अण्णं पि करेंतं ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

४९. से भिक्खू जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं, तं चेतियं सिया, तं णो सयं भुंजइ, णो अण्णेणं भुंजावेइ, अण्णं पि भुंजंतं ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

५०. से भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा—तं विज्जइ तेसिं परक्कमे । जस्सट्ठाए चेतियं सिया, तं जहा—अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं धातीणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसिं माणवाणं भोयणाए ।
तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठितं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थातीतं सत्थपरिणामितं अविहिंसितं एसितं वेसितं सामुदाणियं पण्णमसणं कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजण-वणलेवणभूयं, संजमजायामायावुत्तियं बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले ।।

धम्मदेसणा-पदं

५१. से भिक्खू मायण्णे अण्णयरिं दिसं वा अणुदिसं वा पडिवण्णे धम्मं आइक्खे विभए किट्टे—उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—संतिं विरतिं उवसमं णिव्वाणं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं ।।

५२. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ किट्टए धम्मं ।।

५३. से भिक्खू धम्मं किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो अण्णेसिं विरूव-रूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा । णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ।।

५४. इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया । जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, ते एवं सव्वोवगता, ते एवं सव्वोवरता, ते एवं सव्वोवसंता, ते एवं ० सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति बेमि ॥

५५. एस ठाणे आरिए केवले[1] •पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे० सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।

दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

मीसग-पक्ख-पदं

५६. अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामंतिया[2] कण्हुईरहस्सिया[3] •णो बहुसंजया, णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति—अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा । एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति० । तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[4] पच्चायंति ॥

५७. एस ठाणे अणारिए अकेवले[5] •अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे० असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।

एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ॥

अधम्म-पक्ख-पदं

५८. अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति—महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अधम्मिया 'अधम्माणुया अधम्मिट्ठा'[6] अधम्मक्खाई

---

१. सं० पा०—केवले जाव सव्वदुक्ख० ।

२. गामणियंतिया (क, ख); अस्याध्ययनस्य चतुर्दशे सूत्रे 'गामंतिया' पाठोस्ति, चूर्णौ वृत्तौ च जाव शब्देन स एवात्र संगृहीतो भवति । यद्यपि प्रत्योरत्र 'गामणियंतिया' पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रमनुसृत्य पूर्ववर्ती पाठ एवास्माभिः स्वीकृतः ।

३. कण्हुईराहस्सिया (क); सं० पा०—कण्हुईरहस्सिया जाव तओ ।

४. मूयत्ताए (क) ।

५. सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख० ।

६. अधर्मिष्ठाः अधर्मानुज्ञाः (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधम्मपायजीविणो[1] अधम्मपलोइणो[2] अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा[3] अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइ-संपओगबहुला दुस्सीला[4] दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[5], °सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडि-विरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ[6] °माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइर-ईओ मायामोसाओ° मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[7],सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग[8]-विलेवण-सद्द - फरिस - 'रस-रूव'[9] - गंध - मल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ[10] सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय - संदमाणिया - सयणासण - जाण - वाहण - भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-संवव-हाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ 'हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ'[11]अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूड माणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ[12] अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण[13]-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए। जे यावण्णे तहप्पगारा[14] सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा[15] कज्जंति [ततो वि अप्पडिविरया जावज्जीवाए[16]।]

---

१. अहम्मजीवी (ख)।
२. °पलोई (ख); °पविलोइणो (वृ)।
३. °दायारा (ख)।
४. दुस्सीला दुरणुणेया (चू)।
५. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव सव्वाओ।
६. सं० पा०—कोहाओ जाव मिच्छा°।
७. × (क, ख)।
८. वण्णगंध (क, ख) लिपिदोषेण 'वण्णग' इत्यस्य स्थाने 'वण्णगंध' इति जातम्।
९. रूवरस (वृ)।
१०. औपपातिके (सू० १६१) कानिचिद् वाक्यानि न सन्ति।
११. हिरण्णसुवण्णकोडियाओ (क)।
१२. कारणाओ (क)।
१३. कंडनकुट्टण (वृ)।
१४. तहप्पगारे (क, ख)।
१५. °वणकरा जे अणारिएहिं (क, ख, वृ); असौ पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते। ६३,७१ एतयोः सूत्रयोरपि नासौ विद्यते। औप-पातिके (सू० १६१,१६३) ऽपि नासौ लभ्यते।
१६. कोष्ठकान्तर्वर्त्ती पाठश्चूर्णौ व्याख्यातो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जहाणामए केइ[1] पुरिसे कलम-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-पलिमंथगमादिएहिं[2] अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजति, एवमेव[3] तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिर-वट्टग-लावग-कवोय-कविंजल-मिय-महिस-वराह-गाह-गोह-कुम्म-सिरीसिवमादिएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं[4] पउंजति।

जा वि य से बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भयए इ वा भाइल्ले इ वा कम्मकरए इ वा भोगपुरिसे इ वा, तेसिं पि य णं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि[5] सयमेव 'गरुयं दंडं'[6] णिव्वत्तेइ[7], तं जहा—इमं दंडेह, इमं मुंडेह, इमं तज्जेह इमं तालेह, इमं अंदुयबंधणं[8] करेह, इमं णियलबंधणं करेह, इमं हडिबंधणं करेह, इमं चारगबंधणं करेह, इमं णियल-जुयल-संकोडिय-मोडियं करेह, इमं हत्थच्छिण्णयं करेह, इमं पायच्छिण्णयं करेह, इमं कण्णच्छिण्णयं करेह, इमं णक्कच्छिण्णयं 'करेह, इमं'[9] ओट्ठच्छिण्णयं करेह, इमं सीसच्छिण्णयं करेह, इमं मुहच्छिण्णयं करेह, 'इमं वेयवहितं करेह, इमं अंगवहितं करेह'[10], इमं फोडियपयं[11] करेह, इमं णयणुप्पाडियं करेह, इमं दसणुप्पाडियं करेह, इमं वसणुप्पाडियं करेह, इमं जिब्भुप्पाडियं करेह, इमं ओलंबियं करेह, इमं घसियं करेह, इमं घोलियं करेह, इमं सूलाइयं करेह, इमं सूलाभिण्णयं करेह, इमं खारवत्तियं करेह, इमं वज्झवत्तियं[12] करेह, इमं सीहपुच्छियगं करेह, इमं वसहपुच्छियगं करेह, इमं कडग्गिदड्ढयं[13] करेह, इमं कागणिमंसखावियगं करेह, इमं भत्तपाणणिरुद्धगं करेह, इमं जावज्जीवं वहबंधणं करेह, इमं अण्णतरेणं असुभेणं कु-मारेणं मारेह।

जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ, तं जहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा सुण्हा

नास्ति—'परेषां प्राणा परितावेंति, दृष्टान्तः क्रियते निर्दयत्वे तेषां, से जहाणामए…'। वृत्तौ स च व्याख्यातः, किन्तु तत्र अग्रिमपाठस्य दृष्टान्तरूपेण सम्बन्धयोजना नास्ति —"पुनरन्यथा बहुप्रकारमधार्मिकपदं प्रतिपिपादयिषुराह"। दृष्टान्तस्य स्पष्टबोधार्थमसौ पाठः कोष्ठकान्तर्वर्त्ती कृतः।

१. व्या० वि०—बहुवचनप्रकरणे पि यदेकवचनान्तं कर्तृपदम्, तद् उपमानोपमेययोरनुरोधात्।

२. पलिमिच्छग° (क)।

३. एवा° (ख)।

४. मिच्छं° (क)।

५. अवराहम्मि (क)।

६. गुरुय° (क)।

७. निवत्तेइ (ख)।

८. अडुयं° (ख)।

९. अतोग्रे 'इमं तथा करेह' इति पाठस्य प्रयोगः क्वचिद् क्वचिदेव विद्यते स चास्माभिः सर्वत्र पूरितः।

१०. वेगच्छहियं अंगच्छहियं (क)।

११. पक्खाफोडियं (ख)।

१२. वज्झवत्तियं (ख)।

१३. दवग्गिदड्ढयं (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इ वा, तेसिं पि य णं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं णिव्वत्तेति, तं जहा—सीओदगवियडंसि उब्बोलेत्ता[1] भवइ, [2]•उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता भवइ, अगणिकायेणं कायं उद्दहित्ता भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया वा कसेण वा छियाए वा लयाए वा अण्णयरेण वा दवरएण पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति,

तहप्पगारे पुरिसजाते संवसमाणे दुम्मणा भवंति, पवसमाणे सुमणा भवंति, तहप्पगारे पुरिसजाते दंडपासी, दंडगरुए, दंडपुरक्खडे, अहिते इमंसि लोगंसि०, अहिते परंसि लोगंसि।

ते[3] दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति। ते दुक्खण-सोयण-जूरण - तिप्पण - पिट्टण-परितप्पण - वह-बंधण - परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति ॥

५९. एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा कालं भुंजित्तु भोगभोगाइं पसवित्तु[4] वेरायतणाइं, संचिणित्ता बहूइं कूराइं[5] कम्माइं उस्सण्णाइं[6] संभारकडेण कम्मुणा—

से जहाणामए अयगोले इ वा सेलगोले इ वा उदगंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते वज्जबहुले 'धूयबहुले पंकबहुले'[7] वेरबहुले अप्पत्तियबहुले दंभबहुले णियडिबहुले[8] साइबहुले[9] अयसबहुले उस्सण्णतसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमइवइत्ता अहे णरगतलपइट्ठाणे भवति ॥

६०. ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधगारतमसा[10] ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसप्पहा मेद-वसा-मंस-रुहिर-पूय-पडल-चिक्खल्ल[11]-लित्ताणुलेवणतला असुई वीसा[12] परमदुब्भिगंधा कण्ह[13]-अगणिवण्णाभा कक्खडफासा[14] दुरहियासा असुभा णरगा। असुभा णरएसु वेयणाओ। णो चेव

१. उब्बोलेत्ता (क); उच्छोलेत्ता (ख)।
२. सं० पा०—जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते।
३. व्या० वि०—अस्यार्थसंबन्धः 'कज्जंति' पदानन्तरं योजनीयः।
४. पविसूइत्ता (क); परिसुइत्ता (ख)।
५. पावाइं (क)।
६. ओसण्णाइं (क)।
७. पंकबहुले धुन्नबहुले (क)।
८. नियइ० (क)।
९. सादि० (ख)।
१०. णिच्चंधतमसा (वृ); णिच्चंधगारतमसा (वृपा)।
११. × (वृ)।
१२. विस्सा (ख)।
१३. कण्हा (क, ख)।
१४. कक्कड० (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं णरएसु णेरइया णिद्दायंति वा पयलायंति वा सइं[1] वा रइं वा धिइं वा मइं वा उवलभंते। ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं णेरइय-वेयणं पच्चणुभवमाणा[2] विहरंति ॥

६१. से जहाणामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए, मूले छिण्णे, अग्गे गरुए, जओ णिण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं दुक्खाओ दुक्खं[3] दाहिण-गामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवइ ॥

६२. एस ठाणे अणारिए अकेवले[4] •अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे° असव्वदुक्खप्पहीण-मग्गे एगंतमिच्छे असाहू।

पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

धम्म-पक्ख-पदं

६३. अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुगा धम्मिट्ठा[5] •धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा[6]° धम्मेणं[7] चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए[8], •सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खा-णाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसण-सल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-

---

१. सुइ (ख)।
२. पच्चणुब्भवमाणा (ख)।
३. व्या० वि०—'याति' इति क्रियादोषः।
४. सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख°।
५. सं० पा०—धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं।
६. अधर्मपक्षवर्णने 'अधम्मसीलसमुदाचारा' इति पाठे 'शील' शब्दो विद्यते, धर्मपक्षवर्णने केवलं 'धम्मसमुदायारा' पाठोस्ति। अत्र शीलशब्दो न विवक्षितोऽथवा लिपिदोषेण त्यक्तोभूदिति न निश्चेतुं शक्यम्।
७. धम्मेण (क)।
८. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए°, जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ॥

६४. से जहाणामए अणगारा भगवंतो 'इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वइसमिया[1] कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता[2] गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुडा अणासवा अग्गंथा छिण्णसोया णिरुवलेवा, कंसपाई व मुक्कतोया, संखो[3] इव णिरंजणा, जीव इव अप्पडिहयगई, गगणतलं पिव णिरालंबणा, वायुरिव[4] अप्पडिबद्धा, सारदसलिलं व सुद्धहियया, पुक्खरपत्तं व णिरुवलेवा, कुम्मो इव गुत्तिंदिया, विहग इव विप्पमुक्का, खग्गविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी[5] व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायथामा, सीहो इव दुद्धरिसा, मंदरो इव अप्पकंपा, सागरो इव गंभीरा, चंदो इव सोमलेसा, सुरो इव दित्ततेया, जच्चकणगं[6] व जायरूवा, वसुंधरा इव सव्वफास-विसहा, सुहुयहुयासणो[7] विव तेयसा जलंता[8] ॥

---

१. वय° (क)।
२. × (क)।
३. संख (ख)।
४. वाउ° (ख)।
५. भारंडपंखी (ख)।
६. °कंचणग (ख)।
७. सुट्ठुहुया° (क)।
८. चूर्णौ 'से जहाणामए केइ पुरिसा अणगारा इरियासमिता जाव सुहुत'° एष संक्षिप्त-पाठो वर्तते, वृत्तौ च 'पञ्चभिः समितिभिः समिताः' अतः परं 'धूतकेस'° पर्यन्तं सर्वोपि पाठः औपपातिकवत् समर्पितोस्ति, यथा— ते पञ्चभिः समितिभिः समिताः, एवमित्युपदर्शने औपपातिकमाचाराङ्गसंबंधि प्रथम-मुपाङ्गं तत्र साधु गुणाः प्रबन्धेन व्यावर्ण्यन्ते, तदिहापि तेनैव क्रमेण द्रष्टव्यमित्यतिदेशः यावद्धूतम्—अपनीतं केशश्मश्रुलोमनखादिकं यैस्ते तथा (वृत्तिः पृष्ठ ७७ पंक्ति ५) चूर्णि-वृत्त्यनुसारेण सर्वोपि पाठः औपपातिकवद् युज्यते, वर्तमानादर्शेषु औपपातिकपाठाद् भिन्नो पाठो लभ्यते। औपपातिक (सूत्र २७) गतपाठः इत्थमस्ति—इरियासमिया भासा-समिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५. णत्थि णं तेसिं भगवंताणं कत्थ वि पडिबंधे भवइ। [से पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा][1] जण्णं-जण्णं दिसं इच्छंति तण्णं-तण्णं दिसं अप्पडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गंथा[2] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति॥

६६. तेसिं णं भगवंताणं इमा एयारूवा जायामायावित्ती होत्था, तं जहा—चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउदसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए भत्ते तिमासिए भत्ते चउम्मासिए भत्ते पंचमासिए भत्ते छम्मासिए भत्ते।

अदुत्तरं च णं उक्खित्तचरगा णिक्खित्तचरगा उक्खित्तणिक्खित्तचरगा अंतचरगा पंतचरगा लूहचरगा समुदाणचरगा संसट्ठचरगा असंसट्ठचरगा तज्जायसंसट्ठचरगा दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया पुट्ठलाभिया अपुट्ठलाभिया भिक्खलाभिया अभिक्खलाभिया अण्णातचरगा[3] उवणिहिया संखादत्तिया परिमियपिंडवाइया सुद्धेसणिया अंताहारा पंताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अंतजीवी पंतजीवी पुरिमड्ढिया आयंबिलिया णिव्विगइया अमज्जमंसासिणो णो णियामरसभोई[4] ठाणाइया[5] पडिमट्ठाइया[6] णेसज्जिया वीरासणिया दंडायतिया लगंडसाइणो अवाउडा अगत्तया अकंडुया अणिट्ठुहा धुतकेसमंसुरोमणहा सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्का चिट्ठंति॥

६७. ते णं एतेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पण्णंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खंति,

यारी अममा अकिंचणा निरुवलेवा, कंसपाईव मुक्कतोया, संखो इव निरंगणा, जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरुवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो इव गुत्तिंदिया, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंबणा, अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया, सागरो इव गंभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलं व सुद्धहियया, खग्गविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायत्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुय-हुयासणो इव तेयसा जलंता।

सूत्रकृताङ्गवृत्तिकारनिर्दिष्टः 'धूतकेसमंसुरोमनहा' इति पाठः औपपातिकस्य वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतोऽस्ति।

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. अणुप्पगंथा (क)।
३. °चरगा अण्णाइलोगचरगा (क); ° चरगा अण्णायलोगचरगा (ख)।
४. नितामं° (क)।
५. ठाणादीता (क); ठाणाईया (ख)।
६. पडिमट्ठादी (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खित्ता 'बहूइं भत्ताइं'[1] अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता'[2] जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणगे अदंतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धं[3] माणावमाणणाओ हीलणाओ णिंदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेंति, तमट्ठं आराहेत्ता चरमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं णिव्वाघायं णिरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेंति[4], तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

६८. 'एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवंति'[5] ॥

६९. अवरे पुण पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते णं तत्थ देवा भवंति महड्ढिया[6] महज्जुइया[7] •महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा° महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा[8] विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग[9]-पवर-वत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा[10] दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति ॥

७०. एस ठाणे आरिए[11] •केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे

---

१. बासाहिं (क, ख) ।

२. वृत्तौ एष पाठो नास्ति व्याख्यातः ।

३. लद्धावलद्धवित्तीओ (स्थानाङ्ग ९।६२) ।

४. °पाडेंति त्ता (ख) ।

५. अस्य सूत्रस्य रचना संक्षिप्ता वर्तते । 'पुव्वकम्मावसेसेणं' इत्यादि पदानि अग्रिमसूत्रगतानि इह ग्रहीतव्यानि । औपपातिके (सू० १६७) एतद्विषयकसूत्रस्य पूर्णा रचना लभ्यते—एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।

६. महिड्ढिया (क) ।

७. सं० पा०—महज्जुइया जाव महासोक्खा ।

८. °वत्थाभरणा (क) ।

९. 'कल्लाणगंध' (क, ख) औपपातिके (सू०४७) 'कल्लाणग' इत्येव पाठो लभ्यते । संभवतो लिपिदोषेणास्य स्थाने 'कल्लाणगंध' इति पाठो जातः ।

१०. °वणमालाधरा (क) ।

११. सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू। दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

मीसग-पक्ख-पदं

७१. अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[1] °धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू, एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया[2]। °एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण - पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया°। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरितावणकरा

---

१. सं० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं। २. सं० पा०—अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे।

कज्जंति, तओ वि 'एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए,'[1] एगच्चाओ अप्पडिविरया ॥

७२. से जहाणामए समणोवासगा भवंति—अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-'वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण'[2]-बंधमोक्ख-कुसला असहेज्जा[3] देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा, 'इणमो णिग्गंथिए पावयणे'[4] णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा[5] लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता[6] "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा 'चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसा'[7] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पीढ[8]-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं[9] तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

७३. ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पण्णंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता[10] कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु[11] महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते णं तत्थ देवा भवंति—महड्ढिया महज्जुइया महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुर-

---

१. × (क, ख); प्रत्योः मुद्रितप्रतिषु च नैष पाठो लभ्यते, किन्तु प्रकरणानुसारेणासौ युज्यते । वृत्तावसौ व्याख्यातोऽस्ति । औपपातिके (सूत्र १६१) ऽप्यसौ लभ्यते ।

२. वेयणानिज्जराकिरियाहिगरण (ख) ।

३. असहेज्ज (क); असाहेज्जं (ख) ।

४. निग्गंथे पावयणे (ओवाइय सू० १६२) ।

५. णिव्वितिगिच्छा (क) ।

६. अट्ठिमिजाए° (ख) ।

७. अचियत्तंतेउरपरघरपवेसा (क, ख); अचियत्तंतेउर° (वृ) ।

८. पाडिहारिएण य पीढ (ओवाइय सू० १६२)।

९. अहापडि° (ख) ।

१०. समाहि° (क) ।

११. सं० पा०—महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव एसट्ठाणे आरिए जाव एगंतसम्मे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति ।।

७४. एस ट्ठाणे आरिए केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे ° एगंतसम्मे साहू ।
तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ।।

तिपद-समोयार-पदं

७५. अविरइं पडुच्च बाले आहिज्जइ । विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ । विरयाविरइं पडुच्च बालपंडिए आहिज्जइ ।
तत्थ णं जा सा सव्वओ अविरई एसट्ठाणे आरंभट्ठाणे अणारिए[1] •अकेवले अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे ° असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।
तत्थ णं जा सा[2] विरई एसट्ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए[3] •केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे ° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।
तत्थ णं जा सा[4] विरयाविरई एसट्ठाणे आरंभाणारंभट्ठाणे, एसट्ठाणे[5] आरिए[6] •केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे ° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।।

दुपद-समोयार-पदं

७६. एवामेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोयरंति, तं जहा—धम्मे चेव, अधम्मे चेव । उवसंते चेव, अणुवसंते चेव ।
तत्थ णं जे से 'पढमट्ठाणस्स अधम्मपक्खस्स'[7] विभंगे एवमाहिए, तस्स[8] णं इमाइं तिण्णि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायाइं[9], तं जहा—किरियावाईणं

---

१. सं० पा०—अणारिए जाव असव्वदुक्ख° ।
२. सा सव्वओ (क, ख) ।
३. सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।
४. सा सव्वओ (क, ख) ।
५. अस्य पाठस्य पुनरुल्लेखः विशेषत्वसूचनार्थम्, यथा वृत्तिकार—एतदपि कथञ्चिदार्यमेव ।
६. सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।
७. पढमस्स ट्ठाणस्स अधम्मस्स° (क); पढमस्स अधम्म° (चू) ।
८. तत्थ (वृ) ।
९. अक्खायाइं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकिरियावाईणं अण्णाणियवाईणं वेणइयवाईणं । तेवि णिव्वाणमाहंसु[1], तेवि पलिमोक्खमाहंसु[2], तेवि लवंति सावगा, तेवि लवंति सावइत्तारो ।।

अहिंसा-पदं

७७. ते सव्वे पावादुया[3] आइगरा[4] धम्माणं, णाणापण्णा णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाणसंजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं[5] किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति ।

पुरिसे य सागणियाणं इंगालाणं पाइं[6] बहुपडिपुण्णं अओमएणं[7] संडासएणं गहाय ते सव्वे पावादुए[8] आइगरे धम्माणं, णाणापण्णे[9] •णाणाछंदे णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभे° णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावादुया[10] ! आइगरा[11] ! धम्माणं, णाणापण्णा[12] ! •णाणाछंदा ! णाणासीला ! णाणादिट्ठी ! णाणारुई ! णाणारंभा °! णाणाज्झवसाण-संजुत्ता ! इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं गहाय मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाणिणा धरेह । णो बहु संडासगं संसारियं कुज्जा, णो बहु अग्गिथंभणियं कुज्जा, णो बहु साहम्मियवेयावडियं कुज्जा, णो बहु परधम्मियवेयावडियं कुज्जा, उज्जुया णियागपडिवण्णा अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह—इति वुच्चा[13] से पुरिसे तेसिं पावादुयाणं[14] तं सागणियाणं इंगालाणं[15] पाइं बहुपडिपुण्णं 'अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिसु णिसिरति'[16] ।

तए णं ते पावादुया[17] आइगरा धम्माणं, णाणापण्णा[18] •णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा° णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति[19] ।

तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावादुए आइगरे धम्माणं,[20] •णाणापण्णे णाणाछंदे

---

१. निज्जाण° (क) परिणिव्वाण° (वृ) ।
२. परि° (ख) ।
३. पावाइया (क, ख) ।
४. आइकरा (क) ।
५. मंडल° (क) ।
६. पायं (क) ।
७. अतोमतेण (क) ।
८. पावाइए (क, ख) ।
९. सं० पा०—णाणापण्णे जाव णाणाज्झव-साण° ।
१०. पावाइया (क, ख) ।
११. आदियरा (क) ।
१२. सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झव-साण° ।
१३. वच्चा (क, ख) ।
१४. पावादियाणं (क, ख) ।
१५. अंगालाणं (क) ।
१६. नागार्जुनीयास्तु 'अओमएण संडासएण गहाय इंगाले णिसरति (चू) ।
१७. पावाइया (क); पावादिया (ख) ।
१८. सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झव-साण° ।
१९. पडिसाहरेंति (क) ।
२०. सं० पा०—धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण° ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभे॰ णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावादुया ! आइगरा ! धम्माणं, णाणापण्णा[1] ! •णाणाछंदा ! णाणासीला ! णाणादिट्ठी ! णाणारुई ! णाणारंभा॰ ! णाणाज्झवसाण-संजुत्ता ! 'कम्हा णं तुब्भे पाणिं पडिसाहरह'[2] ?

'पाणी णो डज्झेज्जा'[3] ?

दड्ढे किं भविस्सइ ?

दुक्खं ।

दुक्खं ति मण्णमाणा पडिसाहरह[4] ?

एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे ।

पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ॥

७८. तत्थ णं जे ते समणमाहणा एवमाइक्खंति[5], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं॰ परूवेंति—"सव्वे पाणा[6] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे॰ सत्ता हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परितावेयव्वा किलामेयव्वा[7] उद्दवेयव्वा"[7] –ते आगंतु[8] छेयाए ते आगंतु[9] भेयाए[10] ते आगंतु[11] जाइ-जरा-मरण-जोणिजम्मण-संसार-पुणब्भव-गब्भवास-भवपवंच-कलंकलीभागिणो भविस्संति । ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणाणं बहूणं तज्जणाणं बहूणं तालणाणं बहूणं अंदुबंधणाणं[12] बहूणं घोलणाणं बहूणं माइमरणाणं बहूणं पिइमरणाणं बहूणं भाइमरणाणं बहूणं भगिणीमरणाणं बहूणं भज्जामरणाणं बहूणं पुत्तमरणाणं बहूणं धूयमरणाणं बहूणं सुण्हामरणाणं बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पिय-विप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं[13] आभागिणो भविस्संति । अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत[14]-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो

---

१. सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झव-साण॰ ।

२. ॰पडिसाहरेह (क); कम्हा पाणिं णो पसा-रेह (चू) ।

३. पाणी डज्झेज्ज (चू) ।

४. पाणिं ण पसारेह (चू) ।

५. सं० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेंति ।

६. सं० पा०—पाणा जाव सत्ता ।

७. आयारो ४।१,२०,२२,२३;५।१०१ सूयगडो १।५६,५७;२।१४ उल्लिखितसूत्रेषु एष पाठो नास्ति ।

८,९. आगंतु (क); आगंतं (ख) ।

१०. भेयाए जाव (क, ख); अत्रायं शब्दोनाव-श्यकः प्रतिभाति । चूर्णौ 'ते आगंतु छेयाए जाव कलंकलीभावभागिणो भविस्संति' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते । प्रत्योः संक्षिप्तपाठस्य पूर्णपाठस्य च मिश्रणं जातमिति प्रतीयते ।

११. आगंतु (क) ।

१२. अंदुबंधणाणं जाव (क, ख) अयमपि 'जाव' शब्दो नावश्यकः प्रतिभाति ।

१३. दुम्मणसाणं (क) ।

१४. चतुरंत (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुपरियट्टिस्संति । ते णो सिज्झिस्संति णो बुज्झिस्संति[1] •णो मुच्चिस्संति णो परिणिव्वाइस्संति° णो सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे ।

पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ।।

७९. तत्थ णं जे ते समणमाहणा एवमाइक्खंति[2], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण किलामेयव्वा ण उद्दवेयव्वा"—ते णो आगंतु छेयाए ते णो आगंतु भेयाए 'ते णो आगंतु जाइ'[3]-जरा-मरण-जोणिजम्मण - संसार - पुणब्भव - गब्भवास - भवपवंच - कलंकलीभागिणो भविस्संति । ते णो बहूणं दंडणाणं[4] •णो बहूणं मुंडणाणं णो बहूणं तज्जणाणं णो बहूणं तालणाणं णो बहूणं अंदुबंधणाणं णो बहूणं घोलणाणं णो बहूणं माइमरणाणं णो बहूणं पिइमरणाणं णो बहूणं भाइमरणाणं णो बहूणं भगिणीमरणाणं णो बहूणं भज्जामरणाणं णो बहूणं पुत्तमरणाणं णो बहूणं धूयमरणाणं णो बहूणं सुण्हामरणाणं णो बहूणं दारिद्दाणं णो बहूणं दोहग्गाणं णो बहूणं अप्पियसंवासाणं णो बहूणं पिय-विप्पओगाणं° णो बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागिणो भविस्संति । अणाइयं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो णो अणुपरियट्टिस्संति । ते सिज्झिस्संति[5] •बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ।।

उवसंहार-पदं

८०. इच्चेतेहिं बारसहिं किरियाठाणेहिं वट्टमाणा जीवा णो सिज्झिंसु णो बुज्झिंसु णो मुच्चिंसु णो परिणिव्वाइंसु णो सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा णो करेंति वा णो करिस्संति वा ।

एयंसि[6] चेव तेरसमे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिंसु बुज्झिंसु मुच्चिंसु परिणिव्वाइंसु सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा ।।

८१. एवं से भिक्खू आयट्ठी आयहिए आयगुत्ते आयजोगी[7] आयपरक्कमे[8] आयरक्खिए आयाणुकंपए आयणिप्फेडए[9] आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. सं० पा०—बुज्झिस्संति जाव णो सव्व° ।
२. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति ।
३. जाव (क) ।
४. सं० पा०—दंडणाणं जाव नो बहूणं ।
५. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्व° ।
६. एतम्मि (क) ।
७. °जोगे (ख) ।
८. × (ख, वृ) ।
९. °प्फोडए (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं

आहारपरिण्णा

उक्खेव-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु आहारपरिण्णा णामज्झयणे । तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा सव्वओ[1] सव्वावंति च णं लोगंसि 'चत्तारि बीयकाया एवमाहिज्जंति, तं जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया'[2] ।।

थावरकाय-पगरणं

पुढविजोणियरुक्खस्स आहार-पदं

२. तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा[3], 'तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा'[4], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं[5] णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा

---

१. सव्वाओ (क,चू) ।

२. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—"वणस्सइकाइयाण पंचविहा बीजवक्कंती एवमाहिज्जइ, तं जहा—अग्गमूलपोरुक्खंधबीयरुहा छट्ठावि एगिंदिया संमुच्छिमा बीया जायंते" (वृ, चू) ।

३. पुढविवुक्कमा (क, ख, वृ); वृत्तिकृता सर्वत्र व्युत्क्रम—पदं व्याख्यातमस्ति, किन्तु चूर्णि-;रेण सर्वत्र अवक्रमपदं व्याख्यातम् आयुर्वेद-ग्रन्थेष्वपि अस्मिन्नर्थे अवक्रान्तिशब्दो लभ्यते ।

४ °तदुवक्कमा (क, ख); °तदुव्वुक्कमा (वृ); केसिं चि आलावगो चेव एस णत्थि, जेसिं पि अत्थि तेसिं पि उक्तार्थ एव (चू) ।

५. प्रत्योः अत्र 'तेसिं' पाठो लभ्यते । असौ अशुद्धः प्रतिभाति । चूर्णौ वृत्तौ च 'तासिं' इति पाठो विद्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं[1] [तस-पाणसरीरं ?][2]। 'णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति'[3]। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं[4] सारूविकडं[5] संतं ['सव्वप्पणत्ताए आहारेंति'[6]]।

---

१. वणप्फइ° (क)।

२. वनस्पतेरालापकानां पद्धतिद्वयं विद्यते। प्रथमायां पद्धतौ द्विचत्वारिंशत् आलापकाः सन्ति। द्वितीयस्यां च द्वात्रिंशत् आलापकाः। द्वयोः पद्धत्योः को भेदोऽस्तीति चूर्णिव्याख्यया न ज्ञातुं शक्यते। वृत्त्या दीपिकया च तत्रैका भेदरेखा खचितास्ति। प्रथमपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं' एतावान् पाठोस्ति। द्वितीयपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं'। अत्र 'तसपाणसरीरं' इति विशिष्टमस्ति। वृत्तिकार-दीपिकाकाराभ्यां द्वितीयपद्धते र्व्याख्याया अन्ते उक्तवैशिष्ट्यस्य समर्थनं कृतमस्ति, यथा—त्रसानां प्राणिनां शरीरमाहारयन्त्येतदवसाने द्रष्टव्यम् (वृ)। त्रसानां शरीरमाहारयन्तीति अंते ज्ञेयम् (दीपिका)। हस्तलिखितादर्शेषु प्रथमपद्धतेरालापकाः पूर्ववद् वर्तन्ते। द्वितीय-पद्धतेरालापकेषु 'तसपाणत्ताए विउट्टंति' इति वैशिष्ट्यमस्ति। द्रष्टव्यः ४४ सूत्रस्य पादटिप्पणगतः संक्षिप्तपाठः।

यदि वृत्त्यनुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतियोनिकानां त्रसानां निरूपणं नान्यत्रोपलभ्यते।

यदि च आदर्शानुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतेः त्रसप्राणशरीरस्य आहारनिरूपणं नान्यत्रोपलभ्यते।

एतामुभयमुखीं समस्यां समाधातुं अस्माभिः प्रथमपद्धतेरालापकेषु 'तसपाणसरीरं' इति पाठः कोष्ठके नियोजितः, द्वितीयपद्धतेरालापकेषु च आदर्शानुसारी पाठः स्वीकृतः। 'तसपाणसरीरं' इति पाठस्य नियोजनं निराधारं नास्ति। 'णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति' इति पाठेन स्वयमेव त्रसप्राणशरीरस्याहारः प्रतिपादितो भवति। वृत्तिकारेणाप्यस्य समर्थनं क्रियते—किं बहुनोक्तेन ?, नानाविधानां त्रसस्थावराणां प्राणिनां यच्छरीरं तत्ते समुत्पद्यमानाः 'अचित्त' मिति स्वकायेनावष्टभ्य प्रासुकीकुर्वन्ति (वृ)। यदि वनस्पतिः त्रसप्राणशरीरस्याहारं न कुर्यात् तर्हि उक्तपाठस्य संगतिः कथं स्यात् ? अप्कायादिसूत्रेष्वपि इत्थमेव लभ्यते। तेन उक्तपाठनियोजनं सम्यक्प्रतिभाति।

३. नासौ पाठश्चूर्णौ व्याख्यातः। तत्रासौ पाठान्तररूपेण उल्लिखितोस्ति, नागार्जुनीयास्तु अवरं च णं असंबद्धं पुढविसरीरं जाव णाणाविधाणं तसथावराणं पाणाणं शरीरं अचित्तं कुव्वंति जंतवो, पुव्वविउट्टं चेव जीवेणं जीवसहगतं आहारत्ताए गेण्हति, तंपि जया सरीरत्ताए परिणामेति तदा अचेतनीकरोति, कथं वा अण्णेण जीवेण परिग्गहितं ताव अण्णसरीरत्ताए परिणमेति ? जया पुण परिचत्तं भवति, जीवेण जेणेव सरीरगं णिव्वत्तितमासी तदा अण्णो जीवो आहरेति, (चू)।

४. विप्प° (क, ख)।

५. सारूवियकडं (क, ख)।

६. आदर्शयोः 'संतं' इति पदस्याग्रे क्रियापदं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अवरे वि य णं'[१] तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा[२], तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा[३], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[४] पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा,[५] तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा[६], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[७] रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं[८] पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा[९] °णाणागंधा

नोपलभ्यते । चूर्णौ 'संतं' इदि पदं नास्ति व्याख्यातं, किन्तु 'सव्वप्पणत्ताए आहारेंति' इति क्रियापदं लभ्यते । वृत्तौ च सत्पदस्याग्रे तन्मयतां प्रतिपद्यते इति विवृतमस्ति ।

१. नागार्जुनीयास्तु—एवं सम्प्रतिपन्नाः—अवरे वि य णं, कतरं ? संबद्धमसंबद्धं वा, जो पुढविकाइयसरीरेहिं तस्यापतितैर्भोगैः संश्लेष इत्यर्थः, तेसिं तं पुढवितप्पढमताए सिणेहमाहारयंति, असंबद्धं पुण जं पासत्तो पुढविसरीरं वा ते पुण पण्णत्ती आलावगा वि भणंति (चू) ।

२. रुक्खवुक्कमा (ख, वृ) ।

३. तदुवक्कमा (ख, वृ) ।

४. °वक्कम (क); °वुक्कमा (ख, वृ) ।

५. रुक्खवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र ।

६. तदुवक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र ।

७. तत्थवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र ।

८. सरीरगं (ख) ।

९. सं० पा०—णाणावण्णा जाव ते जीवा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया °। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं[1] •पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं[2] •पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं° बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा[3] •णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया °णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं

६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए[4] विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[6] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[7]

---

१. सं० पा०—सरीरं जाव सारूविकडं।
२. सं० पा०—पवालाणं जाव बीयाणं।
३. सं० पा०—णाणागंधा जाव णाणाविह°।
४. अज्झोरुह° (क) सर्वत्र।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं।
६. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
७. सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं[1] अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[2] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[3] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।

८. अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[4] •अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तस-पाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[6] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[7] •अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए[8] •कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए° बीयत्ताए विउट्टंति ।

---

१. अज्झारोहजोणियाणं (ख), अशुद्धं प्रतिभाति ।
२. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।
३. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।
४. सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं ।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।
६. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।
७. सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं ।
८. सं० पा०—मूलत्ताए जाव बीयत्ताए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति[1]—•ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तस-पाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]° ॥

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं[2] •कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं° बीयाणं सरीरा णाणावण्णा[3] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

पुढविजोणियतणस्स आहार-पदं

१०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[4] •पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा° णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति[5]—•ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया°। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

११. [6]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ॥

---

१. सं० पा०— सिणेहमाहारेंति जाव अवरे।
२. सं० पा०—मूलाणं जाव बीयाणं।
३. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
४. सं० पा०—पुढविसंभवा जाव णाणाविह°।
५. सं० पा०—सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा।
६. सं० पा०—एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

१२. [1]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]॥

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

१३. [2]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कम्मा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

पुढविजोणियओसहिस्स-आहार-पदं

१४. [3]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा,

---

१. सं० पा०—एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति। तणजोणियं तणसरीरं च आहारेंति जाव मक्खायं।

२. सं० पा०—एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति। ते जीवा जाव मक्खायं।

३. सं० पा०—एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु ओसहित्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

१५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा, पुढविजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

१६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

१७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

पुढविजोणियहरियस्स आहार-पदं

१८. [1]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

१९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं

---

१. सं० पा०—एवं हरियाण वि चत्तारि आलावगा।

सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।
अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति ।
ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।
अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया. ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति ।
ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।
अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

पुढविजोणियकुहणस्स आहार-पदं

२२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[1] °पुढविवक्कमा,

---

१. सं० पा०—पुढविसंभवा जाव कम्म° ।

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए[1] कायत्ताए कुहणत्ताए कंदुकत्ताए[2] उव्वेहलियत्ताए णिव्वेहलियत्ताए सछ [त्त ?] त्ताए[3] छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए[4] कूरत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं आयाणं[6] •कायाणं कुहणाणं कंदुकाणं उव्वेहलियाणं णिव्वेहलियाणं सछत्ताणं छत्तगाणं वासाणियाणं° कूराणं सरीरा णाणावण्णा[7] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं। 'एक्को चेव आलावगो, सेसा तिण्णि णत्थि'[8] ॥

उदगजोणियरुक्खस्स आहार-पदं

२३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[9] •उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[10] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा[11] •णाणागंधा

---

१. आयत्ताए वायत्ताए (क)।
२. कुदुकत्ताए (क); कंदुत्ताए (ख)।
३. सछत्ताए सज्झत्ताए (क)।
४. वासि° (क)।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
६. आयत्ताणं (ख); सं० पा०—आयाणं जाव कूराणं।
७. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
८. कुहणेषु त्वेक एवालापको द्रष्टव्यः, तद्योनिकानामपरेषामभावादिति भावः (वृ)।
९. सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।
१०. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
११. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति॰ मक्खायं॥

२४. •[1]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

२५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

२६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाण-

---

१. सं० पा०—जहा पुढविजोणियाण रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारोहाण वि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं

२७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

२८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

२९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

३०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

उदगजोणियतणस्स आहार-पदं

३१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु तणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

३२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाण-सरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

३३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

३४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाण-सरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

उदगजोणियओसहिस्स आहार-पदं

३५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु ओसहित्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

३६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

३७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तवक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

३८. अहावरं पुरक्खायं - इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

उदगजोणियहरियस्स आहार-पदं

३९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा, कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं °॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदगजोणियसेवालादिस्स आहार-पदं

४३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[1] •उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु[2] उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलंबुगत्ताए हढत्ताए[3] कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए णलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगंधियत्ताए पोंडरीयत्ताए महापोंडरीयत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए कल्हारत्ताए कोकणयत्ताए अरविंदत्ताए तामरसत्ताए भिसत्ताए भिसमुणालत्ताए पुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए[4] विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं अवगाणं पणगाणं सेवालाणं कलंबुगाणं हढाणं कसेरुगाणं कच्छभाणियाणं उप्पलाणं पउमाणं कुमुयाणं णलिणाणं सुभगाणं सोगंधियाणं पोंडरीयाणं महापोंडरीयाणं सयपत्ताणं सहस्सपत्ताणं कल्हाराणं कोकणयाणं अरविंदाणं तामरसाणं भिसाणं भिसमुणालाणं पुक्खलाणं पुक्खलच्छिभगाणं[6] सरीरा णाणावण्णा[7] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

रुक्खजोणियतसपाणस्स आहार-पदं

४४. [8]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा,

---

१. सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।
२. × (क, ख)।
३. हठत्ताए (क)।
४. पोक्खलत्थिभगत्ताए (क)।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
६. पोक्खलत्थिभगत्ताणं (क, ख)।
७. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
८. सं० पा०—अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तेहिं चेव (१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं, (२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं, (३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं। (४) रुक्खजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं; (५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं, (६) अज्झोरुहजोणिएहिं जाव बीएहिं। (७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं, (८) तणजोणिएहिं तणेहिं, (९) तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं। (१०-१२) एवं ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा। (१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए[1] विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

आलावगा।

(१६) पुढविजोणिएहिं आएहिं जाव कूरेहिं।

(१) उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं, (२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं, (३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं।

(४-६) एवं अज्झोरुहेहिं वि तिण्णि।

(७-९) तणेहिं वि तिण्णि आलावगा।

(१०-१२) ओसहीहिं वि तिण्णि।

(१३-१५) हरिएहिं वि तिण्णि।

(१६) उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं, उदगजोणियाणं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाण ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झोरुहाणं तणाणं ओसहीणं हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कुरवाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कुरवजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं।

१. चूर्णौ वृत्तौ च सर्वत्रापि नासौ व्याख्यातः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

४६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढवि-सरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणा-विहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

४७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाण-सरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परि-विद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्व-प्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

४८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणिया-णेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

४९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

५८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहि पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

कुहणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं आएहिं काएहिं कुहणेहिं कंदुकेहिं उव्वेहलिएहिं णिव्वेहलिएहिं सछत्तेहिं छत्तगेहिं वासाणिएहिं कूरेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं आयाणं कायाणं कुहणाणं कंदुकाणं उव्वेहलियाणं णिव्वेहलियाणं सछत्ताणं छत्तगाणं वासाणियाणं कूराणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं आयजोणियाणं कायजोणियाणं कुहणजोणियाणं कंदुकजोणियाणं उव्वेहलियजोणियाणं णिव्वेहलियजोणियाणं सछत्तजोणियाणं छत्तगजोणियाणं वासाणियजोणियाणं कूरजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं । एक्को चेव आलावगो, सेसा दो णत्थि ।

रुक्खजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्ख-जोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाण-सरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परि-विद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणा-गंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढवि-सरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणा-विहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहा-रेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणा-फासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोव-वण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवग्गा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियाणं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति - ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

सेवालादिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं उदगेहिं अवगेहिं पणगेहिं सेवालेहिं कलंबुगेहिं हढेहिं कसेरुगेहिं कच्छभाणिएहिं उप्पलेहिं पउमेहिं कुमुएहिं णलिणेहिं सुभगेहिं सोगंधिएहिं पोंडरीएहिं महापोंडरीएहिं सयपत्तेहिं सहस्सपत्तेहिं कल्हारेहिं कोकणएहिं अरविंदेहिं तामरसेहिं भिसेहिं भिसमुणालेहिं पुक्खलेहिं पुक्खलच्छिभगेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं अवगाणं पणगाणं सेवालाणं कलंबुगाणं हढाणं कसेरुगाणं कच्छभाणियाणं उप्पलाणं पउमाणं कुमुयाणं णलिणाणं सुभगाणं सोगंधियाणं पोंडरीयाणं महापोंडरीयाणं सयपत्ताणं सहस्सपत्ताणं कल्हाराणं कोकणयाणं अरविंदाणं तामरसाणं भिसाणं भिसमुणालाणं पुक्खलाणं पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं पणगजोणियाणं सेवाल-जोणियाणं कलंबुगजोणियाणं हढजोणियाणं कसेरुगजोणियाणं कच्छभाणिय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोणियाणं उप्पलजोणियाणं पउमजोणियाणं कुमुयजोणियाणं णलिणजोणियाणं सुभगजोणियाणं सोगंधियजोणियाणं पोंडरीयजोणियाणं महापोंडरीयजोणियाणं सयपत्तजोणियाणं सहस्सपत्तजोणियाणं कल्हारजोणियाणं कोकणयजोणियाणं अरविंदजोणियाणं तामरसजोणियाणं भिसजोणियाणं भिसमुणालजोणियाणं पुक्खलजोणियाणं पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

तसकाय-पगरणं

मणुस्सस्स आहार-पदं

७६. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं मणुस्साणं, तं जहा—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं[1]। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं[2] इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए[3], एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

'ते जीवा माउओयं[4] पिउसुक्कं[5] तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति'[6]। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ[7] आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[8], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा इत्थिं वेगया[9] जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा 'माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा ओयणं कुम्मासं'[10] तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[11] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं

---

१. मिलक्खुयाणं (क)।

२. अहावकासेणं (क, ख)।

३. व्या० वि०—व्याकरणदृष्ट्या सप्तम्येकवचने दीर्घत्वं स्यात्।

४. माओउयं (चू)।

५. पिय° (ख)।

६. चूर्णौ असौ पाठः —माओउयं सोणियं पितुः शुक्रम्—एतावानेव व्याख्यातोस्ति, वृत्तौ च नास्ति व्याख्यातः।

७. रसविहीओ (क); रसविगईओ (चू)।

८. पलियागमणुचिण्णा (क); पलिभागमणु-चिन्ना (ख)।

९. वेगइया (ख) सर्वत्र।

१०. चूर्णौ 'माउक्खीर' शब्दस्याऽनन्तरमेव 'सप्पि' शब्दः व्याख्यातः, यथा—खीरं मातुः स्तन्यं, सप्पि घृत वा णवणीतं वा। वृत्तौ 'वुड्ढा' इति शब्दस्याऽनन्तरं—नवनीतदध्योदनादिकं यावत्कुल्माषान् भुञ्जते। प्रतिषु नेत्थं लभ्यते।

११. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं मणुस्सगाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं सरीरा णाणावण्णा[1] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा° भवंति त्ति मक्खायं॥

जलचरस्स आहार-पदं

७७. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं जलचराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—मच्छाणं[2] °कच्छभाणं गाहाणं मगराणं° सुंसुमाराणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[3]°कडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति,° तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[4], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति, से[5] अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा आउसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[6] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छाणं[7] °कच्छभाणं गाहाणं मगराणं° सुंसुमाराणं सरीरा णाणावण्णा[8] °णाणागंधा

---

१. सं० पा०—णाणावण्णा जाव भवंति।

२. सं० पा०—मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं।

३. सं० पा०—कम्म तहेव जाव तओ।

४. पलिभागमणुचिन्ना (क); पलितागमणुचिन्ना (ख)।

५. जे (क)।

६. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

७. सं० पा०—मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं।

८. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

चउप्पयथलचरस्स आहार-पदं

७८. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्फयाणं[1]। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[2]°कडाए जोणिए, एत्थ णं° मेहुणवत्तिए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए[3]°णपुंसगत्ताए° विउट्टंति।
ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं[4]°तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा° इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5]°आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं चउप्पयथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एगखुराणं[6]°दुखुराणं गंडीपदाणं° सणप्फयाणं सरीरा णाणावण्णा[7]°णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

उरपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं

७९. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स[8]°य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं

---

१. सणपयाणं (क)।
२. सं० पा०—कम्म जाव मेहुणवत्तिए।
३. सं० पा०—पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति।
४. सं० पा०—एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थिं।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
६. सं० पा०—एगखुराणं जाव सणप्फयाणं।
७. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
८. सं० पा०—पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहार-माहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेंति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा° अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं 'वेगया जणयंति'[1], णपुंसगं 'वेगया जणयंति'[2]। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अहीणं[4] °अयगराणं आसालियाणं° महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा[5] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

भुयपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं

८०. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—गोहाणं णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं[6] विस्संभराणं मूसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं बिरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य[7] °कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहार-माहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे

१,२. पि (क, ख)।

३. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

४. सं० पा०—अहीणं जाव महोरगाणं

५. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

६. घरकोल्लि° (क)।

७. सं० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलचरतिरिक्खजोणियाणं गोहाणं[1] °णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं विस्संभराणं मूसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं विरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

खहचरस्स आहार-पदं

८१. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं[2], तं जहा—चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए °[3]पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति°। ते जीवा डहरा समाणा माउगायसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेणं[4] वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

---

१. सं० पा०—गोहाणं जाव मक्खायं।
२. खचर° (क)।
३. सं० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं°।
४. °पुव्वेणं च णं (क)।
५. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चम्मपक्खीणं[1] •लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

विगलिंदियस्स आहार-पदं

८२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[2] णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अणुसूयगाणं[4] सरीरा णाणावण्णा[5] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीर-पोग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

८३. •[6]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं मणुस्साणं तिरिक्खजोणियाण य सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा दुरूवसंभवत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं मणुस्साणं तिरिक्खजोणियाण य सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति ।

---

१. सं० पा०—चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं ।

२. तत्थोवक्कमा (ख); ८२ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र उपक्रम्य' तथा ८५ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र व्युत्क्रम्य' इति व्याख्यातमस्ति । अन्यत्र सर्वत्रापि 'तत्र व्युत्क्रमा' इति व्याख्यातम् । लिपिदोषेणैकरूपस्यापि पाठस्य भिन्नता जातेति प्रतीयते । सर्वत्रापि तत्थावक्कम्म (तत्रावक्रम्य) इति पाठो युज्यते । किन्तु आदर्शेन्यत्रासौ पाठो नोपलब्धस्तेन प्रायः सर्वत्रापि 'तत्थवक्कमा' इति पाठः स्वीकृतः ।

३. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं ।

४. अणुसूयाणं (क) ।

५. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

६. सं० पा०—एवं दुरूवसंभवत्ताए एवं खुरदुगत्ताए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं मणुस्सतिरिक्खजोणियाणं दुरूवसंभवाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविह-सरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।

८४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कम्मा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा खुरदुगत्ताए[1] विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं खुरदुगाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीर-पोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ।।

आउकायस्स आहार-पदं

८५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[2] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा [उदगत्ताए विउट्टंति ?] । तं सरीरगं वायसंसिद्धं वायसंगहियं वायपरिगयं उड्ढंवाएसु उड्ढभागी भवइ, अहेवाएसु अहेभागी भवइ, तिरियंवाएसु तिरियभागी भवइ, तं जहा—उस्सा[3] हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[4] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

---

१. खुरुदुगत्ताए (चू) ।
२. सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म° ।
३. ओसा (क) ।
४. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं उस्साणं[1] •हिमगाणं महिगाणं करगाणं हरतणुगाणं° सुद्धोदगाणं सरीरा णाणावण्णा[2] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

८६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[3] •उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[4] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावण्णा[5] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

८७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[6] •उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[7] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावण्णा[8] •णाणागंधा णासारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

८८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[9] •उदगसंभवा उदगवक्कमा,

---

१. सं० पा०—उस्साणं जाव सुद्धोदगाणं।
२. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
३. सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।
४. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
५. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
६. सं० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°; उदगजोणियाणं (ख) अशुद्धं प्रतिभाति।
७. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
८. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
९. सं० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[१] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा[२] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

अगणिकायस्स आहार-पदं

८९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[३] •णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्ते वा अगणिकायत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[४] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा[५] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

९०. •[६]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं।

---

१. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
२. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
३. सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।
४. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
५. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
६. सं० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्ससंभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अगणिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं°॥

वाउकायस्स आहार-पदं

६३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणिया-

---

१. सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टंति ।

[1]•ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

९४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

९५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]

अवरे वि य णं तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

---

१. सं० पा०—जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु तसपाणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं वाउजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ।।

पुढविकायस्स आहार-पदं

६७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवित्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए जाव[2] सूरकंतत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

---

१. सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

२. जाव शब्दस्य पूरकपाठः—इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ—

१. पुढवी य सक्करा वालुया य,
उवले सिला य लोणूसे।
अय तउय तम्ब सीसग,
रुप्प सुवण्णे य वइरे य ।।

२. हरियाले हिंगुलुए,
मणोसिला सासगंजणपवाले।
अब्भपडलब्भवालुय,
बायरकाए मणिविहाणा ।।

३. गोमेज्जए य रुयए,
अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय मसारगल्ले,
भुयमोयगइंदनीले य ।।

४. चंदणगेरुयहंसगब्भ,
पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे।
चंदप्पभवेरुलिए,
जलकंते सूरकंते य ।।

एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ—(क, ख)। उल्लिखितसंग्रहगाथानां चूर्णौ वृत्तौ च कोपि संकेतो नोपलभ्यते।

३. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं० संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं[1] •सक्कराणं वालुयाणं जाव० सूरकंताणं सरीरा णाणावण्णा[2] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति० मक्खायं ॥

९८. [3]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

९९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

१००. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

---

१. सं० पा०—पुढवीणं जाव सूरकंताणं ।
२. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।
३. सं० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ।।

निक्खेव-पदं

१०१. अहावरं पुरक्खायं—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, सरीरजोणिया सरीरसंभवा सरीरवक्कमा, सरीराहारा कम्मोवगा कम्मणियाणा कम्मगइया कम्मठिइया कम्मणा[1] चेव विप्परियासमुवेंति ।।

१०२. सेवमायाणह[2] सेवमायाणित्ता[3] आहारगुत्ते समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ।।

१. कम्मुणा (क)।

२, ३. से एव° (ख)।

चउत्थं अज्झयणं

पच्चक्खाणकिरिया

पइण्णा-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु पच्चक्खाणकिरियाणामज्झयणे। तस्स णं अयमट्ठे—आया अपच्चक्खाणी यावि भवइ। आया अकिरियाकुसले यावि भवइ। आया मिच्छासंठिए यावि भवइ। आया एगंतदंडे यावि भवइ। आया एगंतबाले यावि भवइ। आया एगंतसुत्ते यावि भवइ। आया अवियार-मण-वयण-काय-वक्के यावि भवइ। आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय[1]-पावकम्मे यावि भवइ।

एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते। से बाले अवियार-मण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ॥

चोयगस्स अक्खेव-पदं

२. तत्थ चोयए पण्णवगं एवं वयासी—असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण[2]-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे णो कज्जइ।

कस्स णं तं हेउं ?

चोयए एवं ब्रवीति[3]—अण्णयरेणं मणेणं पावएणं मणवत्तिए[4] पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरीए वईए पावियाए वइवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरेणं

---

१. °अपच्चक्खाय (ख)।

२. वयस (क, ख)।

३. बवीति (क्व)।

४. °पत्तिए (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काएणं पावएणं कायवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, हणंतस्स समणक्खस्स सवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि पासओ—एवंगुणजातीयस्स पावे कम्मे कज्जइ ।

पुणरवि चोयए एवं ब्रवीति—तत्थणं जेते एवमाहंसु—असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—[तत्थ णं जे ते एवमाहंसु][1] मिच्छं ते एवमाहंसु ।।

हेउ-पदं

३. तत्थ पण्णवए चोयगं एवं वयासी—जं मए पुव्वं वुत्तं असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—तं सम्मं ।

कस्स णं तं हेउं ?

आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[2] °आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तस-काइया । इच्चेतेहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे, णिच्चं पसढ-विओवात[3]-चित्त-दंडे, तं जहा—'पाणाइवाए[4] °मुसावाए अदिण्णा-दाणे मेहुणे° परिग्गहे कोहे[5] °माणे मायाए लोहे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरईए मायामोसे° मिच्छादंसणसल्ले'[6] ।।

---

१. एतत् पुनरुक्तं वर्तते तेन कोष्ठके विन्यस्तम् ।

२. सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया ।

३. विउवाय (क, ख) ।

४. सं० पा०—पाणाइवाए जाव परिग्गहे ।

५. सं० पा० —कोहे जाव मिच्छा° ।

६. प्राणातिपातादारभ्य मिथ्यादर्शनशल्यपर्यन्तं संक्षिप्तपाठो वर्तते । चूर्णिवृत्त्योरनुसारेण स एवं विस्तृतो भवति—पाणाइवाए आया अपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-पाणाइवायचित्तदंडे भवइ । मुसावाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-मुसावायचित्तदंडे भवइ । अदिण्णादाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-अदिण्णादाणचित्तदंडे भवइ । मेहुणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-मेहुणचित्तदंडे भवइ । परिग्गहे आया अप्पडि-हयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपरिग्गह-चित्तदंडे भवइ । कोहे आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढकोहचित्तदंडे भवइ । माणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमाणचित्तदंडे भवइ । मायाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमायचित्तदंडे भवइ । लोहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-लोहचित्तदंडे भवइ । पेज्जे आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपेज्जचित्तदंडे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठंत-पदं

४. आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठंते पण्णत्ते—से जहाणामए वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूण वहिस्सामित्ति पहारेमाणे ।

से किं णु हु णाम से वहए 'तस्स वा'[1] गाहावइस्स तस्स[2] वा गाहावइपुत्तस्स तस्स[3] वा रण्णो तस्स[4] वा रायपुरिसस्स[5] खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामित्ति पहारेमाणे[6] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्त-भूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[7]-चित्तदंडे भवइ ? एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरे ?

चोयए—हंता भवइ ।।

उवणय-पदं

५. आचार्य आह—जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो तस्स वा रायपुरिसस्स खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूण वहिस्सामित्ति[8] पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[9]-चित्तदंडे, एवामेव बाले वि सव्वेसिं पाणाणं[10] °सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा

भवइ । दोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढदोसचित्तदंडे भवइ । कलहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढकलहचित्तदंडे भवइ । अब्भक्खाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढअब्भक्खाणचित्तदंडे भवइ । पेसुण्णे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-पेसुण्णचित्तदंडे भवइ । परपरिवाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-परपरिवायचित्तदंडे भवइ । अरइरईए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-अरइरईचित्तदंडे भवइ । मायामोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढ-मायामोसचित्तदंडे भवइ । मिच्छादंसणसल्ले आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमिच्छादंसणसल्लचित्तदंडे भवइ ।

१. × (ख) ।
२, ३, ४. × (ख) ।
५. °पुरिसस्स वा (ख) ।
६. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—'अप्पणो अक्खणयाए तस्स वा पुरिसस्स छिद्दं अलभमाणे णो वहेइ, तं जया मे खणो भविस्सइ तस्स पुरिसस्स छिद्दं लंभिस्सामि तया मे स पुरिसे अवस्सं वहेयव्वे भविस्सइ, एवं मणो पहारेमाणे (चू, वृ) ।
७. विउवाय (क, ख) ।
८. °मीति (क) ।
९. वित्तिवाय (क) ।
१०. सं० पा०—पाणाणं जाव सव्वेसिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[1]-चित्तदंडे, तं जहा—पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले[3]।

एस[4] खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते 'यावि भवइ'[5]।

से बाले अवियारमण-वयण[6]-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ॥

णिगमण-पदं

६. जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स[7] °तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो° तस्स वा रायपुरिसस्स 'पत्तेयं-पत्तेयं'[8] 'चित्तं समादाय'[9] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे भवइ, एवामेव बाले सव्वेसिं पाणाणं[10] °सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं पत्तेयं-पत्तेयं चित्तं समादाय दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे भवइ॥

चोयगस्स अक्खेव-पदं

७. 'णो इणट्ठे समट्ठे'[11]—इह खलु बहवे पाणा, जे इमेणं सरीरसमुस्सएणं णो दिट्ठा वा सुया वा णाभिमया[12] वा विण्णाया वा, जेसिं णो पत्तेयं-पत्तेयं 'चित्तं समादाय'[13] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[14] मिच्छादंसण-सल्ले'[15]॥

---

१. विउवाय (क, ख)।

२. सू० २।४।३।

३. णिच्चं पसढपाणाइवायचित्तदंडे णिच्चं पसढ-मुसावायचित्तदंडे, णिच्चं पसढअदिण्णादाण-चित्तदंडे एवं 'मिच्छादंसणसल्ल' पर्यन्तं पाठ-योजना कार्या। द्रष्टव्यम्—तृतीयसूत्रे एत-त्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्।

४. एवं (ख)।

५. प्रथम सूत्रे एतत्तुल्यवाक्ये 'यावि भवइ' इति पाठांशो नास्ति।

६. वयस (क)।

७. सं० पा०—गाहावइस्स जाव तस्स।

८. पत्तेयं (क, ख)।

९. चित्तसमादाए (क, ख)।

१०. सं० पा०—पाणाणं जाव सव्वेसिं।

११. णो इणत्थे समत्थे चोयकः (क); णो इणट्ठे चोदकः (ख)।

१२. णाभिमुत्ता (क)।

१३. चित्तसमादाए (क, ख)।

१४. सू० २।४।३।

१५. द्रष्टव्यम्—पंचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पाद-टिप्पणम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सण्णि-असण्णि-दिट्ठंत-पदं

८. आचार्य आह - तत्थ[1] खलु भगवया दुवे दिट्ठंता पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिदिट्ठंते य असण्णिदिट्ठंते य ॥

९. से किं तं सण्णिदिट्ठंते ?
सण्णिदिट्ठंते—जे इमे सण्णिपंचिंदिया पज्जत्तगा। एतेसि णं छज्जीवणिकाए पडुच्च[2], [पइण्णं कुज्जा[3] ?] ॥

१०. से एगइओ पुढविकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ – एवं खलु अहं पुढविकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से 'य तेणं'[4] पुढविकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ[5] पुढविकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

११. [6]से एगइओ आउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं आउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं आउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ आउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१२. से एगइओ तेउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ – एवं खलु अहं तेउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं तेउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ तेउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१३. से एगइओ वाउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ - एवं खलु अहं वाउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं वाउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि।

---

१. अत्र पूरकपाठरूपेण चूर्णिगतविवरणं लभ्यते—एवं चोदएण वुत्ते पण्णवतो भणति—जइ वि तस्स अपच्चक्खाणियस्स अणवकारेसु अणुवजुज्जमाणेसु यतः सन्निकृष्टेसु विप्रकृष्टेसु वधचित्तं ण उप्पज्जति तहा वि सो तेसु अविरति प्रत्ययादमुक्तवैरो भवति।

२. पडुच्च, तं जहा—पुढविकायं जाव तसकायं (क, ख); व्याख्यांशोयं प्रतीयते।

३. एवं भूतां प्रतिज्ञां—नियमं कुर्यात्। तद्यथा—अहं षट्सु जीवनिकायेषु मध्ये पृथिवीकायेनैवैकेन वालुकाशिलोपललवणादि स्वरूपेण 'कृत्यं'—कार्यं कुर्यां, स चैवं कृतप्रतिज्ञस्तेन, तस्मिन् तस्मात् वा करोति कारयति च (वृ)।

४. एतेणं (ख)।

५. ताओ (क, ख)।

६. सं० पा०—एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्वं।

से य तओ वाउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१४. से एगइओ वणस्सइकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वणस्सइकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं वणस्सइकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ वणस्सइकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१५. से एगइओ तसकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं तसकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं तसकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ तसकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ° ॥

१६. से एगइओ छज्जीवणिकाएहिं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु छज्जीवणिकाएहिं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेहिं वा इमेहिं वा। से य तेहिं छहिं जीवणिकाएहिं[1] °किच्चं करेइ वि° कारवेइ वि। से य तेहिं छहिं जीवणिकाएहिं असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले'[3]।
एस खलु भगवया अक्खाए अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय[4]-पावकम्मे सुविणमवि 'ण पस्सइ'[5] पावे य से कम्मे कज्जइ।
—से तं सण्णिदिट्ठंते ॥

---

१. सं० पा०—जीवणिकाएहिं जाव कारवेइ।
२. सू० २।४।३।
३. एवं मुसावाते वि, ण तस्स एवं भवति—इदं मया वक्तव्यमनृतं इदं नो वत्तव्वमिति, से य ततो मुसावायातो तिविहेण असंजते। अदिण्णादाणे इदं मया घेत्तव्वं अमुगस्स ण। मेथुणं इमं सेवियव्वं इमं ण। परिग्गहे इमं घेत्तव्वं इमं ण। कोहे इमस्स रूसितव्वं इमस्स ण। एवं जाव परपरिवाए इमं वा विभासा। मिच्छादंसणे इमं तत्त्वमिति शेषमतत्त्वमिति (चू)। अस्य चूर्णिविवरणस्याधारेण निम्न-निर्दिष्टा पाठपद्धतिः प्रजायते—से एगइओ मुसं वयइ वि वाएइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं सव्वदव्वेसु मुसं वएमि वि, वाएमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमं वत्तव्वं, इमं ण वत्तव्वं। से य सव्वदव्वेसु मुसं वयइ वि, वाएइ वि। से य णं तओ मुसावायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे। एवं 'मिच्छादंसण-सल्ल' पर्यन्तं पाठयोजना कार्या।
४. °अपच्चक्खाय (क, ख)।
५. अपस्सओ (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. से किं तं असण्णिदिट्ठंते ?

असण्णिदिट्ठंते—जे इमे असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया[1] •आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया° वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा। जेसिं णो तक्का इ वा सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई इ वा सयं वा करणाए, अण्णेहिं वा कारवेत्तए, करेंतं वा समणुजाणित्तए, ते वि णं बाला सव्वेसिं पाणाणं[2] •सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ता[3] वा जागरमाणा[4] अमित्तभूया मिच्छासंठिया णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडा, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[5] मिच्छादंसणसल्ले'[6]।

इच्चेवं जाणे[7] णो चेव मणो णो चेव वई पाणाणं[8] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए, ते दुक्खण-सोयण[9] •जूरण - तिप्पण - पिट्टण °-परितप्पण-वह-बंध[10]-परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति।

इति[11] खलु ते[12]असण्णिणो वि संता अहोणिसं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति जाव[13] अहोणिसं मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ॥

सण्णि-असण्णि-दिट्ठंतस्स परिसेस-पदं

१८. सव्वजोणिया वि खलु सत्ता—सण्णिणो हुच्चा असण्णिणो होंति, असण्णिणो हुच्चा सण्णिणो होंति, होच्चा सण्णी अदुवा असण्णी। तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता[14] असंमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असण्णिकायाओ वा सण्णिकायं संकमंति, सण्णिकायाओ वा असण्णिकायं संकमंति, सण्णिकायाओ वा सण्णिकायं संकमंति, असण्णिकायाओ वा असण्णिकायं संकमंति ॥

१९. जे एए सण्णी वा असण्णी वा सव्वे ते मिच्छायारा णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडा, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[15] मिच्छादंसणसल्ले'[16] ॥

---

१. सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।
२. सं० पा०—पाणाण जाव सव्वेसिं।
३. सुत्ते (क, ख)।
४. जागरमाणे (क, ख)।
५. सू० २।४।३।
६. द्रष्टव्यम्—पञ्चमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचनं कार्यमिति विशेषः।
७. जाण (क); जाव (ख)।
८. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं।
९. सं० पा०—सोयण जाव परितप्पण।
१०. बंधण (क, चू)।
११. इह (क)।
१२. ये (वृ)।
१३. सू० २।४।३।
१४. अविधुणित्ता (क); अविधूणिता (ख)।
१५. सू० २।४।३।
१६. द्रष्टव्यम्—पंचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचनं कार्यमिति विशेषः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते।
से बाले अवियारमण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पासइ, पावे य से कम्मे कज्जइ ॥

संजय-पदं

२१. चोयगः—से किं कुव्वं? किं कारवं? कहं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे भवइ?
आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकायाहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवी-काइया[1] •आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तसकाइया। से जहाणामए मम अस्सातं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[2] वा कवालेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा[3] •हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा° उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं[4] दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।
सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा[5] •अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा° कवालेण वा आतोडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्ज-माणा वा तालिज्जमाणा वा[6] •परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा° उवद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति,—एवं णच्चा सव्वे पाणा[7] •सव्वे भूया सव्वे जीवा° सव्वे सत्ता ण हंतव्वा[8] •ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा° ण उद्दवेयव्वा। एस धम्मे धुवे णिइए सासए समेच्च लोगं खेत्तण्णेहिं पवेइए ॥

२२. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव[9] मिच्छादंसणसल्लाओ ॥

२३. से भिक्खू णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं, णो वमणं, णो धूवणेत्तं पिआइए[10] ॥

---

१. सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
२. लेलूण (क, ख)।
३. सं० पा०—आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज°।
४. हिंसक्कारं (क, ख)।
५. सं० पा०—दंडेण वा जाव कवालेण।
६. सं० पा०—तालिज्जमाणा वा जाव उवद्दविज्जमाणा।
७. सं० पा०—पाणा जाव सव्वे।
८. सं० पा०—हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा।
९. सू० २।४।३।
१०. पिआदिते (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे[1] °अमाणे अमाए° अलोभे उवसंते परिणिव्वुडे ॥

२५. एस खलु भगवया अक्खाए संजय - विरय - पडिहय - पच्चक्खाय-पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिए यावि भवइ ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—अकोहे जाव अलोभे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं अज्झयणं

आयारसुयं

१. 'आदाय बंभचेरं च'[1] आसुपण्णे इमं वई।
अस्सिं धम्मे अणायारं णायरेज्ज कयाइ वि॥

सासय-असासय-पदं

२. अणादीयं परिण्णाय[2] अणवदग्गं[3] ति वा पुणो।
सासयमसासए वा[4] इइ दिट्ठिं ण धारए॥
३. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए[5]॥
४. समुच्छिज्जिहिंति[6] सत्थारो सव्वे पाणा अणेलिसा।
गंठिगा वा[7] भविस्संति, सासयं ति व णो वए॥
५. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए॥

सरिस-असरिस-पदं

६. जे केइ खुड्डगा पाणा अदुवा संति महालया।
सरिसं तेहिं वेरं ति असरिसं[8] ति य णो वए॥
७. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए॥

---

१. बंभचेरं आदाय (चू)।
२. परिण्णाते (क)।
३. ०दग्गे (क); अणवयग्गे (क्व)।
४. वा वि (क, ख)।
५. तु जाणए (क,ख); तु विजाणए (वृ) सर्वत्र।
६. समुच्छेहिंति (ख); वोच्छिज्जिस्संति (चू)।
७. व (ख)।
८. विशदृशम्—असदृशम् (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहाकम्म-पदं

८. अहाकम्माणि[1] भुंजंति[2] 'अण्णमण्णे सकम्मुणा'[3]।
उवलित्ते त्ति जाणिज्जा अणुवलित्ते त्ति वा पुणो ॥
९. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ॥

सरीरवीरिय-पदं

१०. जमिदं ओरालमाहारं कम्मगं च तमेव[4] य।
सव्वत्थ वीरियं अत्थि णत्थि सव्वत्थ वीरियं ॥
११. एएहि दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ॥

लोगादीणं अत्थित्त-सण्णा-पदं

१२. णत्थि लोए अलोए वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि लोए अलोए वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१३. णत्थि जीवा अजीवा वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि जीवा अजीवा वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१४. णत्थि धम्मे अधम्मे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि धम्मे अधम्मे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१५. णत्थि बंधे व मोक्खे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि बंधे व मोक्खे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१६. णत्थि पुण्णे व पावे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि पुण्णे व पावे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१७. णत्थि आसवे संवरे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि आसवे संवरे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१८. णत्थि वेयणा णिज्जरा वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि वेयणा णिज्जरा वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१९. णत्थि किरिया अकिरिया वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि किरिया अकिरिया वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२०. णत्थि कोहे व माणे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि कोहे व माणे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥

---

१. आहाकडाति (क); अहाकडाणि (ख)।
२. चूर्णौ 'भुंजंति' इति शब्दो नास्ति व्याख्यातः।
३. अन्नमन्नेसु कम्मुणा (ख); अण्णमणस्स कम्मुणा (चू)।
४. तहेव (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. णत्थि माया व लोभे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि माया व लोभे वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२२. णत्थि पेज्जे[1] व दोसे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि पेज्जे व दोसे वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२३. णत्थि चाउरंते संसारे णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि चाउरंते संसारे एवं सण्णं णिवेसए॥
२४. णत्थि देवो व देवी वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि देवो व देवी वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२५. णत्थि सिद्धी असिद्धी वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि सिद्धी असिद्धी वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२६. णत्थि सिद्धी णियं ठाणं णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि सिद्धी णियं ठाणं एवं सण्णं णिवेसए॥
२७. णत्थि साहू असाहू वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि साहू असाहू वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२८. णत्थि कल्लाणे पावे वा णेवं सण्णं णिवेसए।
अत्थि कल्लाणे पावे वा एवं सण्णं णिवेसए॥
२९. कल्लाणे पावए वा वि ववहारो ण विज्जइ।
जं वेरं तं ण जाणंति समणा बालपंडिया॥

वइ-विवेग-पदं

३०. असेसं अक्खयं वावि सव्वं[2] दुक्खे ति वा पुणो।
वज्झा पाणा 'अवज्झ त्ति'[3] इति वायं ण णीसिरे[4]॥
३१. दीसंति णिहुअप्पाणो[5] भिक्खुणो साहुजीविणो।
'एए मिच्छोवजीवित्ति'[6] इति दिट्ठिं ण धारए॥
३२. दक्खिणाए पडिलंभो 'अत्थि वा णत्थि वा'[7] पुणो।
ण वियागरेज्ज मेहावी, संतिमग्गं च बूहए॥
३३. इच्चेएहिं ठाणेहिं जिणे[8] दिट्ठेहिं संजए।
धारयंते उ[9] अप्पाणं[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥

—त्ति बेमि॥

---

१. रागे (क्व)।
२. सव्व (क, ख)।
३. अबज्झं ति (ख)।
४. णीसरे (ख)।
५. समियाचारा (क, ख, वृपा)।
६. ते य मिच्छाय जीवंति (क)।
७. अत्थि णत्थि त्ति वा (क)।
८. जिणु (क्व)।
९. तु (क)।
१०. अप्पाणो (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

अद्दइज्जं

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१. पुराकडं[1] अद्द ! इमं सुणेह, एगंतचारी समणे पुरासो ।
से भिक्खवो[2] उवणेत्ता अणेगे आइक्खतिण्हं[3] पुढो वित्थरेणं ॥

२. साऽऽजीविया पट्ठवियाऽथिरेणं सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे ।
आइक्खमाणो बहुजण्णमत्थं ण संधयाई[4] अवरेण पुव्वं ॥

३. एगंतमेव[5] अदुवा वि इण्हि दोऽवण्णमण्णं ण समेंति जम्हा ।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

'पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च'[6] 'एगंतमेव[7] पडिसंधयाइ'[8] ॥

४. समेच्च लोगं[9] तसथावराणं खेमंकरे समणे माहणे वा ।
आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एगंतयं सारयई तहच्चे ॥

५. धम्मं कहंतस्स उ णत्थि दोसो खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स ।
भासाय[10] दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय[11] णिसेवगस्स ॥

---

१. पुरे॰ (ख, चू) ।
२. भिक्खुणो (ख) ।
३. आइक्खतेण्हिं (क) ।
४. संधियाति (क) ।
५. ॰मेवं (ख) ।
६. ॰अणागतं वा (क); पुव्विं व पच्छं व अणागतं व (चू) ।
७. ॰मेवं (ख) ।
८. 'एगंतमेवं पडिसंदधाती' ति वक्तव्ये ग्रन्थानुलोम्यात्सुखमोक्खोच्चारणाद् वृत्त-बन्धानुवृत्तेश्च पसत्थं याति (चू) ।
९. लोगे (ख) ।
१०,११. व्या॰ वि॰—बन्धानुलोम्यात् 'भासाए' इति षष्ठ्यन्तपदस्य स्थाने 'भासाय' इति मृदूच्चारणं कृतम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. महव्वए पंच अणुव्वए य तहेव पंचासव[1] संवरे य।
विरइं इह स्सामणियम्मि पण्णे[2] लवावसक्की समणे त्ति बेमि॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

७. सीओदगं सेवउ बीयकायं आहायकम्मं[3] तह इत्थियाओ।
एगंतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेइ पावं॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

८. सीओदगं वा[4] तह बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ।
एयाइं जाणे[5] पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवंति॥
९. सिया य बीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवंतु।
अगारिणो वि[6] समणा भवंतु सेवंति उ[7] ते वि तहप्पगारं॥
१०. जे यावि बीओदगभोइ[8] भिक्खू भिक्खं विहं जायइ जीवियट्ठी।
ते 'णाइसंजोगमविप्पहाय'[9] काओवगा णंतकरा भवंति॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

११. इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं पावाइणो गरहसि[10] सव्व एव।
पावाइणो[11] पुढो किट्टयंता सयं सयं दिट्ठि[12] करेंति पाउं[13]॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

१२. ते अण्णमण्णस्स उ[14] गरहमाणा अक्खंति ऊ समणा माहणा य।
सतो य अत्थी असतो य णत्थी गरहामो दिट्ठिं ण गरहामो किंचि॥
१३. ण किंचि रुवेणऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्गं तु करेमो[15] पाउं।
मग्गे इमे किट्टिए आरिएहिं अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अंजू॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पंचासवे।
२. पुण्णे (वृ); पण्णे (वृपा)।
३. आहाइ० (क)।
४. च (क, ख)।
५. जाणं (क)।
६. वी (क्व)।
७. जं (क्व)।
८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—बीयोदग-भोई।
९. ०संजोग य विप्पजहाय (क)।
१०. गरिहसि (ख)।
११. पावाइणो उ (क)।
१२. पदिट्ठिं (क्व); व्या० वि०—विभक्तिरहित-पदम्—दिट्ठिं।
१३. पावं (क, ख) अशुद्धमेतत्।
१४. वि (ख)।
१५. करेमु (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु तसा य जे थावर[1] जे य पाणा।
भूयाभिसंकाए[2] दुगुंछमाणे णो गरहइ बुसिमं किंचि लोए॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१५. आगंतगारे आरामगारे[3] समणे उ भीते ण उवेइ वासं।
दुक्खा हु संती बहवे मणुस्सा ऊणातिरित्ता य लवालवा य॥
१६. मेहाविणो सिक्खिय[4] बुद्धिमंता सुत्तेहि अत्थेहि य णिच्छयण्णू[5]।
पुच्छिसु मा णे[6] अणगार[7] अण्णे[8] इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

१७. णाकामकिच्चा[9] ण य बालकिच्चा रायाभियोगेण कुओ भएणं[10]?
वियागरेज्जा पसिणं ण वा वि सकामकिच्चेणिह आरियाणं॥
१८. गंता व तत्था अदुवा अगंता वियागरेज्जा समियासुपण्णे।
अणारिया दंसणओ परित्ता इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१९. पण्णं जहा वणिए उदयट्ठी आयस्स हेउं पगरेइ संगं।
तओवमे[11] समणे णायपुत्ते इच्चेव मे होइ मई वियक्का॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

२०. णवं ण कुज्जा विहुणे पुराणं चिच्चा[12]ऽमइं 'ताइ[13] य साह'[14] एवं।
एतावता[15] बंभवति त्ति वुत्ते तस्सोदयट्ठी समणे त्ति बेमि॥
२१. समारभंते वणिया भूयगामं परिग्गहं चेव ममायमाणा[16]।
ते णाइसंजोगमविप्पहाय आयस्स हेउं पगरेंति संगं॥

---

१. विभक्तिरहितपदम्—थावरा।
२. भूयाहि° (ख)।
३. आरामा° (क)।
४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सिक्खिया।
५. निच्छियण्णू (ख) निच्छियन्ना (क्व)।
६. णो (क)।
७. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणगारा।
८. एगे (क)।
९. नो काम° (क, ख); 'णाकाम'° इति पाठश्चूर्णि-वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः। क्वचित्-प्रयुक्तदीपिकादर्शेपि इत्थमेव पाठो लब्धः।
१०. भतेणं (क)।
११. ततोवमे (क)।
१२. चेच्चा (क)।
१३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई।
१४. ताति हि आह (वृ)।
१५. एत्तावता (क, ख)।
१६. ममायमीणा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा ते भोयणट्ठा वणिया वयंति ।
वयं तु कामेहिं अज्झोववण्णा अणारिया पेमरसेसु गिद्धा ॥
२३. आरंभगं चेव परिग्गहं च अविउस्सिया णिस्सिय[1] आयदंडा ।
तेसिं च से उदए जं वयासी चउरंतणंताय[2] दुहाय[3] णेह[4] ॥
२४. णेगंति णच्चंति तओदए से वयंति ते दो वि गुणोदयम्मि ।
से उदए साइमणंतपत्ते[5] तमुदयं साहयइ ताइ[6] णाई ॥
२५. अहिंसयं[7] सव्वपयाणुकंपी[8] धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं ।
तमायदंडेहि समायरंता[9] अबोहिए ते पडिरूवमेयं ॥

बुद्ध-भिक्खूणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

२६. पिण्णागपिंडीमवि विद्ध[10] सूले केई पएज्जा पुरिसे इमे त्ति ।
अलाउयं वा वि 'कुमारग त्ति'[11] स[12] लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥
२७. अहवा वि विद्धूण मिलक्खु[13] सूले पिण्णागबुद्धीए णरं पएज्जा ।
कुमारगं वा वि अलाउए त्ति ण लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥
२८. पुरिसं च विद्धूण कुमारगं[14] वा सूलंमि केइ पए जायतेए ।
पिण्णागपिंडि सइमारुहेत्ता बुद्धाण तं कप्पइ पारणाए ॥
२९. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं ।
ते पुण्णखंधं सुमहऽज्जणित्ता[15] भवंति आरोप्प[16] महंतसत्ता[17] ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

३०. अजोगरूवं इह संजयाणं पावं तु पाणाण पसज्झ[18] काउं ।
अबोहिए दोण्ह वि तं असाहु वयंति जे यावि पडिस्सुणंति[19] ॥
३१. उड्ढं[20] अहे य तिरियं दिसासु विण्णाय लिंगं तसथावराणं ।
भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणे वदे करेज्जा वा कुओ विहऽत्थि[21] ?

१. व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—णिस्सिया ।
२. °णंताए (क) ।
३. दुहाए (क) ।
४. णे य (ख) ।
५. साय° (क) ।
६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई ।
७. व्या० वि०—अहिंसयन् ।
८. °पदाणु° (क); °सत्ताणुकंपी (चू) ।
९. समाणयंता (चूपा) ।
१०. व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—विद्धं ।
११. कुमारएत्ति (ख) ।
१२. से (क) ।
१३. मिलक्ख (क); मिलक्खू (ख, चू) ।
१४. कुमारकं (क) ।
१५. सुमहज्जिणित्ता (क, ख) । अयं पाठः क्वचित्प्रयुक्तदीपिकादर्शाधारेण स्वीकृतः । ४३ श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च सुमहऽज्जणित्ता इत्येव पाठः समुपलभ्यते ।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्-आरोप्पा ।
१७. महत्त° (क) ।
१८. पसज्ज (ख) ।
१९. पडिसुणेंति (क) ।
२०. उड्ढे (क) ।
२१. व्या० वि०—वि+इह+अस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. पुरिसे त्ति विण्णत्ति[1] ण एवमत्थि[2] अणारिए से पुरिसे तहा हु।
को संभवो पिण्णगपिंडियाए[3] वाया वि एसा बुइया असच्चा॥

३३. वायाभिओगेण[4] जमावहेज्जा णो तारिसं वायमुदाहरेज्जा।
अट्ठाणमेयं[5] वयणं गुणाणं णो[6] दिक्खिए बूय[7] सुरालमेयं॥

३४. लद्धे अहट्ठे अहो एव[8] तुब्भे जीवाणुभागे सुविचिंतिते य।
पुव्वं समुद्दं अवरं च पुट्ठे ओलोइए पाणितलट्ठिए वा॥

३५. जीवाणुभागं सुविचिंतयंता आहारिया[9] अण्णविहीए सोहिं।
ण वियागरे छण्णपओपजीवी[10] एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं॥

३६. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं।
असंजए लोहियपाणि[11] से ऊ णियच्छई गरहमिहेव लोए॥

३७. थूलं उरब्भं इह मारियाणं उद्दिट्ठभत्तं च पगप्पएत्ता।
तं लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता सपिप्पलीयं पगरंति मंसं॥

३८. तं भुंजमाणा पिसियं पभूयं णो उवलिप्पामो वयं रएणं।
इच्चेवमाहंसु अणज्जधम्मा[12] अणारिया बाल[13] रसेसु गिद्धा॥

३९. जे यावि भुंजंति तहप्पगारं सेवंति ते पावमजाणमाणा।
'मणं ण एयं कुसला करेंति'[14] वाया वि एसा बुइया उ मिच्छा॥

४०. 'सव्वेसि जीवाण'[15] दयट्ठयाए सावज्जदोसं परिवज्जयंता।
तस्संकिणो इसिणो णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति॥

४१. भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणा सव्वेसि पाणाण णिहाय दंडं।
तम्हा ण भुंजंति तहप्पगारं एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं॥

---

१. पिण्णत्ति (क, ख)। व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—विण्णत्ती।
२. एयअत्थि (क, ख)।
३. पिण्णाग° (क); छंदोदृष्ट्या 'पिण्णाग' शब्दस्य ह्रस्वत्वं 'ख' प्रत्यनुसारेण स्वीकृतम्।
४. °जोएण (क)।
५. °मेवं (क)।
६. जे (क); जिण (ख)।
७. आकारस्य ह्रस्वत्वम्।
८. एवं (क); छंदोदृष्ट्या 'एव' इति जातमस्ति।
९. ओधारिया (चू)।
१०. छण्णपदोपजीवी (चूपा)।
११. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—लोहियपाणी।
१२. अणज्जबुद्धो (चू)।
१३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—बाला।
१४. खणं ण एवं कुसला वदंति (चू); मणं ण एयं कुसला करेंति (चूपा)।
१५. सव्वेसिं जीवाणं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. 'णिग्गंथधम्मम्मि इमा समाही'[1] अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा।
बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए 'इहच्चणं पाउणई सिलोगं'[2] ॥

वेय-वाईणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४३. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए माहणाणं।
ते पुण्णखंधं सुमहज्जणित्ता[3] भवंति देवा इइ वेयवाओ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

४४. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए कुलालयाणं।
से गच्छई लोलुवसंपगाढे[4] 'तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी'[5] ॥
४५. दयावरं 'धम्म[6] दुगुंछमाणे'[7] वहावहं धम्मं[8] पसंसमाणे।
एगं पि जे भोययई असीलं[9] 'णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले'[10] ॥

संख-परिवायगाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४६. दुहओवि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सिं सुट्ठिच्चा तह एस कालं[11]।
आयारसीले बुइएह णाणे[12] ण संपरायम्मि[13] विसेसमत्थि॥
४७. अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं सणातणं अक्खयमव्वयं च।
सव्वेसु भूएसु[14] वि[15] सव्वओ से चंदो व ताराहिं[16] समत्तरूवे॥

---

१. णिग्गंथं धम्माण इमो° (चू); °इमं समाहिं (वृ)।
२. इच्चत्थतं° (क, ख); अच्चत्थतं पाउणतीसिलाहं (वृ); अयं पाठश्चूर्ण्यनुसारी स्वीकृतः। चूर्णौ श्लोको नाम श्लाघा इति व्याख्यातमस्ति, वृत्तौ च श्लाघा मूलत्वेन स्वीकृतास्ति।
३. सुमहज्जिजणित्ता (क, ख)।
४. लोलग° क), लोलुय° (ख)।
५. तिव्वाणुतावे णरए वयंति (चू); तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी (चूपा)।
६,८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्--धम्मं।
७. धम्मं दूसेमाणो (चू), धम्म दुगुंछमाणो (क, चूपा)।
९. कुसीलं (चू)।
१०. णिवो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (क, ख, वृ); णिधो° (चू); णिव्वो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (ख); अत्र लिपिदोषेण 'णिहो' स्थाने 'णिवो' इति पाठः संजातः। वृत्तिकारेण तादृश एव आदर्श उपलब्धस्तेन स पाठस्तथैव व्याख्यातः। 'जाइ कओऽसुरेहिं' इति पाठस्य परिवर्तनं जातमथवा वाचनाभेदोयमिति न निश्चयेन वक्तुं शक्यते। प्रस्तुतसूत्रे (१।५।५) 'णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले' इति पदं विद्यते। तदेवात्रास्तीति चूर्णिव्याख्यया प्रतीयते।
११. काले (ख)।
१२. नाणा (क)।
१३. संपरागंमि (क)।
१४. पाणेसु (चू)।
१५. उ (क)।
१६. तारेहिं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्दगस्स उत्तर-पदं

४८. एवं ण मिज्जंति ण संसरंति[1] ण[2] माहणा[3] खत्तिय-वेस-पेसा।
कीडा य पक्खी य सरीसिवा[4] य णरा य सव्वे तह देवलोगा॥
४९. लोगं अयाणित्तिह केवलेणं कहिंति जे धम्ममजाणमाणा।
णासेंति अप्पाण[5] परं च णट्ठा संसार घोरम्मि अणोरपारे॥
५०. लोगं विजाणंतिह केवलेणं पुण्णेण णाणेण समाहिजुत्ता।
धम्मं समत्तं च कहिंति जे उ तारेंति अप्पाण[6] परं च तिण्णा॥
५१. जे गरहियं ठाणमिहावसंति जे यावि लोए चरणोववेया।
उदाहडं तं तु समं मईए अहाउसो! विप्परियासमेव॥

हत्थितावसाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

५२. संवच्छरेणावि य एगमेगं वाणेण[7] मारेउ महागयं तु।
सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वासं वयं वित्तिं[8] पकप्पयामो॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

५३. संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं हणंता अणियत्तदोसा।
सेसाण जीवाण वहेण लग्गा सिया य थोवं गिहिणो वि तम्हा॥
५४. संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं[9] हणंते 'समणव्वते ऊ'[10]।
आयाहिए से पुरिसे अणज्जे ण 'तारिसं केवलिणो भणंति'[11]॥
५५. बुद्धस्स आणाए इमं समाहिं अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण ताई[12]।
तरिउं[13] समुद्दं व महाभवोघं 'आयाणवं धम्ममुदाहरेज्जासि'[14]॥

—त्ति बेमि॥

---

१. संचरंति (ख)।
२. ते (क)।
३. बंभणा (चू)।
४. सिरीसवा (क); सिरीसिवा (ख)।
५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं।
६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं।
७. पाणेण (क); बाणेण (ख)।
८. वित्ति (ख)।
९. पाणे (क)।
१०. °व्वएसु (ख, वृ)।
११. तारिसा केवलिणो भवंति (क); तारिसे केवलिणो भवंति (ख, वृ, चूपा)। अत्र चूर्णि-पाठोर्थसमीक्षया समीचीनः प्रतिभाति तेन स स्वीकृतः।
१२. ताती (क); तारी (ख)।
१३. तरित्ता (क, चू)।
१४. आयाणबंध समुदाहरिज्जासि (क); आयाणं वंध समुदाहरेज्जासि (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं अज्झयणं
णालंदइज्जं

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था —रिद्धत्थिमियसमिद्धे[1] जाव[2] पडिरूवे ॥

२. तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया[3] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं णालंदा णामं बाहिरिया होत्था—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा[4] •पासादीया दरिसणीया अभिरूवा॰ पडिरूवा ॥

लेव-गाहावइ-पदं

३. तत्थ णं णालंदाए बाहिरियाए लेवे[5] णामं गाहावई होत्था—अड्ढे 'दित्ते वित्ते'[6] विच्छिण्ण[7]-विपुल-भवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरजए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥

४. से णं लेवे णामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे[8] •उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे,

---

१. रिद्धि॰ (क)।
२. वण्णओ जाव (क, ख); ओ॰ सू॰ १।
३. बहिता (क)।
४. सं॰ पा॰—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा।
५. लेए (क)।
६. दित्तचित्ते (चू)।
७. वित्थिण (क्व)।
८. सं॰ पा॰—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इणमो णिग्गंथिए पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पीढ-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

५. तस्स णं लेवस्स गाहावइस्स णालंदाए बाहिरियाए उत्तरपुरत्थिमे[1] दिसिभाए, एत्थ णं सेसदविया णाम उदगसाला होत्था—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठा पासादीया[2] °दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

६. तीसे णं सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं हत्थिजामे णामं वणसंडे होत्था—किण्हे वण्णओ वणसंडस्स[3] ।।

७. तस्सिं च णं गिहपदेसंसि भगवं गोयमे विहरइ, भगवं च णं अहे आरामंसि ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्हाणुमइ-पदं

८. अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे णियंठे मेदज्जे[4] गोत्तेणं जेणेव[5] भगवं गोयमे तेणेव[6] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो ! गोयमा ! अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, तं च मे आउसो ! अहासुयं अहादरिसियमेव वियागरेहि ।।

९. सवायं[7] भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—अवियाइ आउसो ! सोच्चा णिसम्म जाणिस्सामो ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्ह-पदं

१०. सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो[8] ! गोयमा ! अत्थि खलु कम्मारपुत्तिया[9] णाम समणा णिग्गंथा तुम्हागं[10] पवयणं[11] पवयमाणा

---

१. °पुरच्छिमे (ख) ।
२. सं० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा ।
३. ओ० सू० ४-७ ।
४. मेतज्जो (क) ।
५. जेणामेव (क, ख) ।
६. तेणामेव (ख) ।
७. सवादं (क) ।
८. आउसो ! (ख) ।
९. कुमारपुत्तिया (क, ख, वृ); अत्र लिपिदोषेण 'कम्मार' शब्दस्य स्थाने 'कुमार' इति रूपान्तरं जातं इति संभाव्यते ।
१०. तुब्भागं (क) ।
११. पवदणं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहावइं[1] समणोवासगं उवसंपण्णं[2] एवं पच्चक्खावेंति—"णण्णत्थ अभिजोगेणं[3], गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं।"

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं दुप्पच्चक्खायं भवइ। एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं दुपच्च-क्खावियं भवइ। एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा अइयरंति सयं पइण्णं।

कस्स णं तं हेउं।

संसारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं थावर-कायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं।

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं सुपच्चक्खायं भवइ।

एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं सुपच्चक्खावियं भवइ।

एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा णाइयरंति सयं पइण्णं—"णण्णत्थ अभिजोगेणं, गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दंडं।" एवं[4] सइ 'भासाए परिकम्मे'[5] विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा परं पच्चक्खावेंति। अयं पि[6] णो[7] उवएसे किं णो णेयाउए भवइ? अवियाइं आउसो! गोयमा! तुब्भं पि एयं[8] एवं रोयइ?

भगवओ गोयमस्स उत्तर-पदं

११. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो! उदगा! णो खलु अम्हं एयं एवं रोयइ। जेते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खंति[9], °एवं भासेंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गंथा वा भासं भासंति, अणुतावियं[10] खलु ते भासं भासंति, अब्भाइक्खंति खलु ते समणे[11] समणोवासए वा। जेहिं वि अण्णेहिं पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमयंति ताणि वि ते अब्भाइक्खंति।

कस्स णं तं हेउं?

---

१. गाहावइ (क, ख)।

२. × (क, ख)।

३. रायाभिवाएणं (ख); अभिजोगेणं तंजहा—रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं (चू)।

४. एवामेव (क); एवमेव (ख)।

५. भासापरक्कमे (क); भासाए परक्कमे (ख, वृ)। 'परिकम्मे' इति पाठश्चूर्ण्याधारेण स्वीकृतः। अत्र सविशेषणनिर्विशेषणप्रत्याख्यानस्य चर्चा कृतास्ति तेन पराक्रमापेक्षया परिकर्मशब्दोऽधिकं समीचीनोस्ति।

६. पि भे (क, वृ)।

७. अस्माकम्।

८. × (ख)।

९. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति।

१०. अणुगामियं (चू)।

११. समणा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसारिया खलु पाणा—तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं॥

उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्ह-पदं

१२. सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—कयरे खलु आउसंतो! गोयमा! तुब्भे वयह तसपाणा तसा 'आउ[1] अण्णहा'[2]?

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१३. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो! उदगा! जे तुब्भे वयह[3] तसभूया[4] पाणा तसा ते 'वयं वदामो'[5] 'तसा पाणा तसा'[6]। जे वयं वयामो तसा पाणा तसा ते तुब्भे वदह तसभूया पाणा तसा। एए संति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा।

किमाउसो! इमे भे[7] सुप्पणीयतराए भवइ—तसभूया पाणा तसा? इमे भे[8] दुप्पणीयतराए भवइ—तसा पाणा तसा? तओ[9] एगमाउसो! पलिकोसह[10], एक्कं अभिणंदह। अयं पि 'भे उवएसे'[11] णो णेयाउए भवइ।

भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा[12] भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। 'वयं णं'[13] अणुपुव्वेणं गोत्तस्स[14] लिस्सिस्सामो[15]। 'ते एवं संखसावेंति'[16]—

---

१. अदु—उत।
२. आउमन्नहा (क); अह अण्णहा (ख)।
३. वतह (क)।
४. तसब्भूया (क)।
५. वदं वतामो (क)।
६. तसा पाणा २ (क); तसा पाणा (ख) सर्वत्र।
७, ८. ते (ख)।
९. तो (क)।
१०. पडिकोसह (ख)।
११. भेदो से (क, ख); भे (वृ); 'भे उवएसे' इति पाठस्य स्थाने लिपिदोषेण 'भेदो से' इति जातम्। दशमे सूत्रे 'पि णो उवएसे' इति पाठोस्ति तथा चूर्णौ 'उपदेशः' इति व्याख्यातमस्ति। तदाधारेणासौ पाठः स्वीकृतः।
१२. मणुस्सा गब्भवक्कंतिया संखेज्जवासाउया आरिया (चू)।
१३. वयण्णं (क); वय णं (ख)।
१४. गुत्तत्तस्स (क); गुत्तस्स (क्व)।
१५. लिसिस्सामी (ख)।
१६. ते एवं संखं ठवयंति ते एवं संखं सोवठवयंति (क); ते एव संखं ठवयंति ते एवं संखं सोवठावयंति (ख); ते एवं संखं ठावेंति (चू); नागार्जुनीयास्तु—एवं आपाणं संकसावेंति (चू); °संठवयंति (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"णण्णत्थ अभिजोगेणं गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं"। तं पि तेसिं कुसलमेव भवइ॥

१४. तसा वि वुच्चंति तसा तससंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। 'तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति'[1]। थावरा वि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। 'थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ,'[2] थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो पारलोइयत्ताए पच्चायंति।
ते पाणा वि वुच्चंति[3], ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया॥

उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा-पदं

१५. सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो! गोयमा! णत्थि णं से केइ परियाए[4] जंसि[5] समणोवासगस्स 'एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते'[6]।
कस्स णं तं हेउं?
संसारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं॥

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१६. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—णो खलु आउसो! अस्माकं[7] वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवाएणं अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते भवइ।
कस्स णं तं हेउं?

---

१. जाव तसाऊ अपलिक्खीणं भवइ० (चू); नागार्जुनीयास्तु—आउयं च णं पलिक्खीणं भवति तसकायट्ठितीए वा ततो आउयं विप्पजहित्ता तिण्हं थावराणं अण्णतरेसूव-वज्जंति (चू)।
२. जाव थावराऊ अपलिक्खीणं भवई (चू)।
३. वुच्चंति भूता जाव सत्ता वि (चू)।
४. परिताए (क)।
५. जण्णं (क, ख, चू)।
६. एगपाणाइवायविरए वि दंडे णिक्खित्ते (क,ख); एकप्राणातिपातविरमणेपि (वृ); अग्रिमसूत्रे 'एगपाणाए वि' इति पाठो लभ्यते, स च समीचीनः प्रतिभाति, तेनाऽत्रापि स एव स्वीकृतः। जाव सव्वपाणेहिं दडे णिक्खित्ते (चू)।
७. अस्माकमित्येतन्मगधदेशे आगोपालाङ्गनादि-प्रसिद्धं संस्कृतमेवोच्चार्यते तदिहापि तथैवो-च्चारितमिति (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसारिया खलु पाणा- तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि[1] समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते"। अयं पि 'भे उवएसे'[2] णो णेयाउए भवइ॥

समणदिट्ठंत-पदं

१७. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते। जे इमे अगारमावसंति, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते।

'केई च णं समणे'[3] जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता 'अगारं वएज्जा'[4] ?

हंता वएज्जा।

तस्स णं तमगारत्थं[5] वहमाणस्स[6] से पच्चक्खाणे भग्गे भवइ ?

णेति[7]।

एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते। तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स[8] से पच्चक्खाणे णो भग्गे भवइ। सेवमायाणह[9] णियंठा! सेवमायाणियव्वं॥

१८. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु गाहावइणो वा गाहावइपुत्ता वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ?

हंता उवसंकमेज्जा।

---

१. जण्णं (क); जम्मि (क्व)।
२. भेदे से (क, ख)।
३. केसिं (क, ख); अशुद्धं प्रतिभाति, केचन श्रमणाः (वृ)।
४. अगारमावसेज्जा (ख, वृ)।
५. तं गारत्थं (क); गृहस्थं (वृ)।
६. ८. वहेमाणस्स (क)।
७. णोति (ख)।
९. सेएव० (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसिं च णं तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे ?
हंता आइक्खियव्वे।
किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा—इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं 'णेयाउयं' संसुद्धं[1] सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं 'णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं'[3] अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीण-मग्गं। एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति[4] सव्व-दुक्खाणमंतं करेंति।
इमाणाए[5] तहा[6] गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो[7] तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो[8] तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता[9] पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा ?
हंता वएज्जा।
किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए ?
हंता कप्पंति।
किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए ?
हंता कप्पंति।
किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए ?
हंता कप्पंति।
किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ?
हंता कप्पंति।
तेसिं च णं तहप्पगाराणं सव्वपाणेहिं[10] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?
हंता णिक्खित्ते।
ते[11] णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं[12] वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता[13] अगारं वएज्जा[14] ?
हंता वएज्जा।

---

१. णेताउतं (क)।
२. संसुद्धं णेयाउयं (ख)।
३. णेज्जाणमग्गं णेव्वाण° (क)।
४. परिणिव्वायंति (ख)।
५. तमाणाए (ख)।
६. तह (क) सर्वत्र।
७. णिसिग्रामो (क); णिस्सियामो (ख)।
८. अब्भुट्ठामो (ख)।
९. वट्ठेति (ख)।
१०. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं।
११. से (क, ख); अशुद्धं प्रतिभाति।
१२. छद्दसमाणि (क, ख)।
१३. दूतिज्जित्ता (क, ख)।
१४. वदेज्जा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स णं सव्वपाणेहिं[1] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते[2]? णेति[3]।

से जे से जीवे जस्स परेणं सव्वपाणेहिं[4] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स आरेणं सव्वपाणेहिं[5] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं[6] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ। परेणं अस्संजए, आरेणं संजए, इयाणिं[7] अस्संजए। अस्संजयस्स णं सव्वपाणेहिं[8] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ। सेवमायाणह णियंठा! सेवमायाणियव्वं॥

१९. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह[9] खलु परिव्वायया[10] वा परिव्वाइयाओ वा अण्णयरेहिंतो तित्थायतणेहिंतो आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा?

हंता उवसंकमेज्जा।

'किं तेसिं'[11] तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे?

[12]•हंता आइक्खियव्वे।

किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा—इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं। एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। इमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा?

हंता वएज्जा।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए?

हंता कप्पंति।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए?

हंता कप्पंति।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए?

हंता कप्पंति।

---

१. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।
२. णो णिक्खित्ते (क)।
३. णोत्ति (क); णोति (ख)।
४,५,६. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।
७. एयाणिं (क)।
८. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।
९. केइ इह (ख)।
१०. परिवाइया (क); परिव्वाया (क्व)।
११. पूर्वसूत्रात् किंचित् शब्दभेदः।
१२. सं० पा०—तं चेव जाव उवट्ठावेत्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ?
हंता कप्पंति° ।
किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?
हंता कप्पंति ।
ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा [1]°जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता° अगारं वएज्जा ?
हंता वएज्जा ।
ते णं तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?
णो इणट्ठे[2] समट्ठे ।
से जे से जीवे जे परेणं णो कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे आरेणं कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे इयाणिं णो कप्पंति संभुंजित्तए । परेणं अस्समणे, आरेणं समणे, इयाणिं अस्समणे । अस्समणेणं[3] सद्धिं णो कप्पंति समणाणं णिग्गंथाणं संभुंजित्तए । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमायाणियव्वं ।।

पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं

२०. भगवं च णं उदाहु[4]—णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु° संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं[5] णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं[6] सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो । 'थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो'[7], एवं थूलगं मुसावायं थूलगं अदिण्णादाणं[8] थूलगं मेहुणं थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो दुविहं तिविहेणं । मा खलु ममट्ठाए किंचि वि करेह वा कारवेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो । ते णं अभोच्चा[9] अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढियाओ[10] पच्चोरुहित्ता[11] ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया ?
सम्मं कालगय त्ति वत्तव्वं सिया ।

---

१. सं० पा०—तं चेव जाव अगारं वएज्जा ।
२. तिणट्ठे (क, ख) ।
३. तेणं (क) ।
४. सं० पा०—उदाहु…संतेगइया ।
५. वयं च (क) ।
६. पोसधं (क) ।
७. °पच्चाइक्खिस्सामो (क); नागार्जुनीयास्तु—सामाइयकडेऽहिकाउं 'सव्वपाणातिवातं पच्चक्खाइस्सामो' तद्दिवसं (चू) ।
८. अदिण्णं (क, ख) ।
९. अभोच्चाए (क, ख) ।
१०. °पीठियाओ (क) ।
११. पच्चोरुभित्ता (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से[1] महया[2] °तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते° ।" अयं पि 'भे उवएसे'[3] णो णेयाउए भवइ ॥

२१. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ[4] °अणगारियं° पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[5] °पडिपुण्णं पोसहं सम्मं° अणुपालेमाणा विहरित्तए । वयं णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया[6] कालं अणवकंखमाणा विहरिस्सामो । सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो[7], °एवं सव्वं मुसावायं सव्वं अदिण्णादाणं सव्वं मेहुणं° सव्वं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो 'तिविहं तिविहेणं'[8] मा खलु ममट्ठाए किंचि वि[9] °करेह वा कारवेह वा करंतं समणुजाणेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो । तेणं अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता° आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया ?

सम्मं[10] कालगय त्ति वत्तव्वं सिया ।

ते पाणा वि वुच्चंति[11], °ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से

---

१. इति मे (क, ख) ।
२. सं० पा०—से महया⋯जं णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयं ।
३. भेदे से (क, ख) ।
४. सं० पा०—अगाराओ जाव पव्वइत्तए ।
५. सं० पा०—चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा ।
६. जाव (क) ।
७. सं० पा०—पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं ।
८. तिविहेणं तिविहं (क) ।
९. सं०पा०—किंचि वि जाव आसंदीपेढियाओ ।
१०. समणा (क) ।
११. सं० पा०—वुच्चंति जाव अयं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते° ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ॥

२२. भगवं च णं उदाहु[1]—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अहम्मिया[2] °अधम्माणुया अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपाय-जीविणो अधम्मपलोइणो अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइ-संपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जी-वाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए[3] दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता भुज्जो सगमादाए दोग्गइगामिणो भवंति। ते पाणावि वुच्चंति[4], °ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह— "णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

२३. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[5] °धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्म-समुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडि-याणंदा सुसाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमर-

---

१. येषु सूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो विद्यते तत्रैव 'णियंठा खलु पुच्छियव्वा' इत्यादि पाठो गृहीतः अतः परवर्तिसूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो नास्ति तेन तस्य पाठस्य नास्ति तत्रावकाशः ।

२. सं० पा०—अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वओ परिग्गहाओ ।

३. आमरणंतिआए (क) ।

४. सं० पा०—वुच्चंति ते तसा ए महा ते चिर ते बहुतरगा आयाणसो इती से महता जेणं तुब्भे णो णेयाउए ।

५. सं० पा०—धम्माणुया जाव सव्वाओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगामिणो भवंति ।

ते पाणावि वुच्चंति[1], °ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह— "णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

२४. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[2] °धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू । एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ° अप्पडिविरया । जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति,[3] °ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह— "णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

२५. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—आरण्णिया आवसहिया गामंतिया[4] कण्हुईरहस्सिया[5]—जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ—णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूय-

---

१. सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए ।

२. सं० पा०—धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया ।

३. सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए ।

४. गामणियंतिया (क, ख, वृ); द्रष्टव्यम् २।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. कण्हंतिरहस्सिया (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवसत्तेहिं[1] अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति[2]—अहं णं हंतव्वो अण्णे हंतव्वा[3], °अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं° कालमासे कालं किच्चा अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं[4] °ठाणाइं° उववत्तारो भवंति। तओ वि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए[5] पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति[6], °ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया। ते चिरट्ठिइया, ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते"। अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२६. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा दीहाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरिट्ठिइया, ते दीहाउया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स[7] °सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२७. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा समाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते सममेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते समाउया। ते

---

१. पाणभूय° (क, ख)।
२. विप्पडिवेदेंति (क, ख, वृपा)।
३. सं० पा०—हंतव्वा जाव कालमासे।
४. सं० पा०—किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो।
५. तमूयत्ताए (क); तमोतत्ताए (ख)।
६. सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए।
७. सं० पा०—समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुयरगा[1] °पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ।।

२८. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते अप्पाउया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया[2] °तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ।।

णवभंगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं

२९. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया समणोवासगा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता[3] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालित्तए। णो खलु वयं संचाएमो अपच्छिम[4] °मारणंतियसंलेहणा-झूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया कालं अणवकंखमाणा° विहरित्तए। वयं णं सामाइयं देसावगासियं[5]—पुरत्था पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं एतावताव सव्वपाणेहिं[6] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते पाणभूयजीवसत्तेहिं खेमंकरे अहमंसि।

१. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

---

१. सं० पा०—बहुयरगा जाव णो णेयाउए।
२. सं० पा०—महया जाव णो णेयाउए।
३. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
४. सं० पा०—अपच्छिमं जाव विहरित्तए।
५. व्या० वि—'अणुपालेमाणा विहरिस्सामो' इति अध्याहर्तव्यम्।
६. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते पाणा वि[1] •वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

२. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते।

ते पाणावि वुच्चंति, ते तसा[2] •वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

३. तत्थ 'आरेणं जे'[3] तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[4] •वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

४. तत्थ 'आरेणं जे'[5] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं

---

१. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे से···।
२. सं० पा०—ते तसा···ते चिर जाव अयं पि भेदे से···।
३. जे आरेणं (क, ख)।
४. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे···।
५. जे आरेणं (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[1] •वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, से महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

५. तत्थ 'आरेणं जे'[2] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स 'अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते'[3]।

ते पाणावि[4] •वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

६. तत्थ 'परेणं जे'[5] थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[6] •वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।"° अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

---

१. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भे।
२. जेते आरेणं (क, ख)।
३. सुपच्चक्खायं भवंति (ख)।
४. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे***।
५. जेते परेणं (क, ख)।
६. सं० पा०—पाणावि जाव अयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. तत्थ 'परेणं जे'[1] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[2] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" ° अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

८. तत्थ 'परेणं जे'[3] तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति,विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[4] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

९. तत्थ 'परेणं जे'[5] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ परेणं चेव जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[6] °वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ

---

१. जे परेणं (क); जेते परेणं (ख)।
२. सं० पा०—पाणावि जाव अयं।
३. जे परेणं (क); जेते परेणं (ख)।
४. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे•••।
५. जे परेणं (क, ख)।
६. सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे से•••।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ॥°

तस-थावर-पाणाणं अव्वोच्छित्ति-पदं

३०. भगवं च णं उदाहु—ण एयं भूयं ण एयं भव्वं 'ण एयं भविस्सं'[1] जण्णं—तसा पाणा वोच्छिज्जिहिंति[2], थावरा पाणा भविस्संति। थावरा पाणा वोच्छिज्जिहिंति, तसा पाणा भविस्संति। अवोच्छिण्णेहिं तसथावरेहिं पाणेहिं जण्णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वदह—"णत्थि णं से केइ परियाए[3] °जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

उवसंहार-पदं

३१. भगवं च णं उदाहु—आउसंतो ! उदगा ! जे खलु समणं वा माहणं वा परिभासइ मित्ति[4] मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए [उट्ठिए[5] ?], से खलु परलोगपलिमंथत्ताए चिट्ठइ।

जे खलु समणं वा माहणं वा णो परिभासइ मित्ति[6] मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए [उट्ठिए ?], से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ[7] ॥

३२. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए॥

३३. भगवं च णं उदाहु—आउसंतो ! उदगा ! जे खलु तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तरं जोगखेमपयं लंभिए समाणे सो वि ताव तं आढाइ 'परिजाणेइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ'[8] कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ ॥

---

१. भवइ (वृ); × (चू)।

२. वोच्छिज्जिस्संति (क)।

३. सं० पा०—परियाए जाव णो णेयाउए।

४. मेत्ति (क, ख); मैत्रीं मन्यमानोऽपि (वृ); स्वीकृतपाठश्चूर्ण्यनुसारी वर्तते। व्या० वि०—मामिति।

५. प्रत्योर्नैष पाठो लभ्यते, चूर्णावपि नास्ति। वृत्तावस्ति व्याख्यातः।

६. मेत्ति (क, ख); मैत्रीं मण्यते (वृ)।

७. नागार्जुनीयास्तु—णो खलु समणं वा हीलमाणो परिभासति मणसा वायाए काएणं आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए, से खलु परलोगपडिमंथत्ताए चिट्ठति (चू)।

८. परिजाणाइ वंदति णमंसति (क); × (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—एएसि णं भंते ! पदाणं पुव्विं अण्णाणयाए अस्सवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं अमुयाणं अविण्णायाणं अणिज्जूढाणं[1] अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं अणिसिट्ठाणं अणिवूढाणं अणुवहारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहियं णो पत्तियं णो रोइयं।
एएसि णं भंते ! पदाणं एण्हिं जाणयाए सवणयाए बोहीए[2] °अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं विण्णायाणं णिज्जूढाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिसिट्ठाणं णिवूढाणं° उवधारियाणं एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि 'एवामेयं जहा णं'[3], तुब्भे वदह ॥

३५. तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं एवं वयासी--सद्दहाहि णं अज्जो ! पत्तियाहि णं अज्जो ! रोएहि णं अज्जो ! एवमेयं जहा णं अम्हे वयामो ॥

३६. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए[4] चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥

३७. तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं गहाय जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

३८. तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ८४६२२

अनुष्टुप् श्लोक २६४४, अक्षर १४

---

१. × (क)।

२. सं० पा०—बोहीए जाव उवधारियाणं।

३. एवमेव से जहेयं।

४. अंतियं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

आयारो

संक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अहमसी जाव अण्णयरीओ	१।३	१।१
आगममाणे जाव समत्तमेव	८।९५,९६,१२३,१२४	८।७८,८०
एवं जं परिघेतव्वं ति, मन्नसि जं	५।१०१	५।१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए बालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिजाए अट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गामं वा जाव रायहाणिं	८।१२६	८।१०६
जाएज्जा जाव एवं	८।६४-६७	८।४४-४८
धारेज्जा जाव गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था	८।२३	८।२१
समारम्भ जाव चेएइ	८।२४	८।२३

आयारचूला

संक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतलिक्खजाए जाव णो	५।३७,३८	५।३६
अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं	४।११	४।१०
अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति	३।६१	२।२२
अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	३।९	२।२२
अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं	५।४७	५।४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगाहगमणिज्जं जाव णो गमणाए	३।१३	३।१२
अणेसणिज्जं जाव णो	१।१७,६३,१०६,१३६	१।४
अणेसणिज्जं जाव लाभे	१।१०८,१२१	१।४
अणेसणिज्जं…णो	१।२१	१।४
अणेसणिज्जं…लाभे	१।८५,६७;८।१;६।१	१।४
अणेसणिज्जं…लाभे संते जाव[1] णो	१।१३५	१।४
अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति	२।५१	२।२२
अण्णयरं जहा पिंडेसणाए	७।५६	१।१५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३४,३५	७।२७,२८
अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं	१।२१,५।१२	१।१७
अपुरिसंतरकडं जाव णो	१।२४	१।१७;१।४
अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा… अन्नयरंसि	१०।६	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए (ते)	२।१०,१२	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव णो	२।१४,१६	२।८
अपुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविते	२।३	१।१२
अप्पंडए जाव संताणए	१।१३५	१।२
अप्पंडं जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३७,३८	७।३०,३१
अप्पंडं जाव मक्कडा	६।२	१।२
अप्पंडं जाव संताणगं (यं)	२।५८-६१,६६;५।२६,३०;७।२७,२८,३०,३१,३४	१।२
अप्पंडा जाव संताणगा	१।४३;३।५	१।२
अप्पंडे जाव चेतेज्जा	२।३२	२।२
अप्पापाणं जाव संताणगं	२।२	१।२
अप्पपाणंसि जाव मक्कडा	१०।२८	१।२
अप्पबीयं जाव मक्कडा	१०।३	१।२
अप्पुस्सुए जाव समाहीए	३।२६,५६,६१	३।२२
अफासुयं जाव णो	१।१२,६४,८२,८३,८७,६२,६६, १०७,११०,१११,१२८,१३३; २।४८;५।२२,२३,२५,२८,२६; ६।२६,४६;७।२६,२७,२६,३०	१।४
अफासुयं जाव लाभे	१।१०६	१।४
अफासुयं…लाभे	१।८४,१०२,१०४,१२३	१।४
अफासुयाइं जाव णो	६।१३,१४	१।४

१. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओ- दगादि कंदादि तहेव	६।२२-२५	५।२३-२५
अभिकंखसि सेसं तहेव जाव णो	५।२४	५।२३
अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	१५।४७,४८	१५।४४
अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज	२।१९,४६	१।८८
अयं तेण तं चेव जाव गमणाए	३।११	३।९,१०
अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि	६।१४	६।१३
असणं वा ४ अफासुयं	१।९२	१।९७
असणं वा ४ जाव लाभे	१।९०	१।४
असणं वा ४ लाभे	१।३६,४१,८८,९१	१।४
असत्थपरिणयंजाव णो	१।११३,११५-११९	१।९२;१।४
असावज्जं जाव भासेज्जा	४।२२	४।११
अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियंसमुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय- पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा जाव बहिया णीहडं वा अणीहडं वा	१०।४-८	१।१२-१६
आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा	३।५५	३।५४
आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि	३।४७	२।३६
आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु	२।३४,३५	२।३३
आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि	७।४६,४७	७।२३,२४
आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज	३।३९;६।४८	१।५१
आयरिए वा जाव गणावच्छेइए	१।१३१	१।१३०
इक्कडे वा जाव पलाले	२।६५;७।५४	२।६३
ईसरे जाव एवोग्गहियंसि	७।३२,३३	७।२५,२६
उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण	२।७२	१।१३०
एवं अतिरिच्छच्छिन्ने वि तिरिच्छच्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा	७।४४,४५	७।३०,३१
एवं आउतेउवाउवणस्सइ	२।४१	२।४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि	१२।२-१७	११।५-२०
एवं तसकाए वि	१।६८	१।६२
एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा	४।१९	४।१९
एवं बहवे साहम्मियथा एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ	२।४,५,६	२।३
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणस्स तहेव, पुरिसंतरं जहा पिंडेसणाए	५।६-११	१।१३-१८
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा	१।१३-१[illegible]	१।१२
एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा अहपुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए	५।४३-४५	१३८-४०
एवं बहिया बियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। तिव्वदेसियादि जहा बिइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे	६।५१-५८	५।४३-५०
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति	८।२-१५	२।२-१५
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगप्पसूयाइंति	९।३-१५	२।३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३।४०-७५	१३।३-३८
एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा	१।१८,२३;२।६४	१।५
एसणिज्जं जाव लाभे	१।७,१४३	१।५
एसणिज्जं…लाभे	२।६३;९।२	१।५
एस पइन्ना…जं	६।२८,४५	१।५६
ओवयंतेहि य जाव उप्पिजलगभूए	१५।४०	१५।१९
कंदाणि वा जाव बीयाणि	१०।१५	२।१४
कंदाणि वा जाव हरियाणि	५।२५	२।१४
कसिणे जाव समुप्पणे	१५।४०	१५।३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुट्टीति वा जाव महुमेहणी	४।१६	आयारो ६।८
कुलियंसि वा जाव णो	७।१२	५।३७
खंधंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे जाव णो	७।१३	५।३८
खलु जाव विहरिस्सामो	७।२५	७।२३
गंडं वा जाव भगंदलं	१३।३०-३३	१३।२८
गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए‘‘‘तओ	५।४८	३।५९
गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं	५।४९	३।५९
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि	१५।६४	१५।५७
गामं वा जाव	७।२	१।२८
गामं वा जाव रायहाणिं	१।३४,१२२;२।१;३।२;८।१	१।२८
गामंसि वा जाव रायहाणिंसि	१।३४,१२२;३।२	१।२८
गामे वा जाव रायहाणी	३।४५,५७	१।२८
गाहावइं वा जाव कम्मकरिं	१।६३,५।१८;६।१७	१।२५
गाहावइ-कुलं जाव पविट्ठे	१।१६,१७	१।१
गाहावइ-कुलं जाव पविसितुकामे	१।८,४४	१।१९
गाहावइ-कुलं‘‘‘पविसितुकामे	१।३७	१।१९
गाहावई वा जाव कम्मकरीओ	१।१२१, १२२, १४३; २।२२,३६,५१;७।१६	१।४६
गोलेति वा इत्थी गमेणं णेतव्वं	४।१४	४।१२
छत्तए वा जाव चम्मछेदणए	७।२४	२।४६
छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं	३।२४	२।४६
जवसाणि वा जाव सेणं	३।५६	३।४३
जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं	२।१२	१।२९
जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४५;५।१९;६।१६,१७	१।१४१
जाएज्जा जाव विहरिस्सामो	७।४९	७।२३
जावज्जीवाए जाव वोसिरामि	१५।५७	१५।४३
जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा	१०।१४	१।५१
झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि	१५।१;५।३९	१।३
झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय	१।१३५	१।३
ठाणं‘‘‘चेतेज्जा	२।२८,२९	२।१
ठाणं वा जाव चेतेज्जा	२।२७,५१-५५	२।१
णगरं वा जाव रायहाणिं	८।१	१।२८

णगरस्स वा जाव रायहाणीए	३।५८	१।२८
णिक्खमणपवेसाए जाव धम्माणुओग	७।१४	१।४२
तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तंजहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहेज्जा	१।१४८-१५४	१।१४१-१४७
तहप्पगारं जाव णो	१।११४	१।४,९२
तहप्पगाराइं णो	११।१२-१४,१६	११।५
तहप्पगाराइं···सद्दाइं···णो	११।७-११,१५	११।५
तहेव तिन्निवि आलावगा णवरं ल्हसुणं	७।३९-४२	७।२५-२८
दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं	७।३	२।४६
दस्सुगायतणाणि जाव विहारवत्तियाए	३।९	३।८
दुब्बद्धे जाव णो	७।११	५।३६
देज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४४	१।१४१
देज्जा जाव[1] फासुयं···पडिगाहेज्जा	१।१४७	१।१४१
देज्जा जाव[2] फासुयं···लाभे	५।१८	१।१४१
दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ	१।२४	१।२१
निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु०	३।२	१।४२
निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्तं वत्थपडियाए	५।५०	३।६१
पइण्णा जाव जं	२।१९,२२;६।२८,४५	१।५६
परिग्गिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा	३।४८,४९	३।४७
पडिक्कमामि जाव वोसिरामि	१५।५०	१५।४३
पडिमं जहा पिंडेसणाए	६।२०	१।१५५
पडिमाणं जहा पिंडेसणाए	५।२१	१।१५५
पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं	८।२१-३०	२।६७-७६
पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए	२।६७	१।१५५

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णस्स जाव चिंताए	२।५०-५६;७।१५,२१	१।४२
पमज्जेत्ता जाव एगं	३।३४	३।१५
परक्कमे जाव णो	३।७	३।६
पागाराणि वा जाव दरीओ	३।४७	३।४१
पाडिपहिया जाव आउसंतो	३।५७	३।५४
पाणाइं जहा पिंडेसणाए	५।५	१।१२
पाणाइं जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा । पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्संजए भिक्खुपडियाए		
बहवे समणमहणा वत्थेसणालावओ	६।४-१२	१।१२-१८;५।५-१३
पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज	२।७१	१।८८
पायं वा जाव इंदिय	२।४६	१।८८
पायं वा जाव लूसेज्ज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं	१।७,१४४	१।६
पुढविकाए जाव तसकाए	१५।४२	२।४१
पुढवीए जाव संताणए	१।१०२;५।३५;७।१०	१।५१
पुरिसंतरकड जाव आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसंतरकडं जाव बहिया णीहडं अण्णयरंसि	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव आसेविए	२।६,११,१३	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा	२।१५,१७	२।६
पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा	२।३०	२।२७
पुव्वोवदिट्ठा जाव जं	१।६१;२।२३,२४,२५,२७,२८,२६;३।६,१३,४६;५।२७	१।५६
पुव्वोवदिट्ठा जाव णो	१।६५	१।६१
पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं	३।५६	१।५२
फलिहाणि वा जाव सराणि	११।५	नि० १७।१४१
फासिए जाव आणाए	१५।५६	१५।४६
फासिए जाव आराहिए	१५।७०	१५।४६
फासुयं जाव पडिगाहेज्जा	१।२२,२५,८१,१००,१४६;५।२०,३०;७।२८,३१	१।५
फासुयं'''पडिगाहेज्जा	१।१४१	१।५
फासुयं'''लाभे संते जाव[1] पडिगाहेज्जा	१।१०१,१२८;५।१८	१।५
बहुकंटगं'''लाभे संते जाव[2] णो	१।१३४	१।४

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुपाणा जाव संताणगा	३।४	१।२
बहुबीया जाव संताणगा	३।१	१।२
बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं	१।८२	१।६
भगवंतो जाव उवरया	२।२५	१।१२१
भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे	१।५,६,७,११,१२,४२,६२,९२,९६,९९, १०१,१०४,१०५,१०७-१०९,१११	१।१
भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव। एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे	१।९३,९४	१।९२
भिक्खू वा जाव पग्गहियं०	१।१४६	१।१४५
भिक्खू वा जाव पविट्ठे	१।२३,४९,५०,५२	१।१
भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं	११।१६	११।२
भिक्खू वा जाव समाणे	१।५३,५५,५८,६१,८३,८४,८७,८९, ९०,९७,१०२,१०६,११०,११२-११९, १२४,१२५,१२६,१३५,१३६, १४५,१४७,१५१	१।१
भिक्खू वा २ जाव सुणेति	११।१४,१५	११।२
भिक्खू वा'''सेज्जं	१।८२,१२८,१३३,१३४,१४४	१।१
मणी वा जाव रयणावली	५।२७	२।२४
मणुस्सं जाव जलयरं	४।२६	४।२५
मत्ते तहेव दोच्चा पिंडेसणा	१।१४२	१।१४१
महद्धणमोल्लाइं'''लाभे	५।१४	१।४
महव्वए'''	१५।५६,६३,८४,९१	१५।४९
मासेण वा जहा वत्थेसणाए	६।२१	५।२२
मूलाणि वा जाव हरियाणि	१०।१२	२।१४
रज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७३,७४	१५।७२
रज्जेज्जा जाव णो	१५।७३,७४	१५।७२
लाढे जाव णो	३।१२	३।८
वएज्जा जाव परोक्खवयणं	४।४	४।३
वत्थाणि'''लाभे	५।१५	१।४
वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि	४।२१	३।४७
वायण जाव चिंताए	२।४९	१।४२
वित्ती जाव रायहाणि	३।३	१।४३;३।२
सअंडं जाव णो	७।३३	७।२६

सअंडं जाव णो	७।३६,४३	७।२६
सअंडं जाव मक्कडा	८।१;६।१	१।२
सअंडं जाव संताणयं (गं)	२।१,५७,६८;५।२८;७।२६,२६	१।२
सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा	६।२६-४२	५।२८-३६
सअंडे जाव संताणए	२।३१	१।२
संतिभेया [दा] जाव भंसेज्जा	१५।६७,६८,६९,७५	१५।६५
संतिविभंगा जाव धम्माओ	१५।६६	१५।६५
संतिविभंगा जाव भंसेज्जा	१५।७३,७४	१५।६५
संथारगं···लाभे	२।५७,५८,५९,६०	१।४
संथारयं जाव लाभे	२।६१	१।५
सकिरिया जाव भूओवघाइया	१५।४६	१५।४५
सज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७५,७६	१५।७२
सज्जेज्जा जाव णो	१५।७५	१५।७२
सत्ताइं जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए	२।७,८	१।१६,१७
सपाणं जाव मक्कडा	१०।२	१।२
सपाणे जाव संताणए	१।५१	१।२
समण जाव उवागया	३।३,४	३।२
समणमाहण जाव उवागमिस्संति	१।४३	१।४२
समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि	१५।७१	१५।४३
समारंभेणं जाव अगणिकाए	२।४२	२।४१
सम्मं जाव आणाए	१५।६३	१५।४६
सयं वा जाव पडिगाहेज्जा	६।१८	१।१४१
सयं वा णं जाव पडिगाहेज्जा	६।१९	१।१४१
ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण	१।६५-८०	१।६४
सामग्गिय	१।४८,६०,८६,१०३,१२०,१२९,१३७; २।२६,४३	१।२०
सामग्गियं	३।४६;५।४०,५१;७।२२,५८	२।७७
सामग्गियं जाव जएज्जासि	८।३१;१०।२९;११।२०	२।७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावज्जं जाव णो	४।२१	४।१०
सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता	५।२३	२।२०
सिणाणेण वा जाव पघंसेज्ज	५।३१	२।२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदगवियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ	५।३३,३४	५।३१,३२
सिया जाव समाहीए	३।४४	३।२६
सिलाए जाव मक्कडासंताणए	१।८२	१।५१
सिलाए जाव संताणए	१।८३	१।५१
सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्ज	५।३२	२।२१
सीलमंता जाव उवरया	२।३८	१।१२१
से आगंतारेसु वा जाव	७।६,८	७।४
सेसं तं चेव, एयं खलु० जइज्जासि	१४।३-८०	१३।३-८०
हत्थं जाव अणासायमाणे	३।५०,५२	२।७४
हत्थं वा जाव सीसं	२।१९	१।८८
हत्थिजुद्धाणि वा जाव कविंजल	११।१२	१०।१८
हत्थिट्ठाणकरणाणि वा जाव कविंजल	११।११	१०।१८

सूयगडो

अकेवले जाव असव्वदुक्ख०	२।५७,६२	२।३२
अकोहे जाव अलोभे	४।२४	२।५८
अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू	१।९,१०	१।८
अगाराओ जाव पव्वइत्तए	७।२१	७।२०
अज्झारोहसंभवा जाव कम्माणियाणेणं	३।७,८,९	३।२
अणारिए जाव असव्वदुक्ख०	२।७५	३।३२
अणारिया वेगे जाव दुरूवा	१।४९	१।१३
अणिट्ठं जाव णो सुहं	१।५१	१।५०
अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव णो सुहे	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव दुक्खे	१।५१	१।५०
अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे	१।५	१।३
अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं	१।७,८,९	१।६
अणुपुव्वेणं जाव सुपण्णत्ते	१।२३-२५	१।१३-१५
अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा	७।२	७।५
अपच्छिमं जाव विहरित्तए	७।२९	७।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपत्ते जाव अंतरा	१।१०	१।६
अपत्ते जाव सेयंसि	१।६	१।६
अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे	२।७१	२।५८
अभिगयजीवजीवे जाव विहरइ	७।४	२।७२
अवहरइ जाव समणुजाणइ	२।२५,२६,३०	२।२४
अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वाओ परिग्गहाओ	७।२२	२।५८

अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता तेहिं चेव
(१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४) रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं
(५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं
(६) अज्झोरुहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं
(८) तणजोणिएहिं तणेहिं
(९) तणजोणिएहिं मूलेहि जाव बीएहिं
(१०-१२) एवं ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा[1]
(१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि आलावगा
(१६) पुढविजोणिएहि वि आएहिं जाव कूरेहिं।
(१) उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४-६) एवं अज्झोरुहेहिं वि तिण्णि (७-९)
तणेहिं वि तिण्णि आलावगा (१०-१२)
ओसहीहिं वि तिण्णि (१३-१५) हरिएहिं वि
तिण्णि (१६) उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव
पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं, उदगजोणियाणं
रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं
तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं

---

१. येषां चत्वारश्चत्वार आलापकास्तेषां तृतीय आलापको न ग्राह्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झोरुहाणं		
तणाणं ओसहीण हरियाणं मूलाणं जाव		
बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कूरवाणं		
उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं		
सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति		
पुढविसरीरं जाव संतं । अवरे वि		
य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं		
अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं		
ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूल-		
जोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं		
कायजोणियाणं जाव कूरवजोणियाणं		
उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव		
पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं		
सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं ।	३।४४-७५	३।२-४३
अहीणं जाव मोहरगाणं	३।७९	३।७९
आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज०	४।२१	१।५६
आयहेउं वा जाव परिवारहेउं	२।९	२।३
आयाणं जाव कूराणं	३।२२	३।२२
आयारो जाव दिट्ठिवाओ	१।३५	नंदी सू० ८०
आरिए जाव सव्वदुक्ख०	२।७०,७५	२।३२
अट्टसालाओ वा जाव गद्दभ०	२।२८	२।२३
उदगजोणिया जाव कम्म०	३।८७,८८	३।८६
उदगसंभवा जाव कम्म०	३।२३,४३,८६	३।२
उदाहु······संतेगइया	७।२०	७।१७
उस्साणं जाव सुद्धोदगाणं	३।८५	३।८५
ऊसियं जाव पडिरूवं	१।६	१।३
एगखुराणं जाव सणप्फयाणं	३।७८	३।७८
एवं उदगबुब्बुए भणियव्वे	१।३४	१।३४
एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा	३।१४-१७	३।२-५
एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थि	३।७८	३।७६
एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्व	४।११-१५	४।१०,३
एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति		
तणजोणियंतणसरीरं च आहारेंति		
जाव मक्खाय	३।१२	३।४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा जाव मक्खायं	३।१३	३।५
एवं दुरूव संभवत्ताए एवं खुरदगत्ताए	३।८३,८४	३।८२, चूर्णि, वृत्ति
एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं	३।११	३।३
एवं विण्णू वेदणा	१।५१	१।५१
एवं सद्दहमाणा जाव इति	१।३७,३८	१।२१,२२
एवं हरियाण वि चत्तारि आलावगा	३।१८-२१	३।२-५
एवमाइक्खंति जाव परूवेंति	२।७८,७९;७।११	२।४१
एवमेव जाव सरीरे	१।१७	१।१७
एसो आलोवगो तहा णेयव्वो जहा पोंडरीए जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्तिबेमि	२।३३-५४	१।४९-७०
कच्छंसि वा जाव पव्वयविदुग्गंसि	२।६	२।४
कण्हुईरहस्सिया जाव तओ	२।५६	२।१४
कम्म जाव मेहुणवत्तिए	३।७८	३।७६
कम्म तहेव जाव तओ	३।७७	३।७६
किंचिवि जाव आसंदीपेढियाओ	७।२१	७।२०
किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो	७।२५	२।१४
किरिया इ वा जाव अणिरऐ	१।२९,३६	१।२०
किरिया इ वा जाव णिरए इ वा जाव चउत्थे	१।४५-४७	१।२९-३१
कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं	१।७	१।६
केइ जाव सरीरे	१।१७	१।७
केवले जाव सव्वदुक्ख०	२।५५	२।३२
कोहाओ जाव मिच्छा०	२।५८	वृत्ति
कोहे जाव मिच्छा०	४।३	२।५८
खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू	१।९,१०	२।६
गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं	२।२९	२।२४
गाहावइस्स जाव तस्स	४।६	४।५
गोहाणं जाव मक्खायं	३।८०	३।८०,२
चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं	३।८१	३।८१,२
चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा	७।२१	७।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा	३।६३-६६	३।८६-६२
जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव साख्विकडं	३।८०	३।७६
जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं	३।८१	३।७६
जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारिगमा अज्झारोहणवि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के	३।२४-४२	३।३-२१
जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते	२।५८	२।१२
जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे	२।६३	२।५८
जावज्जीवाए जाव सव्वाओ	२।५८	ओ० सू० १६३
जीवणिकाएहिं जाव कारवेइ	४।१६	४।१६
झामेइ जाव झामेंतं	२।२६	२।२१
झामेइ जाव समणुजाणइ	२।२८	२।२३
णाणागंधा जाव णाणाविह०	३।५	३।२
णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणापण्णे जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणावण्णा जाव ते जीवा	३।४	३।२
णाणावण्णा णाव भवंति	३।७६	३।२
णाणावण्णा जाव मक्खायं	३।६-६,२२,२३,४३,७७-७६, ८२,८५-८६,६७	३।२
णाणाविहजोणिया जाव कम्म०	३।८५,८६,६३,६७	३।८२
णो पाराए जाव सेयंसि	१।८	१।६
तं चेव जाव अगारं वएज्जा	७।१६	७।१८
तं चेव जाव उवट्ठावेत्तए	७।१६	७।१८
तालिज्जमाणा वा जाव उद्दविज्जमाणा	४।२१	१।५६
ते तसा…ते चिर जाव अयंपि भेदे से…	७।२६	७।२०
दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं	२।३०	२।२५
दंडणाणं जाव नो बहूणं	२।७६	२।७८
दंडेण वा जाव कवालेण	१।५६;४।२१	१।५६
दुक्खइ वा जाव परितप्पइ	१।४२,४३	१।४२
दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु	१।५१	१।४२
दुक्खामि वा जाव परितप्पामि	१।४३	१।४२
धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया	७।२४	२।७१
धम्माणुया जाव धम्मेणं	२।७१	ओ० सू० १६१
धम्माणुया जाव सव्वाओ	७।२३	२।६३
धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं	२।६३	ओ० सू० १६१
पउमवरपोंडरीयं जाव सव्वं परिग्गहं	१।१०	१।६
पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं	७।२१	७।२०
पत्तियमाणा जाव इति	१।३०,३१	१।२१,२२
परियाए जाव णो णेयाउए	७।३०	७।१६
पवालाणं जाव बीयाणं	३।५	३।५
पाईणं वा जाव सुयक्खाते	१।३२-३४,३६-४१	१।२३-२५
पाणाइवाए जाव परिग्गहे	४।३	१।५६
पाणाइवायाओ जाव विरए	१।५९	ओ० सू० १७१
पाणा जाव सत्ता	१।५६,५७;२।७८	१।४७
पाणा जाव सव्वे	४।२१	१।४७
पाणाणं जाव सत्ताणं	४।१७	१।४७
पाणाणं जाव सव्वेसिं	४।५,६,१७	१।४७
पाणावि जाव अयं······	७।२९	७।२०
पाणावि जाव अयं पिभे······	७।२९	७।२०
पाणा वि जाव अय पिभेदे······	७।२९	७।२०
पासादिए जाव पडिरूवे	१।३	१।१
पासादीया जाव पडिरूवा	७।५	१।१
पुढविकाइया जाव तसकाइया	४।३,२१	१।५६
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	४।१७	१।५६
पुढविकाए जाव तसकाए	१।५६	ठाणं ७।७३
पुढविकाए जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
पुढविसंभवा जाव कम्म०	३।२२	३।२
पुढविसंभवा जाव णाणाविह०	३।१०	३।२
पुढविसरीरं जाव संतं	३।२२.२३,४३,७७-७९ ८१,८२,८५-८९, ९७	३।२
पुढविसरीरं जाव सारूविकड	३।६,७,८,७६	३।२
पुढवीणं जाव सूरकंताणं	३।९७	३।९७
पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति	३।७८	३।७६
पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं	३।७९	३।७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसादिया जाव अभिभूय	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव चिट्ठंति	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव पुरिसमेव	१।३४	१।३४
बहुयरगा जाव णो णेयाउए	७।२७	७।१६
बोहिए जाव उवधारियाणं	७।३४	७।३४
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	७।२६	७।२०
भेत्ता जाव इति	२।१६	२।१६
मच्छाणं जाव सुंमुमाराणं	३।७७	पण्ण० १
महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव जाव एस ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे	२।७३,७४	२।६६,७०
महज्जुइया जाव महासोक्खा	२।६६	२।६६
महया…जं णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयं	७।२०	७।१६
महया जाव उवक्खाइत्ता	२।२५,३०	२।१६
महया जाव णो णेयाउए	७।२८	७।१६
महया जाव भवंति	२।२२,२३,२४,२६	१।१६
मूलत्ताए जाव बीयत्ताए	३।६	३।५
मूलाणं जाव बीयाणं	३।६	३।५
रुइला जाव पडिरूवा	१।४	१।२
वुच्चंति जाव अयं	७।२१	७।२०
वुच्चंति जाव णो णेयाउए	७।२३,२४,२५	७।२०
वुच्चंति ते तसा ए महा ते चिर ते वहुतरगा आयाणसो इती से महता जेणं तुब्भे णो णेयाउए	७।२२	७।२०
समणुजाणइ……।	२।२७	२।१६
समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए	७।२६	७।१६
सरीरं जाव सारूविकडं	३।५	३।२
सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं	७।१८,	१।४७
सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं	७।१८,२६	१।४७
सिज्झिस्संति जाव सव्व०	२।७६	२।८०
सिणेहमाहारेंति जाव अवरे	३।६	३।२
सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा	३।१०	३।२
सिया जाव उदगमेव	१।३४	१।३४
सिया जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
सेए जाव विसण्णे	१।६	१।६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेए जाव सेयंसि	१।८	१।६
सेसा तिण्णि आलावणा जहा उदगाणं	३।९०-९२,९८-१००	३।८६-८८
सोयण जाव परितप्पण	४।१७	४।१७
सोयाओ जाव फासाओ	१।५२	१।५२
सोयामि वा जाव परितप्पामि	१।५९	१।४२
हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा	४।२१	१।५६
हंतव्वा जाव कालमासे	७।२५	२।१४
हंता जाव आहारं	२।१९	२।१९
हंता जाव उवक्खाइत्ता	२।१९,२०	२।१९

ठाणं

अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती	७।२९	७।२८
अगारातो जाव पव्वतिते	४।४५०	३।५२३
अट्ठ एवं चेव	८।६६	८।६५
अड्डाइं जाव बहुजणस्स	८।१०	वृत्ति
अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे	४।४५१	४।४५०
अणुत्तरे जाव केवलवर०	५।९७	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	६।१०५	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	१०।१०३	१०।१०३
अणुसोतचारी जाव सव्वचारी	५।१९९	५।१९९
अत्थि जाव समुप्पणे	७।२	७।२
अपढमसमयणेरतिता एवं जाव अपढम०	८।१०५	५।१७५
अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा	९।१०;१०।१५३	५।१७५
अब्भोवगमिओ जाव सम्मं	४।४५१	४।४५१
अमणुण्णा सद्दा जाव फासा	१०।१४०	५।५
अमणुण्णे जाव साइमे	८।४२	८।४२
अमुच्छिए [ते] जाव अणज्भोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२
अयगोलसमाणे जाव सीसगोल०	४।५४६	४।५४६
अरहंतेहिं तं चेव	३।८५	३।८१
अरहा जाव अयं	१०।१०९	५।१९५;१०।१०९
अवट्ठिते जाव दव्वओ	५।१७४	५।१७०
अवलेहणित जाव देवेसु	४।२८२	४।२८२
अविसेस जाव पुव्वविदेहे	२।२७०	२।२६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती	२।२७४	२।२७२
असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे	७।१३३	७।१३१
असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरिया०	४।५४८	४।५४८
असुरणिस्सिते वि एमेव	२।१०३	२।१०२
असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसं दंडओ जाव एगा	१।१४३-१६३	२।३५४-३६२;४।३६६
असोगवणं जाव चूयवणं	४।३४०	४।३३९
अहासुत्तं जाव अणुपालित्ता	८।१०४	७।१३
अहासुत्तं जाव आराहिया	७।१३;९।४१;१०।१५१	वृत्ति[1]
अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे	८।१०	८।१०
आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा	९।११	७।१३
आउक्खएणं जाव चइत्ता	८।१०	८।१०
आगमे जाव जीते	५।१२४	५।१२४
आगमेणं जाव जीतेणं	५।१२४	५।१२४
आघवइत्ता जाव ठावतिता	३।८७	३।८७
आढाति जाव बहुं	८।१०	८।१०
आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं	९।६२	९।६२
अभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल०	५।२१९	५।२१८
आभिणिबोहिय [त] णाणी जाव केवल०	६।११;८।१०६	५।२१८
आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुर०	४।४११	४।४११
आयारं जाव दिट्ठिवायं	१०।१०३	समवाओ १।२
आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता	५।११७	५।११२
आलोएज्जा जाव अत्थि	८।१०	८।१०
आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४२,३४३;८।१०	३।३३८
आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे	१०।७३	९।४२
आलोयणारिहे जाव मूलारिहे	९।४२	८।२०
आवत्ते जाव पुक्खलावती	८।६९	२।३४०
आसपुरा जाव वीतसोगा	८।७५	२।३४१

१. वृत्तौ किञ्चद् भेदने लभ्यते—७।१३—अहासुत्तं यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया त्ति (पत्र ३६८)। ८।१०४—'अहासुत्ता अहाकप्पा अहामग्गा अहातच्चा सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया' ईति यावत्करणात् दृश्य अणुपालियं' त्ति (पत्र ४१७)। ९।१४१—यथासूत्रं यथाकल्प यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक् कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आराधिता चापि भवतीति। (पत्र ४३०) १०।१५१—अहासुत्तं······यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्यक्कायेन, फासिया पालिया शोधिता शोभिता वा तीरिया कीर्त्तिता आराधिता भवति (पत्र ४६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसाएइ [ति] जाव अभिलसति	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव मणं	४।४५०	४।४५०
आहारवं जाव अवातदंसी	१०।७२	८।१८
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	१०।१०५	४।५७८
इंदा जाव महाभोगा	१०।२६	५।२२३
इंदियाइं जाव णिज्झाइत्ता	९।४	९।३
इंदेथावरकाताधिपती जाव पातावच्चे	५।२०	५।१९
इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०५,१०६	५।१०४
इच्चेतेहिं जाव संचातेति	४।४३४	४।४३४
इरिताऽसमिती जाव उच्चार०	१०।१४	१०।१३
ईसाणे जाव अच्चुते	१०।१४९	२।३८०-३८४
उज्जलं जाव दुरहियासं	९।६२	वृत्ति
उत्तरासाढा एवं चेव	४।६५६	४।६५४
उण्णए णामं	४।४	४।४
उण्णत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढा- वत्तसमाणं मातमेवं चेव	४।६५३	४।६५३
उप्पण्णाण जाव जाणति	७।७८	५।१९५
उप्पायणविसोहि जाव सारक्खणविसोहि	१०।८५	१०।८४
उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उरगजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
उवचिण जाव णिज्जरा	८।१२६;९।७२	३।५४०
उव्वरिं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्त०	१०।८७	१०।८६
एगिंदितेहिंतो वा जाव पंचिंदिय०	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियत्ताते वा जाव पंचिंदियत्ताते	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४५	भ० २।१३९
एगिंदियणिव्वित्तिते जाव पंचिंदिय०	५।२३८	भ० २।१३९
एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४४	भ० २।१३९
एगिंदिया जाव पंचिंदिया	५।१८०,२०४;६।११	भ० २।१३९
एते चेव	५।१७९	५।१७८
एते तिण्णि आलावगा भाणितव्वा	१०।१५९	१०।१५९
एवं	२।१६८	२।१६७
एवं	२।२५६	२।२५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं	२।४६२	२।४६१
एव	३।३२२	३।३२१
एवं	३।४७५	३।४७४
एवं	६।३६	६।३८
एवं अग्गिच्चावि एवं रिट्ठावि	६।३६,३७	६।३५
एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि	२।६१	२।६०
एवं अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए	३।४२३,४२४	३।४२२
एवं अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसंकप्पे अज्जपण्णे अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे अज्जववहारे अज्जपरक्कमे अज्जवित्ती अज्जजाती अज्जभासी अज्जओभासी अज्जसेवी अज्जपरियाए अज्जपरियाले एवं सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा	४।२१३-२२७	४।१९६-२१०
एवं अणभिग्गहितमिच्छादंसणे वि	२।८५	२।८४
एवं असंकिलेसे वि एवमतिक्कमे वि वइक्कमे वि अइयारे वि अणायारे वि	३।४३९-४४३	३।४३८
एवं असंयमो वि भाणितव्वो	१०।२३	१०।२२
एवं आगंता णामेगे सुमणे भवति ३ एमीतेगे सु३ एस्सामीति एगे सुमणे भवति	३।१९५-१९७	३।१८९-१९१
एव उवसंपया एवं विजहणा	३।३५३,३५४	३।३५१
एवं एएणं अभिलावेणं––		

संगहणी-गाहा

गंता य अगंता य, आगंता खलु तहा अणागंता।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता[1], णिसिसित्ता[2] चेव णो चेव ॥१॥
हंता य अहंता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता।
बूतित्ता अबूतित्ता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥
'दच्चा य अदच्चा'[3] य, भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता।
लभित्ता अलभित्ता, पिबइत्ता[4] चेव णो चेव ॥३॥

---

१. चिट्ठित्त न चिट्ठित्ता (क)।
२. णिसितत्ता (क, ख)।
३. दत्ता अदत्ता (क)।
४. पिवइत्ता (क, ग); पिइता (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुतित्ता असुतित्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता ।
जतित्ता अजयित्ता य, पराजिणित्ता चेव णो चेव ॥४॥

सद्दा रूवा 'गंधा, रसा य'[1] फासा तहेव ठाणा य ।
णिस्सीलस्स गरहिता, पसत्था पुण सीलवंतस्स ॥५॥

एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा ।	३।१९८-२८४	संगहणी-गाहा; ३।१८९-१९४
एवं एसा गाहा फासेतव्वा, जाव—ससरीरी चेव असरीरी चेव		
सिद्धसइंदियकाए, जोगे वेए कसाय लेसा य । णाणुवओगाहारे, भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥	२।४१०	संगहणी-गाहा
एवं ओसप्पिणीए नवरं पण्णत्ते आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति	३।११०,१११	३।१०९
एवं कंता पिया मणुण्णा मणामा	२।२३३	२।२३२
एवं कुलसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य	४।४७४-४७६	४।४७१-४७३
एवं कुलेण य रूवेण य कुलेण य सुतेण य कुलेण त सीलेण य कुलेण य चरित्तेण य	४।३९७-४००	३।३९६
एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेण वि	१०।३	१०।३;२।२०३,२०४
एवं गंधा रसा फासा एवमिक्किक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा	२।२३०-२३८	२।२३४
एवं चउभंगो तहेव	४।२५०	४।२५०
एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा	२।३१०,३११	२।३०९
एवं चक्कवट्टी एवं बलदेवा एवं वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्संति	२।३१३-३१५	२।३१२
एवं चिणंति एस दंडओ एवं चिणिस्संति एस दंडओ एवमेतेणं तिण्णि दंडगा	४।९३,९४	४।९२
एवं चेव	३।४८४	३।४८३
एवं चेव	४।४२७	४।४२६
एवं चेव	४।६१७	४।६१७
एवं चेव	४।६१९	४।६१८
एवं चेव	५।१६१	५।१५९

१. रसा गंधा (क, ग) ।

एवं चेव	५।१६२	५।१५९
एवं चेव	६।२६	६।२५
एवं चेव	८।४९,५०	८।४८
एवं चेव	८।१२४	८।१२३
एवं चेव	१०।६४	१०।६३
एवं चेव एवं तिरियलोए वि	४।४८४,४८५	४।४८३
एवं चेव एवं फासामातो वि	६।८१	६।८१
एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो--		
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स ।		
पुव्वाइं आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ॥१॥		
रेवतित अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी ।		
कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥		
मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणी णमिणो य णेमिणो चित्ता ।		
पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरे वीरो ॥३॥	५।८६-९६	५।८४
एवं चेव जाव छच्च	६।२७	६।२५
एवं चेव णवरं खेत्तओ लोगालोगपमाणमिते गुणतो अवगाहणागुणे सेसं तं चेव	५।१७२	५।१७०
एवं चेव णवर गुणतो ठाणगुणे	५।१७१	५।१७०
एवं चेव णवरं दव्वओणं जीवत्थिगाते अणंताइं दव्वाइं अरूवि जीवे गुणतो उवओगगुणे सेसं तं चेव	५।१७३	५।१७०
एवं चेव मणुस्सावि	४।६१५	४।६१४
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा	३।९०	१।१२८-१३३
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा	३।९२	१।१३५-१४०
एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते	१०।७१	८।१९
एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा	८।१४	६।३६
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरिय	७।६	५।४८
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं	७।८१	५।१६६
एवं जहण्णोगाहणगाणं उक्कोसोगाहणगाणं अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं जहण्णठितियाणं उक्कस्सट्ठितियाणं अजहण्णुक्कोसठितियाणं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालगाणं अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं	१।२३८-२४६	१।२३५-२३७
एवं जहा उण्णत पणतेहिं गमो तहा उज्जु वंकेहि वि भाणियव्वो जाव परक्कमे	४।१२-२१	४।२-११
एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा	३।२७	३।२६
एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेति	४।३७६-३७८	४।३७२-३७४
एवं जहा तिट्ठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं जहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु	४।४४२-४४९	३।७९-८६
एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किण्णरे	७।११३	५।५७
एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि	३।७१	३।७०
एवं जहा हयाणं तहा गयाणं वि भाणियव्वं पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया	४।३८५-३८७	४।३८१-३८३
एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति	३।१९१	३।१८९
एवं जातीते य रूवेण य चत्तारि आलावगा एवं जातीते य सुएण य एव जातीते य सीलेण य एवं जातीते य चरित्तेण य	४।३९२-३९५	४।३९०
एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता	१०।१५२	५।१४५
एवं जाव एगा	१।२१६-२२६	पण्ण० १
एवं जाव कम्मगसरीरे	५।२७-३०	५।२५,२६
एवं जाव काउलेसाणं	१।१९८	१।१९२
एवं जाव केवलणाणं	२।५३-६२;३।१६३-१७२	२।४२-५१
एवं जाव घोसमहाघोसाणं णेयव्वं	७।११७,११८	५।६२,६३
एवं जाव जहा से	५।१२४	५।१२४
एवं जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८२,२८३
एवं जाव दुविहा	२।१२४-१२६	७।७३
एवं जाव पच्चुप्पणाणं	७।७	७।६
एवं जाव फासाइं	१०।४	१०।३
एवं जाव फासामतेणं	१०।२२	८।३३
एवं जाव फासामातो	८।३३	६।८१
एवं जाव फासामातो	८।३४	६।८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव मणपज्जवणाणं	२।४०४	२।५३-६१
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।७७-७९	४।७५,७६
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८१-८३	४।७५,८०
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८५-८७	४।७५,८४
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८९-९१	४।७५,८८
एवं जाव वणस्सइकाइया	२।१२९-१३२,१३४-१३७ १३०-१४३	२।१२४-१२७
एवं जाव सव्वेण वि	१०।५	१०।३
एवं जाव सिद्धिगती	१०।९९	५।१७५
एवं जाव सुक्कलेसाणं	१।१९३-१९५	समवाओ ६।१
एवं जाव सेलोदग०	४।३५५	४।३५४
एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवेक्खो पुरिसजाता	४।३८१-३८३	४।३७२-३७४
एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव	४।५८	४।५८
एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसणसल्लाणं	२।४०७	१।९७-१०७;२।४०६
एवं णेसत्थियावि	२।२८	२।२७
एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा णो केवलं संजमेणं संजमेज्जा णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा णो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा एवं सुयणाणं ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलाणं	२।४४-५१	२।४३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९४-१९६	२।१९३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९८-२००	२।१९७
एवं तेइंदियाणं वि चउरिंदियाणं वि	१।१८१-१८४	१।१७९,१८०
एवं थावरकाए वि	२।१६६	२।१६५
एवं दंसणाराहणा वि चरित्ताराहणा वि	३।४३६,४३७	३।४३५
एवं दीणजाती दीणभासी दीणोभासी	४।२०५-२०७	४।१९५
एवं दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलाचारे दीणववहारे	४।१९७-२०२	४।१९५
एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाले सव्वत्थ चउभंगो	४।२०९,२१०	४।१९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसण्णिवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते	४।४३७-४४१	४।४३५,४३६
एवं देवाणं भाणियव्वं	२।१५४	२।१५३
एवं देवुक्कलिया देवकहकहए	३।७७,७८	३।७६
एवं दोग्गतिगामिणीओ सोगतिगामिणीओ संकिलिट्ठाओ असंकिलिट्ठाओ अमणुण्णाओ मणुण्णाओ अविसुद्धाओ विसुद्धाओ अपसत्थाओ पसत्थाओ सीतलुक्खाओ णिद्धुण्हाओ	३।५१७,५१८	३।५१५,५१६
एवं पडिसडंति विद्धंसंति	२।२२४,२२५	२।२२३
एवं परिणते जाव परक्कमे	५।३६-४४	४।३-११
एवं परिग्गहिया वि	२।१६	२।१५
एवं पासे वि	३।५३३	३।५३२
एवं पुढियावि	२।२२	२।२१
एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी	२।४४५,४४६	२।४४३
एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ताणं एवं संवट्ट-इत्ताणं एवं णिवट्टतित्ताणं	२।३९९-४०२	२।३९८
एवं बलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो	४।४७७,४७८	४।४७२,४७३
एवं बलेण य सुतेण य एवं बलेण य सीलेण य एवं बलेण य चरित्तेण य	४।४०२-४०४	४।४०१
एवं मणुस्साणवि	३।६५,६६	३।६३,६५
एवं मोहे मूढा	२।४२२,४२३	२।४०१
एवं मोहे मूढा	३।१७८,१७९	३।१७६
एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झो-ववज्जंति	५।७-१०	५।६
एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं एक्केक छ-छ आलावगा भाणियव्वा	३।२९१-३१४	३।२८५-२९०;२।२०२-२०५
एवं रूवाइं पासइ गंधाइं अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइं पडिसंवेदेति	२।२०२-२०५	२।२०१
एवं रुवेण य सीलेण य एवं रुवेण य चरित्तेण य	४।४०६,४०७	४।४०५
एवं वइक्कमाणं अतिचाराणं अणायाराणं	३।४४५-४४७	३।४४४
एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ	४।११२	४।१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं	७।१०७,१०८	७।१०६
एवं विततेवि	२।२१७	२।२१६
एवं विसोही	३।४३३	३।४३२
एवं वेदेंति एव णिज्जरेंति	२।३९६,३९७	२।३९५
एवं वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालंभे		
एवमेक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा जहेव		
उवक्कमे	६।४१२-४१५	३।४११
एवं संकप्पे पण्णे दिट्ठी सीमाचारे		
ववहारे परक्कमे एगे पुरिसजाए		
पडिवक्खो नत्थि	४।६-११	४।५
एवं सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ वाएइ		
पडिच्छति पुच्छइ वागरेति	४।११३-११९	४।१११
एवं सम्मद्दिट्ठि परित्ता पज्जत्तग सुहुम सण्णि		
भविया य	३।३१८	३।३१८
एवं सव्वेसि चउभंगो भाणियव्वो	४।२०३	४।१९५
एवं सामंतोवणिवाइयावि	२।२५	२।२४
एवं सुंदरी वि	५।१६३	५।१५९
एवं सुत्तेण य चरित्तेण य	४।४०९	४।४०८
एवं मज्झोवज्जणा परियावज्जणा	३।५०९,५१०	३।५०८
एवमणारंभे वि एवं सारंभे वि एवमसारंभे		
वि एवं समारंभे वि एवं असमारंभे वि		
जाव अजीवकाय असमारंभे	७।८५-८९	७।८४
एवमणुण्णवत्तते उवातिणित्तते	३।४२०,४२१	३।४१९
एवमभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्ढा		
अमज्झा अपएसा	३।३२९-३३४	३।३२८
एवमाधारातिणितातें	५।४९	५।४८
एवमासणाइं चलेज्जा सीहणातं करेज्जा		
चेलुक्खेवं करेज्जा	३।८२-८४	३।८१
एवमिट्ठा जाव मणामा	२।२३४,२३५	२।२३३
एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पण्णत्ते		
एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव		
भविस्सति	२।३१०,३११	२।३०९
एवमेगसमयठितिया	१।२५५	१।२५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाहा		
अणुगंतव्वा —		
सवणे णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य संजमे ।		
अणण्हते तवे चेव वोदाणे अकिरिय णिव्वाणे ।।		
जाव से णं भंते !	३।४१८	३।४१८
एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि		
भाणियव्वा भुजपरिसप्पा वि भाणियव्वा		
एवं चेव	३।४२-४७	३।३६-६८
एवमेतेणं गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे		
उम्मायपत्ते	५।१०८	५।१०८
एवमेतेणमभिलावेणं चत्तारि कसाया पं तं		
कोहकसाए ४ पंचकामगुणे पं तं सद्द ५		
छज्जीवनिकाता पं तं पुढविकाइया जाव		
तसकाइया एवामेव जाव तसकाइया	९।६२	९।६२
कंते जाव मणामे	८।१०	८।१०
कंदे जाव पुप्फे	१०।१५५	८।३२
कक्खडे जाव लुक्खे	१।८४-८९	८।१३
कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेसा	६।४७,४८;७।७३	समवाओ ६।१
कालोभासे जाव परमकिण्हे	९।६२	वृत्ति
किण्हा जाव सुक्किला	५।२३,२२५	५।३
किण्हे जाव सुक्किले	५।२६,२२८	५।३
किरियावादी जाव वेणइयावादी	४।५३१	४।५३०
कुंडला चेव जाव रयणसंजया	८।७४	२।३४६
कुलमतेण वा जाव इस्सरिय०	१०।१२	८।२१
केवली जाणइ पासइ जाव गंधं	८।२५	७।७८
कोहअपडिसंलीणे जाव लोभ०	४।१९१	४।१९०
कोहकसाई जाव लोभकसाई	५।२०८	४।७५
कोहणिव्वत्तिए जाव लोभ०	४।६२५	४।७५
कोहमुंडे जाव लोभमुंडे	१०।९९	५।१७७
कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्ल०	१।११५-१२५	१।९७-१०७
कोहसण्णा जाव लोभसण्णा	१०।१०५	४।७५
कोहे जाव एगे	१।९७,९८	४।७५
खिप्पमवेति जाव असंदिद्ध०	६।६३	६।६१
खेमपुरी जाव पुंडरीगिणी	८।७३	२।३४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंगा जाव रत्ता	७।५६	७।५२
गतिकल्लाणं जाव आगमे०	८।११५	पइण्णगसमवाय सू० ४५
गमणं जाव अणाउत्तं	७।१३६	७।१३५
गोमुत्ति जाव कालं	४।२८२	४।२८२
गरहेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।४४४	३।३३८
चउभंगो	४।३	४।३
चउभंगो	४।१२	४।१२
चउभंगो	४।४५	४।२४
चउभंगो	४।४६८	४।४६८
चउभंगो	४।६११	४।६११
चउभंगो एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणा वि जाव परक्कमे	४।४५-५४	४।२४-३३
चउभंगो एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा	४।२४-२६	४।२-४
चउभंगो एवं संकप्पे जाव परक्कमे	४।२७-३३	४।५-११
चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे	८।३८	७।७६
चिण जाव णिज्जरा	७।१५३	३।५४०
चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
चुल्ल हिमवंते जाव मंदरे	७।५५	७।५१
जधा सालीणं जाव केवतितं	५।२०९	३।१२५
जह पंचट्ठाणे जाव परिहरणोवघाते	१०।८४	५।१३१
जहा दोच्चा णवरं दीहेणं परितातेणं	४।१	४।१
जहेव णंसत्थियाओ	२।३०,३१	२।२८
जाणइ जाव हेउं	५।७७	५।७५
जाणइ (ति) जाव हेउणा	५।७६,७८	५।७५
जाणइ जाव अहेउं	५।७९,८१	५।७५
जाणति जाव अहेउणा	५।८०,८२	५।७५
जातिणामणिहत्ताउते जाव अणुभाग०	६।११७	६।११६
जातिसंपण्णे जाव रूवसंपण्णे	४।२२९	४।२२९
जायमाणेहिं जाव तं चेव	३।८१	३।७९
जाव केवलणाणंउप्पाडेज्जा	२।६४-७३	२।४२-५१
जाव चउरिंदियाणं	२।१५७,१५८	१।१५८;२।१५६
जाव दव्वा	२।१४६-१५०	२।१४०-१४४
जिणे जाव सव्वभावेणं	६।४	५।१९५
जीवणिकाएहिं जाव अभिभवइ	३।५२३	३।५२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वा जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३७-४२	५।३४
ठाणाइं जाव भवंति	५।४२,४३	५।३४
ठाणेहिं जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणेहिं जाव धरेज्जा	५।१०३	५।१०३
ठाणेहिं जाव णो खंभातेज्जा	५।२२	५।२२
ठाणेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०४	५।१०४
णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि	५।१०७	आयारचूला १।२८
णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती	६।६२	६।६२
णमसामि जाव पज्जुवासामि	३।३६२	३।३६२
णाणत्तं जाव विउव्वित्ता	७।२	७।२
णासि जाव णिच्चे	५।१७४	५।१७०
णिक्कंखिए जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णिग्गंथीण वा जाव णो समुप्प०	४।२५४	४।२५४
णिग्गंथीण वा जाव समुप्प०	४।२५५	४।२५५
णिग्गंथे जाव णातिक्कमइ	५।१०२	५।१०२
णियमं जाव पगरेंति	६।१२२	६।११६
णिस्संकिते जाव णो कलुससमावण्णे	३।५२४	३।५२३
णिस्संकिते जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए	४।६१४	४।६१४
णेरइया जाव देवा	५।२०८	४।६०८
णेरतिआउते जाव देवाउते	४।२८६	४।६०८
णेरतिते जाव णो चेव	४।५८	४।५८
णेरतियणिव्वत्तिते जाव देवणिव्वत्तिते	७।१५३	७।७१
णेरतिय भवे जाव देवभवे	४।२८७	४।६०८
णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे	४।२८५	४।६०८
णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	३।३४०;८।१०	३।३३८
णो आसाएति जाव अभिलसति	४।४५१	४।४५०
णो चेव णं जाव करिस्सति	४।५१४	४।५१४
णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	६।३३६;८।६	३।३३८
णो महिड्ढिए जाव णो चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
णो महिड्ढिएसु जाव णो दूरंगतितेसु	८।१०	२।२७१
तं चेव	४।२३८	४।२३८
तं चेव	४।२३६	४।२३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चेव जाव संकिण्णे	४।२४०	४।२४०
तं चेव विवरीतं जाव मणुण्णा फासा	१०।१४१	१०।१४०
तं जहा जाव मिच्छादंसणवत्तिया	५।११३	५।११२
तत्थेगओ जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे	४।५६	४।५६
तलवर जाव अण्णमण्णं	६।६२	६।६२
तहेव	४।४२८	४।४२६
तहेव	४।५६३	४।५६३
तहेव	४।५६४	५।५६४
तहेव चउभंगो	४।४	४।४
तहेव चत्तारिगमा	४।४२६	४।४२६
तहेव जाव अवहरति	५।७३,७४	५।७३
तहेव जाव पणते	४।२	४।२
तहेव जाव हलिद्द०	४।२८४	४।२८४,२८२
तित्ता जाव मधुरा	५।४,३३	१।७६-८१
तित्ते जाव मधु (हु) रे	५।२६,२२८	५।४
तिरियगती जाव सिद्धिगती	८।५५	५।१७५
दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव	२।४२५	२।४२४
दिणयरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
दुब्भिक्खंसि वा जाव महता	५।९९	५।९८
दुस्समदुस्समा जाव एगा	१।१३६-१३९	वृत्ति
दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा	६।२४	१।१३६-१३९
देवलोगे [ए] सु जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२

दो अद्दाओ एवं भाणियव्वं--

संगहणी-गाहा

कत्तिया[1] रोहिणिमगसिर 'अद्दा य'[2] पुणव्वसू अ पूसो य।
तत्तोऽवि[3] अस्सलेसा महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई[4] विसाहा तह य होंति अणुराहा।
जेट्ठा मूलो पुव्वाऽऽसाढा तह उत्तरा चेव ॥२॥

---

१. कत्तिय (कग)।
२. अद्दाओ (क, ग)।
३. तत्तो य (क, ग)।
४. साई य (क, ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिई सवणे धणिट्ठा, सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवति अस्सिणि भरणी, णेयव्वा अणुपुव्वीए ॥३॥

एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव दो भरणीओ ।	२।३२३	संगहणीगाहा
दोसे जाव एगे	१।१०२-१०४	वृत्ति
धणिट्ठा जाव भरणी	९।१६	चंद० १०।११
धम्मत्थिकातं जाव परमाणुपोग्गलं	५।१६५	५।१६५
धम्मत्थिकातं जाव सद्दं	६।४	६।४
धम्मत्थिकायं जाव गंधं	७।७८;८।२५	७।७८
धम्मत्थिगातं जाव वातं	१०।१०९	८।२५
पउमसरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
पचमहव्वतितं जाव अचेलगं	९।६२	९।६२
पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं	९।६२	९।६२
पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४१	३।३३८
पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए जाव पंचिंदियणिव्वत्तिए	१०।१७३	१०।१५२
पढमसमयणेरतितणिव्वत्तिते जाव अपढम०	८।१२६	८।१०५
पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे	१०।२४	८।३५
पण्णवेति जाव उवदंसेति	१०।१०३	१०।१०३
पण्णवेहिति………	९।६२	९।६२
पमिलायति जाव जोणी	७।९०	३।१२५
पमिलायति जाव तेण परं	५।२०९	३।१२५
पम्हकूडे जाव सोमणसे	१०।१४५	५।१५०,१५१
पम्हे जाव सलिलावती	८।७१	२।३४०
परिताले जाव पूतासक्कारे	६।३३	६।३२
पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं	७।९०	३।१२५
पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमण	१।११०-११२	१०।१३
पाणातिवाए जाव एगे	१।९२-९४	१०।१३
पाणातिवातवेरमणे जाव परिग्गह०	५।१७,१२९	१०।१३
पाणातिवाते जाव परिग्गहे	१०।१४	१०।१३
पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं	५।१६,१२८	१०।१३
पाणातिवायाओ जाव सव्वातो	५।१	१०।१३
पातीणाते जाव अधाते	६।३८	६।३७
पायत्ताणिते जाव उसभाणिते	५।६४	५।६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायत्ताणिते जाव रधाणिते	५।५८	५।५७
पावते जाव भूताभिसंकणे	७।१३४	७।१३२
पुढविकाइएहिंतो वा जाव तस०	६।६	७।७३
पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिदिएहिंतो	६।८	६।७
पुढविकाइएत्ताए जाव पंचिदियत्ताए	६।१२	६।७
पुढविकाइएत्ताए वा जाव पंचिदियत्ताते	६।८	६।७
पुडविकाइयणिव्वत्तिमे जाव तस०	६।१२८	७।७३
पुढविकाइयणिव्वत्तिते जाव पंचिदियणिव्वत्तिते	६।७२	६।७
पुढविकाइया जाव तसकाइया	६।६,८	७।७३
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	६।७;१०।१५३	७।७३
पुढविकातितअसंजने जाव तस०	७।८३	७।७३
पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सति०	५।१४१	७।७३
पुढविकातितआरंभे जाव अजीव०	७।८४	७।८२
पुढविकातितत्ताते वा जाव तस०	६।६	७।७३
पुढविकातितसंजमे जाव तस०	७।८२	७।७३
पुढविकातित [य] संजमे जाव वणस्सति०	५।१४०;१०।८	७।७३
पुप्फए जाव विमलवरे	१०।१५०	८।१०३
पुरिसे जाव अवहरति	५।७४	५।७३
पुव्वासाढा एवं चेव	४।६५५	४।६५४
पोतगत्ताते वा जाव उब्भिगत्ताते	७।४	७।३
पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते	८।३	८।२
पोतगा जाव उब्भिगा	८।२	७।३
पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिगेहिंतो	७।४	७।३
पोततेहिंतो वा जाव उववातितेहिंतो	८।३	८।२
फरिस जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
फुसित्ता जाव विकुव्वित्ता	७।२	७।२
बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति	६।६२	६।६१
बेइंदिया जाव पंचिंदिया	६।७	६।११
बेंदिता जाव पंचेंदिता	१०।१५३	६।११
भरहे जाव महाविदेहे	७।५४	७।५०
भवति जाव फासामतेणं	६।८२	६।८१
भवित्ता जाव पव्वइए [तिते]	३।५३२;४।१,४५०;५।१९७;६।६२	३।५२३
भवित्ता जाव पव्वयाहिति	६।६२	३।५२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवेत्ता जाव पव्वतिता	१०।२८	३।५२३
भाषासमिती जाव पारिट्ठावणियासमिती	५।२०३	८।१७
भिण्णे जाव अपरिस्साई	४।५९५	४।५९५
मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणअपडिलंलीणे जाव इंदिय०	४।१९३	४।१९२
मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरण०	४।१०६	४।१०४
मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरण०	४।१०५	४।१०४
मणुस्सजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणुस्साणं वि एवं चेव	२।१६०	२।१५९
मणस्सा भाणियव्वा	४।३२३,३२४,३२५,३२६	४।३२२,३२३, ३२४,६२५,३२६
मरणाइं जाव णो णिच्चं	२।४१३	२।४११
महावीरेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३५	५।३४
महिड्ढिए जाव चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितिएसु	८।१०	८।१०
महिड्ढियं जाव महासोक्खं	५।२१	२।२७१
महिड्ढिया जाव महासोक्खा	२।२७१;९।६१	वृत्ति
मातति वा जाव सुण्हाति	३।३६२;४।४३४	सूय०[1] २।२।७
माहणस्स वा जाव समुप्पज्जंति	७।२	७।२
मुंडा जाव पव्वतिता	५।२३४	३।५२३
मुंडे जाव पव्वइए [तिते]	४।४५०,४५१;६।७९,१०४	३।५२३
मुच्छिते जाव अज्झोववण्णे	३।३६१	३।३६१
मुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	१।२४९	वृत्ति
मुसावाते जाव परिग्गहे	९।२६	१०।१३
रत्ताओ जाव अट्ठउसभकूडा	८।८४	८।८२
रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा	८।१०८	७।२४
रूवा जाव मणुण्णा	७।१४३	५।५
लोगविजओ जाव उवहाणसुयं	९।२	वृत्ति
वंजण जाव सुरूवं	९।६२	ओ०सू० १४३
वंदामि जाव पज्जुवासामि	४।४३४	३।३६२
वंशीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेह०	४।२८२	४।२८२

स्थानाङ्गवृत्तौ—'पिया इ वा भज्जा इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा पुत्ता इ वा घूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेपः (पत्र १३४)। 'भाया इ वा भज्जा इ वा भइणी इ वा पुत्ता इ वा घूया इ वे' त्ति यावच्छद्वाक्षेपः (पत्र २१३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णियाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	२।४१४	।४११
वणस्सतिकातितअसंजामे जाव अजीवकाय०	१०।६	१०।८
वद्दमाणे जाव विवक्कतव०	५।१३४	५।१३३
वसित्ता जाव पव्वाहिती	६।६२	६।६२
विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे	१०।१४६	५।१५२,१५३
वीइक्कंते जाव वारसाहे	६।६२	ओ०सू० १४४
वेजयंति जाव अउज्भा	८।७६	२।३४१
वेयड्ढ……	६।५३	६।४३
वेरमणं जाव सव्वतो	४।१३७	४।१३६
संकिते जाव कलुसमावण्णे	३।५२३	३।५२३
संजमबहुले जाव तस्स णं	४।१	४।१
संवच्छराइं जाव बावत्तरिवासाइं	६।६२	६।६२
संवरबहुले जाव उवहाणवं	४।१	४।१
संवाहण जाव गातु०	४।४५०	४।४५०
सक्के जाव सहस्सारे	८।१०२	२।३८०-३८३
सत्त भयट्ठाणा पं तं	६।६२	७।२७
सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवति ३ एवं सुणमीति[1] ३ एवं सुणेस्सामीति ३ एवं असुणेत्ताणामेगे सु ३ ण सुणमीति ३ ण सुणिस्सामीति	३।२८५-२९०	३।१८६-१९४
सद्द जाव अवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव अवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
सद्दहति जाव णो से	३।५२३	३।५२३
सद्दा जाव फासा	५।१२-१५,१२५-१२७	५।५
सद्दा जाव वतिदुहता	७।१४४	७।१४३
सद्देहिं जाव फासेहिं	५।६,११	५।५
सभासुहम्मा जाव ववसातसभा	५।२३६	५।२३५
समणस्स जाव समुप्पज्जति	७।२	७।२
समणेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३६	५।३४
सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३

१. सुणेमाणे (ख); सुणेमीति (ग)।

सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं	११२४८	ज०[1] २
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	४।४५१	४।४५१
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	५।७३	५।७२
सहिस्संति जाव अहियासिस्संति	५।७४	५।७३
सहेज्जा जाव अहियासेज्जा	५।७३,७४	५।७३
सिंधू जाव रत्तावती	७।५७	७।५३
सिज्झति जाव मंतं	४।१	४।१
सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण०	४।१	४।१
सिज्झिहिति जाव अंतं	६।६१	४।१
सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिद्धसुग्गता जाव सुकुल०	४।१४१	४।१३६
सिद्धाइं जाव सव्वदुक्ख०	८।३६	१।२४६
सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख०	८।५३	१।२४६
सिद्धे जाव प्पहीणे	१०।७५,७६,७८,७६	१।२४६
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	६।१०६	१।२४६
सुंबकडसमाणे जाव कंबलकड०	४।५४६	४।५४६
सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुभाते जाव आणुगामियत्ताए	५।१३	५।१२
सुमिणे जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुवच्छे जाव मंगलावती	८।७०	२।३२६
सुवप्पे जाव गंधिलावती	८।७२	२।३२६
सुसमसुसमा जाव एगा	१।१२६-१३२	वृत्ति
सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा	६।२३	१।१२६-१३२
से जहाणामते·········	६।६२	६।६२
सेलथंभसमाणे जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८३
सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुतस्सवि णेतव्वं	७।१२१,१२२	५।६६,६७
सेसं तं चेव जाव करिस्संति	४।५१४	४।५१४
सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु	५।२२	५।२२
सेसं तहेव जाव भासं	१०।१५६	१०।१५६

१. वृत्तो अस्य पाठस्य पूर्ति निम्नप्रकारा विद्यते—यावद्ग्रहणादेव सूत्रं द्रष्टव्यम्—सव्वब्भंतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापुयसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोन्नि सयाइं सत्तावीसाइं तिन्नि कोसा अट्ठावीसं धणुसयं तेरस अंगलाइं (पत्र ३३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	६।१४	पण्ण० १५।१
सोइंदियत्थोग्गहे जाव णोइंदिय०	६।६८	समवायाओ २८।३
सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३५	पण्ण० १५।१
सोइंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	८।११	पण्ण० १५।१
सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्ग०	१०।११	१०।१०
सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले	१०।८८	पण्ण० १५।१
सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदित०	१०।६६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४३	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे	८।१२	८।११
सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३८;६।१६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसाते जाव णोइंदियअसाते	६।१८	६।१४
सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	५।१७६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदिय०	५।१७७	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४२	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३७;६।१५;१०।१०	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसाते जाव णोइंदियसाते	६।१७	६।१४
सोहम्मे जाव सहस्सारे	८।१०१;१०।१४८	२।३८०-३८४
हरिवेरुलित जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
हव्वमागच्छति·········	३।८०	३।७६
हिताते जाव आणुगामित[य]त्ताते	३।५२४;६।३३	३।५२३
हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोल०	४।५४७	४।५४७
हेमवए············	३।६३	६।८३

समवाओ

अक्खराइं जाव एवं चरण	[1]प० ६५	प० ८६
अक्खरा जाव एवं चरण	प० ६६	प० ८६
अक्खरा जाव चरण-करण	प० ६१,६४	प० ८६
अक्खराणि जाव एवं चरण	प० ६७,६६	प० ८६
अक्खराणि जाव सेत्तं	प० ६२	प० ८६

१. पइण्णगसमवाय-सूत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्खरा तं चेव जाव परित्ता	प० ९०	प० ८९
अगाराओ जाव पव्वइए	९७।४	१९।५
अजित जाव वद्धमाणे	२४।१;प० २२२	अ० सू० २२७
अणंतागमा जाव चरण-करण	प० ९८	प० ८९
अणंतागमा जाव सासया	प० ९३	प० ८९
अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ	प० ९४,९५,९८,९९,१३१	प० ८९
अणुओगदारा संखेज्जाओ	प० ९७	प० ९१
अभिणंदण जाव पास	२३।३,४	अ० सू० २२७
अयले जाव रामे	प० २४१	वृत्ति
अवसेसाइं परिकम्माइं पाढाइयाइं एक्कारसविहाइं पण्णत्ताइं	प० १०४-१०८	प० १०१,१०२
अस्सगीवे जाव जरासंधे	प० २४६	वृत्ति
अहासुत्तं जाव आराहिया	४९।१;६४।१;८१।१;१००।१	वृत्ति[1]
आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति	प० ९०	प० ८९
आघविज्जंति जाव एवं	प० ९३	प० ८९
आघविज्जंति जाव नाया०	प० ९४	वृत्ति; प० ८९
आघविज्जंति०	प० ९०,९१,९३-९९,१३१	प० ८९
आहारय जह देसूणारयणि उ पडिपुण्णारयणी	प० १६६	पण्ण० २१
आहारयसरीरे समचउरंससंठाण संठिते	प० १६५	पण्ण० २१
उववाएणं	प० १८३	पण्ण० ६
एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए	८८।२	नंदी १०२
एवं गतिनाम…ओगाहणानाम	प० १७६	प० १७६
एवं चउदिसिंपि नेयव्वं	५८।४	५८।३;५२।३
एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं[2]	८८।४,५,६	८८।३
एवं चेव दोमासिया आरोवणा सपंचराय दोमासिया आरोवणा एवं तेमासिया आरोवणा एवं चउमासिया आरोवणा	२८।१	२८।१
एवं चेव मंदरस्स	८७।४	८७।१

---

१. वृत्तौ किञ्चिद् भेदेन लभ्यते, यथा —६४।१ यावत्करणात् 'अहाकप्पं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्मं आणाए आराहियावि भवति। ८१।१ 'जाव' त्तिकरणाद्यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आज्ञयाऽऽराधितेति।

२. नायव्वं (क); नातव्वं (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जइ मणुस्स किं गब्भवक्कंतिय संमुच्छिम गो गब्भवक्कंतिय णो संमुच्छिम जइ गब्भ-वक्कंतिय किं कम्मभूमग अकम्मभूमग गो कम्मभूमग णो अकम्मभूमग जइ कम्मभूमग किं संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय गो संखेज्जवासाउय णो असंखेज्जवासाउय जइ संखेज्जवासाउय किं पज्जत्तय अपज्जत्तय गोयमा पज्जत्तय णो अपज्जत्तय जइ पज्जत्तय किं सम्म मिच्छ सम्मामिच्छ गो सम्मद्दिट्ठि नो मिच्छदिट्ठि नो सम्मामिच्छदिट्ठि जइ सम्म-दिट्ठि किं संजतं असंजत संजतासंजत गो संजय णो असंजय णो संजतासंजत जति संजय किं पमत्तसंजय अपमत्तसंजय गो पमत्तसंजय णो अपमत्तसं जइ पमत्तसंजय किं इड्ढिपत्त अणिड्ढिपत्त गो इड्ढिपत्त नो अनिड्ढिपत्त वयणावि भतियव्वा	प० १६४	प० १६४
एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे	१००।५	१००।४
एवं दक्खिणिल्लाओ उत्तरे	६६।३	६६।२
एवं दिवसोऽवि नायव्वो	१२।६	१२।८
एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि	६६।४-८	६६।३
एवं पंचवि	२७।१	५।२
एवं पंचवि इंदिया	२५।१	पण्ण० १५।१
एवं पंचवि रसा	२२।६	ठा० १।७८-८२
एवं पडुप्पण्णेवि अणागएवि	प० १३२	प० १३२
एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स पुरत्थिमिल्ले च	८७।३	८७।१
एवं माणे माया लोभे	१६।२;२१।२	अस्य पूर्तिः अत्रैव
एवं संतिस्सवि	९०।३	९०।२
एवं सगरे वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए	७१।४	७१।३
कंतं वण्णं लेसं जाव णंदुत्तरवडेंसगं	१५।१३	३।२१
कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८६।२	८६।१
कालगयाइं जाव सव्वदुक्ख०	प० ६३	८६।१
कीयं आहट्टु जाव अभिक्खणं	२१।१	दसा० २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहविवेगे जाव लोभ	२७।१	४।१
चउरंसा जाव असुभा	प० १४१	वृत्ति
जातिनाम जाव ओगाहणानाम	प० १७७	प० १७६
जुवे जाव माउया	प० २४५	वृत्ति
णितिया जाव णिच्चा	प० १३३	प० १३३
ताइं चेव माउया पयाणि जाव नंदावत्तं	प० १०३	प० १०२
तिविट्ठू य जाव कण्हे	प० २४१	वृत्ति
धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए	प० १३७	पण्ण० १
नेरइया०	प० १७३	पण्ण० ३५
पज्जत्तगाणं०	प० १५५	प० १५४
पडिसत्तू जाव सचक्केहिं	प० २४६	वृत्ति
पढभाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु	१५।३	केवलं संख्यापूरिता
पम्हलेसं जाव पम्हुत्तरवडेंसगं	६।१७	३।२१
परूवेई जाव से णं	प० ९६	प० ९५
पुढवीकायसंजमे एवं जाव कायसंजमे	१७।२	१७।१
बलिस्स णं……	१७।८	ठा० ४।१५१
बुद्धे………	९२।२	४२।१
बुद्धे जाव प्पहीणे	५५।१,४;७२।३;८४।२;९५।४;प० ४०	४२।१
बुद्धे जाव सव्वदुक्ख०	३०।२;५१।४;प० ६१	४२।१
बे ते चउ पंच	प० १६७	प० १६७
भद्दवए णं मासे कित्तिए णं पोसे णं फग्गुणे णं वइसाहे णं मासे	२९।३-७	२९।२
भवित्ता जाव पव्वइए	७१।३;७५।२	१९।५
भवित्ता णं जाव पव्वइए	८३।४	१९।५
भविस्सइ य जाव अवट्ठिए	प० १३३	प० १३३
भूयाणंदे जाव घोसे	३२।२	ठा० २।३५५-३६१
महुरा जाव हत्थिणपुरं	प० २४४	वृत्ति
मुंडे जाव पव्वइए	५९।२	१९।५
मुंडे जाव पव्वइया	७७।२	१९।५
मुसावायाओ जाव सव्वाओ	५।२	५।६
रुइल्लप्पभं जाव रुइल्लुत्तरवडेंसगं	६।१७	३।२१
लोगप्पभं जाव लोगुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वइरावत्तं जाव वइरुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वायणा जाव अंगट्ठयाए	प० ९३	प० ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायणा जाव संखेज्जा	प० ९१	प० ८९
वायणा जाव से णं	प० ९२	प० ९१
विजया एवं चेव जाव वासुदेवा	६८।४-६	६८।१-३
वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८९।१	जं० २
सणंकुमारे जाव पाणए	३२।२	ठा० २।३८१-३८४
सत्तमाए णं पुढवीए पुच्छा	प० १४३	प० १४१
सवणो जाव भरणी	९।६	चंद० १०।११
सिज्झिस्संति जाव अंतं	५।२२;७।२३;८।१८;१०।२५; १३।१७;१५।१६;१६।१६	१।४६
सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं०	३।२४;४।१८;६।१७;९।२०;११।१६; १२।२०;१४।१८;१७।२१;१८।१८; १९।१५;२०।१७;२१।१४;२२।१७; २३।१३;२४।१५;२५।१८;२६।११; २७।१५;२८।१५;२९।१८;३०।१६; ३१।१४;३२।१४;३३।१४	१।४६
सिद्धाइं जाव प्पहीणाइं	४४।२	४२।१
सिद्धे जाव प्पहीणे	७२।४;७३।२;७४।१;७८।२;८३।३; ८४।४;९५।५;१००।४	४२।१
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	४२।१	वृत्ति[1]
सुज्जकंतं जाव सुज्जुत्तरवडेंसगं	९।१७	३।२१
सेवणया [सेवित्ता] जाव सायासोक्ख०	९।२	९।१
सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स	३३।१	दसा० ३
सोइंदियधारणा जाव णोइंदियधारणा	२८।३	२८।३
सोइंदियनिग्गहे जाव फासिंदिय०	२७।१	२८।३
सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा	२८।३	२८।३
सोतिंदियावाते जाव णोइंदियावाते	२८।३	२८।३
हंता गोयमा !.........	प० १७५	प० १७५

१- वृत्तौ किञ्चिद्भेदेन लभ्यते यथा—
४२।१ जाव त्तिकरणात् 'बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे'त्ति दृश्यम् ।
४४।२ जाव त्तिकरणेण 'बुद्धाइं मुत्ताइं अंतयडाइं सव्वदुक्खप्पहीणाइं'ति दृश्यम् ।
८९।१ जाव त्तिकरणात् 'अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते' ति दृश्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-२

आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर

आलोच्य-पाठ

परियावेणं [आयारो २।२, पृ० १७]

यद्यपि चूर्णौ वृत्तौ च 'परियावेणं' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति, आदर्शेष्वपि एष एव पाठो लभ्यते। तथापि 'माया मे, पिया मे' इत्यादि पदानां अर्थप्रसंगतया 'परियारेणं' इति पाठस्य परिकल्पना सहजमेव जायते। प्राचीनलिप्यां रकारवकारयोः सादृश्यात् एतत् परिवर्तनं नास्वाभाविकमस्ति।

मानवा [आयारो ५।६३, पृ० ४३]

वृत्तिकृता 'मानवा' मनुजाः इति विवृतम्। चूर्णिकृता च नैतत् पदं विवृतम्। किन्तु 'एवं थंभे मायाए वि लोभे वि जोएयव्वं' इति निर्देशः कृतः। तेन 'माणवा' इति पदस्य स्थाने 'माणओ' इति पाठस्य परिकल्पना जायते।

अचिरं [आयारो ८।८।२०, पृ० ७१]

चूर्णौ वृत्तौ च 'अचिरं, पदं स्थानार्थे व्याख्यातमस्ति। यद्येतत् स्थानावाची स्यात् तदा 'अइर' मिति पाठः संगच्छते। 'अजिरं प्रांगणम्,' इति तस्यार्थो भवेत्। 'अइर' इति अतिरोहितार्थवाची देशीशब्दोपि विद्यते। केनापि कारणेन इकारस्य चकारो जात इति प्रतीयते। अथवा चूर्णिकारेण वैकल्पिकरूपेण कालार्थे अचिरशब्दस्य प्रयोगो निर्दिष्टः, सोपि युक्तः स्यात्।

एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए [आयारचूला १।२६, पृ० ९०]

आयारचूलायाः पाठ-संशोधने षड्आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिर्वृत्तिश्च। तत्र पञ्चादर्शेषु उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति। वृत्तौ (पत्र ३००) 'एस विलुंगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—"गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन संस्कुर्याद्—यथैष साधुः शय्यायाः संस्कारे विधातव्ये 'विलुंगयामो' त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चन इत्यतः स गृहस्थः कारणे संयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति।" अस्माभिः 'ध' प्रत्यनुसारी पाठः स्वीकृतः। चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते। 'सेज्जाए अक्खाए'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र दोषशब्दः अध्याहर्त्तव्यः। वस्तुतः उक्तपाठः व्याख्यागतः प्रतीयते। 'संथरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठः स्यात्तदानीमपि स खण्डितो न प्रतिभाति। वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टिर्जायते। वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुंगयामो' पाठ आसीत् स केषुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते, नतु सर्वेषु।

कप्पस्स [पइण्णगसमवाय सू० २१५, पृ० ६४१]

अत्र 'कप्पस्स' इति पाठस्याशयो वृत्तिकृता कल्पभाष्यत्वेन सूचितः, वाचनान्तरे च पर्युषणाकल्पत्वेन सूचितः, यथा—'कप्पस्स समोसरणं नेयव्वं' ति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण समवसरणवक्तव्यताऽध्येया, सा चावश्यकोक्ताया न व्यतिरिच्यते, वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम् (वृत्ति, पत्र १४४)।

पर्युषणाकल्पे समवसरणवक्तव्यता इत्थमस्ति—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ॥२०१॥

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था? समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे इंदभूई अणगारे गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, मज्झिमे अणगारे अग्गिभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाये गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे अकंपिए गोयमे गोत्तेणं थेरे अयलभाया हारियायणे गोत्तेणं ते दुन्नि वि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाइंति, थेरे मेयज्जे थेरे य प्पभासे एए दोन्नि वि थेरा कोडिन्ना गोत्तेणं तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाएंति, से एतेणं अट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ॥२०२॥

सव्वे एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसंगिणो चोद्दसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधरा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तिएणं अपाणएणं कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा। थेरे इंदभूई थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धिं गए महावीरे पच्छा दोन्नि वि परिनिव्वुया ॥२०३॥

जे इमे अज्जत्ताते समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वोच्छिन्ना ॥२०४॥ कल्पसूत्र, पृ० ६०,६१

प्रस्तुताङ्गस्य उपसंहारसूत्रे ऋषि-यति-मुनि-वंशानां वर्णनस्योल्लेखोस्ति। वृत्तिकृतास्य संबन्धः पर्युषणाकल्पगतसमवसरणप्रकरणेन सहयोजितः, यथा—गणधरव्यतिरिक्ताः शेषा जिनशिष्या ऋषयस्तद्वंशप्रतिपादकत्वादृषिवंश इति च तत्प्रतिपादनं चात्र पर्युषणाकल्पस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रक्रमेण भणितत्त्वादत एव यतिवंशो मुनिवंशश्चैतदुच्यते, यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात्। वृत्ति, पत्र १४७, १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वोक्तसमर्पणेन पर्युषणाकल्पस्य २०१ सूत्रात् २०४ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणं जायते, किन्तु वृत्तिकृता ऋषिवंशस्य यद् व्याख्यानं कृतं तेन २०१ सूत्रात् २२३ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणामावश्यकं भवति। अत्र महती समस्या वर्तते। यदि पूर्ववर्ति समर्पणं मान्यं क्रियेत तदा ऋषिवंशस्य वर्णनं नान्यत्र क्वापि समुपलभ्यते। यदि च ऋषिवंशस्य वर्णनं समवसरणप्रक्रमेण सह संबध्यते तदा पूर्वोक्तसमर्पणस्याप्रयोजनीयता सिध्यति। वृत्तिकारेण नास्या असंगतेः कापि चर्चा कृता। किमत्र रहस्यमिति निश्चयपूर्वकं वक्तुं न शक्यते, तथापि संभाव्यते समवसरणस्य संक्षेपीकरणसमये किंचित् परिवर्तनं जातम्।

ऋषिवंशवर्णनम्—

समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते णं। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणसगोत्तस्स अज्जजंबुनामे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते। थेरस्स णं अज्जजंबुनामस्स कासवगोत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अंतेवासी कच्चायणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगोत्तस्स अज्जसेज्जंभवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसेज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगोत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगोत्ते ॥२०५॥

संखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एवं थेरावली भणिया, तं०—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगियायणसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जसंभूयविजए माढरसगोत्ते, थेरे अज्जभद्दबाहु पाइणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—सुट्ठियसुपडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगोत्ता। थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं अंतेवासी थेरे अज्जइंददिन्ने कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातिसरस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा—थेरे अज्जनाइले थेरे अज्जपोमिले थेरे अज्जजयंते थेरे अज्जतावसे। थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया, थेराओ अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा निग्गया, थेराओ अज्जजयंताओ अज्जजयंती साहा निग्गया, थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया इति ॥२०६॥

वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभद्दाओ परओ थेरावली एवं पलोइज्जइ, तं जहा—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते, थेरे अज्जसंभूयविजये माढरसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जभद्दबाहुस्स पाईणगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे गोदासे थेरे अग्गिदत्ते थेरे जण्णदत्ते थेरे सोमदत्ते कासवगोत्ते णं। थेरेहिंतो णं गोदासेहिंतो कासवगोत्तेहिंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थ णं गोदासगणे नामं गणे निग्गए, तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—
तामलित्तिया कोडीवरिसिया पोंडवद्धणिया दासी खब्बडिया ॥२०७॥

थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा—

नंदणभद्दे उवनंदभद्द तह तीसभद्द जसभद्दे ।
थेरे य सुमिणभद्दे मणिभद्दे य पुन्नभद्दे य ॥१॥
थेरे य थूलभद्दे उज्जुमती जबुनामधेज्जे य ।
थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पंडुभद्दे य ॥२॥

थेरस्स णं अज्जसंभूइविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमाओ सत्त अंतेवासिणीओ अहावच्चाओ अभिन्नाताओ होत्था, तं जहा—

जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह होइ भूयदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा भगिणीओ थूलभद्दस्स ॥१॥ ॥२०८॥

थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमगोत्तस्स इमे दो थेरा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते, थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्छसगोत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे उत्तरे थेरे बलिस्सहे थेरे धणड्ढे थेरे सिरिड्ढे थेरे कोडिन्ने थेरे नागे थेरे नागमित्ते थेरे छलुए रोहगुत्ते कोसिए गोत्तेणं । थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो रोहगुत्तेहिंतो कोसियगोत्तेहिंतो तत्थ णं तेरासिया निग्गया । थेरेहिंतो णं उत्तरबलिस्सहेहिंतो तत्थ णं उत्तरबलिस्सहगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—कोसंबिया सोतित्तिया कोडवाणी चंदनागरी ॥२०९॥

थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—

थेरे त्थ अज्जरोहण भद्दजसे मेहगणी य कामिड्ढी ।
सुट्ठियसुप्पडिबुद्धे रक्खिय तह रोहगुत्ते य ॥१॥
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते गणी य बंभे गणी य तह सोमे ।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥२॥ ॥२१०॥

थेरेहिंतो णं अज्जरोहणेहिंतो कासवगुत्तेहिंतो तत्थ णं उद्देहगणे नामं गणे निग्गए । तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ छच्च कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति—उदुंबरिज्जिया मासपूरिया मतिपत्तिया सुवन्नपत्तिया, से तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमं च नागभूयं बीयं पुण सोमभूइयं होइ ।
अह उल्लगच्छ तइयं चउत्थयं हत्थिलिज्जं तु ॥१॥
पंचमगं नंदिज्जं छट्ठं पुण पारिहासियं होइ ।
उद्देहगणस्सेते छच्च कुला होंति नायव्वा ॥२॥ ॥२११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेरेहिंतो णं सिरिगुत्तेहिंतो णं हारियसगोत्तेहिंतो एत्थ णं चारणगणे नामं गणे निग्गए तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ सत्त य कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति, तं जहा - हारियमालागारी संकासिया गवेधूया वज्जनागरी, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमेत्थ वत्थलिज्जं बीयं पुण वीचिधम्मकं होइ ।
तइयं पुण हालिज्जं चउत्थगं पूसमित्तेज्जं ॥१॥
पंचमगं मालिज्जं छट्ठं पुण अज्जवेडयं होइ ।
सत्तमगं कण्हसहं सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥ ॥२१२॥

थेरेहिंतो भद्दजसेहिंतो भारद्दायसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उडुवाडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिन्नि कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति, तं० —चंपिज्जिया भद्दिज्जिया काकंदिया मेहलिज्जिया, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति—

भद्दजसियं तह भद्दगुत्तियं तइयं च होइ जसभद्दं ।
एयाइं उडुवाडियगणस्स तिन्नेव य कुलाइं ॥१॥ ॥२१३॥

थेरेहिंतो णं कामिड्ढिहिंतो कुंडिलसगोत्तेहिंतो एत्थ णं वेसवाडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि सहाओ चत्तारि कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एव०— सावत्थिया रज्जपालिया अन्तरिज्जिया खेमलिज्जिया, से तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एव०—

गणियं मेहिय कामड्ढियं च तह होइ इंदपुरगं च ।
एयाइं वेसवाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइं ॥१॥ ॥२१४॥

थेरेहिंतो णं इसिगोत्तेहिंतो णं काकंदएहिंतो वासिट्ठसगोत्तेहिंतो एत्थ णं माणवगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिण्णि य कुलाइं एव० । से किं तं साहाओ ? साहाओ एवमाहिज्जंति—कासविज्जिया गोयमिज्जिया वासिट्ठिया सोरट्ठिया, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

इसिगोत्तियऽत्थ पढमं, बिइयं इसिदत्तियं मुणेयव्वं ।
तइयं च अभिजसंत तिन्नि कुला माणवगणस्स ॥१॥ ॥२१५॥

थेरेहिंतो णं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकंदिएहिंतो वग्घावच्चसगोत्तेहिंतो एत्थ णं कोडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइं एव० । से किं तं साहाओ ? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

उच्चानागरि विज्जाहरी य वइरी य मज्झिमिल्ला य ।
कोडियगणस्स एया, हवंति चत्तारि साहाओ ॥१॥

से किं तं कुलाइं ? २ एव० तं जहा—

पढमेत्थ बंभलिज्जं बितियं नामेण वच्छलिज्जं तु ।
ततियं पुण वाणिज्जं चउत्थयं पन्नवाहणयं ॥१॥ ॥२१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेराणं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धाणं कोडियकाकंदाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं इमे पंच थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं जहा—थेरे अज्जइंददिन्ने थेरे पियगंथे थेरे विज्जाहरगोवाले कासवगोत्ते णं थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते। थेरेहिंतो णं पियगंथेहिंतो एत्थ णं मज्झिमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया ॥२१७॥

थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कासवगोत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अंतेवासी गोयमसगोत्ते थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया वि होत्था, तं०—थेरे अज्जसंतिसेणिए माढरसगोत्ते थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरेहिंतो णं अज्जसंतिसेणिएहिंतो णं माढरसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उच्चानागरी साहा निग्गया ॥२१८॥

थेरस्स णं अज्जसंतिसेणियस्स माढरसगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जइसिपालिते। थेरेहिंतो णं अज्जसेणितेहिंतो एत्थ णं अज्जसेणिया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जतावसेहिंतो एत्थ णं अज्जतावासी साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जकुबेरेहिंतो एत्थ णं अज्जकुबेरा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जइसिपालेहिंतो एत्थ णं अज्जइसिपालिया साहा निग्गया ॥२१९॥

थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातीसरस्स कोसियगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे धणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरहदिन्ने। थेरेहिंतो णं अज्जसमिएहिंतो एत्थ णं बंभदेवीया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जवइरेहिंतो गोयमसगोत्तेहिंतो एत्थ णं अज्जवइरा साहा निग्गया ॥२२०॥

थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोत्तमसगोत्तमस्स इमे तिन्नि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जवइरसेणिए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे। थेरेहिंतो णं अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ णं अज्जनाइली साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जपउमेहिंतो एत्थ णं अज्जपउमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जरहेहिंतो एत्थ णं अज्जजयंती साहा निग्गया ॥२२१॥

थेरस्स णं अज्जरहस्स वच्छसगोत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंतेवासी कोसियगोत्ते। थेररस णं अज्जपूसगिरिस्स कोसियगोत्तस्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते ॥२२२॥

वंदामि फग्गुमित्तं च गोयमं धणगिरिं च वासिट्ठं।
कोच्छि सिवभूइं पि य कोसिय दोज्जितकंटे य ॥१॥
तं वंदिऊण सिरसा चित्तं वंदामि कासवं गोत्त।
णक्खं कासवगोत्तं रक्खं पि य कासवं वंदे ॥२॥
वंदामि अज्जनागं च गोयम जेहिलं च वासिट्ठं।
विण्हुं माढरगोत्तं कालगमवि गोयमं वंदे ॥३॥
गोयमगोत्तभारं सप्पलयं तह य भद्दयं वंदे।
थेरं च संघवालियकासवगोत्तं पणिवयामि ॥४॥
वंदामि अज्जहत्थिं च कासवं खंतिसागरं धीरं।
गिम्हाण पढममासे कालगयं चेत्तसुद्धस्स ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदामि अज्जधम्मं च सुव्वयं सीसलद्धिसंपन्नं ।
जस्स निक्खमणे देवो छत्तं वरमुत्तमं वहइ ॥६॥
हत्थं कासवगोत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि ।
सीहं कासवगोत्तं धम्मं पि य कासवं वंदे ॥७॥
सुत्तत्थरयणभरिए खमदममद्दवगुणेहिं संपन्ने ।
देविड्ढिखमासमणे कासवगोत्ते पणिवयामि ॥८॥ ॥२२३॥

कल्पभाष्ये समवसरणवक्तव्यता—

गाथा ११७७-१२१७ बृहत्कल्पसूत्र, भाग २, पृ० ३६६-३७७

आवश्यकनिर्युक्तौ समवसरणवक्तव्यता—गा० ५४५-६५८

आवश्यकनिर्युक्तिमलयगिरीया वृत्ति, पत्र ३०१-३३६

वाचनान्तर
[आयारचूला १५।३५ के पश्चात् पृ० २४०]

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (९।६२) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे "कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलंते" इति पाठे आयारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति । वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् संवादि समुल्लिखितम्—"यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भावः, कियद्दूरं यावदित्याह—'जाव सुहुये' त्यादि" (वृत्ति, पत्र ४४०) ।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) "वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्ययनायुक्ते इमे संग्रहगाथे—

कंसे सखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले ॥
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥"

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहगाथयोः सूचनं कृतमस्ति ।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सन्दर्भे भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पितः पाठो नोपलब्धः । भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽसि, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि संकेतः आदर्शेषु चापि तस्यानुपलब्धिरेव । चूर्णौ उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णयः कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्याताद् पाठाद् आदर्शगतः पाठो भिन्नोस्ति । अयं वाचनाभेदः चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्नवेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते ।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्धः चूर्ण्यनुसारीपाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्तेः सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि 'जहा भावणाते' इति समर्पणमस्ति । तस्यापि सम्बन्धश्चूर्ण्यनुसारिपाठेन विद्यते ।

आलोच्यमानपाठः किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते। तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते। आचाराङ्गचूर्णौ पूर्णः पाठो विवृतो नास्ति। स. स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः, आचाराङ्गचूर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः । स च इत्थं सम्भाव्यते--

संयोजित पाठ:

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गंभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकंपे सारयसलिलं व सुद्धहियए खग्गविसाणं व एगजाए भारुंडपक्खी व अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभे इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे वसुंधरा इव सव्वभासविसहे सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते ।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ । से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा--- अंडए वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुतरेणं दंसणेणं अणुतरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जेव जाणइ पासइ, तं जहा---आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाए धम्मं अक्खाइ [देसमाणे विहरइ], तंजहा---पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्नानाङ्ग (९।६२) :

तस्स णं भगवंतस्स[1] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंधाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे [वृ० पा० किन्नगंथे] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते ।

कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भविस्सइ, सेय पडिबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा— अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोय-विय-[चिय ?]-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वण्णसव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोहे सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मणसमिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंवणे ४,

१. अस्य स्थाने 'से णं भगवं' युज्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिदिए ८, खग्गिविसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुंजरो इव सोंडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकंपे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुंधरा इव सव्वभासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१। एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजरे वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा। कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा। भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा। तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणसियं भुत्तं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए इरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिंदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवंति, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे माया मे भगिणी में जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा अन्नयरे वा दीहकाल-पडिबंधे एवं, तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहा ससोगअरइभव-परित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेटुंमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणाए अब्भुट्टिए विहरइ। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरा-साढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं ताणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचि-अफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाधाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइअतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एयमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्ख-मग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हिय-सुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम सुहसमाणणे भविस्सइ। तते णं से भगवं समणाणं निग्गं-थाणं य णीग्गंथीण य पंच महव्वयाइं सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरति, तंजहा—पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वाइं सभावणागाइं भाणिअव्वाइं ति।

सूत्रकृतांगे (२।६४-६६) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५।११) रायपसेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१३-८१६) औपपातिकसूत्रे (सूत्र २७-२९, १५२,१५३,१६४,१६५) चालोच्यमानपाठेनांशिकी क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते। किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः सन्ति, ततः पूर्णा तुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१	मंदस	मंदस्स
१५	२७	सत्थ	सत्थं
१६	४	वियंति	वयंति
२६	१८	जाणे	जाण
४२	२२	पाव	पावं
४५	१७	समण०	समणु०
४८	१५	णियाणाओ	णियाणओ
५२	७	णिज्झोसइत्ता	णिज्झोसइता
५४	३	णियट्टंति	णियट्टंति
५५	६	तितिक्खा०	तितिक्खा
६५	१	×	उवगरण-पदं
७१	१	×	पाओवगमण-पदं
८४	१८	भुंज्जियं	भुंज्जियं
८६	१५	अणासेविय	अणासेवियं
६१	१०	पट्टणसि	पट्टणंसि
१०३	१६	जाणज्आ	जाणेज्जा
११५	७	उवाणिमतेज्जा	उवणिमंतेज्जा
१६४	२६	ज	जं
१७४	२१	अणसणिज्जं	अणेसणिज्जं
१७८	११	वियडण	वियडेण
१८१	१८	पहाए	पेहाए
१८७	१२	पण	पुण
२६६	५	सोसं	सीसं
३४८	३	परक्कमण्ण	परक्कमण्णू
३४८	१५	गंधमंत	गंधमंतं
३६३	१२	मारत्था	गारत्था
५३७	१२	मच्छा-पदं	मुच्छा-पदं
६२२	१७	अलमंथ	अलमंथू
६५२	११	मुडे	मुंडे
८६५	२३	निगर०	नगर०

पाठान्तर

२६६	पा० २६	विधीत	विधंति
३१०	,, २	समक्खाय	समक्खातं
३२०	,, २१	आय	आयं
३२१	,, ६	तेउ	तेउं
४००	,, ७	अतोमतेण	अतोमतेणं
४३५	,, १	धृत	धृतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org